द्रव्य सहायक—

श्रीसुखसागर ज्ञानप्रचारक सभा.

श्री भगवतीजी सूत्रकि पूजा

तथा सुपनोंकि आमदनीसे.

भावनगर—श्री आनंद प्रीन्टींग प्रेसमें शाह गुलाबचंद

लल्लुभाइए छाप्युं.

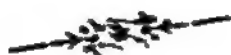
इन पुस्तकोंकी आमदनीसे और भी

ज्ञानप्रचार बडाया जावेगा।

श्री रत्नप्रभसूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नमः

अथ श्री

शीघ्रबोध भाग ३ जा.



द्रव्य सहायक रू. २५०)

शाह हजारीमलजी कुंवरलालजी पारख.

मु: लोहावट—जाटवास (मारवाड).

[illegible]

श्रीमद् भगवतीजी सूत्र कि वाचना।

पूज्यपाद मातःस्मरणिय मुनिश्री ज्ञानसुन्दरजी महाराजसाहिब कि अनुग्रह कृपासे हमारे लोहावट जैसे ग्राममें श्री श्रीमद् भगवतीजीसूत्र कि वाचना संवत् १९७९ का चैत्र वद ६ से प्रारंभ हुइथी जिसके दरम्यान हमे बहुत लाभ हुवा है जैसे श्री भगवतीजीसूत्रका आद्योपान्त श्रवण कर ज्ञानपूजाका करना जिस्के द्रव्यसे।

५००० श्री द्रव्यानुयोग द्वितीय प्रवेशिका।

५००० श्री शीघ्रबोध भाग १-२-३-४-५ वां हजार हजार प्रती एकही जिल्दमें बन्धाइ गइ है जिस्मे तीसरा भाग शा. हजारीमलजी कुंवरलालजी पारख कि तर्फसे।

१००० श्री भावप्रकरण शा. जमनालालजी इन्द्रचन्दजी पारख कि तर्फसे।

१००० श्री स्तवन संग्रह भाग ४ था शा आइदांनजी अगरचन्दजी पारख कि तर्फसे।

इनके सिवाय ज्ञानध्यान कंठस्थ करना तथा श्री सुखसागर ज्ञानप्रचारक सभा और श्री जैन नवयुवक मित्रमंडल कि स्थापना होनेसे अच्छा उपकार हुवा है।

अधिक हर्ष इस बातका है कि जीस उत्साहा से श्री भगवतीजी सूत्र प्रारंभ हुवाया उनसे ही बढते उत्साहासे श्री ज्ञानपंचमिको पूजा प्रभावना वरघोडाके साथ निर्विघ्नतासे समाप्त हुवा है हम इस सुअवसर कि वारवार अनुमोदन करते है अन्य सज्जनोंको भी अनुमोदन कर अपना जन्म पवित्र करना चाहिये किमधिकम्। भवदीय।

जमनालाल बांथरा राजमहाला,
मेम्बर श्री जैन नवयुवक मित्रमंडल
मु॰ लोहावट-मारवाड

जन्म सं. १९३२

ढूंढक दीक्षा सं. १९५२



स्वर्गवास १९७७

मुनि महाराज श्री रत्नविजयजी महाराज

रत्न परिचय.

परम योगिराज प्रातःस्मरणीय अनेक सद्गुणालंकृत श्री श्री १००८ श्री श्री रत्नविजयजी महाराज साहिब !

आपश्रीका पवित्र जन्म कच्छ देश ओसवाल ज्ञाति में हुवा था. आप बाल्यावस्थासे ही विद्यादेवीके परमोपासक थे. दश वर्षकि बाल्यावस्थामें ही आपने पिताश्रीके साथ संसार त्याग किया था. अठारा वर्ष स्थानकवासीमत में दीक्षा पाल सत्य मार्ग संशोधन कर– शास्त्रविशारद जैनाचार्य श्रीमद्विजयधर्मसूरीश्वरजी महाराजके पास जैन दीक्षा धारण कर संस्कृत प्राकृतका अभ्यास कर जैनागमोंका अव- लोकन कर आपश्रीने एक अच्छे गीतार्थोंकि पंक्तिको प्राप्त करी थी. आपश्रीने कच्छ काठीयावाड, गुजरात, मालवा, मेवाड और मारवाडादि देशोंमें विहार कर आपनि अमृतमय देशनासे जनताको [illegible]

आपका निस्पृह भाव शान्त स्वभाव होने से जगत के गच्छागच्छान्तर–मतमतान्तरके झगड़े तो आपसे हजार हाथ दूर ही रहते थे. जैसे आप ज्ञानमें उच्चकोटीके विद्वान थे वैसे ही कविता करनेमें भी उच्चकोटीके कवि भी थे आपने अनेक स्तवनों, सज्झायों, चैत्यवन्दनों, स्तुतियों, कल्प सूत्रकी टीका और विनति शतकादि रचके जैन समाजपर परमोपकार कीया था.

आपको निवृत्तिस्थान अधिक प्रसन्न था जो श्रीमदुपकेश गच्छाचार्य श्री रत्नप्रभसूरिश्वरजी महाराजने उपकेशपट्टन (ओशीयाँ) में ३८४००० राजपुतोंको प्रतिबोध दे जैन बनाया, प्रथम ही ओसवंश स्थापन कीया था, उन ओशीयाँ तीर्थपर आपश्रीने चतुर्मास कर स्वपर आत्म कल्याण कीया जैन मुनि श्री ज्ञानसुन्दरजीको ढूंढकमत से बचाकर संवेगी दीक्षा दे उपकेश गच्छका उद्धार करवाया था और दोनों मुनिवरोंने इस प्राचीन तीर्थके जीर्णोद्धारार्थ मदद कर वहांपर जैन पाठशाला, बोर्डिंग, श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान भंडार, जैन लायब्रेरी स्थापन करी था और भी बहुतसे ज्ञानका [illegible] [illegible]

श्रीमदुपकेशगच्छीय-

मुनि श्री ज्ञानसुन्दरजी.






जन्म सं० १९३७ विजयदशमी.





स्थान० दीक्षा सं० १९६३






ज्ञान परिचय।

पूज्यपाद प्रातःस्मरणिय शान्त्यादि अनेक गुणालंकृत श्री
नि श्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज साहिब ।

आपश्रीका जन्म मारवाड ओसवंस वैद मुत्ता ज्ञानीने सं. १९३७
नय दर्शनिकों हुवा था. बचपने से ही आपका ज्ञानपर बहुत प्रेम
स्वल्पावस्थामें ही आप संसार व्यवहार वाणिज्य व्यापारमे अच्छे
राल थे सं. १९५४ मागशर वद १० कों आपका विवाह हुवा
था. देशाटन भी आपका बहुत हुवा था. विशाल कुटुम्ब मातापिता
भाइ काका स्त्रि आदि कों त्याग कर २६ वर्ष कि युवान वयमें
सं. १९६३ चेत वद ६ कों आपने स्थानकवासीयों में दीक्षा ली थी.
दशागम और ३०० थोकडा कंठस्थ कर ३० सूत्रों की वाचना
करी थी तपश्चर्या एकान्तर छठ छठ, मास क्षमण आदि करनेमे भी
आप शूरवीर थे आपका व्याख्यान भी बडाही मधुर रोचक और
असरकारी था शास्त्र अवलोकन करने से ज्ञान हुवा कि यह मूर्त्ति
[illegible] था शास्त्र [illegible] कल्पीत मनुष्यम पैदा हुवा है
[illegible] आप श्रीमान
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

कीया स्वल्प समय मे ही आपने दीव्य पुरुषार्थ द्वारा जैन समाजपर बडा भारी उपकार कीया आपश्रीकों ज्ञानका तो आर्त दर्शका प्रेम है जहा पधारते है वहा ही ज्ञानका उद्योत करते है.

ओशीयों तीर्थ पर पाठशाला बोर्डींग ककक्रान्ति लायब्रेरी, श्री रत्न प्रभाकर ज्ञान भंडार आदि मे आप श्रीने मदद करी है फलोधी में श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला संस्था–इस्की दुसरी साखा ओशीयोंमें स्थापन करी जिन संस्थाओं द्वारा जैन आगमों का तत्त्व-ज्ञानमय आज ७६ पुष्प नीकल चुके है जिस्की कीताबे १५३००० करीबन हिन्दुस्तान के सब विभागमें ज्ञाना कि सेवा बजा रही है इनके सिवाय जैनपाठशाला जैन लायब्रेरी आदि भी स्थापन करवाइ गइ थी हम शासन देवताओंसे यह प्रार्थना करते है कि एसे पुरुषार्थी महात्मा चीरकाल शासन कि सेवा करते हमारे मरूस्थल देशमें विहार कर हम लोगोंपर सदैव उपकार करे । शम्

आपश्रीके चरणोपासक
इन्द्रचंद पारख
ओनरेरी सेक्रेटरी,
श्री जैन नवयुवक मित्र मण्डल
ऑफीस –लोहावट (मारवाड)

—— ✻ ——

प्रस्तावना.

प्यारे सज्जन गण !

यह बात तो आपलोग बखुबी जानते है कि हरेक धर्मका महत्व धर्म साहित्य के ही अन्तर्गत रहा हुवा है जिस धर्मका धर्मसाहित्य विशाल क्षेत्रमें विकाशित होता है उसी धर्मका धर्म महत्व भी विशाल भूमिपर प्रकाश किया करता है अर्थात् ज्यों ज्यों धर्मसाहित्य प्रकाशित होता है त्यों त्यों धर्मका प्रचार बढा ही करता है।

आज सुधरे हुवे जमानेके हरेक विद्वान प्रत्येक धर्म साहित्य अपक्षपात दृष्टिसे अवलोकन कर जिस जिस साहित्यके अन्दर तत्व वस्तु होती है उसे गुणग्राही सज्जन नेक दृष्टिसे ग्रहन कीया करते है अतेव धर्म साहित्य प्रकाश करने कि अत्यावश्यक्ता को सब संसार एक दृष्टिसे स्वीकार करते है।

धर्म साहित्य प्रकाशित करने में प्रथम उत्साही महाशयजी और साथमें लिखे पढे सहनशील निःस्पृही पुरुषार्थी तथा तन मन धनसे मदद करनेवालों कि आवश्यक्ता है।

प्रत्येक धर्मके नेता लोग अपने अपने धर्म साहित्य प्रकाशित करने मे तन धन मनसे उत्साही बन अपने अपने धर्म साहित्यको [illegible] बनाने कि कोशीस कर रहे है।

इतर साहित्य प्रेमियों कि अपेक्षा हमारे जैनधर्मके उच्च [illegible] दर्शन और [illegible] साहित्य [illegible] कि हो सेवा कर [illegible] साहित्य [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

नेताओं को अब मालुम होने लगी है कि साहित्य प्रकाश में हम लोग कितने पच्छाड़ी रहे हैं।

हमारे धर्म साहित्य लिखनेवाले और प्रकाशित करनेवाले पूर्वाचार्य हमारे पर बड़ा भारी उपकार कर गये है परन्तु इस वख्त पूज्यपाद प्रातः स्मरणीय न्यायांभोनिधि जैनाचार्य श्रीमद्विजयानंदसूरीश्वरजी (आत्मारामजी) महाराज का हम परमोपकार मानते हैं कि आपश्रीने ज्ञानभण्डारोंके नेताओं को बड़े ही जोर सोरसे उपदेश देकर जेसलमेर पाटण खंभात अमदाबाद आदिके ज्ञानभण्डरों में सड़ते हुवे धर्म साहित्यका उद्धार करवाया था आपश्री को साहित्य प्रकाशित करवानेका इतना तो प्रेमथा कि स्थान स्थान पर ज्ञानभण्डारों, लायब्रेरीयों, पुस्तक प्रचार मंडलों, संस्थाओं आदि स्थापीत करवाके ज्ञानप्रचार बढाने में प्रेरणा करी थी। आपके उपदेशसे स्कूलों पाठशालाओं गुरुकुलवासादि स्थापित होनेसे समाज में ज्ञान कि वृद्धि हुइ है। इतना ही नही बल्के यूरोप तक भी जैनधर्म साहित्यका प्रचार करने में आपश्रीने अच्छी सफलता प्राप्त करी थी उन धर्म साहित्य प्रचार कि बदोलत आज हमारी स्वल्प संख्या होने परभी सर्व धर्मों में उच्च स्थानको प्राप्त कीया है अच्छे अच्छे विद्वान लोगोंका मत है कि जैनधर्म एक उच्च कोटीका धर्म है।

साहित्य प्रचारके लिये श्रावक भीमसी माणेक बंबाइ जैन धर्म प्रसारक सभा-जैन आत्मानंद सभा भावनगर श्रीयशोविजय जी ग्रन्थमाला भावनगर, श्री जैन श्रेयस्कर मंडल मेसाणा मेघजी हीरजी बंबाइ अध्यात्म ज्ञान प्रकाश-बुद्धिसागर ग्रन्थमाला श्री हेमचन्द्र ग्रन्थमाला जैन तत्त्व प्रकाश मंडल जैन ग्रन्थमाला — रायचन्द्र ग्रन्थमाला राजेन्द्रप्रकाश कार्यालय श्री रत्न प्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला. फलोधी श्री जैन आत्मानन्द पुस्तक प्रचार मंडल आग्रा—हिन्दी व्याख्यान साहित्य आफीस जैन साहित्य सभा

न—पुना. श्री आगमोदय समिति जैसी छोटी बड़ी समाओंने साहित्य प्रकाशित करने में अच्छी सफलता प्राप्त करी है—मनुष्य मात्रका फर्ज है कि अपनि २ यथाशक्ति तन मन धनसे धर्म साहित्य प्रचारमें अवश्य मदद देना चाहिये।

साहित्यप्रेमी परम् योगिराज मुनि श्री रत्नविजयजी महाराज साहिब के सदुपदेशसे संवत् १९७२ का आषाढ शुद ६ के रोज मुनि श्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज द्वारा फलोधी नगरके उत्साही श्रावक वर्ग कि प्रेरणासे श्रीरत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला नामकि संस्था स्थापित की गइ थी. संस्थाका खास उद्देश छोटे छोटे ट्रेक्टद्वारा जनता में जैनधर्म साहित्य प्रसिद्ध करनेका रख[...] गया था.

हरेक स्थानपर लम्बी चौडी वातों बनानेवाले या पर उ[...] देश देनेवाले बहुत मीलते है किन्तु जीस जगह रूपैये का न[...] आता है तब कितनेक लोग धनाढ्य होनेपर भी मायाके म[...] उन्नतिके मेदान से पीच्छे हट जाते है परन्तु मुनिश्रीके प[...] दिनके उपदेशसे फलोधी श्री संघने ज्ञानवृद्धिके लिये क[...] २०००) का चन्दाकर श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला में [...] छपानेके लिये जमा करवाके इस संस्थाकि नीयको मजबुत [...] ही मुनिश्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज साहबका १९७३ का च[...] फलोधी मे हुवा आपश्रीने यह ही चतुर्मासा मे ११ पुष्प प्र[...] करवाया चतुर्मासके बाद आपश्रीका पधारणा ओसीया [illegible] आदि [illegible]

बीतावोंके जरिये तीर्थकी प्रसिद्धि और आबादि भी अच्छी हुइ थी. मुनिलालभाइ स्वर्गवास होनेके बाद में पुस्तकोंकि व्यवस्था ठीक न रहेनेसे नमुनाके तौरपर पुस्तको ओशीयों रखके शेष सब पुस्तकों फलोधी मंगवा लि गइ थी अब इन संस्थाका कार्य बहुत ही उत्साह से चलता है स्वल्प ही समयमें ७८ पुस्तकि करीबन् १,५३००० पुस्तके छप चुकी है जिसमें प्रतिमाछत्तीसी, गयवरविलास, दानछत्तीसी, अनुकम्पाछत्तीसी, प्रश्नमाला, चर्चाका पब्लिक नोटीस, लिंगनिर्णय, सिद्धप्रतिमा, मुक्तावली, बत्तीससूत्रदर्पण, डंकेपर चोट, आगमनिर्णय और व्यवहार चुलिकादि समालोचना यह बारहा पुस्तके तो मूर्तिउत्थापक दुंढीये तेरेपन्थीयोंके बारे में लिखी गइ है जिस्में सप्रमाण मूर्ति और दया दानका प्रतिपादन किया गया है और स्तवन संग्रह भाग १-२-३-४, दादासाहिबकि पूजा, देवगुरु वन्दनमाला, जैन नियमावली, चौरासी आशातना, चैत्यवन्दनादि, जिनस्तुति, सुबोधनियमावली, प्रभु पूजा, जैन दीक्षा, तीर्थयात्रास्तवन, आनन्दघन चौवीसी, सज्झाय, गहुंलीयों, राइदेवसि प्रतिक्रमण, उपकेशगच्छ पट्टावली इन १८ पुस्तकोंमें देवगुरुकी भक्तिसाधक स्तवन, स्तुतियों, चैत्यवंदनों आदि है। व्याख्याविलास भाग १-२-३-४, मेझरनामो, तीन निर्नामा लेखोंका उत्तर, ओशीयों तीर्थके लाभ पेढावकि नोट, अमे साधु शा माटे थया, विनती शतक, शकायतीसी, धर्मसाला, तीन चतुर्मासोंका दिग्दर्शन और हितशिक्षा यह १३ पुस्तकों में वस्तुस्वरूप निरूपण या उपदेशका विषय है [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] है [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible]

सूत्र, समवायांगजी सूत्र, अनुयोगद्वार सूत्र, नन्दीजी सूत्र स्थानायांगजी सूत्र, जम्बुद्विपपन्नति सूत्र, आचारांग सूत्र, सूत्र कृतांगजी सूत्र, उपासकदशांग सूत्र, अन्तगडदशांग सूत्र, अनुत्तरोववाइजी सूत्र, निरियावलकाजी सूत्र, कप्पवडंसियाजी सूत्र, पुप्फीयाजी सूत्र, पुप्फचूलीयाजी सूत्र, विन्हो दशांगजी सूत्र, वृहत्कल्प सूत्र, दशाश्रुतस्कंध सूत्र, व्यवहार सूत्र, निशिथ सूत्र और कर्मग्रन्थादि प्रकरणो से खास द्रव्यानुयोगका सूक्ष्म ज्ञानको सुगमतारूप हिन्दी भाषामें लो कि सामान्य बुद्धिवाला भी सुखपूर्वक समज के लाभ सके और इन भागोंमें बारहा सूत्रोंका हिन्दी भाषान्तर भी करवाया गया है शीघ्रबोधके प्रथम भाग से पचवीसवां भाग तकके लिये यहां विशेष विवेचन करनेकि आवश्यका नहीं है. उन भागोंकि महत्वता आद्योपान्त पढने से ही हो सक्ती है इतना तो लोगोपयोगी हुवा है कि स्वल्प ही समय में उन भागोंकि नकलो खलासे हो गइ थी और ज्यादा मांगणी होने से द्वितीयावृत्ति छपाइ गइ थी वह भी थोडा ही दीनों में खलास हो जानेसे भी मांगणी उपर कि उपर आ रही है। अतेव उन भागोंको और भी छपानेकि आवश्यता होनेसे पुष्प २६-२७-२८-२९-३० को इस संस्था द्वारा प्रगट कीया जाता है. उन शीघ्रबोधके भागोंकि जैसी जन समाजमें आदर सत्कारके साथ आवश्यका है उतनी ही स्थान [illegible] और [illegible] आवश्यका दिखाइ दे रही है,

इस [illegible] [illegible]

आठ आना सहज ही में निकल जावेंगे और यहां रूपैये जमा होंगे उनों से और भी ज्ञान वृद्धि होगी. सिर्फ बारहा सूत्रोंके भाषान्तरकि किंमत कुच्छ अधिक रखी गइ है इस्का कारण यह है कि इसमें च्यार छेदसूत्रोंका भाषान्तर भी साथ में है जो कि जिनोंको खास आवश्यका होगा वह ही मंगावेगा। तथापि महेनत देखतो किंमत ज्यादा नहीं है शेष किताबेंकी किंमत हमारे उद्देश माफीक ही रखी गइ है. पाठकगण किंमत तर्फ ध्यान न दे किन्तु ज्ञान तर्फ दे कि जिन सूत्रोंका दर्शन होना भी दुर्लभ थे वह आज आपके करकमलो में मोजुद है इसका ही अनुमोदन करे। अस्तु।

वि. सवत् १९७९ का फागण वद २ के रोज श्रीमान्मुनि महाराजश्री श्रीहरिसागरजी तथा श्रीमान् ज्ञानसुन्दरजी महाराज ठाणे ४ का शुभागमन लोहावट ग्राम में हुवा. श्रोतागणकी दीर्घ काल से अभिलाषा थी कि मुनि श्रीज्ञानसुन्दरजी महाराज पधारे तों आपश्रीके मुखारबिंद से श्री भगवतीजी सूत्र सुने. तीन वर्षो से विनती करते करते आप श्रीमानोंका पधारना होनेपर यहांके श्रावकोंने आग्रे से अर्ज करनेपर परम दयालु मुनि श्रीने हमारी अर्ज स्वीकार कर मीती चैत वद ६ के रोज श्री भगवतीजी सूत्र सुये व्याख्यानमें फरमाना प्रारंभ किया जिस्का महोत्सव वरघोडा राजीआगराणादि शा रत्नचंदजी छोगमलजी पारख कि तर्फसे हुवा था इस शुभ अवसर पर फलोधीमे श्राजेन नवयुवक प्रेम मंडल तथा अन्यभी श्रावकवर्ग पधारे थे वरघोडा का दर्श-अंग्रजोबाजा ग्यानमंडलीयों और सरकारी कर्मचारियों पोलीस आदिमें बडा ही प्रभावशाली दीखाइ देते थे श्री भगवतीजी सूत्रकि पूजामें अठारा मानामोहरों मोत्तोक वगैरन रू १००० की आवादानी हुइथी जिस्का श्री संघमें यह ठराव हुवा कि इन आवादानीमें न व ज्ञानमय पुस्तक छपा देना चाहिये

इस सुअवसरपर श्री सुखसागर ज्ञान प्रचारक नामकि संस्थाकि भी स्थापना हुइ थी संस्थाका खास उद्देश यह रखा गया था कि जैनशासनके सुख समुद्रमें ज्ञानरूपी अगम्य जल भरा हुवा है उन ज्ञानामृतका आस्वादन जनताको पर्यक बिंदु द्वारा करवा देना चाहिये. इस उद्देशका प्रारंभमें श्री द्रव्यानुयोग द्वितीय प्रवेशिका प्रथम बिन्दु तथा श्री भाव प्रकरण दूसरा बिन्दु आप लोगोंकी सेवामें पहुंचा दिया था।

यह तीसरा बिन्दु जो शीघ्रबोध भाग १-२-३-४-५ जो [illegible] प्रथम और दुसरी आवृति श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला—[illegible] लोधीसे छप चुकीथी परन्तु वह सब नकले खलास हो जानेपर [illegible] मागणी अधिक और अति लाभ जानके नइ आवृति जोकि [illegible] कि जिसपर इस्मे बहुत सुधारा करवाया गया है शीघ्र बोध [illegible] पहले में धर्मके सन्मुख होनेवालेके गुण. मार्गानुसारीके ३५ [illegible] व्यवहार सम्यक्त्वके ६७ बोल. पैंतीस बोल लघुदंडक महा[illegible] विरहद्वार रूपी अरूपी उपयोग चौदाबोल बीसबोल तेवीस [illegible] चालीस बोल १०८ बोल और छे आरों का इतिहासका [illegible] दूसरा भागमें विस्तार पूर्वक नौतत्व पचवीस क्रियाका [illegible] है तीसरा भागमें नय निक्षेपा स्याद्वाद षट्द्रव्य सप्तभंग[illegible] षट् द्रव्यगुणपर्याय आदि श्री जैनागमसार नाम कुंजीयों [illegible] है [illegible] महा[illegible] और अल्पा बहुत्व आदि है [illegible]

[illegible]

होती है यानें अलग अलग रूची होती है इतनाही नही बल्कि एक मनुष्यकि भी हर समय एक रूची नही होती है जिस जिस समय में जो रूची होती है तदानुसार वह कार्य किया करता है। अगर वह कार्य परमार्थके लिये कीसी रूपमें कीसी व्यक्तिके लीये उपकारी होतो उसका अनुमोदन करना और उससे लाभ उठाना सज्जन पुरुषोंका कर्तव्य है।

यद्यपि मुनिश्री कि रूची जैनागमोंपर अधिक है और साधुओं सुगमता पूर्वक जैनागमोंका अवलोकन करना देखेके इस कार्यमें आपने यह प्रवृत्ति स्वीकार कर जनसमाज पर बडा भारी उपकार कीया है इस वास्ते आपका हार्दिक उदार वृत्तिको हम सहर्ष बधाइ स्वीकार करते है और आपसे अनुरोध करते है कि आप जीवनकाल तक इसी तरह ज्ञानकी सेवा करते हुवे हमारे ४५ आगमोंको भी इसी हिन्दी भाषाद्वारा प्रगट करें ताकि हमारे जैसे लोगोंको मालूम हो कि हमारे घरके अन्दर यह अमूल्य रत्न भरे हुवे है।

अन्तमें हमारे वालक बुध्दसे हम नम्रता पूर्वक यह निवेदन करते है कि आप एक बुक शीघ्र बांध आप १ से १८ तक प्रेस मार्गमें क्रमशः पढीये ताकि इस भावार्थ शीघ्र नमी रखी गई है कि समस्त पढनेसे हरेक विषय ठीक मालूम अवश्य आपको प्रत्यक्षमें मालूम हो सकती है कि एक [illegible] और [illegible]

[illegible]

खुश खवर लिजिये.

सूत्रश्री भगवतीजी, प्रज्ञापनाजी, जीवाभिगमजी, समवायांगजी, अनुयोगद्वारजी, दशवैकालिकजी आदि से उद्धरीत किये हुवें बालावबोध हिन्दी भाषा में यह द्वितीयावृत्ति अच्छा सुधारा और खुलासाके साथ बढीये कागद, अच्छा टैप, सुन्दर कपडेकि जल्द में यह ग्रन्थ एक द्रव्यानुयोगका खजाना रूप तैयार करवाया गया है. किमत मात्र रु. १॥। एक ही.

जल्दी किजिये खलास हो जानेपर मीलना असंभव है.

शीघ्रबोध भाग १–२–३–४–५ वां

जिस्की संक्षिप्त

विषयानुक्रमाणिका.

[illegible]

संख्या.	विषय	पृष्ट.
९	रूपी अरूपीके १०६ बोल	४८
१०	दिसानुवाद द्विमाधिकार	४६
११	छे कायाके छे द्वार	४९
१२	उपयोगाधिकार	५०
१३	तेंत्रीसपातके १४ बोल	५१
१४	तीर्थंकर नामके २० बोल	५२
१५	जल्दी मोक्ष जानेके २३ बोल	५४
१६	परम कल्याणके ४० बोल	५५
१७	सिद्धोंकि अल्पाबहुत्व	५९
१८	छे आरोंका अधिकार	६०
१९	पहेला आराधिकार	६१
२०	दुसरा आराधिकार	६३
२१	तीसरा आराधिकार	६४
२२	चोथा आराधिकार	६८
२३	पाचमाराधिकार	६९
२४	छठ्ठाराधिकार	७४
२५	दुषमदिशी	

शीघ्रबोध भाग २ रा.

संख्या.	विषय	पृष्ट.
२६	[illegible] लक्षण	[illegible]
२७	[illegible] लक्षण	[illegible]
२८	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]

संख्या.	विषय.	पृष्ट.
३५	एकेन्द्रियके भेद	८३
३६	प्रत्येक वनस्पति १२ प्रकारकी	८४
३७	साधारण वन० के भेद	८८
३८	वनस्पतिके लक्षण	८९
३९	बेइन्द्रियादिके भेद	९०
४०	पंचेन्द्रियके च्यार भेद	९०
४१	मनुष्यके ३०३ भेदका वर्णन	९१
४२	आर्यक्षेत्र २५॥ का वर्णन	९५
४३	दश प्रकारकि रूची	९६
४४	देवतोंके १९८ भेद	९७
४५	अजीयतत्वके लक्षण	१००
४६	अरूपी अजीवके ३० भेद	१०१
४७	रूपी अजीवके ५३० भेद	१०२
४८	पुन्यतत्वके लक्षण	१०३
४९	पुन्य नौ प्रकारसे बन्धते है	१०४
[illegible]	पुन्य ४२ प्रकारसे भोगते	[illegible]
[illegible]	पापतत्वके लक्षण	[illegible]
[illegible]	पाप १८ प्रकारसे बन्धे	[illegible]
[illegible]	पाप ८२ प्रकारसे भोगवे	[illegible]
[illegible]	[illegible] लक्षण	[illegible]
[illegible]	[illegible] भेद	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible] लक्षण	[illegible]
[illegible]	[illegible] भेद	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible] लक्षण	[illegible]

विषय	पृ.	नं.	विषय	पृष्ठ
अनशन मद	११२	८५	कायादि क्रिया	१३७
उनोदरी मद	११४	८६	अप्रत्याख्यान क्रिया	१३८
भिक्षाचारी मद	११५	८७	क्रियाके नियमा भजना	१३९
रसत्याग मद	११६	८८	आरंभियादि क्रिया	१३९
कायक्लेश मद	११७	८९	क्रियाका भांगा	१४१
प्रतिसंलीनता मद	११८	९०	प्राणातिपातादि क्रिया	१४१
६७ प्रायश्चित्त मदके ५० भेद	११८	९१	क्रिया लागनेका कारण	१४१
६८ विनय मदके १३४ भेद	११९	९२	अल्पाबहुत्व	१४२
६९ वैयावृत्त्य मदके १० भेद	१२१	९३	शरीरोत्पत्ति में क्रिया	१४३
७० स्वाध्याय मद	१२२	९४	पांच क्रिया लगना	१४३
७१ वाचनादिक प्रश्नादि	१२२	९५	जी जीवोंकी क्रिया लागे	१४[illegible]
७२ धर्मध्यान ३४ प्रकारके	१२४	९६	मृगादि मारनेसे क्रिया	१४[illegible]
७३ ध्यानके ४८ भेद	१२५	९७	अग्नि लगानेसे क्रिया	[illegible]
७४ व्युत्सर्ग मद	१२८	९८	जाल रचनेसे क्रिया	[illegible]
७५ बन्धतत्त्व लक्षण	१२८	९९	क्रियाका लेना देना	[illegible]
७६ आठ कर्मोंके बन्ध कारण ८९	१२९	१००	वस्तुगम जानेसे	[illegible]
७७ मोक्षतत्त्व लक्षण	१३०	१०१	ऋषि हत्या करनेसे क्रिया	[illegible]
७८ सिद्धोंके अल्पाबहुत्व ३३ बोल	१३१	१०२	अन्तक्रियाधिकार	[illegible]
[illegible]	१३४	१०३	समुद्घातमें क्रिया	[illegible]
[illegible]	[illegible]	१०४	[illegible]	[illegible]

[illegible]

सख्या.	विषय.	पृष्ट.	सख्या.	विषय.	पृष्ट.
१०९	सात अंधे और हस्तीका दृष्टान्त	१५१	१३७	प्रत्येक प्रमाण	१७६
११०	नयका लक्षण	१५३	१३८	आगम प्रमाण	१७६
१११	नैगमनयका लक्षण	१५४	१३९	अनुमान प्रमाण	१७६
११२	संग्रह नय लक्षण	१५५	१४०	औपमा प्रमाण	१७८
११३	व्यवहारनय	१५६	१४१	सामान्य विशेष	१७९
११४	ऋजुसूत्रनय	१५७	१४२	गुण और गुणी	१८०
११५	साहुकारका दृष्टान्त	१५७	१४३	ज्ञेय ज्ञान ज्ञानी	१८०
११६	शब्द समभीरूढ-एवंभूत	१५८	१४४	उपजने वा विघ्ने वा ध्रुवेया	१८०
११७	वसतीका दृष्टान्त	१५९	१४५	अधेय आधार	१८१
११८	पायलीका दृष्टान्त	१६०	१४६	आविर्भाव तिरोभाव	१८१
११९	प्रदेशका दृष्टान्त	१६१	१४७	गौणता मौख्यता	१८१
१२०	ज्ञीयपरसातनय	१६२	१४८	उत्सर्गापवाद	१८२
१२१	सामायिकपर सात नय	१६३	१४९	आत्मातीन	१८३
१२२	धर्मपर सात नय	१६३	१५०	ध्यान च्यार	१८३
१२३	बाणपर सात नय	१६३	१५१	अनुयोग च्यार	१८४
१२४	राजापर सात नय	१६४	१५२	जागरण तीन	१८४
१२५	निक्षेपाधिकार	१६४	१५३	व्याख्या नौप्रकार	१८४
१२६	नामनिक्षेपा	१६५	१५४	अष्ट पक्ष	१८५
१२७	स्थापना निक्षेपा	१६५	१५५	सप्तभंगी	१८५
१२८	द्रव्यनिक्षेपा	१६७	१५६	निगोद स्वरूप	१८७
१२९	भावनिक्षेपा	१७०	१५७	षद्द्रव्य अधिकार	१९०
१३०	द्रव्यगुणपर्याय	१७२	१५८	षट्द्रव्यके आदि	१९०
१३१	द्रव्य क्षेत्रकाल भाव	१७२	१५९	षट्द्रव्यका संस्थान	१९०
१३२	द्रव्य और भाव	१७३	१६०	षट्द्रव्यमें सामान्य गुण	१९१
१३३	कारण कार्य	१७३	१६१	षट्द्रव्यमें विशेष स्व भाव	१९२
१३४	निश्चय व्यवहार	१७४	१६२	षट्द्रव्यके क्षेत्र	१९२
१३५	उपादान निमित्त	१७५	१६३	षट्द्रव्यके काल	१९३
१३६	प्रमाण च्यार प्रकारके	१७५			

विषय.	पृ. संख्या.	विषय.	पृ.
षद्द्रव्यके भाव	१९४	१८९ सत्यादि च्यार भाषा	२०४
षद्द्रव्यमें सा० वि	१९४	१९० भाषाके पु० भेदाना	२०५
षद्द्रव्यमें निश्चय व्य०	१९५	१९१ भाषाके कारण	२०७
षद्द्रव्यके सात नय	१९५	१९२ भाषके वचन १६ प्रकारके	२०७
षद्द्रव्यके च्यार निक्षेपा	१९५	१९३ सत्यभाषाके १० भेद	२०८
षद्द्रव्यके गुण पर्याय	१९६	१९४ असत्यभाषाके १० भेद	२०८
...० षटद्रव्यके साधारणगुण	१९६	१९५ व्यवहार भाषाके १२ भेद	२१०
१७१ षटद्रव्यके साधर्मीपणा	१९६	१९६ मिश्रभाषाके १० भेद	२१०
१७२ षटद्रव्यमें प्रणामद्वार	१९७	१९७ अल्पाबहुत्व भाषा क०	२११
१७३ षटद्रव्यमें जीवद्वार	,,	१९८ आहाराधिकार	२११
१७४ षटद्रव्यमें मूर्तिद्वार	,,	१९९ कीतने कालसे आहारले	२१...
१७५ षटद्रव्यमें एक अनेकद्वार	,,	२०० आहारके पु० २८८ प्रकारके	२...
१७६ षटद्रव्यमें क्षेत्रक्षेत्री		२०१ आहार पु० के वीचार	२...
१७७ षटद्रव्यमें सक्रियद्वार	१९८	२०२ श्वासोश्वासधिकार	
१७८ षटद्रव्यमें नित्यानित्य	,,	२०३ संज्ञा उत्पत्ति अल्पा०	
१७९ षटद्रव्यमें कारणद्वार	,,	२०४ योनि १२ प्रकारकी	
१८० षटद्रव्यमें कर्ताद्वार		२०५ आरंभादि	
१८१ षटद्रव्यमें प्रवेशद्वार		२०६ अल्पाबहुत्व १६ बोल	
१८२ षटद्रव्यमें मध्य प्रदेशादि पुरा	१९९	२०७ अल्पाबहुत्व [illegible]	
१८३ [illegible]		२०८ अल्पाबहुत्व [illegible]	
१८४ [illegible]		२०९ अल्पाबहुत्व [illegible]	
१८५ [illegible]		शीघ्रबोध भाग ४	
१८६ [illegible]		... अष्ट प्रवचन	
१८७ [illegible]		... [illegible]	
१८८ [illegible]			

संख्या	विषय.	पृष्ट.
२१३	भाषासमिति	२२८
२१४	एषणासमिति	२२८
२१५	गौचरीके ४२ दोष	२२९
२१६	गौचरीके ६४ दोष कुल १०६ दोष.	२३१
२१७	ग्रास दोष १२ प्रकारका	२३८
२१८	चौथी समिति	२३९
२१९	मुनियोंके १४ उपकरण महेतु	२३९
२२०	प्रतिलेखन २५ प्रकारकी	२४०
२२१	प्रतिलेखनके ८ भांगा	२४२
२२२	पांचवी समिति	२४२
२२३	दश बोल परिठनेका	२४२
२२४	तीनगुप्ति	२४३
२२५	पगाम सज्झाके ३३ बोलोंके अर्थ	२४४
२२६	एकबोलसे दश बोल	२४४
२२७	श्राद्ध प्रतिमा	२४६
२२८	श्रमण प्रतिमा	२४६
२२९	तेरहसे बीस बोलका अर्थ असमाधि स्थान	२४६
२३[illegible]	एकवीस सबला दोष	२४८
२३१	बावीस परिसह	२४८
२[illegible]	तेवीसमें गुणतासवाद	२४८
२३३	महा मोहनिके [illegible] स्थान	[illegible]
[illegible]	सिद्धोंके [illegible] गुण	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	गुरुकि ३३ आशातना	[illegible]

संख्या.	विषय	पृष्ट.
२३७	देव अतिशय ३४	२५४
२३८	देव वाणी ३५ गुण	२५४
२३९	उत्तराध्ययनके ३६ अध्ययन	२५५
२४०	छे निग्रन्थोंके ३६ द्वार	२५५
२४१	पांच संयतिके ३६ द्वार	२६६
२४२	अनाचार ५२	२७६
२४३	संयमतसुके १७८? तणावा	२७९
२४४	आराधना तीन प्रकार	२८१
२४५	साधु समाचारी १०	२८४
२४६	मुनि दिनकृत्य	२८५
२४७	पदावश्यक	२८९
२४८	साधु रात्री कृत्य	२९०
२४९	पोरसी पौणपोरसीका माप	२९०

शीघ्रबोध भाग ४ वां.

संख्या.	विषय	पृष्ट.
[illegible]	जड चैतन्यका संबन्ध	[illegible]
[illegible]	कर्म क्या वस्तु है?	[illegible]
[illegible]	आठ कर्मोंकि १५८ उत्तर प्रकृति	[illegible]
[illegible]	आठ कर्मोंके बन्ध कारण	[illegible]
[illegible]	सर्वघाती देशघाती प्र०	[illegible]
[illegible]	विपाक उदय प्र०	[illegible]
[illegible]	परावर्तना परावर्तन प्र०	[illegible]
[illegible]	चौदा गुणस्थानपर बन्ध	[illegible]

विषय. पृ.

…चौदा गुण० पर उदय
…दिरणा प्रकृति ३१२
…चौदा गु० पर सत्ता प्र-
कृति ३२४
…यथाख्यातालाधिकार ३ ७
… कर्मविचार ३३४
… कर्म बान्धतो बान्धे ३३६
… कर्म बान्धतो वेदे ३४०
…१ कर्म वेदतो बान्धे ३४१
…६४ कर्म वेदतो वेदे ३४५
…६५ कर्म वेदतो वेदे ३४७
…६६ ५० बोलोंकी बन्धी ३४८
…६७ इर्यावहि कर्म बन्ध ३५३
२६८ सम्पराय कर्म बन्ध ३५४
२६९ ४७ बोलोंकी बन्धी
२७० प्रत्येक दंडकपर बन्धी
के बोल ३५५
२७१ प्रत्येक बोलोंपर बन्धी
के भाग ३५६
२७ अनन्तरोपपन्नकादि [illegible]
देशा ३६१
…७३ [illegible]
[illegible] ३६८
…७४ [illegible] ३६९
…७५ समोसरणाधिकार ३७०
…७६ [illegible]
[illegible] समोसरण

सं. विषय. पृ.

यह आयुष्य कहांका बन्धे ३७६
यह भव्याभव्य होते है ३७०
२७७ समोसरण अनन्तर ३७१
२७८ छे लेश्या ३७१
२७९ लेश्याका वर्ण ३७२
२८० लेश्याका गन्ध ३७२
२८१ लेश्याका रस ३७२
२८२ लेश्याका स्पर्श ३७२
२८३ लेश्या परिणाम ३७३
२८४ कृष्ण लेश्याका लक्षण ३७३
२८५ निल लेश्याका लक्षण ३७३
२८६ कापोत लेश्याका लक्षण ३७३
२८७ तेजस लेश्याका लक्षण ३७…
२८८ पद्म लेश्याका लक्षण ३…
२८९ शुक्ल लेश्याका लक्षण ३…
२९० लेश्याका स्थान ३…
२९१ लेश्याकी स्थिति
२९२ लेश्याकी गति
२९३ लेश्याका चयन
२९४ सचिठण काल
२९५ [illegible] काल
२९६ अन्तर काल
२९७ मिश्र काल
२९८ सचित्तन
२९९ अल्पाबहुत्व
बन्धकाल
३०० बन्धन [illegible]

शीघ्रबोध भाग १–२–३–४–५ वां के

थोकडोंकि नामावली.

किंमत मात्र रु. १॥

संख्या.	थोकडेके नाम.	कौन कौनसे सूत्रोंसे उध्धृत किये है.
१	अर्हन्त भगवान होनेवालों मे ३५ गुण	पूर्वाचार्य कृत
(१)	मार्गानुसारीके ३५ बोल	" "
(२)	व्यवहार सम्यक्त्वके ६७ बोल	" "
(३)	पैंतीस बोल संग्रह	बहुतसूत्रों संग्रह
(४)	लघुदंडक बासठबोल	सूत्रश्री जीवाभिगमजी
(५)	चौवीस दंडकके प्रश्नोत्तर	पूर्वाचार्य कृत
(६)	महादंडक ९८ बोलका	सूत्रश्री पन्नवणाजी पद ३
(७)	विरहद्वार [बासठीया]	" " पद ६
(८	[illegible]	सूत्रश्री भगवतीजी श०१२ उ०५
(९)	दिशाणुवाद दिशाधिकार	सूत्रश्री पन्नवणाजी पद ३
१०	छे आराधिकार	सूत्रश्री स्थानांगजी ठा. ६
११	श्री उपयोगाधिकार	सूत्रश्री भगवतीजी श०१३ उ००
१२	चौदा बोल [illegible]	ठा [illegible]
१३	[illegible]	सूत्रश्री [illegible]
१४	[illegible]	पूर्वाचार्य कृत
१५	[illegible]	बहुत सूत्रोंसे संग्रह
१६	[illegible]	
	[illegible]	[illegible]
१७	[illegible]	[illegible]

	श्री उत्तराध्ययनजी सूत्र
(१८) षड्डी नवतत्त्व	बहुतसे सूत्रोंसे संग्रह
(१९) पचवीस क्रियाधिकार	श्री अनुयोगद्वारादि सूत्र
(२०) नय निक्षेपादि २५ द्वार	श्री अनुयोगद्वार सूत्र
(२१) प्रत्यक्षादि च्यार प्रमाण	बहुत सूत्रोंसे संग्रह
(२२) षट्द्रव्यपर द्वार ३१	सूत्रश्री पन्नवणाजी पद ११
(२३) भाषाधिकार	" " पद २८ उ० १
(२४) आहाराधिकार	" " पद ७
(२५) श्वासोश्वासाधिकार	" " पद ८
(२६) संज्ञाधिकार	" " पद ९
(२७) योनि अधिकार	सूत्रश्री भगवतीजी श० ११
(२८) आरंभादि चौवीस दंडक	पूर्वाचार्य कृत
(२९) अल्पाबहुत्व	" "
(३०) अल्पाबहुत्व बोल	" "
(३१) अल्पाबहुत्व	सूत्रश्री उत्तराध्ययनादि
(३२) अल्पपदनाधिकार	सूत्रश्री आवश्यकजी
(३३) छत्तीस बोल संग्रह	सूत्रश्री भगवती श० २५
(३४) पांच निर्ग्रन्थपर ३६ द्वार	" " २५
(३५) पांच संयतिपर ३६ द्वार	सूत्रश्री दशवैकालिक
(३६) [illegible]	"

[illegible]

(४५) कर्मप्रकृतिका उदय ,, ,, ,,
(४६) कर्मप्रकृतिकि सत्ता ,, ,, ,,
(४७) अबाधाकालाधिकार श्री पन्नवणाजी सूत्रपद २३
(४८) कर्म विचार श्री भगवतीजी सूत्र श. ८ उ. १०
(४९) कर्मबान्धतो बान्धे श्री पन्नवणाजी सूत्रपद २३
(५०) कर्म बान्धतो वेदे ,, ,, ,, पद २४
(५१) कर्म वेदतो बान्धे ,, ,, ,, पद २५
(५२) कर्म वेदतो वेदे ,, ,, ,, पद २६
(५३) पचास बोलोंकी बन्धी श्री भगवतीजी श. ६ उ. ३
(५४) इर्यावहि संपरायकर्म श्री भगवतीजी श. ८ उ. ८
(५५) ४७ बोलोंकि बन्धी ,, ,, ,, २६ उ. १
(५६) ४७ बोलोंके अनंतरादि ,, ,, २६ उ. २
(५७) करीसु पातक ,, ,, ,, २७-११
(५८) ४७ बोलोंपर आठ भांगा ,, ,, ,, २८-११
(५९) समोसरणादि ,, ,, ,, २९-११
(६०) समोसरणाधिकार ,, ,, ३० ११
(६१) लेश्या ११ द्वार श्रीउत्तराध्ययनजी अ० ३४
(६२) [illegible] श्री भगवतीजी श० १ उ० २
(६३) [illegible] श्री कर्मग्रंथ बोल

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला
मु. फलोदी [illegible]
श्री सुखसागर ज्ञानप्रचारक सभा.
मु. लोहावट [illegible]

शुद्धिपत्र.

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
२९	८	दा	दो
२९	२०	अतन्ती	अनंती
३३	१	सागरोप	पल्योपम
३८	१७	१० भु०	१० औदारीक
३८	१९	१३ येमय	१३ देवता
७८	११	नपतावका	नवतावमें
८१	१	सिद्धि	सिद्धो
८२	२	परस्पर	परम्परा
८२	६	तीवर्ष	तीर्थंच
८४	१७	समय	समर्थ
८४	२०	स्याते	स्याते जीव
८६	८	मलता	मालती
१०७	२०	[illegible]	तेइन्द्रिय आदि
१०४	७	[illegible]	[illegible]
१०६	१०	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

१८२	२	पर्याय	गुण
२३५	१४	ग्राम	जिम
२४०	२	रथ	रश्मा
२४४	२०	समिमि	समिति
२६५	१०	,, स्नातकमें चक्र केवली समु० पाने	
२८५	७	इच्छार	इच्छाकार
२८५	१०	इच्छार	इच्छाकार
२८६	१७	३-८	२-८
२८३	१७	२-८	३-८
३०६	६	क्रोम	स्रोम
३०९	४	५६	५७
३१७	१	१३२	१२२

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला पुष्प नं २६

॥ श्री रत्नप्रभसूरिसद्गुरुभ्यो नमः ॥

अथ श्री

शीघ्रबोध भाग पहेला.

—※(◎)ॐ—

धर्मके सन्मुख होनेवालोमें १५ गुण होना चाहिये।

१ नितीवान हो, कारण निती धर्मकी माता है।
२ हीम्मत बाहादुर हो, कारण कायरोंसे धर्म नही होता है
३ धैर्यवान् हो, हरेक कार्योंमें आतुरता न करे।
४ बुद्धियान् हो, हरेक कार्य स्वमति विचारके करे।
५ असत्यको धीक्कारनेवाला हो, और सत्य वचन बोले।
६ निष्कपटी हो, हृदय साफ स्फटिकरत्न माफिक हो।
७ विनयवान, और मधुर भाषाका बोलनेवाला हो।
८ गुणग्राही हो और स्वात्मश्लाघा न करो।
९ प्रतिज्ञा पालक हो, कीये हुवे नियमोंको बराबर पाले
१० दयावान हो, और परोपकार कि बुद्धि हो।
११ सत्य धर्मका अर्थी हो सम्यक्ताही पक्ष रखना।
१२ जितेन्द्रिय हो, [illegible] हो।
१३ [illegible]

१७ तत्त्व विचारमें निपुण हो। तत्त्वमें रमणता करे।
१८ किसीके ज्ञान धर्म [illegible] उपकार कभी भूलना नहीं परन्तु उपकारीके प्रति उपकार करे।



थोकड़ा नम्बर १

(मार्गानुसारीके ३५ बोल)

(१) न्यायसम्पन्न विभव-न्यायसे द्रव्य उपार्जन करना परन्तु विश्वासघात स्वामिद्रोह, [illegible], चोरी, झूठ बोल, झूठ माप आदि न करे। किसीकी [illegible] [illegible] मर्यादा आवश्यकसे [illegible] न करे। अपने [illegible] विरुद्ध कार्य न करे।

(२) शिष्टाचार-प्रशंसक नैतिक और धार्मिक पुरुषोंके मर्यादा सहित आचार व्यवहार देखना। उनके आचारव्यवहारोंका प्रेम और तारीफ करना।

(३) समान कुल शील और आचार व्यवहारवाले अन्य गोत्री के साथ अपने बच्चोंका विवाह (ब्याह) करना, इनमेंके आयुष्यादिका अवश्य विचार करना अर्थात् बालवय वृद्धवय में ब्याह न करना और [illegible] [illegible] होता है। [illegible] अवश्य देखना।

४ [illegible] न करना अर्थात् [illegible] [illegible] और [illegible] न रहना।

(५) प्रसिद्ध [illegible]

खरचा न करना ताके भविष्यमें समाधि रहै। आवा-
माफीक खरचा रखना।

(६) कीसीका भी अवगुनवाद न बोलना जो अवगुन-
[illegible] हो तो उन्हीकि संगत न करना तारीफ भी न करना प-
[illegible] अवगुण बोलके अपनि आत्माको मलीन न करे।

(७) जिस मकानके आसपासमें अच्छे लोगोंका मकान
[illegible] और दरवाजे अपने कब्जेमें हो, मन्दिर, उपासरा या साधर्मी
[illegible] भाइयो नजीक हो एसे मकानमें निवास करना चाहिये। ताके
[illegible] सुखसे धर्मसाधन करसके।

(८) धर्म, निति, आचारवन्त और अच्छी सलाहके देने-
वालोंकी संगत करना चाहिये ताके चित्तमें हमेशां समाधी
और बनी रहै।

(९) मातापिता तथा वृद्ध सज्जनोंकि सेवाभक्ति विनय
करना. तथा कोइ आपसे छोटा भी होतो उनका भी आदर करना
मदसे मधुर वचनोंसे बोलना।

(१०) उपद्रववाले देश, ग्राम या मकान हो उनका
परित्याग करना चाहिये। रोग मरकी, दुष्काल आदिसे मक.
[illegible]

[illegible]

(१३) अपने पूर्वजोंका चलाइ हुइ अच्छी मर्यादाको या वेषको ठीक तरहसे पालन करना कौमोंके देशादेश प्रवृत्ति या वेष नहीं बदलना।

(१४) आठ प्रकारके गुणोंको प्रतिदिन सेवन करते रहना यथा (१) धर्मशास्त्र श्रवण करनेकि इच्छा रखना (२) योग मीलनेपर शास्त्र श्रवणमें प्रमाद न करना (३) सुने हुवे शास्त्रके अर्थको समझना (४) समझे हुवे अर्थको याद करना (५) उसमें भी तर्क करना (६) तर्कका समाधान करना (७) अनुपेक्षा उपयोगमें लेना या उपयोग लगाना (८) तत्वज्ञानमें तल्लालीन होजाना शुद्ध श्रद्धा रखना दुसरेको भी तत्वज्ञानमें प्रवेश करा देना।

(१५) प्रतिदिन करने योग्य धर्मकार्यको संभालते रहेना, अर्थात् हाईसमय धर्मक्रिया करते रहना। धर्महीको सार समझना।

) १६) पहिले किये हुवे भोजनके पचजानेसे फिर भोजन करना इसीसे शरीर आरोग्य रहता है और चित्तमें समाधी रहेती है।

(१७) अपचा अजिर्ण आदि रोग होनेपर तुरत आहारको त्याग करना, अर्थात् खरी भूख लगनेपर ही आहार करना परन्तु लोलुपता होके भोजन करलेनेके बाद मीष्टानादि न खाना और प्रकृतिसे प्रतिकुल भोजन भी नहीं करना, रोग आनेपर औषधीके लिये प्रमाद न करना।

(१८) संसारमें धर्म, अर्थ, कामको साधन हुवे भी मोक्षमार्गको भूलना न चाहिये। सारवस्तु धर्म ही समझना। और समय पाकर धर्मकार्योंमे पुरुषार्थ भी करना।

(१९) अतिथी अभ्यागत गरीब रांक आदिको दु खी

समाधीका उपाय

देखके कुशलाभाव लाना यथाशक्ति इन्होंकी समाधीका उपाय करना। अनितिका

(२०) कोसीका पराजय करनेके इरादेसे अनितिका कार्य आरंभ नही करना, बिना अपराध किसीको तकलीफ न पहुंचाना।

(२१) गुणीजनोंका पक्षपात करना उन्होंका बहुमान करना सेवाभक्ति करना।

(२२) अपने फायदेकारी भी क्यों न हो परन्तु लोग त... राजा निषेध कीये हुवे कार्यमें प्रवृत्ति न करना।

(२३) अपनी शक्ति देखके कार्यका प्रारंभ करना प्रा... किये हुवे कार्यको पार पहुंचा देना।

(२४) अपने आश्रितमें रहे हुये मातापिता, स्त्रि... नोकरादिका पोषण ठीक तरहसे करना। कोसीको भी त... न हो एसा वर्ताव रखना।

(२५) जो पुरुष व्रत तथा ज्ञानमें अपनेसे बडा हो ... पूज्य तरीके बहुमान देना, और विनय करना। तथा गु... सन्मान करना।

(२६) दीर्घदृष्टा जो कार्य करना हो उन्होंमें ... [illegible] विचार करना चाहिये ... [illegible] पदार्थ या कार्य ...

(२७) विशेषज्ञ [illegible] ... [illegible]

[illegible]

[illegible] उपकार है ...

[illegible] प्रतिउपकार क...

(२९) लोकप्रीय–सदाचारसे पसी प्रवृत्ति अपनी रखनी चाहिये कि यह सब लोगोंको प्रीय हो अर्थात् परोपकारके लिये अपना कार्य छोडके दुसरेके कार्यको पहले करदेना चाहिये।

(३०) लज्जायन्त–लौकीक और लोकोत्तर दोनों प्रकारकी लज्जा रखना चाहिये कारण लज्जा है सो निति कि माता है लज्जायन्तको लोक तारीफ करते है बहुतसो पसत अकार्यसे बच जाते है।

(३१) दयालुदो–सब जीवोंपर दयाभाव रखना अपने प्राण के माफीक सब आत्मायोंको समझके कीसीकों भी नुकशान न पहुंचाना।

(३२) सुन्दर आकृतिवाला अर्थात् आप हमेशां हस्तवदन आनन्दमें रहना अर्थात् क्रुर प्रकृति या छीण छीण मन्मे क्रोधमानादिकि वृत्ति न रखना। शान्त प्रकृति रखनेसे अनेक गुणोंकि प्राप्ती होती है।

(३३) उन्मार्ग जाते हुवे जीवोंको हितबोध देके अच्छे रहस्तेका बोध करना उन्मार्गका फल कहते हुवे मधुर वचनोंसे समझाना।

(३४) अन्तरग वैरी क्रोध, मान, माया, लोभ, हर्ष, शोक इन्होंके पराजय करनेका उपाय या साधनों तैयार करनेसे वे शत्रुओंको अपने वश्यमें करना।

(३५) पांचों [illegible] अमण करानेवाले विषय (इन्द्रिय [illegible] और [illegible] है उनका दमन करना अर्थात् [illegible] न [illegible] करते रहना अर्थात् [illegible] सदा [illegible] हुवा है सामान्यका प्रथम [illegible] समाप्त है

यह [illegible] किया है कारण [illegible]

लोंको अधिक विस्तार कीतनी दफा बोझारूप हो जाता है वास्ते यह ६७ बोल यें कंठस्थ करके और विद्वानोंसे विस्तारपूर्वक समझके अपनी आत्माका कल्याण अवश्य करना चाहिये। इति।



थोकडा नं० २.

(व्यवहार सम्यक्त्वके ६७ बोल)

इन सडसठ बोलोंको बारह द्वार करके कहेंगे—१ सद्दहणा ४ (२) लिंग ३ (३) विनय १० प्रकार ४ शुद्धता ३ (५) लक्षण [illegible] (६) भूषण ५ (७) दोषण ५ (८) प्रभावना ८ (९) आगार ६ (१०) [illegible] जयणा ६ (११) स्थानक ६ (१२) भावना ६ इति।

(१) सद्दहणा चार प्रकारकी- (१) पर तीर्थीका अधिक [illegible] प्रशंसा न करे [illegible] परिचय न करे (२) अधर्म दर्शक पाखंडीयोंकी संगत न करे [illegible] समकितको पालना. उसका और कुलिंगादिकी [illegible] हानि नहीं हो सकती [illegible] तोंका परिचय करनेसे [illegible] उपासना करना [illegible]

[illegible]

(३) विनयका दश भेद– १) अरिहन्तोंका विनय करे (२) सिद्धोंका विनय० (३) आचार्यका वि० (४) उपाध्यायका वि० (५) स्थवीरका वि० (६) गण (बहुत आचार्योंके समुह)का वि० (७) कुल (बहुत आचार्योंके शिष्यसमुह)का वि० (८) स्वाधर्मीका वि० (९) संघका वि० (१०) संभोगीका विनय करे. इन दशोंका बहुमानपूर्वक विनय करे। जैन शासनमें 'विनय मूल धर्म है'। विनय करनेसे अनेक सद्गुणोंकी प्राप्ति हो सकती है।

(४) शुद्धताके तीन भेद–(१) मनशुद्धता–मन करके अरिहन्तदेव ३४ अतिशय, ३५ वाणी, ८ महाप्रातिहार्य सहित, १८ दूषण रहित×१२ गुण सहित हमारे देव है। इनके सिवाय हजारों कष्ट पडने पर भी सरागी देवोंका स्मरण न करे (२) वचन शुद्धता वचनसे गुण कीर्तन अरिहन्तोंके सिवाय दूसरे सरागी देवोंका न करे (३) काय शुद्धता–कायसे नमस्कार भी अरिहन्तोंके सिवाय अन्य सरागी देवोंको न करे।

(५) लक्षणके पांच भेद– १) सम–शत्रु मित्र पर सम परिणाम रखना (२) संवेग–वैराग भाव रखना याने संसार असार है विषय और कषायसे अनन्ताकाल भव भ्रमण करते हुवे इस भव अच्छी सामग्री मिली है इत्यादि विचार करना। ३ निर्वेग–शरीर और संसारका अनित्यपणा चिन्तवन करना। वने जहां तक इस मोहमय जगतसे अलग रहना और तारक जिनराजकी दीक्षा ले कर्म शत्रुओंको जीतके सिद्धपदको प्राप्त करनेकी हमेशा अभिलाषा रखना (४) अनुकम्पा स्वात्मा, परात्माकी

× [illegible]

कम्पा करनी अर्थात् दुःखी जीवको सुखी करना (५) आं-
–त्रैलोक्य पूजनीय श्री वीतरागके वचनोंपर दृढ भरोसा रखनी,
स्तिकता विचार, अर्थात् अस्तित्व भावमें रमण करना। यह
व्यवहार सम्यक्त्वका लक्षण है। जिस बातकी न्यूनता हो उसे
पूरी करना।

(६) भूषणके पांच भेद– १. जिन शासनमें धैर्यवंत हो।
शासनका हर एक कार्य धैर्यतासे करें। (२) शासनमें भक्तिवान
हो। (३) शासनमें क्रियावान हो (४) शासनमें चातुर्य हो। हर एक
कार्य ऐसी चतुरताके साथ करे ताके निर्विघ्नतासे हो (५)
शासनमें चतुर्विध संघकी भक्ति और बहुमान करनेवाला हो। इन
पांच भूषणोंसे शासनकी शोभा होती है।

(७) दूषण पांच प्रकारका–(१) जिन वचनमें शंका कर-
नी (२) कांक्षा–दूसरे मतोंका आडम्बर देखके उनकी वांछा कर-
नी ३ वितिगिच्छा–धर्म करणीके फलमें संदेह करना कि इसका
फल कुछ होगा या नहीं। अभीतक तो कुछ नहीं हुवा इत्यादि
४ पर पाखंडीसे हमेशां परिचय रखना ५ पर पाखंडीकी प्र-
शंसा करना ये पांच सम्यक्त्वके दूषण है। इसे टालने चाहिये।

(८) प्रभावना आठ प्रकारकी १ जिस कालमें जि-
सूत्रादि हो उनको गुरुगमसे जाणे यह शासनका प्रभाविक है
२ बडे आडम्बरके साथ धर्म कथाका व्याख्यान करके शासनकी प्रभा-
वना प्रभावना करे ३ विकट तपस्या करके शासनकी प्रभावना करे
करे ४ तीन काल और तीन मतका जाणकार हो ५ तर्क
तर्क, हेतु वाद, युक्ति न्याय और विद्यादि बलसे वादि
शास्त्रार्थमें पराजय करके शासनकी प्रभावना करे ६ पु-
... शासनकी प्रभावना करे (७) दक्षिना ...

शक्ति हो तो कवितो करके शासनकी प्रभावना करे (८) प्रभवयादि कोई बड़ा व्रत लेना हो तो प्रगट बहुतसे आदमियोंके बीच में ले। इसीसे लोगोंको शासन पर श्रद्धा और व्रत लेनेकी रुची बढती है अथवा दुर्बल स्वधर्मी भाइयोंकी सहायता करनी यह भी प्रभावना है परन्तु आजकल चौमासेमें अभक्ष वस्तुओंकी प्रभावना या लड्डु आदि बांटते है दीर्घदृष्टिसे विचारीये इस बांटनेसे शासनकी क्या प्रभावना होती है ? और कितना लाभ है इसको बुद्धिमान स्वयं विचार कर सके है अगर प्रभावनासे आपका सच्चा प्रेम हो तो छोटे छोटे तत्वज्ञानमय ट्रेक्टकि प्रभावना करिये तांके आपके भाइयोंको आत्मज्ञानकि प्राप्ती हो।

(९) आगार छे हैं-सम्यक्त्वके अंदर छे आगार है (१) राजाका आगार (२) देवताका० (३) न्यातका० (४) माता पिता गुरुजनोंका० (५) बलवंतका० (६) दुष्कालमें सुखसे आजीविका न चलती हो, इन छे आगारोंसे सम्यक्त्वमें अनुचित कार्य भी करना पडे तो सम्यक्त्व दूषित नहीं होता है।

(१०) जयणा छे प्रकारकी- १) आलाप-स्वधर्मी भाईयोंसे एक वार बोलना (२) संलाप-स्वधर्मी भाईयोंसे वार २ बोलना (३) मुनिको दान देना और स्वधर्मी वात्सल्य करना (४) प्रतिदिन वार २ करना (५) गुणीजनोंका गुण प्रगट करना (६) और वन्दन नमस्कार बहुमान करना।

(११) स्थान छे है (१) धर्मरूपी नगर और सम्यक्त्व रूपी दरवाजा (२) धर्मरूप वृक्ष और सम्यक्त्वरूपी जड (३) धर्मरूपी प्रासाद और सम्यक्त्वरूपी नीव (४) धर्मरूपी भोजन और सम्यक्त्वरूपी थाल (५) धर्मरूपी माल और सम्यक्त्वरूपी दुकान (६) धर्मरूपी रत्न और सम्यक्त्वरूपी तिजुरी०

(४) इन्द्रिय पांच–श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसेन्द्रिय और स्पर्शेन्द्रिय।

(५) पर्याप्ति छै–आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति, इन्द्रिय पर्याप्ति, श्वासोश्वास पर्याप्ति, भाषा पर्याप्ति, और मनःपर्याप्ति.

(६) प्राण दश–श्रोत्रेन्द्रिय बलप्राण, चक्षुइन्द्रिय बलप्राण, घ्राणेन्द्रिय बलप्राण, रसेन्द्रिय बलप्राण, स्पर्शेन्द्रिय बलप्राण, मनबलप्राण, वचन बलप्राण, काय बलप्राण, श्वासोश्वास बलप्राण आयुष्य बलप्राण.

(७) शरीर पांच–औदारिक शरीर वैक्रिय शरीर, आहारीक शरीर, तैजस शरीर, कार्मण शरीर।

(८) योग पंद्रह–च्यार मनका च्यार वचनका सात कायका, यथा सत्यमनयोग असत्यमनयोग मिश्रमनयोग व्यवहार मनयोग सत्यभाषा, असत्यभाषा मिश्रभाषा व्यवहार भाषा, औदारीक काययोग औदारीक मिश्र काययोग वैक्रिय काययोग वैक्रिय मिश्रकाययोग आहारक काययोग आहारक मिश्र काययोग और कार्मण काययोग।

(९) उपयोग बारहा–पांच ज्ञान, तीन अज्ञान च्यार दर्शन यथा मतिज्ञान, श्रुतज्ञान अवधिज्ञान मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान मतिअज्ञान श्रुतअज्ञान विभंगज्ञान चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन अवधिदर्शन, केवलदर्शन

(१०) कर्म आठ ज्ञानावर्णीय (जैसे आंखोंका पेंच) दर्शनावर्णीय (जैसे राजाका पोलीया) वेदनीय कर्म (जैसे मधु लिप्त छुरी) मोहनीय कर्म (मदिरा पान कीये हुए मनुष्य)

गुष्यकर्म (जैसे कारागृह) नामकर्म (जैसे चीतारो) गोत्र-
र्म (कुंभार) अंतरायकर्म (जैसे राजाका खजांची) ।

(११) गुणस्थानक- चौदा— मिथ्यात्वगुणस्थानक,
सास्वादन गु० मिश्र गु० अव्रतसम्यग्दृष्टि गु० देशव्रती श्रावक-
कागु० प्रमत्त साधुका गु० अप्रमत्त साधु गु० निवृतिबादर गु०
अनिवृतिबादर गु० सुक्ष्म संपराय गु० उपशान्त मोह गु० क्षीण-
मोह गु० सयोगि गु० अयोगि गु० ।

(१२) पांच इन्द्रियोंका-२३ विषय. श्रोत्रेन्द्रियकि
तीन विषय-जीवशब्द. अजीवशब्द मिश्रशब्द, चक्षुरिन्द्रियकी
पांच विषय. कालारंग, निलारंग, रातो (लाल), पीलोरंग,
सुपेदरंग, घ्राणेन्द्रियकी दोय विषय. सुगन्ध, दुर्गन्ध, रसेन्द्रियकी
पांच विषय तीक्त कटुक, कषाय आंविल, मधुर, स्पर्शेन्द्रि
यकी आठ विषय. कर्कश, मृदुल, गुरु, लघु, सीत. उष्ण, स्निग्ध
रूक्ष.

(१३) मिथ्यात्वदश—जीवकों अजीव श्रद्धे यह मिथ्या
त्व, अजवको जीव श्रद्धे यह मिथ्यात्व, धर्मको अधर्म श्रद्धे, अ
र्मको धर्म श्रद्धे० साधुको असाधु श्रद्धे० असाधुको साधु श्रद्धे०
कर्मोसे मुक्तको अमुक्त श्रद्धे० अष्टकर्मोसे अमुक्तको मुक्त श्रद्धे०
सारके मार्गको मोक्षका मार्ग श्रद्धे० मोक्षके मार्गको संस
मार्ग श्रद्धे यह मिथ्यात्व है विशेष मिथ्यात्व २५ प्रकारका
गुणस्थानद्वार ।

(१४) छोटी नवतत्त्वके ११५ बोल विस्तार
छो नवतत्त्वसे नवतत्त्वके नाम जीवतत्त्व, अजीवतत्त्व
तत्त्व पापतत्त्व, आश्रवतत्त्व, संवरतत्त्व, निर्जरातत्त्व
तत्त्व. मोक्षतत्त्व । जिसमें ।

(क) जीवतत्त्व के चौदा भेद है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय, बादर एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चोरिन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय, संज्ञीपंचेन्द्रिय एवं सातोंके पर्याप्ता. सातोंके अपर्याप्ता मीलानेसे १४ भेद जीवका है।

(ख) अजीवतत्त्वके चौदे भेद है यथा-धर्मास्तिकायके तीन भेद है धर्मास्तिकायके स्कन्ध, देश, प्रदेश, एवं अधर्मास्तिकायके स्कन्ध, देश, प्रदेश. एवं आकाशास्तिकायके स्कन्ध, देश, प्रदेश. एवं नौ. और दशवा काल तथा पुद्गलास्तिकायके च्यार भेद स्कन्ध. स्कन्धदेश स्कन्धप्रदेश, परमाणु पुद्गल एवं चौदा भेद अजीवका है।

(ग) पुन्यतत्त्वके नौ भेद है। अन्न देना पुन्य, पाणी देना पुन्य, मकान देणा पुन्य, पाटपाटला शय्या देना पुन्य. वस्त्र देना पुन्य मनपुन्य, वचनपुन्य, कायपुन्य, नमस्कारपुन्य.

(घ) पापतत्त्वके अठारा भेद। प्राणातिपात (जीवहिंसा करना) मृषावाद (झुठ बोलना) अदत्तादान (चोरी करना) मैथुन परिग्रह क्रोध, मान, माया, लोभ, राग द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन, परपरिवाद, रति अरति, माया-मृषावाद, मिथ्यात्वशल्य एवं १८ पाप

(च) आश्रवतत्त्वके २० भेद है यथा-मिथ्यात्वाश्रव अव्रताश्रव, प्रमादाश्रव कषायाश्रव अशुभयोगाश्रव, प्राणातिपाताश्रव, मृषावादाश्रव अदत्तादानाश्रव, मैथुनाश्रव, परिग्रहाश्रव श्रोत्रेन्द्रियको अपने कब्जेमें न रखनाश्रव एवं चक्षु इन्द्रिय घ्राणेन्द्रिय, रसेन्द्रिय, स्पर्शेन्द्रिय एवं मन० वचन० काय० अपने वशमें न रखे भंडोपकरण अयत्नासे लेना, अय-

त्नासे रखना. सूचीकुश अर्थात् तृणमात्र अयत्नासे लेना-रखना से आश्रव होता है।

(छ) संवरतत्त्व—के २० भेद हैं यथा समकित संवर, व्रतप्रत्याख्यान संवर अप्रमादसंवर, अकषायसंवर, शुभयोगसंवर, जीवहिंस्या न करे, झुठ न बोले, चोरी न करे, मैथुन न सेवे, परिग्रह न रखे, श्रोत्रेन्द्रिय अपने कब्जेमें रखे, चक्षु इन्द्रिय० घ्राणेन्द्रिय० रसेन्द्रिय० स्पर्शेन्द्रिय, मन, वचन, काया अपने कब्जेमें रखे, भंडोपकरण यत्नासे ग्रहन करे, यत्नासे रखे, एवं सूचीकुश अर्थात् तृणमात्र यत्नासे उठावे यत्नासे रखे एव २० भेद संवरका है।

(ज) निर्जरातत्त्व के १२ भेद हैं यथा अनशन, उणोदरी, वृत्तिसंक्षेप, रस (विगइ) का त्याग, कायाक्लेश, प्रतिसंलेषना, प्रायश्चित्त, विनय, वैयावच, स्वध्याय ध्यान, कायोत्सर्ग एवं १२ भेद.

(झ) बन्धतत्त्व के च्यार भेद हैं. प्रकृतिबन्ध, स्थितिबन्ध अनुभागबन्ध और प्रदेशबन्ध.

(ट) मोक्षतत्त्व के च्यार भेद हैं ज्ञान दर्शन चारित्र और तप

[illegible]

[illegible]

कुमार, विद्युत्कुमार, अग्निकुमार, द्विपकुमार, दिशाकुमार, उद-धिकुमार, वायुकुमार, स्तनीतकुमार एवं ११ दंडक हुवा. पृथ्वी-कायका दंडक, अपकायका, तेउकायका, वायुकायका, वनस्पति-कायका, बेइन्द्रियादंडक तेइन्द्रियका, चौरिन्द्रिया, तिर्यचपंचेन्द्रियका, मनुष्यका, व्यंतरदेवताका, ज्योतीषीदेवोंका और वैमानिकदेवोंका दंडक है।

(१७) लेश्या छे-कृष्णलेश्या, निललेश्या, कापोतले-श्या, तेजसलेश्या, पद्मलेश्या, शुक्ललेश्या.

(१८) दृष्टि तीन-सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि, मिश्रदृष्टि।

(१९) ध्यान चार-आर्तध्यान, रौद्रध्यान, धर्मध्यान, शुक्लध्यान।

(२०) षट् द्रव्य के जान पनेके ३० भेद. यथा षट् द्र-व्यके नाम. धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय पुद्गलास्तिकाय और काल.

(१) धर्मास्तिकाय- पांच बोलोंसे जानी जाती है. जेसे द्रव्यसे धर्मास्तिकाय एक द्रव्य है क्षेत्रसे संपूर्ण लोक परिमाण है. कालसे अनादिअन्त है. भावसे अरूपी है जिसमें वर्ण, गन्ध, रस स्पर्श कुच्छ भी नही है और गुणसे धर्मास्तिकायका चलन गुण है जेसे जलके सहायतासे मच्छी चलती है इसी माफिक धर्मा-स्तिकायकि सहायतासे जीव और पुद्गल चलन क्रिया करते है

(२) अधर्मास्तिकाय पांच बोलोंसे जानी जाती है द्रव्यसे अधर्मा० एक द्रव्य है क्षेत्रसे संपूर्ण लोक परिमाण है कालसे आदि अन्त रहीत है भावसे अरूपी है वर्ण गन्ध रस

स्पर्श कुच्छभी नहीं है गुणसे स्थिर गुण है जैसे थाका हुवा मुसाफरको वृक्षकी छायाका दृष्टान्त।

(३) आकाशास्तिकाय–पांच बोलोंसे जानी जाति है द्रव्यसे आकाशास्तिकाय एक द्रव्य है क्षेत्रसे लोकालोक परिमाण है कालसे आदि अंत रहीत है भावसे वर्ण गन्ध रस स्पर्श रहीत है गुणसे आकाशमें विकाशका गुण है जैसे भींतमें खुंटी तथा पाणीमें पतासाका दृष्टान्त है।

(४) जीवास्तिकाय–पांच बोलोंसे जानी जाती है द्रव्यसे जीव अनंते द्रव्य है क्षेत्रसे लोक परिमाण है. कालसे आदिअंत रहीत है भावसे वर्ण गन्ध रस स्पर्श रहीत है गुणसे जीवका उपयोग गुण है जैसे चन्द्रके कलाका दृष्टांत.

(५) पुद्गलास्तिकाय–पांच बोलोंसे जानी जाती है. द्रव्यसे पुद्गलद्रव्य अनंत है क्षेत्रसे संपूर्ण लोक परिमाण है. कालसे आदि अन्त रहीत है भावसे रूपी है वर्ण है गन्ध है रस है स्पर्श है गुणसे सडन पडन विध्वंस गुण है। जैसे बादलोंका दृष्टान्त।

(६) कालद्रव्य–पांच बोलोंसे जाने जाते है. द्रव्यसे अनंते द्रव्य-कारण अनंते जीव पुद्गलोंकि स्थितिको पुर्ण कर रहा है। क्षेत्रसे कालद्रव्य अढाइ द्वीप में है (कारण बाहारके चन्द्र सूर्य स्थिर है कालसे आदि अन्त रहीत है भावसे वर्ण गन्ध रस स्पर्श रहीत है गुणसे नई वस्तुको पुरानी करे पुरानी [illegible] दृष्टान्त

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

करे। (२) रात्रिके अंदर पका [illegible] नहीं (३) राम देह [illegible] अंदे पानी पड़ी [illegible] करे नहीं (४) परस्त्री गमनका त्याग करे स्वस्त्रीकि मर्यादा करे (५) परिग्रहका परिमाण करे (६) दिशाका परिमाण करे (७) स्नानादिकका नियम करे पन्द्रह कर्मादान व्यापारका त्याग करे (८) अनर्थदंड पापोंका त्याग करे (९) सामायिक करे. (१०) देशावकाशी व्रत करे. (११) पौषध व्रत करे (१२) अतिथिसंविभाग अर्थात् मुनि महाराजोंको प्रासुक एषणीक अशनादि आहार देवे।

(२३) मुनिमहाराजोंके पांच महाव्रत—(१) सर्वथा प्रकारे जीवहिंसा करे नहीं, करावे नहीं, करते हुवेको अच्छा समझे नहीं मनसे, वचनसे, कायासे. (२) सर्वथा प्रकारे झूठ बोले नहीं, बोलावे नहीं, बोलतांको अच्छा समझे नहीं मनसे, वचनसे, कायासे. (३) सर्वथा प्रकारे चोरी करे नहीं, करावे नहीं करतेको अच्छा समझे नहीं मनसे, वचनसे, कायासे. (४) सर्वथा प्रकारे मैथुन सेवे नहीं, सेवावे नहीं सेवतेको अच्छा समझे नहीं मनसे, वचनसे, कायासे. (५) सर्वथा प्रकारे परिग्रह रखे नहीं रखावे नहीं, रखते हुवेको अच्छा समझे नहीं मनसे, वचनसे, कायासे। (६) रात्रीभोजन करे नहीं, करावे नहीं, करते हुवेको अच्छा समझे नहीं मनसे, वचनसे, कायासे।

(२४) [illegible]

[illegible]

अंक १२ भाग ९
एक करण दो योगसे
करुं नहीं मनसे वचनसे
" " मनसे कायासे
" " वचनसे कायासे
करावुं नहीं मनसे वचनसे
" " मनसे कायासे
" " वचनसे कायासे
अनुमोदुं नहीं मनसे वचनसे
" " मनसे कायासे
" " वचनसे कायासे

अंक १३ भाग ३
एक करण तीन योगसे
करुं नहीं मनसे वचनसे कायासे
करावुं नहीं " " "
अनु० नहीं " " "

अंक २१ भाग ९
दो करण एक योगसे
करुं नहीं करावुं नहीं मनसे
" " वचनसे
" " कायासे
करुं नहीं अनुमोदुं नहीं मनसे
वचनसे
कायासे
करावुं नहीं अनु० नहीं मनसे
वचनसे
कायासे

अंक २२ भाग ९
करण दो योगसे
करुं न. करावुं न. मनसे वच
" " मनसे का
" " वचनसे का
करुं न. अनुमोदुं न. मनसे वच
" " मनसे काय
" " वचनसे काय
करावुं न. अनु. न. मनसे वच
" " मनसे काय
" " वचनसे काय

अंक २३ भाग ३
दो करण तीनयोगसे
करुं न. करावुं न. मन. वच. काया
" अनु० न. " " "
करावुं न. अ० न. " " "

अंक ३१ भाग ३
तीन करण तीन योगसे
करुं न. करा. न. अनु. न. मनसे
" " " वचनसे
" " " कायासे

अंक ३२ भाग ३
तीन करण दो योगसे
करुं न. करावुं न. अनु. न. मनवचनसे
" " " मनसे कायासे
" " " वचन. काया.

अंक ३३ भाग १
तीन करण तीन योगसे
करुं नहीं करावुं न अनु० नहीं
मनसे वचनसे कायासे

(२५) चारित्र पांच —सामायिक चारित्र, छेदोपस्थापनीय चारित्र, परिहारविशुद्धि चारित्र, सूक्ष्मसंपराय चारित्र यथाख्यात चारित्र।

(२६) नय सात —नैगमनय, संग्रहनय, व्यवहार नय ऋजुसूत्रनय शब्दनय समभिरूढनय, एवंभूतनय. ।

(२७) निक्षेपा चार नामनिक्षेप, स्थापनानिक्षेप, द्रव्यनिक्षेप, भावनिक्षेप,

(२८) समकित पांच औपशमिक समकित, क्षायो० स० क्षायिकस० वेदक स० सास्वादन समकित।

(२९) रस नव शृंगाररस, वीररस, करुणारस, हास्यरस, रौद्ररस, भयानकरस, अद्भुतरस बिभत्सरस, शान्तरस

(३०) अभक्ष्य २२ यथा वडनांटेटा, पीपळनांटेटा, [illegible] मधु मक्खन हिम, विष करा, सर्व जातिनी माटी, रात्रिभोजन, [illegible] अनंतकाय [illegible] [illegible] रींगणां, अजाण्यां फळ, तुच्छफळ [illegible]।

३१ [illegible]

३२ [illegible]

[illegible]

(३४)पाखंडमतके ३६३ भेद यथा—क्रियावादीके १८० मत, अक्रियावादी के ८४ मत, अज्ञानवादी के ६७ मत. विनयवादीके ३२ मत.

(३५) श्रावकोंके २१ गुण—(१) क्षुद्र मतिवाला न हो याने गंभीर चितवाला हो (२) रूपवंत सर्वांग सुन्दरऽकार यांने श्रावकव्रतको सर्वांग पालनेमें सुन्दर हो (३) सौम्य (शांत) प्रकृतिवाला हो (४) लोक प्रियहो यांने हरेककार्य प्रशंसनियकरे (५) क्रूर न हो, (६) इहलोक परलोकके अपयशसे डरे [७] शाव्वता न करे धोखाबाजीकर दुसरोंको ठगे नही (८) दुसरोंकि प्रार्थनाका भंग न करे (९) लौकीक लोकोत्तर लज्जा गुणसंयुक्त हो (१०) दयालु हो याने सर्वजीवोंका अच्छा वांच्छे (११) सम्यग्द्रष्टि हो याने सत्यविचारमें निपुण हो राग द्वेषका संग न करता हुवा मध्यस्थ भावमें रहे (१२) गुण गृहीपनारखे (१३) सत्य वातनिःशंकपणे कहे (१४) अपनेपरिवारको सुशील बनावे अपने अनुकुल रखे (१५) दीर्घदर्शी अच्छा कार्यभी खुब विचारके करे (१६) पक्षपात रहीत गुण अवगुणोंको जानने वाला हो (१७) तत्वज्ञ वृद्ध सज्जनोंकि उपासना करे (१८) विनयवान हो यांने चतुर्विध संघकाविनयकरे (१९) कृतज्ञ अपने उपर कीसीने भी उपकार कीया हो उनोंका उपकार भूले नही समयपाके प्रत्युपकारकरे (२०) संसारको असार समजे ममत्व भाव कम करे निर्लोभता रखे (२१) लब्धिलक्ष धर्मानुष्ठान धर्म व्यवहार करनेमें दक्ष हो याने संसारमें एक धर्म ही सारपदार्थ है

सेवं भंते सेवं भंते तमेवसच्चम्

थोकड़ा नम्बर ४

' श्री जीवाभिगम ' से लघुदंडक बालबोध.

॥ गाथा ॥

सरीरोगाहणा संघयण संठाणं सन्ना कसायाय
लेसिंदिय समुग्घाओ सन्नी वेदेय पज्जत्ति ॥ १ ॥
दिट्ठि दंसण नाण अनाणे जोगुवओग तह किमाहारे
उववाय ठिई समोहय चवणं गइरागइ चेव ॥ २ ॥

इस दो गाथाओंका अर्थ शास्त्रकारोंने बहुत विस्तारसे कीया है परन्तु कंठस्थ करनेवाले विद्यार्थी भाइयोंके लिये हम यहां पर संक्षिप्तसे लिखते है ।

(१) शरीर प्रतिदिन शीर्ण होना ओर नवाने पुद्गलोंका [illegible] है जिस शरीरके पांच भेद है (१) औदारिक शरीर [illegible] [illegible]

भवधारणी अवगाहना दुसरी उत्तर वैक्रिय, जो असली शरीरसे न्युनाधिक बनाना।

(३) संहनन-हाडकि मजबुतीसे ताकत-शक्तिको संहनन कहते हैं जिस्के छे भेद हैं वज्रऋषभनाराच, ऋषभनाराच, नाराच, अर्द्धनाराच, किलका. और छेवटा संहनन।

(४) संस्थान-शरीरकि आकृति. जिस्के छे भेद-समचतुरस्र, न्यग्रोध परिमंडल, सादीया, वांवना, कुब्ज, हुंडकसंस्थान.

(५) संज्ञा-जीवोंकि इच्छा-जिस्के च्यार भेद. आहारसंज्ञा भयसंज्ञा मैथुनसंज्ञा परिग्रहसंज्ञा.

(६) कषाय-जिनसे संसारकि वृद्धि होती है जिस्के च्यार भेद हैं क्रोध, मान, माया, लोभ.

(७) लेश्या-जीवोंके अध्यवसायसे शुभाशुभ पुद्गलोंको ग्रहन करना जिस्के छे भेद हैं कृष्ण० निल० कापोत० तेजस० पद्म० शुक्ललेश्या।

(८) इन्द्रिय-जिनसे प्रत्यक्षज्ञान होता है जिस्के पांच भेद. श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसेन्द्रिय, स्पर्शेन्द्रिय।

(९) समुद्घात-आत्मप्रदेशोंकि चालकर विषम बनाना जिस्का सात भेद हैं वेदनि० कषाय० मरणांतिक० वैक्रिय० तेजस० आहारक० केवली समुद्घात०

(१०) संज्ञी जिस्के मन हो वह संज्ञी मन न हो वह असंज्ञी

(११) वेद पांचवा विकार है मैथुनकि अभिलाषा करना उसे वेद कहते हैं जिस्के तीन भेद है स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद

(१२) पर्याप्ति जीव योनिमें उत्पन्न हो पुद्गलोंको ग्रहनकर अभिव्यक्त किये अपना अपना स्थान बनाते हैं जिस्के भेद छ आहार० शरीर० इन्द्रिय० श्वासोश्वास० भाषा० मनपर्याप्ति.

(१३) दृष्टि-तत्त्व पदार्थकी श्रद्धा, जिस्के तीन भेद. सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि, मिश्रदृष्टि,

(१४) दर्शन-वस्तुका अवलोकन करना-जिस्के च्यार भेद चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, केवलदर्शन.

(१५) ज्ञान-तत्त्ववस्तु को यथार्थ जानना जिस्के पांच भेद है मतिज्ञान, श्रुतिज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान।

(१६) अज्ञान-वस्तु तत्त्वको विप्रीत जानना जिस्के तीन भेद है मतिअज्ञान, श्रुतिअज्ञान, विभग अज्ञान।

(१७) योग-शुभाशुभ योगोंका व्यापार जिस्का भेद १५ देखो बोल ८ वा। (पैंतीस बोलोंमें)

(१८) उपयोग-साकारोपयोग (विशेष) अनाकारोपयोग (सामान्य)

(१९) आहार-रोमाहार, कंवलाहार लेते है उन्होंका दो भेद है व्याघात जो लोकके चरम प्रदेशपर जीव आहार लेते है उनोंको कीसी दीशामें अलोककि व्याघात होती है तथा अवर्म प्रदेशपर जीव आहार लेता है वह निर्व्याघात लेता है।

(२०) उत्पात-एक समयमें कोनसे स्थानमें कितने जीव उत्पन्न होते है।

(२१) स्थिति-एकयोनिके अन्दर एक भवमें कितने काल रह सके।

(२२) मरण-समुद्घात कर तांणवेग्राकि माफीक मरे. विगर समुद्घात गोलीके धडाकाकी माफीक मरे।

(२३) चवन एक समयमें कोनसी योनिमें कीतने जीव चवें.

(२४) गति आगति-कोनसी गतिमें जाके कोन योनिमें जीव उत्पन्न होता है और कोनसी योनिमें चवके जीव कोनसी गतिमें जाता है। इति।

लघुदंडक पढनेवालोंको पहले पैंतीसबोल कंठस्थ कर लेना चाहिये। अब यह चौवीसद्वार चौवीसदंडकपर उतारा जाते हैं।

(१) शरीर—नारकी देवताओं में तीन शरीर-वैक्रीय शरीर० तेजस० कारमण०। पृथ्वीकाय, अप० तेउ० वनास्पति बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चोरिन्द्रय. असंज्ञी तीर्यंच पंचेन्द्रिय, असंज्ञी मनुष्य और युगल मनुष्य इन बोलोंमें शरीर तीन पावे. औदारीक शरीर तेजस० कारमण०। वायुकाय और संज्ञी तीर्यंच में शरीर च्यार पावे. औदारीक. वैक्रीय तेजस. कारमण.। संज्ञीमनुष्यमें शरीर पांचोंपाय. सिद्धोंमें शरीर नहीं.

(२) अवगाहना—जघन्य-भवधारणी अंगुलके असंख्यातमें भाग है और उत्तर वैक्रिय करते हैं उनोंके जघन्य अंगुलके संख्यातमें भागहोती है अब भवधारणि तथा उत्तर वैक्रय कि उत्कृष्ट अवगाहाना कहते हैं

नाम.	उत्कृष्ट भवधारिणि		उत्कृष्टि उत्तरवैक्रिय	
	धनुष्य	आंगुल	धनुष्य	आंगुल
पहली नारकी	७॥	६	१५॥	१२
दूसरी .	१५॥	१२	३१।	०
तीसरी .	३१।	०	६२॥	०
चौथी .	६२॥	०	१२५	०
पांचमी ..	१२५	०	२५०	०
छट्ठी ..	२५०	०	५००	०
सातमी	५००		१०००	०

१० भुवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी पहला दुसरा देवलोक	७ हाथको	लाख जोजन
३-४ था देवलोक	६ हाथ	"
५-६ ठा ,,	५ हाथ	"
७-८ वा "	४ हाथ	"
९-१०-११-१२-दे.	३ हाथ	"
नौग्रैवेयक	२ हाथ	उत्तर वैक्रिय नहींकरे
चार अनुत्तर विमान	१ हाथ	"
सर्वार्थसिद्ध वि०	१ हाथ उणो	"
पृथ्वी, अप्, तेउ,	आंगुलके असंख्यातमो भाग	
वायुकाय...	" " "	आंगु० संख्या० भाग
वनस्पतिकाय	१००० जोजन-साधिक (कमल)	उत्तर वैक्रिय नहीं
बे इंद्रिय	१२ जोजन	"
ते इंद्रिय	३ गाउ	"
चौ इंद्रिय	४ गाउ	"
तिर्यंच पंचेंद्रिय	१००० जोजन	९०० जोजन
जलचर मछी	१००० जोजन	"

+ नोट–[illegible]

थलचर संज्ञी	६ गाउ	९०० जोजन
खेचर ,,	प्रत्येक धनुष्य	,,
उरपरिसर्प ,,	१००० जोजन	,,
भुजपरिसर्प ,,	प्रत्येक गाउ	,,
जलचर असंज्ञी	१००० जोजन	वैक्रिय नहीं करे
थलचर ,,	प्रत्येक गाउ	,,
खेचर ,,	प्र० धनुष्य	,,
उरपरिसर्प ,,	प्र० जोजन	,,
भुजपरिसर्प ,,	प्र० धनुष्य	,,
मनुष्य	३ गाउ	लाख जोजन झाझेरी
असज्ञी मनुष्य	आंगु० असं० भाग	उत्तर वैक्रिय करे नहि
देवकुरु, उत्तरकुरु	३ गाउ	,,
हरिवास, रम्यकवास	२ गाउ	,,
हेमवय, ऐरण्यवय	१ गाउ	,,
५६ अंतरद्वीप	८०० धनुष्य	,,
महाविदेहक्षेत्र	५०० धनुष्य	लाख जोजन साधिक
[illegible]	[illegible] ३ गाउ	उतरतें [illegible] गाउ
[illegible]	[illegible] गाउ	१ गाउ
[illegible]	१ [illegible]	[illegible] धनुष्य
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]

यह अवसर्पिणी कालकी अवगाहना है इससे उलटी उत्सर्पिणीकी समझना। सिद्धोंके शरीरकी अवगाहना नहीं है परंतु आत्म प्रदेशोंसे आकाश प्रदेशको अवगाहना (रोकाई) इस अपेक्षा जघन्य १ हाथ ८ आंगुल, मध्यम ४ हाथ १६ आंगुल, उत्कृष्ट ३३३ धनुष्य ३२ आंगुल, इति.

(३) संघयण—नारकी और देवतामें संघयण नहीं है किंतु नारकीमें अशुभ पुद्गल और देवतामें शुभ पुद्गल संघयणपणे प्रणमते है. पांच स्थावर, तीन विकलेंद्रिय, असन्नी तिर्यंच, असन्नी मनुष्यमें संघयण एक छेवट्ठ पावे. सन्नी मनुष्य और सन्नी तिर्यंचमें [illegible] संघयण पावे युगलीआमें एक वज्रऋषभनाराचसंघयण और सिद्धोंमें संघयण नहीं है. इति

(४) संठाण—[६] नारकी, पांच स्थावर तीन विकलेंद्रिय असन्नी तिर्यंच और असन्नी मनुष्यमें संठाण एक हूंडक पावे तथा देवता और युगलीआमें समचौरस संठाण पावे सन्नी तिर्यंच और सन्नी मनुष्यमें छ संस्थान पावे. सिद्धोंमें संस्थान नहीं है.

(५) कषाय—[४]-चोवीसों दंडकमें कषाय च्यारों पावे और सिद्ध अकषाई है।

(६) संज्ञा [४]—चारोंगति दंडकमें संज्ञा च्यारों पावे सिद्धोंमें संज्ञा नहीं है

(७) लेश्या पहली दूजी नारकीमें कापोत लेश्या। [illegible] कापोत और नील [illegible] चौथीमें नील [illegible] पांचवींमें नील और कृष्ण [illegible] छट्ठीमें कृष्ण [illegible] सातवींमें महाकृष्ण [illegible] १० भुवनपति [illegible] व्यंतर [illegible] पृथ्वीआप लेश्या [illegible] कापोत [illegible] तेउकाय वायुकाय,

२ पुरुषवेद और स्त्रीवेद । तीजा देवलोकमें सर्वार्थसिद्ध विमानतक पुरुषवेद है सन्नी मनुष्य औ सन्नीतिर्यंचमें वेद पावे तीन, सिद्ध अवेदी है।

(१२) पर्याप्ती—नारकी देवतामें पर्याप्ती पांच (मन और भाषा सामेल पावे) पांच स्थावरमें पर्याप्ती पावे चार क्रमसे, तीन विकलेंद्रिय और असन्नी तिर्यंचमें पर्याप्ती पावे पांच क्रमसे, असन्नी मनुष्यमें चारमें कुच्छ उणी क्रमसे; सन्नी मनुष्य सन्नी तिर्यंच और युगलीआमें पर्याप्ती पावे छ. सिद्धोंमें पर्याप्ती नहीं है।

(१३) दिट्ठी–नारकी, भुवनपति, व्यंतर ज्योतिषी, बारहा देवलोक, सन्नीतिर्यंच और सन्नी मनुष्यमें दृष्टि पावे तीनों, नवग्रेवेयकमें दो (सम्यक॰ मिथ्या॰) अथवा तीन पावे. पांच अनुत्तर विमानमें एक सम्यक्दृष्टि, पांच स्थावर, असन्नी मनुष्य और ५६ अंतरद्वीपके युगलीआमें एक मिथ्यादृष्टि, तीन विकलेंद्रिय असन्नी तिर्यंच और ३० अकर्मभूमि युगलीआमें दृष्टि पावे दो (१ सम्यक्दृष्टि २ मिथ्यादृष्टि. सिद्धोंमें सम्यक्दृष्टि है

(१४ दर्शन–नारकी देवता और सन्नीतिर्यंचमें दर्शन पावे तीन क्रमसे पांच स्थावर बेइंद्रिय तेइंद्रियमें दर्शन पावे एक अचक्षु चौरिंद्रिय असन्नीतिर्यंच असन्नी मनुष्य और युगलीआमें दर्शन पावे दो क्रमसे। सन्नी मनुष्यमें दर्शन पावे चार सिद्धोंमें केवल दर्शन है

(१५) नाण नारकी देवता और सन्नीतिर्यंचमें ज्ञान पावे तीन क्रमसे । पांच स्थावर, असन्नी मनुष्य और ५६ अंतर द्वीपका युगलीआमें नाण नहीं है तीन विकलेंद्रिय, असन्नी तिर्यं-

च और ३० अकर्मभूमी युगलीयामें नाण पावेदो क्रमसे तदा सन्नी मनुष्यमें ज्ञान पावे पांच सिद्धोंमें केवल ज्ञान है.

(१६) अनाण—नारकी. देवतामें नवग्रैवयक तक, तिर्यंच पंचेंद्री और सन्नी मनुष्यमें अनाण पावे तीन, पांच स्थावर तीन विकलेंद्रिय असन्नी तिर्यंच असन्नी मनुष्य और युगलीआमें अनाण पावे दो क्रमसे पांच अनुत्तर विमान और सिद्धोंमें अनाण नहीं है।

(१७) जोग—नारकी और देवतामें जोग पावे ११ (४) मनके (४) वचनके, वैक्रिय १, वैक्रियका मिश्र १, कार्मणकाय योग, पृथ्वि, अप, तेउ, वनस्पति, असन्नी मनुष्यमें योग पावे तीन (औदारिक १ औदारिकका मिश्र १ ९ कार्मण काययोग १) वायुकायमें पांच पावे (पूर्ववत् ३ और वैक्रिय, वैक्रियका मिश्र ज्यादा) तीन विकलेंद्रिय, असन्नी तिर्यंचमें योग पावे चार औदारिक १, औदारिकका मिश्र १, कार्मणकाय योग १. (और व्यवहार भाषा १) सन्नी तिर्यंचमें योग पावे १३ (आहारिक और आहारिकका मिश्र वर्जके) सन्नी मनुष्यमें योग पावे पंदरा । युगलीआमें योग पावे अग्यारा (४ मनका ४ वचनका औदारिक १, औदारिक मिश्र १, कार्मण काय योग १) सिद्धोंमें योग नहीं है

(१८) उपयोग [illegible] दो दो पावे और जो उप-[illegible] बारह [illegible] पांच ज्ञान, तीन अज्ञान [illegible] चार [illegible]

(१९) आहार—[illegible] आश्रय पांच स्थावर स्यात् तीन दिशि, स्यात् चार दिशि स्यात् पांच

दिशि, निर्व्याघाताश्रयी चोवीस दंडकका जीवनियमा छ दिशिका आहार लेवे। सिद्ध अनाहारिक.

(२०) उत्पात-(१) नारकी, १० भुवनपतियोंसे ८ वां देवलोक तक, तथा चार स्थावर (वनस्पति वर्जके) तीन विकलेंद्रिय, सन्नी या असन्नी तिर्यच, और असन्नी मनुष्य एक समयमें १-२-३ जाव संख्याता असंख्याता उपजे, वनस्पति एक समयमें १-२-३ जाव अनंता उपजे, नवमा देवलोकसे सर्वार्थसिद्ध तक तथा सन्नी मनुष्य और युगलीआ एक समयमें १-२-३ जाव संख्याता उपजे, सिद्ध एक समयमें १-२-३ जाव १०८ उपजे

(२१) ठीइ-स्थिति यंत्रसे जाणना.

नारकी	जघन्य	उत्कृष्ट
१ ली नारकी	१०००० वर्ष	१ सागरोपम
२ जी ,,	१ सागरोपम	३ सागरोपम
३ जी ,,	३ ,,	७ ,,
४ थी ,,	७ ,,	१० ,,
५ मी ,,	१० ,,	१७ ,,
६ ठी ,,	१७	२२
७ मी	२२	३३

देवता.

× चमरेन्द्र दक्षिण तर्फ	१०००० वर्ष	१ सागरोपम

[illegible]

तस्यदेवी	१०००० वर्ष	३॥ सागरोपम
नागादि नौ इन्द्र दक्षिण सर्वके	"	१॥ पल्योपम
तस्यदेवी	"	०॥। "
बलेन्द्र उत्तर सर्वके देव ..	"	१ सागरोपम झाझेरा
तस्यदेवी	"	४॥ पल्योपम
नागादि नव उत्तर सर्व	"	देसऊणो २ पल्योपम
तस्यदेवी	"	" १ "
व्यंतर देवता	"	१ पल्योपम
तस्यदेवी	"	०॥ "
चंद्र विमानवासी देव	०। पल्योपम	१ पल्योपम+लाख वर्षाधिक
तस्यदेवी	"	०॥ प०+५०००० वर्ष
सूर्य विमानवासी देव	"	१ प०+हजार वर्ष
तस्यदेवी	"	०॥ प०+५०० "
ग्रह विमानवासी देव	"	१ पल्योपम
तस्यदेवी	"	०॥ "
नक्षत्र विमा० देव	"	०॥ "
तस्यदेवी	०। पल्योपम	०। " झाझेरी
तारा विमा० देव	"	०। "
तस्यदेवी	"	साधिक
[illegible]	? पल्योपम	? सागरोपम
[illegible] देवी		? पल्योपम
[illegible] देवी		[illegible]
[illegible]	? पल्योपम झाझेरा	? [illegible]
[illegible] देवी		? पल्योपम
[illegible] देवी		[illegible]
[illegible]	? सागरोपम	? सागरोपम

चौथा देवलोकके देव	२ सा० झाझेरा	७ ,, झाझेरा
पांचमा ,, ,,	७ सागरोपम	१० सागरोपम
छट्टा ,, ,,	१० ,,	१४ ,,
सातमा ,, ,,	१४ ,,	१७ ,,
आठमा ,, ,,	१७ ,,	१८ ,,
नवमा ,, ,,	१८ ,,	१९ ,,
दशमा ,, ,,	१९ ,,	२० ,,
अगीआरमा ,, ,,	२० ,,	२१ ,,
बारहमा ,, ,,	२१ ,,	२२ ,,
नीचली त्रिक ,,	२२ ,,	२५ ,,
विचली ,, ,,	२५ ,,	२८ ,,
उपली ,, ,,	२८ ,,	३१ ,,
चार अनुत्तर विमान	३१ ,,	३३ ,,
सर्वार्थसिद्ध ,,	३३ ,,	३३ ,,
पृथ्वीकाय	अंतर्मुहूर्त	२२००० वर्ष
अपकाय	,,	७००० ,,
तेउकाय	,, ...	३ अहोरात्रि
वायुकाय ...	,,	३००० वर्ष
वनस्पतिकाय ...	,	१०००० ,,
बेइंद्रिय ...		१२
तेइंद्रिय		४९ दिन
चौरिंद्रिय		६ मास
[illegible]		[illegible]
[illegible]		[illegible]
[illegible]		[illegible]
[illegible]		[illegible]
[illegible]		[illegible]

जलचर संमूर्छिम
स्थलचर ..
खेचर ..
उरपरिसर्प ..
भुजपरिसर्प ..
असंज्ञी मनुष्य
संज्ञी ..
पहेलो आरो
बीजो ..
त्रीजो ..
चोथो ..
पांचमो ..
छठ्ठो ..

अंतर्मुहूर्त
..
..
..
..
..
बेसते आरे
३ पल्योपम
२ ..
१ ..
क्रोड पूर्व
१२० वर्ष
२० ..

क्रोड पूर्व
३ पल्योपम
पल्यो० असं० भाग
क्रोड पूर्व
..
अंतर्मुहूर्त
उतरते आरे
२ पल्योपम
१ ..
१ क्रोड पूर्व
१२० वर्ष
२० ..
१६ ..

दुर्गतिमां.

देवकुरु उत्तरकुरु
हरिवर्ष रम्यकवास
हैमवत हैरण्यवत
[illegible]

जघन्य.

देशऊणा ३ पल्यो०
.. २ ..
१
[illegible]

उत्कृष्ट.

३ पल्योपम
२
१ ..
पल्यो० असं० भाग
क्रोड पूर्व

[illegible]

८ मा देवलोक तक दो गतिसे आवे, दो गतिमें जाय। दंडकाभयी दो दंडक (मनुष्य और तिर्यंच) के आवे और दो दंडकमें जाये। सातवी नारकी दो गतिसे (मनुष्य, तिर्यंच) आवे, एक गतिमें जावे (तिर्यंचमें), दंडकाभयी २ दंडकको (मनुष्य, तिर्यंच) आवे, एक दंडक तिर्यंचमें जावे। दश भुवनपति, व्यंतर, जोतिषी, १-२ देवलोक दो गति (मनुष्य, तिर्यंच)से आवे, और दो गति (मनुष्य, तिर्यंच) में जावे, और दंडकाभयी २ दंडक (मनुष्य, तिर्यंच) को आवे, और पांच दंडकमें जावे (मनुष्य, तिर्यंच, पृथ्वि, पाणी, वनस्पति)। ९ वा देवलोकसे सर्वार्थसिद्ध विमानके देव, एक गति (मनुष्य) मेंसे आवे एक गतिमें जावे दंडकाभयी एक दंडक (मनुष्य) को आवे और एक दंडकमें जावे (मनुष्यमें)।

पृथ्वि, पाणी, वनस्पति, तीन गति (मनुष्य, तिर्यंच, देवता) से आवे, और २ गतिमें जावे (मनुष्य, तिर्यंच), दंडकाभयी २३ दंडक (नारकी वर्जी) का आवे, और १० दंडकमें जावे (९ स्थावर ३ विकलेंद्रिय, मनुष्य, तिर्यंच)। तेउ वायु दो गति (मनुष्य, तिर्यंच) मेंसे आवे और एक गति (तिर्यंच) में जावे, दंडकाभयी दश दंडक [illegible] को आवे और ९ दंडक (मनुष्य वर्जके) में जावे। तीन विकलेंद्रिय दो गति (मनुष्य तिर्यंच [illegible] और दो गति [illegible] मनुष्य तिर्यंच) में जावे [illegible]

विकलेंद्रिय, मनुष्य, तिर्यंच) को आवे और दशमें जावे (दश पूर्ववत)

सन्नि मनुष्य— चार गतिमेंसे आवे और चार गतिमें जावें अथवा सिद्ध गतिमें जावे, दंडकाश्रयी २२ (तेउ, वायु, वर्जी में से आवे और २४ में जावे तथा सिद्धमें जावे. । ३० अकर्मभूमि युग- लिया दोगति (मनुष्य तिर्यंच)मेंसे आवे एक गति (देवता) में जावे दंडकाश्रयी दो दंडकमें आवे और १३ दंडक (देवतामें) जावे. । ५६ अंतर द्वीप दो गतिमेंसे आवे एक गतिमें जावे. दंडकाश्रयी दो दंडकको आवे और ११ दंडक (१० भुवनपति, व्यंतर)में जावे.

सिद्धोमें आगत एक मनुष्यकी गति नहीं दंडकाश्रयी मनु ष्य दंडकसे आवे. इति.

२४ प्राण— जिन स्थानसे जीवते है प्राण दश है. (१) श्रोतेंद्रिय बलप्राण (२) चक्षु इंद्रियबलप्राण (३) घ्राणेंद्रिय० (४) रसेंन्द्रिय० (५) स्पर्शेन्द्रिय० (६) मन० (७) वचन० (८) काय० (९) श्वासोश्वास० (१०) आयु०

नारकी देवता सन्नि मनुष्य, सन्नि तिर्यंच और युग लिआमें प्राण पावे दस पांच स्थावरमें प्राण पावे चार (१) स्पर्श [illegible] काय [illegible] श्वासोश्वास० ४ आयु बेइंद्रियमें [illegible] [illegible] ४ रसें० ६ वचन. [illegible]इंद्रियमें प्राण पावे [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

थोकडा नम्बर ५

चोवीस दंडकमेंसे कितने दंडक किस स्थानपर मिलते हैं.

दंडक — स्थान

(प्रश्न) एक दंडक किस जगह पावे } नारकीमें पावे
(प्र) दो दंडक „ (उ) ज्योतिषमें पावे-२०+२१ मां
(प्र) तीन दंडक „ (उ) तिनविकलेंद्रियमें पावे-१७+१८+१९ मां
(प्र) चार दंडक „ (उ) स्थावरमें पावे १२+१३+१४+१५मां
(प्र) पांच दंडक „ (उ) एकेंद्रियमें „ १२+१३+१४+१५+१६
(प्र) छ दंडक „ (उ) तेजोलेश्याका अलद्धिआमें पावे जीस दंडकमें तेजोलेश्या न मले-१-१४-१५-१७-१८-१९ या
(प्र) सात दंडक „ (उ) वैक्रियका अलद्धिआमें ४ स्थावर ३ वि०
(प्र) आठ दंडक „ (उ) असन्नीमें ५ स्थावर ३ वि०
(प्र) नव दंडक „ (उ) तिर्यंचमें ५ स्थावर ४ त्रस
(प्र) दश दंडक „ (उ) भुवनपतिमें
(प्र) अगीआर दंडक „ (उ) नपुंसकमें १० औदारीक १ नारकी
(प्र) बारहा „ (उ) नीच्छालोकमें १० भु० व्यंतर ज्योतिषी
(प्र) तेरहा „ (उ) देवतामें
(प्र) चौद „ „ (उ) एकत वैक्रिय शरीरमें १३ वैक्रिय १ नारकी
(प्र) पंदर „ „ (उ) स्त्री वेदमें
(प्र) सोलह „ „ (उ) मत्ति तथा मनयोगमें
(प्र) सतरा (उ) समुच्चय वैक्रिय शरीरमें
(प्र) अढारा „ (उ) तेजोलेश्यामें ६ वर्जके
(प्र) ओगणीस (उ) त्रसकायमें ५ स्थावर वर्जके
(प्र) वीस (उ) जघन्य उत्कृष्ट अवगाहनावाला जीवोंमें
(प्र) एकवीस (उ) नीचा लोकमें ३ देवता वर्जके
(प्र) बावीस (उ) कृष्णलेश्यामें ज्योतिषी वि० वर्जके

प्र तेवीस ,, ,, (उ) भगवानका समोसरणमें १ नारकी वर्जके

प्र चौवीस ,, ,, (उ) समुच्चय जीवमें

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्.

थोकडा नम्बर. ६

सूत्र श्री पन्नवणाजी पद तीजा. (महादंडक)

गीनती.	मार्गणाका ९८ बोल.	जीवका भेद १४	गुणस्थान १४	योग १५	उपयोग १२	लेश्या ६
१	सर्वस्तोक गर्भज मनुष्य.	२	१४	१५	१२	६
२	मनुष्यणी संख्यात गुणी.	२	१४	१३	१२	६
३	बादर तेउकायके पर्याप्ता असं० गुणा	१	१	१	३	३
४	पांच अनुत्तर वैमानके देव	२	१	११	६	१
५	ग्रैवेयक उपरकी त्रिकके देव संख्या० गु०	२	२।३	११	९	१
६	मध्यमकी	२	२।३	११	९	१
७	नीचेकी	२	२।३	११	९	१
[illegible]	[illegible]	[illegible]	४	११	९	१
[illegible]	[illegible]	[illegible]	४	[illegible]	९	१
[illegible]	[illegible]	[illegible]	४	[illegible]	९	१
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	९	१
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११	९	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	९	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

१५	सातवा देवलोकके देव असं० गु०	२	४	११	९	१
१६	पांचवी नरकके नैरिया ,,	२	४	११	९	२
१७	छठे देवलोकके देव ,,	२	४	११	९	१
१८	चोथी नरकके नैरिया ,,	२	४	११	९	१
१९	पांचवे देवलोकके देव ,,	२	४	११	९	१
२०	तीजी नरकके नैरिया ,,	२	४	११	९	२
२१	चोथे देवलोकके देव ,,	२	४	११	९	१
२२	दुजी नरकके नैरिया ,,	२	४	११	९	१
२३	तीजा देवलोकके देव	२	४	११	९	१
२४	समुर्छिम मनुष्य	१	१	३	४	३
२५	दुजा देवलोकके देव ,,	२	४	११	९	१
२६	,, ,, की देवी संख्यात० गु०	२	४	११	९	१
२७	पहले देवलोकके देव असं० गु०	२	४	११	९	१
२८	की देवी सं० गु०	२	४	[illegible]	९	१
२९	भुवनपति देव असं० गु०	३	४		९	४
३०	देवी संख्या [illegible]	[illegible]	४	[illegible]	९	४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	
[illegible]	[illegible]		[illegible]		[illegible]	[illegible]

[illegible]	१	१	३९	व्यंतर देवी संख्या० गु०
[illegible]	१	२	४०	जोतीषी देव „
[illegible]	१	१	४१	„ देवी „
[illegible]	१	१	४२	खेचर नपुंसक „
१	१	१	४३	थलचर „ „
१	१	१	४४	जलचर „ „
१	१	२	४५	चौरिन्द्रियका पर्याप्ता सं० गु०
[illegible]	१	१	४६	पंचेंद्रियका „ विशेषा
१	१	१	४७	बेइन्द्रियका „ „
१	१	१	४८	तेइन्द्रियका „ „
[illegible]	४	३	४९	पंचेन्द्रियका अपर्याप्ता असं० गु०
[illegible]	१	१	५०	चौरिन्द्रियका „ विशेषा
[illegible]	१	१	५१	तेइन्द्रिय „ „
[illegible]	१	१	५२	बेइन्द्रिय „ „
[illegible]	१	१	५३	प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पति [illegible] पर्याप्ता असं० गु०
[illegible]	१	४		
[illegible]	१	१	५४	बादर निगोदया
[illegible]	[illegible]	[illegible]	५५	बादर पृथ्वी०
[illegible]	[illegible]		५६	अप०
[illegible]			५७	[illegible]
[illegible]			[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]		[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

६३	बादर वाउकायका अप० असं० गु	१	१	३	३	३
६४	सुक्ष्म तेउकायका अप० ,, ,,	१	१	३	३	३
६५	सुक्ष्म पृथ्विकायका अप० विशेषाः	१	१	३	३	३
६६	सुक्ष्म अप्कायका अप० वि० ..	१	१	३	३	३
६७	सुक्ष्म वायुकायका अप० वि० .	१	१	३	३	३
६८	सुक्ष्म तेउकायका पर्याप्ता सं० गु०	१	१	१	३	३
६९	सुक्ष्म पृथ्विकायका पर्याप्ता वि०..	१	१	१	३	३
७०	सुक्ष्म अप्कायका पर्याप्ता वि० ...	१	१	१	३	३
७१	सुक्ष्म वायुकायका पर्याप्ता वि० ..	१	१	१	३	३
७२	सुक्ष्म निगोदका अपर्याप्ता असं० गु०	१	१	३	३	३
७३	सुक्ष्म निगोदका पर्याप्ता सं० गु० ..	१	१	१	३	३
७४	अभव्य जीव अनंत गु० ...	२५	१	१३	६	६
७५	पडवाइ सम्मदिट्ठीअनंत गु० ...	१४	१४	१५	१२	६
७६	सिद्ध भगवान अनंत गु० ...	०	०	०	२	०
७७	बादर वनस्पति० पर्याप्ता अनंत गु०	१	१	१	३	३
७८	बादर पर्याप्ता वि ..	६	१४	१४	१२	६
७९	बादर वनस्पति अपर्याप्ता असं० गु०	५	१	३	३	४
८०	बादर अपर्याप्ता वि०	६	३	५	८।६	६
८१	समुच्चय बादर० वि०	१४	१४	१५	१२	६
८२	सुक्ष्म वनस्पति अपर्याप्ता असं० गु०			३	३	३
८३	सुक्ष्म अपर्याप्ता वि०			३	३	३
८४	सुक्ष्म वनस्पति पर्याप्ता सं० गु०				३	३
	सुक्ष्म पर्याप्ता वि०	१			३	३
८६	समुच्चय सुक्ष्म वि०	५		३	३	३

८७ भवसिद्धि जीव वि०	१४	१४	१५	१२	६
८८ निगोदका जीव वि०	४	१	३	३	३
८९ वनस्पति जीव वि०	४	१	३	३	४
९० एकेंद्रिय जीव वि०	४	१	५	३	४
९१ तिर्यंच जीव वि०	१४	५	१३	९	६
९२ मिथ्यात्वि जीव वि०	१४	१	१३	९	६
९३ असती जीव वि०	१४	४	१३	९	६
सकषायी जीव वि०	१४	१०	१५	१०	६
छद्मस्थ जीव वि०	१४	१२	१५	१०	६
सयोगी जीव वि०	१४	१३	१५	१२	६
संसारी जीव वि०	१४	१४	१५	१२	६
समुच्चय जीव वि०	१४	१४	१५	१२	६

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्

—⁂◎⁂—

थोकड़ा नम्बर ७

सूत्रश्री पन्नवणाजी पद ६.

(१) समुच्चय च्यार गति संज्ञीमनुष्य और संज्ञी तीर्यचमें उत्कृष्ट विरह १२ मुहूर्तका है.

(२) पहली नरक दश भुवनपति, व्यंतर, ज्योतीषी, सौधर्मेशान देव और असंज्ञी मनुष्यमें २४ मुहुर्त. दुजी नरकमें सात दिन, तीजी नरकमें पंदरा दिन, चोथी नरकमें एक मास, पांचवी नरकमें दो मास, छठी नरकमें च्यार मास, सातवी नरक सिद्धगति और चौसठ इन्द्रोंमें विरह छे मासका है.

(३) तीजा देवलोकमें नौदिन वीस महुर्त, चोथा देवलोकमें बारहा दिन दश मुहुर्त, पांचवा देवलोकमें साढावावीस दिन, छठा देवलोकमें पैंतालीस दिन, सातवा देवलोकमें एसी दिन, आठवा देवलोकमें सौ दिन नौवा दशवा देवलोकमें सैकडों मास, इग्यारवा बारहा देवलोकमें सेकडों वर्षोंका, ग्रीवेयक पहले त्रीकमें संख्याते सैकडों वर्ष, दुसरी त्रीकमें संख्याते हजारों वर्ष, तीसरी त्रीकमें संख्याते लाखों वर्ष, च्यारानुत्तर वैमानमें पल्योपमके असंख्यातमें भाग, सर्वार्थसिद्ध वैमानमें पल्योपमके संख्यातमें भाग।

(४) पांच स्थावरोंमें विरह नही है. तीन विकलेन्द्रिय, असंज्ञी तीर्यचमें अंतरमुहुर्त.

(५) चन्द्र सूर्यके ग्रहणापेक्षा विरह पडे तो जघन्य छे मास उत्कृष्ट चन्द्रके बैयालीस मास, सूर्यके अडतालीस वर्ष।

(६) भरतेरवतक्षेत्रापेक्षा साधु, साध्वी श्रावक श्राविका आश्रयी जघन्यतो ६३००० वर्ष और अरिहंत, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव आश्रया जघन्य ८४००० वर्ष उत्कृष्ट सबको देशोन अठारा क्रोडाक्रोड सागरोपम का। इति।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्

— ✻ —

थोकडा नम्बर ८

सूत्रश्री भगवतीजी शतक १२ वा उद्देशा ५ वां.

(रूपी अरूपीके १०६ बोल.)

रूपी पदार्थ दो प्रकारके होते हैं एक अष्ट स्पर्शवाले जीनसे कीतनेक पदार्थोको चरम चक्षुवाले देख सके. दुसरे च्यार स्पर्शवाले रूपी जीनोंको चरम चक्षुवाले देख नही सके. अतिशय ज्ञानी ही जाने। अरूपी-जीनोंको केवलज्ञानी अपने केवलज्ञानद्वारा ही जाने-देखे.

(१) आठ स्पर्शवाले रूपीके संक्षिपसे १५ बोल है यथा-छे द्रव्यलेश्या (कृष्ण, निल कापोत, तेजस, पद्म, शुक्ल) औदारीक शरीर, वैक्रियशरीर, आहारकशरीर, तेजसशरीर एवं १० तथा समुचय, घणोदधि, घणवायु, तणवायु, बादर पुद्गलोंका स्कन्ध और कायाका योग एवं १५ बोलमें वर्णादि २० बोल पावे। ३००

(२) च्यार स्पर्शवाले रूपीके ३० बोल है. अठारा पाप, आठ कर्म, मन योग, वचन योग सुक्ष्मपुद्गलोंका स्कन्ध, और कारमणशरीर एवं ३० बोलमें वर्णादि १६ बोल पावे। ४८० बोल.

(३) अरूपीके ६१ बोल हैं अठारा पापका त्याग करना बारह उपयोग कृष्णादि छे भावलेश्या, च्यार संज्ञा (आहार [illegible] परिग्रह) च्यार मतिज्ञानके भागा (उग्गह ईहा आ- [illegible] च्यार बुद्धि उत्पातिका विनयकी कर्मकी पारि- [illegible] [illegible] मिअदृष्टि पांच [illegible] धर्मास्तिक अधर्मास्तिक आकाशास्तिक जीवास्तिक. और [illegible] पांच प्रकारसे जीवको हानि [illegible] उत्थान कर्मे बल [illegible] एवं [illegible] बाद अरूपीके है। इति.

॥ सेव भंते सेव भंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नं ६

श्री पन्नवणा सूत्र पद ३ जो.

(दिशाणुवद)

दिशाणुवद-२४ दंडकके जीव किस दिशामें ज्यादा है और किस दिशामें कम है सो इस थोकडे द्वारे बतलायेंगे ।

जहां पाणी होता है वहां बहुत जीव होते हैं जिसका नाम समुचय जीव, अपुकाय, वनस्पतिकाय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय चौरिन्द्रिय पंचेन्द्रिय. इन बहुत जीवोंका पाणीमें अलग अलग व्याख्या करी है यद्यपि यह अधिका होनेसे यहां नहीं लीखते हैं. सबसे स्तोक ७ बोलोंका जीव पश्चिम दिशामें-कारण जंबुद्वीपकी जगतिसे पश्चिम दिशा लवण समुद्रमें १२००० जोजन जावे तब १२००० जोजनका लंबा चौडा गौतम द्वीप आवे, वह पृथ्वीकाय है। इस वास्ते पाणीका जीव कमती है पाणीका जीव कम होनेसे बाकी पांचोंका भी जीव कम है [illegible]

[illegible]

उनसे पूर्वमें विशेषाः कारण सूर्य चन्द्रका द्वीप पृथ्वीमय है. उनसे पश्चिममें विशेषाः कारण गौतम द्वीप पृथ्वीमय है.

तेउकाय, मनुष्य, और सिद्ध सबसे स्तोक दक्षिण उत्तरमें कारण भरतादि क्षेत्र छोटा है. उनसे पूर्व दिशा संख्यातगुणा कारण महाविदेह क्षेत्र बडा है. उनसे पश्चिम दिशा विशेषाः कारण सलीलावती विजया १००० जोजनकी ऊंडी है. जिसमें मनुष्य घणा, तेउकाय घणी और सिद्ध भी बहोत होते है.

वायुकाय. और व्यंतरदेव सबसे स्तोक पूर्व दिशामें कारण धरतीका कठणपणा है. उनसे पश्चिम दिशा विशेषाः कारण सलीलावती विजया है. उनसे उत्तर दिशा विशेषाः कारण भुवनपतियोंका ३ क्रोड और ६६ लाख भुवन है. उनसे दक्षिण दिशा विशेषाः कारण भुवनपतिका ४ क्रोड और ६ लाख भुवन है (पोलारकी अपेक्षा)

भुवनपति सबसे स्तोक पूर्व पश्चिममें कारण भुवन नहीं है आना जानासे लाधे. उनसे उत्तरमें असंख्यात गुणा कारण ३ क्रोड और ६६ लाख भुवन है उनसे दक्षिणमें असंख्यात गुणा कारण ४ क्रोड और ६६ लाख भुवन है. भुवनोंमें देव ज्यादा है.

जोतीषीदेव सबसे थोडा पूर्व पश्चिममें कारण उत्पन्न होनेका स्थान नहीं है उनसे दक्षिणमें विशेषा उत्पन्न होनेका स्थान है. उनसे उत्तरमें विशेषा कारण मानसरोवर तलाव जम्बुद्वीपकी जगतिसे उत्तरके तरफ असंख्याता द्वीप समुद्र जावे तब अरुणोवर नामका द्वीप आवे जिसके उत्तरमें [illegible] जोजन जावे तब मानसरोवर तलाव आता है वह तलाव बडा शोभनीक और बहुत पानीसे भरा है और समस्त असुर-तालाबमें मच्छ कच्छ जलचर जानवरोंको देखके नियाणा कर मरके जोतीषी होवे इसलिये उत्तरदिशामें जोतीषीदेव ज्यादा है

पहला, दुजा, तीजा, और चौथा देवलोकका देवता सबसे स्तोक पुर्व पश्चिममें कारण पुष्पावेकरणीय विमान ज्यादा है. और पंक्तिबंध क्रम है। उनसे उत्तरमें असंख्यातगुणा कारण पंक्ति बंध विशेष है उनसे दक्षिणमें विशेषा कारण देवता विशेष उपजे.

पांचमा, छट्ठा, सातमा, आठमा देवलोकका देवता सबसे स्तोक पुर्व, पश्चिम, उत्तरमें उनसे दक्षिणमें असं० गु.

नवमासे सर्वार्थसिद्ध विमान तक चारो दिशामें समतुल्य है पहेली नारकीका नेरइया सबसे स्तोक पुर्व, पश्चिम उत्तरमें उनसे दक्षिणमें असंख्यातगुणा कारण कृष्णपक्षी जीव घणा उपजे इसी माफक सातोही नारकीमें समझ लेना.

अल्पाबहुत्व—सर्वस्तोक सातवी नरकके पुर्व पश्चिम उत्तरके नैरिया. उनोसे दक्षिणके नैरिये असंख्यातगुणे. सातवी नरकके दक्षिणके नैरियेसे छट्ठी नरकके पुर्व पश्चिम उत्तरके नैरिये असं० गु० उनोंसे दक्षिणके नैरिये असं० गु०। छट्ठी नरकके दक्षिणके नैरियोंसे पांचवी नरकके पुर्व पश्चिम उत्तरके नैरिये असं० गु० उनोंसे दक्षिणके नैरिये असं० गु० उनोसे चौथी नरकके पुर्व पश्चिम उत्तरके नैरिये असं० गु० उनोंसे दक्षिणके नै० असं० गु० उनोंसे तीजी नरकके पुर्व पश्चिम उत्तरके नैरिये असं० गु० उनोंसे दक्षिणसे असं० गु० उनोसे दुजी नरकके पुर्व पश्चिम उत्तरके नैरिये असं० गु० उनोसे दक्षिणके असं० गु० दुजी नरकके दक्षिणके नैरियोंसे पहली नरकके पुर्व पश्चिम उत्तरके नैरिये असं० गु० उनोसे दक्षिणके नैरिये असं० गुणा० होते।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चं।

~~~
~~~

थोकडा नं० १०

—❀◎❀—

छ कायका थोकडा.

नामद्वार १	गोत्रद्वार २	वर्णद्वार ३	संठाणद्वार ४	एक महूर्तमें भव ५	अल्पाबहुत्व ६
इंद्रीस्थावरकाय	पृथ्वीकाय	पीलो	चन्द्र मसुरकी दाल	१२८२४	३ विशेषाः
ब्रह्मीस्थावरकाय	अपकाय	सफेद	पाणीका परपोटा	१२८२४	४ विशेषाः
सप्पीस्थावरकाय	तेउकाय	लाल	सुइकलाप(भारो)	१२८२४	२ असंख्यातगुणा
सुमति स्थावर काय	वायुकाय	नीलो	पताका	१२८२४	५ विशेषाः
पयावच्च स्थावर काय	वनस्पति काय २	नाना प्रकारको	नाना प्रकारका	३२००० प्रत्येक ६५५३६ साधारण	६ अनंतगुणा
जंगमकाय	१ प २ सा. त्रसकाय	नाना प्रकारको	नाना प्रकारका	८०×६०×४०×२४×१	१ सबसे थोडा

[illegible] ८० बेइंद्रिय, ६० तेइं०, ४० चौरिं०, २४ असन्नी पंचें० १ सन्नी पंचेन्द्रिय.

सेवं भंते सेवं भंते-तमेव सच्चम्

थोकडा नम्बर ११

सूत्रश्री भगवतीजी शतक १३ उद्देशो १–२.

(उपयोगाधिकार.)

उपयोग बारह है जिस्में कौन गतिमें जाता हुवा जीव कीतने उपयोग साथमें ले जाते है और कौन गति से आता हुवा जीव साथमें कीतने उपयोग ले आते है यह सब इस थोकडे द्वारा बतलाया जाता है।

(१) पहली, दुसरी, तीसरी नरकमें जाते समय आठ उपयोग लेके जाते है यथा-तीनज्ञान (मतिज्ञान, श्रुतिज्ञान अवधिज्ञान) तीन अज्ञान (मति, श्रुति, विभंगज्ञान) दोय दर्शन (अचक्षु, अवधिदर्शन) और सात उपयोग लेके पीछा निकले. एक विभंगज्ञान वर्जके। चोथी, पांचमी, छठी नरकमें पूर्ववत् आठ उपयोग लेके जावे. और पांच उपयोग लेके निकले अर्थात् इन तीनों नरकसे निकलनेवाला अवधिज्ञान अवधिदर्शन नही लाता है. सातवी नरकमे पांचज्ञान तीन अज्ञान–दो दर्शन) लेके जाय और तीन उपयोग लेके निकले दो अज्ञान एक दर्शन)

(२) भुवनपति व्यन्तर ज्योतीषी देव आठ उपयोग लेके जावे पूर्ववत और पाच उपयोग लेके निकले दो ज्ञान दो अज्ञान एक दर्शन । बारहा देवलोक नौग्रैवेयक में आठ उपयोग (पूर्ववत् लेके जावे और सात उपयोग लेके निकले) तीनज्ञान दो अज्ञान दो दर्शन । अनुत्तर वैमानमें पाच उपयोग लेके जावे तीन ज्ञान दो दर्शन एवं पाच उपयोग लेके निकले।

३ पांच स्थावरमें तीन उपयोग लिये आवे और तीन उपयोग ही लिये निकले (दो अज्ञान, एक अचक्षु दर्शन)। तीन विकलेन्द्रिय पांच उपयोग लिये आवे (दो ज्ञान, दो अज्ञान एक अचक्षु दर्शन) और तीन उपयोग लिये निकले (दो अज्ञान, एक अचक्षु दर्शन) और तिर्यंच पांचेन्द्रिय पांच उपयोग लिये आवे (दो ज्ञान दो अज्ञान एक अचक्षु दर्शन) और आठ उपयोग लिये निकले (तीन ज्ञान, तीन अज्ञान दो दर्शन)। मनुष्यमें सात उपयोग (तीन ज्ञान, दो अज्ञान, दो दर्शन) लिये आवे और आठ उपयोग (तीन ज्ञान, तीन अज्ञान, दो दर्शन) लिये निकले। सिद्धोंमें केवलज्ञान, केवल दर्शन लिये जीव जाता है यह आदि जीव आदि सर्व शास्त्रोंसे आगमद्वारमें विश्रामस्थान होते हैं। इति.

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्



थोकडा नम्बर १२

सूत्रश्री भगवती शतक १ उ० २.

[illegible] बोल

[illegible]

नं०	[illegible]	जघन्य	उत्कृष्ट
१	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२	[illegible]	[illegible]	अनन्त [illegible]
३	[illegible]	[illegible]	[illegible]

४	अविराधि श्रावक	सौधर्मकल्प	अच्युतकल्प
५	विराधि श्रावक	भुवनपति	ज्योतीषीमें
६	असज्ञी तीर्यंच	,,	व्यंतरदेवोंमें
७	कन्दमूल खानेवाले तापस	,,	ज्योतीषीमें
८	हांसी ठठा करनेवाले मुनि (कदर्पीया)	,,	सौधर्मकल्प
९	परिव्राजक सन्यासी तापस	,,	ब्रह्मदेवलोक
१०	आचार्यादिका अवगुण बोलनेवाले किल्बिषीया मुनि	,,	लांतकमें
११	सज्ञी तीर्यंच	,,	आठवा देवलोक
१२	आजीवियामाधु गोशालाके मतका	,,	अच्युतकल्प
१३	यंत्र मंत्र करनेवाले अभोगी साधु	,,	,,
१४	स्वलींगी दर्शन वमनगा	,,	नौ ग्रैवेयक

चौदवां बोलमें भव्य जीव है पहले बोलमें भव्याभव्य दोनों है। इति.

सेव भंते सेव भंते तमेव सच्चम्



थोकडा नम्बर २३

सूत्र श्री ज्ञाताजी अध्ययन ८ वां

(तीर्थंकर नाम बन्धके २० कारण)

(१) श्री अरिहन्त भगवानके गुण स्तवनादि करनेसे।
(२) श्री सिद्ध भगवानके गुण स्तवनादि करनेसे।

(३) श्री पांच समति तीन गुप्ति यह अष्ट प्रवचनकी माता है. इन्होंको सम्यक्प्रकारसे आराधन करनेसे।
(४) श्री गुणवन्त गुरुजी महाराजका गुण करनेसे।
(५) श्री स्थिवरजी महाराजके गुणस्तवनादि करनेसे।
(६) श्री बहुश्रुतों-गीतार्थोंका गुणस्तवनादि करनेसे।
(७) श्री तपस्वीजी महाराजके गुणस्तवनादि करनेसे।
(८) लीया हुवा ज्ञानको वारवार चिंतवन करनेसे।
(९) दर्शन (समकित) निर्मल आराधन करनेसे।
(१०) सात तथा १३४ प्रकारके विनय करनेसे।
(११) कालोकाल प्रतिक्रमण करनेसे।
(१२) लिये हुये व्रत-प्रत्याख्यान निर्मल पालनेसे।
(१३) धर्मध्यान-शुक्लध्यान ध्याते रहनेसे।
(१४) बारह प्रकारकी तपश्चर्या करनेसे।
(१५) अभयदान-सुपात्रदान देनेसे।
(१६) दश प्रकारकी वैयावच्च करनेसे।
(१७) चतुर्विध संघको समाधि देनेसे।
(१८) नये नये अपूर्व ज्ञान पढनेसे।
(१९) सूत्र सिद्धान्तकी भक्ति-सेवा करनेसे।
(२०) [illegible] प्रवचनकी [illegible] और समकितका उद्योत करनेसे।

[illegible]

सवि जीव करूं शासन रसी ॥

— ❧ —

थोकडा नम्बर १४

(जलदी मोक्ष जानेके २३ बोल)

(१) मोक्षकी अभिलाषा रखनेवाला जलदी २ मोक्ष जावे।
(२) तीव्र-उग्र तपश्चर्या करनेसे ,, ,,
(३) गुरुगम्यतापूर्वक सूत्र-सिद्धान्त सुने तो जलदी २ ,,
(४) आगम सुनके उसीमें प्रवृत्ति करनेसे ,, ,,
(५) पांचो इन्द्रियोंका दमन करनेसे ,, ,,
(६) छे कायाको जानके उन जीवोंकी रक्षा करे तो ज० ,,
(७) भोजन समय साधु-साध्वीयोंकी भावना भावे तो जलदी २ मोक्ष जावे।
(८) आप सद्ज्ञान पढे और दुसरोंको पढावे तो ज० मोक्ष जावे
(९) नव निदान न करे तथा नौ कोटी प्रत्याख्यान करनेसे ,,
(१०) दश प्रकारकी वैयावच करनेसे जलदी २ मोक्ष जावे।
(११) कषायको निर्मुल करे पतली पाडे तो ,, ,,
(१२) छती शक्ति क्षमा करे तो ,, ,,
(१३) लगा हुवा पापकी शीघ्र आलोचना करनेसे ज० ,,
(१४) ग्रहन किये हुवे नियम अभिग्रहको निर्मल पाले तो जलदी २ मोक्ष जावे।
(१५) अभयदान सुपात्रदान देनेसे जलदी २ मोक्ष जावे
(१६) सच्चे मनसे शील-ब्रह्मचर्य व्रत पालनेसे ज०
(१७ निर्वद्य पापरहित मधुरवचन बोलनेसे .
(१८) लिया हुवा संयमभारको स्थितोस्थित पहुचानेसे जलदी २ मोक्ष जावे।

(१९) धर्मध्यान-शुक्लध्यान ध्यानेसे जल्दी २ मोक्ष जावे।
(२०) दश मासमें दो दो पौषध करनेसे ,, ,,
(२१) उभयकाल प्रतिक्रमण करनेसे ,, ,,
(२२) रात्रीके अन्तमें धर्मजागरना (तीन मनोरथ) करे तो जल्दी २ मोक्ष जावे।
(२३) आराधिक हो आलोचना कर समाधि मरन मरे तो जल्दी २ मोक्ष जावे।

इन तेवीस बोलोंको पहले सम्यक्त्वपूर्वक जानके सेवन करनेसे जीव जल्दी २ मोक्ष जाते हैं इति।

॥ सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नम्बर १५

(परम कल्याणके ४० बोल.)

जीवों के परम कल्याण के लिये आगमोंमें अति उपयोगी बोलोंका संग्रह किया जाता है.

(१) समकित निर्मल पालनेसे 'जीवोंका परमकल्याण' होता है। राजा श्रेणिक कि माफीक। (श्री स्थानायांग सूत्र)

(२) तपश्चर्या कर निदान न करनेसे जीवोंका "परम कल्याण होता है" तामली तापसकि माफीक (सूत्र श्री भगवतीजी)

(३) मन वचन कायाके योगोंको निश्चल करनेसे जीवोंका "परम गजसुकमाल मुनिकि माफीक (श्री अंतगड सूत्र)

(४) क्षमासहित [illegible] धर्मको धारण करनेसे जीवोंके "परम० अर्जुनमालीकि माफीक (श्री अंतगड सूत्र)

(५) पांचमहाव्रत निर्मल पालनेसे जीवोंके "परम०" श्री गौतमस्वामिजीकि माफीक (श्री भगवतीजी सूत्र)

(६) प्रमाद त्याग अप्रमादि होनेसे जीवोंके "परम०" श्री शैलगराजऋषिकी माफीक (श्री ज्ञातासूत्र)

(७) पांचो इन्द्रियोंका दमन करनेसे जीवोंके "परम०" श्री हरकेशी मुनिराजकि माफीक (श्री उत्तराध्ययनजी सूत्र)

(८) अपने मित्रोंके साथ मायावृत्ति न करनेसे जीवोंके "परम०" मल्लिनाथजीके पुर्वभवके छे मित्रोंकि माफीक (ज्ञातासूत्र)

(९) धर्म चर्चा करनेसे जीवोंका "परम०" जैसे केशी-स्वामी गौतमस्वामीकी माफीक (श्री उत्तराध्ययनजी सूत्र)

(१०) सदा धर्मपर श्रद्धा रखनेसे जीवोंका "परम०" वर्णनागनतुवाके बालमित्रकी माफीक (श्री भगवती सूत्र)

(११) जगतके जीवोंपर करुणाभाव रखनेसे जीवोंके "परम०" मेघकुमारके पुर्व हाथीके भवकी माफीक (श्री ज्ञातासूत्र)

(१२) सत्य बात निःशंकपणे करनेसे जीवोंका 'परम०' आनन्द श्रावक और गौतमस्वामीके माफीक (उपासक दशांग सूत्र०)

(१३) आगत समय नियम-धर्ममें मजबूति रखनेसे "परम०" अम्बड परिव्राजकके सातसे शिष्योंकि माफीक (श्री उववाइजी सूत्र०)

(१४) मंत्र सब छोड़ पालनेसे जीवोंका 'परम०' सुदर्शन शेठकी माफीक (सुदर्शन चरित्र)

१५) परिग्रहकी ममत्वका त्याग करनेसे जीवोंका 'परम०' कपील ब्राह्मणकि माफीक (श्री उत्तराध्ययनजी सूत्र)

१६ उदार भावसे सुपात्र दान देनेसे जीवोंका 'परम० ' [illegible] गाथापतिकि माफीक [illegible] सूत्र

(१७) अपने व्रतोंसे गीरते हुवे जीवोंके स्थिर करनेसे 'परम०' राजमति और रहनेमिकी माफीक (श्री उत्तराध्ययन सूत्र०)

(१८) उग्र तपश्चर्या करते हुवे जीवोंका 'परम०' धन्नामुनिकि माफीक (श्री अनुत्तर उववाइ सूत्र)

(१९) अग्लानपने गुरुआदिकिवैयावच्च करनेसे 'परम०' पन्थकमुनिकी माफीक (श्री ज्ञातासूत्र)

(२०) सदैव अनित्य भावना भावनेसे जीवोंका 'परम०' भरतचक्रवर्तिकि माफीक (श्री जम्बुद्विपप्रज्ञप्ति सूत्र)

(२१) मनामोंकि लहरोंको रोकनेसे जीवोंके 'परम०' प्रसन्नचन्द्रमुनिकी माफीक (श्रेणिकचरित्रमें)

(२२) सम्यक्ज्ञानपर श्रद्धा रखनेसे जीवोंके 'परम०' अर्हन्नक श्रावककी माफीक (श्री ज्ञातासूत्र)

(२३) चतुर्विधसंघकि वैयावच्च करनेसे जीवोंके 'परम०' सनत्कुमार चक्रवर्तिके पुर्वके भवकि माफीक (श्री भगवती सूत्र)

(२४) चढते भावोंसे मुनियोंकि वैयावच्च करनेसे 'परम०' बाहुबलजीके पुर्वभवकी माफीक (श्री ऋषभचरित्र)

(२५) शुद्ध अभिग्रह करनेसे जीवोंके 'परम०' पांच पांडवोंकि माफीक (श्री ज्ञातासूत्र)

(२६) धर्म दलाली करनेसे जीवोंके "परम०" श्रीकृष्ण नरेंद्रकि माफीक (श्री अनन्तगडदशांग सूत्र)

(२७) सुपात्रदानकि भक्ति करनेसे जीवोंके 'परम०' सुबाहुकुमारकि माफीक (श्री विपाकसूत्र)

[illegible] जीवोंके 'परम०' श्री धर्म [illegible]

(२९) व्रतोंसे गीरजानेपरभी चेतजानेसे " परम० " अरणिकमुनिकी माफीक। (श्री आवश्यक सूत्र)

(३०) आपत्त आनेंपरभी धैर्यता रखनेसे ' परम० ' सधक मुनिकी माफीक। (श्री आवश्यक सूत्र)

(३१) जिनराज देवोंकि भक्ति और नाटक करनेसे जीवोंके ' परम० ' प्रभावती राणीकी माफीक (श्री उत्तराध्ययन सूत्र)

(३२) परमेश्वरकी त्रिकाल पुजा करनेसे जीवोंके ' परम० ' शान्तिनाथजीके पुर्वभव मेघरथ राजाकी माफीक (शान्तिनाथ चरित्र)

(३३) छती शक्ति क्षमा करनेसे जीवोंके ' परम० ' प्रदेशी राजाकी माफीक (श्री रायपसेनी सूत्र)

(३४) परमेश्वरके आगे भक्ति सहित नाटक करनेसे ' परम० ' रावण राजाकी माफीक (त्रिषष्ठीशलाका पुरुष चरित्र)

(३५) देवादिके उपसर्ग सहन करनेसे ' परम० ' कामदेव श्रावककी माफीक (श्री उपासक दशांग सूत्र)

(३६) निर्भीकतासे भगवानको वन्दन करनेको जानेसे'परम०' श्री सुदर्शन शेठकी माफीक (श्री अन्तगड दशांग सूत्र)

(३७) चर्चा कर वादीयोंको पराजय करनेसे ' परम० ' मंडुक श्रावककी माफीक (श्री भगवती सूत्र)

(३८) शुद्ध भावोंसे चैत्यवन्दन करनेसे जीवोंके ' परम० जगवल्लभाचार्यकी माफीक पुजा प्रकरण

(३९) शुद्ध भावोंसे प्रभुपुजा करनेसे जीवोंके परम० ' नागकेतुकी माफीक श्री कल्पसूत्र)

४०) जिनप्रतिमाके दर्शन कर शुभ भावना भावनेसे परम० आर्द्रकुमारकी माफीक श्री सूत्र कृताग)

इन बोलोंको कंठस्थ कर सदैवके लिये स्मरण करना और यथाशक्ति गुणोंको प्राप्त कर परम कल्याण करना चाहिये ।

॥ सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नम्बर १६.

(श्री सिद्धोंकी अल्पाबहुत्वके १०८ बोल)

ज्ञान दर्शन चारित्रकी आराधना करनेवाले भाइयोंको इन अल्पाबहुत्वको कंठस्थ कर सदैव स्मरण करना चाहिये ।

(१) सर्व स्तोक एक समयमें १०८ सिद्ध हुवे ।
(२) उनोंसे एक समयमें १०७　　,,　अनंतगुणे ।
(३) उनोंसे एक समयमें १०६　　,,　　,,
एवं ५८ वा बोलमें एक समयमें ५१　　,,　　,,
(५९) उनोंसे एक समयमें ५०　　,, असंख्यातगुणे ।
(६०) उनोंसे एक समयमें ४९　　,,　　,,
(६१) उनोंसे एक समयमें ४८　　,,　　,,
एवं क्रमसर ८४ वा बोलमें एक समयमें २५ सिद्ध हुवे असं० गु०
(८५) उनोंसे एक समय २४ सिद्ध हुवे　　संख्यातगुणे०
(८६) उनोंसे एक समय २३　　,,　　,,
एवं क्रमसर १०[illegible] वा बोलमें एक समयमें एक　,,　　,,

यह [illegible] बोलोंका [illegible] सदैव गुणनेसे कर्मोंकी महा निर्जरा होती है [illegible] इति

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्

थोकडा नम्बर १७

(सूत्र श्री जम्बुद्विप प्रज्ञप्ति–छे आरा.)

भगवान् वीरप्रभु अपने शिष्य इन्द्रभूति अणगार प्रति कहते है कि हे गौतम इस आगापार संसारके अन्दर कर्म प्रेरित अनंते जीव अनंते काल से परिभ्रमन कर रहे है कारण कि आदि नही है और अंत भी नही है.

भरत–ऐरवतक्षेत्रकि अपेक्षा अवसर्पिणी उत्सर्पिणी कही जाती है यह दश कोडाकोड सागरोपमकि अवसर्पिणी और दश कोडाकोड सागरोपमकी उत्सर्पिणी एवं दोनों मीलके वीस कोडाकोडी सागरोपमका कालचक्र होता है एवं अनंते कालचक्रका एक पुद्गल परावर्तन होता है एसे अनंते पुद्गल परावर्तन भूतकालमें हो गये है और भविष्यमें अनन्ते पुद्गल परावर्तन हो जायगा.

हे गौतम में आज इस भरतक्षेत्रमें अवसर्पिणी कालका ही व्याख्यान करता हुं तुं एकाग्रचित कर श्रवण कर।

एक अवसर्पिणी काल दश कोडाकोड सागरोपमका होता है जिस्के छे विभाग रूपी छे आरा होते है यथा—(१) सुखमा सुखमा (२) सुखमा (३) सुखमा दुःखमा (४) दुःखमा सुखमा (५) दुःखमा (६) दुःखमा दुःखमा इति छे आरा।

(१) प्रथम सुखमा सुखम आरा च्यार कोडाकोड सागरोपमका है इस आराके आदिमें यह भारतभूमि बडी ही रम्य रमणिय सुन्दराकार और सौभाग्यका धारण करनेवाली थी पाहाड पर्वत झाड झाडा याने विषमपणाकर रहित इस भूमिका विभाग पांच प्रकारका रत्न से अच्छा मंडित था चोतर्फसे वन

गभी पत्र पुष्प फलादिकि लक्ष्मी से अपनी छटा दीखा रही थी. इस प्रकारसे कल्पवृक्ष अनेक विभागोंमें अपनि उदारता मशहूर कर रहे थे भूमिका वर्ण बडा ही सुन्दर मनोहर था स्थान स्थान वापी कुवे पुष्करणी वापी अच्छा पय पाणी से भरी हुइ लेहरो कर रही थी. भूमिका रस मानो कालपी मीसरी माफीक मधुर और स्वादिष्ट था. भूमिकी गन्ध चोतर्फ से सुगन्ध ही सुगन्ध दे रही थी. भूमिका स्पर्श बडा ही सुकुमाल मखमलकि माफीक था एक वारीस होनेपर दश हजार वर्ष तक उनकी सरसाइ बनी रहती थी.

हे गौतम उन समयके मनुष्य युगल कहलाते थे कारण उन समय उन मनुष्योंके जीवनमें एक ही युगल पैदा होते थे उनोंके मातापिता ४९ दिन उनोका संरक्षण करते थे फीर वह ही युगल गृहवास कर लेते थे. वास्ते उन मनुष्योंको 'युगलीये' मनुष्य कहा जाते थे वह बडे ही भद्रीक प्रकृतिवाले सरल स्वभावी विनयमय तो उनका जीवन ही थे उन मनुष्योंके प्रेमबन्धन या ममत्वभाव तो बीलकुल ही नही था. उन जमानेमें उन मनुष्योंके लिये राजनीती और कानुन कायदावोंकि तो आवश्यका ही नही थी कारण जहां ममत्व भाव होते है वहां राजसत्ताकि जरूरत होती है वह उन मनुष्योंके थी नही। वह मनुष्य पुन्यवान तो [illegible] कि उन [illegible] पदार्थ भोग उपभोगके लिये जरूरत होती [illegible] पुन्योदय वह दशजातिके कल्पवृक्ष उनों वखत सतो [illegible] उन कल्पवृक्षोंके नाम और गुण इस [illegible]

[illegible] उच पदार्थोंके मदिराके दातार

[illegible] वाजित्रादि वगेरहके दातार

(३) तुडांगा=४९ जातिके वाजित्रोंके दातार.

(४) जोयांगा=सूर्य चन्द्रसे भी अधिक ज्योतीके दातार.

(५) दीपांगा=दीपक चराग मणि आदिके प्रकाश „

(६) चित्तगंगा=पांचवर्णके सुगन्धी पुष्पोंकि मालायोंके „

(७) चित्तरसा=अनेक प्रकारके पाक पक्वानके भोजन सुन्दर स्वादिष्ट पौष्टीक मनगमते भोजनके दातार.

(८) मणियांगा=अनेक प्रकारके मणि रत्न मुक्ताफल सुवर्ण मंडित कमयजन अधिक मूल्य वेसे भूषणोंके दातार।

(९) गेहगारा=उंचे उंचे शीखरवाला मनोहर प्रासाद भुवन महल शय्या संयुक्त मकानके दातार।

(१०) अनिअणा=उत्तमदा सुकमाल वस्त्रोंके दातार।

यह दश जातिके कल्पवृक्ष युगल मनुष्योंके मनोर्थ पुरण करते थे.

हे गौतम ! उन मनुष्योंके उस समय तीन पल्योपमका× आयुष्य तीन गाउका शरीर और शरीरके २५६ पांसलीयों थी. वज्रऋषभ नाराच संहनन समचतुस्र संस्थान, उन स्त्री पुरुषोंका रूप जोबन लावण्य चातुर्य सौभाग्य सुन्दरता बहुत ही अच्छी थी, क्रमशः काल वीतने लगा तब उतरते आरे उन मनुष्योंका दो पल्योपमका आयुष्य दो गाउकी अवगाहना शरीरकि पांसलीयों १२८ रही वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्शमें अनंतीहानी होने लगी। भूमिका रस मंदा जैसा रह गया। आराके आदिमें उन युगल मनुष्योंको तीन

× [illegible] 'नियमपर्यंगया' [illegible] है [illegible] युगल मनुष्य [illegible]

दिनोंसे आहारकि इच्छा होती थी जब शरीर प्रमाणे आहार करते थे और आराके अन्तमें दो दीनोंसे आहारकि इच्छा होने लगी.

युगल मनुष्योंकि शेष छेमास आयुष्य रहता है तब उनोंकि परभवको आयुष्य बन्ध जाता है युगल मनुष्योंका आयुष्य नोप-कर्मी होता है। युगलनीके एक युगल (बचाबची) पेदा होते है उनोको ४९ दिन "प्रतिपालना करके युगल मनुष्यको छींक आति है और युगलनीको उभासी आती है. बस इतनेमें वह दोनों सा-थहीमें कालधर्मको प्राप्त हो देवगतिमें चले जाते है।

उस समय सिंह व्याघ्र चिता रीच्छ सर्प बीच्छु गौ भैंस हस्ति अश्वादि जानवर भी होते है. परन्तु वह भी बडे भद्रीक प्रकृतिवाले कीसी जीवोंके साथ न वैरभाव रखते है न कीसीकों तकलीफ देते है उनोंकीभी गति देवतायोंकी हो होती है। युगल मनुष्य उसे कीसी काममें नहीं लेते है।

उस समय न कसी मसी असी वीणज्य वैपार है न राजा प्रजा होती है वहांके मनुष्य तथा पशु स्वइच्छानुसार घूमा करते है। जेसा यह प्रथम आरा है जीसकि आदिमें जो वर्णन किया है वैसाही देवकुरु उत्तरकुरु युगलक्षेत्रका वर्णन समज लेना चाहिये।

[illegible] उदय अनुभाग रसको यहां [illegible] प्रथम आरा।

[illegible] आरा [illegible] है तब अनंत [illegible] पर्यायक [illegible] २ ६ ३ ८ [illegible]

गाउकी अवगाहना, दो पल्योपमकी स्थिति, शरीरके पांसलीयों १२८ संहनन संस्थान कि पुरुषोंके शरीरके वर्णन प्रथमाराके माफीक समझना। आराके आदिमें खांड जैसी भूमिका सरसाई है उतरते आरे एक गाउकी अवगाहना एक पल्योपमकी स्थिति शरीरके ६४ पांसलीयों भूमिका सरसाइ गुड जैसी रहेगी उन मनुष्योंको दो दिनोंसे आहारकि इच्छा होगी तब वहही शरीर प्रमाणे आहारकि कल्पवृक्ष पुरती करेंगे, दुसरे आराके युगलनी युगलको जन्म देगी वह ६४ दिन संरक्षन कर वहही छींक उबासी होनेसे स्वर्गगमन करेंगे। इसी माफीक हरीवास रम्यक्वासके युगलोंकाधिकार भी समझना।

दुसरे आरेके अन्तमें तीसरा आरा प्रारंभ होते है तब दुसरे आरेकि स्थिति अनंते वर्णगंधरस स्पर्श संहनन संस्थानादि पर्याय हीन होगा।

तीसरा सुखमादुखम आरा दो कोडाकोड सागरोपमका है इसमेंभी युगल मनुष्यही होते है उनोंका आयुष्य एक पल्योपमका, अवगाहना एक गाउकी, शरीरके पांसलीये ६४ होती है शेष शरीरके संहनन संस्थानसम ओंचमादि पूर्ववत् समझना. उतरते आरे होतेहुवेंका आयुष्य पांचसौ धनुष्यकि अवगाहना ३२ पांसलीयों होती है एक दिनके अंतरसे आहारकि इच्छा होती है वह कल्पवृक्षपूर्ण करते है भूमिका सरसाइ गुड जैसी होती है। छे मास पहलेंपरभवका आयुष्य बान्धते है वह युगल मनुष्य ७९ दिन [illegible] करते है [illegible] है और [illegible] है [illegible] समझना।

[illegible]

रे हानि होने लगी इसी माफीक कल्पवृक्ष भी निरस होने लगे, फल देनेमें भी संकुचितपना होनेसे युगल मनुष्योंके चित्तमें चंचलता व्याप्त होने लगी इस समय रागद्वेषने भी अपना पग-पसारा करना सरु कर दीया इन कारणों से युगल मनुष्यो में अधिपति की आवश्यकता होने लगी. तब कुलकरों कि स्थापन हुइ पहले के पांच कुलकरों के 'हकार' नामका नीति दंड हुवा अगर कोइ भी युगल अनुचित कार्य करे तो उसे वह कुलकर दंड देता है कि 'हे' बस इतनेमें वह मनुष्य लज्जीत होके फीर जन्म भरमें कोइभी अनुचित कार्य नही करता. इस नितीसे केइ काल व्यतित हुवा. जब उन रागद्वेष का जोर बढने लगा तब दुसरे पांच कुलकरोंने 'मकार' नामका दंड नीकाला, अगर कोइ युगल मनुष्य अनुचित कार्य करें तो वह अधिपति कहते कि 'म' याने यह कार्य मत करो इतने में वह मनुष्य लज्जीत हो जाता था बाद रागद्वेषका भाइ क्लेशने भी अपना राज जमाना सरु कीया जब तीसरे पांच कुलकरोंने 'धीकार' नामका दंड देना सरु कीया. इन पंद्रह कुलकरोंद्वारा तीन प्रकार के दंड से नीति चलती रही जब तीसरे आराके ८४ चोरासी लक्ष पूर्व और तीन वर्ष साडे आठ मास शेष बाकी रहा उन समय सर्वार्थ सिद्ध महा वैमान से चवके भगवान ऋषभदेवने, नाभीराजा के मरुदेवा भार्या कि रत्नकुक्षीमें अवतार लीया माताको चौदा स्वप्ना आये उनोंका अर्थ खुद नाभीराजने ही कहा क्रमसे भगवानका जन्म हुवा चौसठ इन्द्रोंने महोत्सव कीया युवक वयमें सुनन्दा सुमङ्गला के साथ भगवानका व्याह लग्न कीया जीसके रात रस्म सब इन्द्र इन्द्राणीयों ने करीथी फीर भगवान ऋषभदेवने पुरुषोंको ७२ कला और स्त्रियोंको ६४ कला बतलाइ

कारण प्रभु अवधिज्ञान संयुक्त थे यह जानते थे कि अब कल्पवृक्ष
नों फल देंगे नहीं और नीति न होगी तो भविष्य में बड़ा भारी
नुकशान होगा दुराचार बढ़ जावेंगे इस वास्ते भगवान ने उन
मनुष्यों को असी मसी कसी आदि कर्म करना बतलाके
नीतिके अन्दर स्थापन कीया । बस यहां से युगलधर्म का
बिलकुल लोप होगया अब निति के साथ लग्न करना अन्नादि
खाद्य पदार्थ पैदा करना और भगवान् आदीश्वर के आदेश
माफीक वरताव करना यह लोग अपना कर्तव्य समझने लग गये.
भगवान् पूर्व वीस लक्ष पूर्व कुमार पद में रहे इन्द्र महाराज
कीहके भगवान का राज्याभिषेक कीया भगवान इक्ष्वाकुवंश
इत्यादिकुल स्थापन कर इसीके साथ ६३ लक्षपूर्व राजपद को
चलाये अर्थात ८३ लक्षपूर्व गृहवास सेवन किया जीसमें भरत
बाहुबल आदि १०० पुत्र तथा ब्राह्मी, सुन्दरी आदि दो पुत्रीयें हुइ
थी अयोध्या नगरी कि स्थापना पहलेसे इन्द्र महाराजने करी थी
और भी ग्राम नगर पुर पाटण आदिसे भूमंडल बडाही शोभने लग
रहाथा. भगवानके दीक्षाके समय लोकान्तिक देव आके भगवान
से अर्ज करी कि हे प्रभो ! अबी आप दिक्षाधर्म चलाके धर्म तीर्थ
युगलीयोंका उद्धार किया है इनो माफीक अब आप दीक्षा
धारन कर अपन भावीका समान से [illegible] धा [illegible]
[illegible] भगवान [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] भगवान [illegible] और पुरुष
[illegible]
[illegible] कि [illegible] करने लग गये.
[illegible]

किया तबसे मनुष्य आहार पाणी देना सीखे. भगवान् १००० वर्ष छद्मस्थ रह के केवल ज्ञानकी प्राप्ति के लिये पुरीमताल नगरके उद्यानमें आये भगवान को केवल ज्ञानोत्पन्न हुवा. यह वधाई भरत महाराज को पहुंची उस समय भरत राजाके आयुधशालामें चक्ररत्न उत्पन्न हुवा. एक तरफ पुत्र होनेकी वधाई आई, एवं तीनों कार्य बडा महोत्सवका था, परन्तु भरत राजाने विचार कीया कि चक्ररत्न और पुत्र होना भी संसारवृद्धिका कार्य है परन्तु मेरे पिताजीको केवलज्ञान हुवा वास्ते प्रथम यह महोत्सव करना चाहिये क्रमशः महोत्सव कीया. माता मरुदेवी को हस्ती पर बैठा के लाये माताजी अपने पुत्र (ऋषभदेव) को देख पहले बहुत मोहनी करी फीर आत्म भावना करते हस्तीपर बैठी हुई माताको केवलज्ञान उत्पन्न हुवा और हस्तीके गंधेपरसे ही मोक्ष पधार गये. भगवान के ४००० शिष्य वापिस आगये औरभी ८४ गणधर ८४००० साधु हुये और अनेक भव्य जीवोंका उद्धार करते हुये भगवान आदीश्वरजी एक लक्ष पूर्व दीक्षा पाल मोक्षमार्ग चालु कर अन्तमें १०००० मुनिवरोंके साथ अष्टापदजीपर मोक्ष पधार गये. इन्द्रोंका यह फर्ज है कि भगवान के जन्म, दीक्षाग्रहन केवल ज्ञानोत्पन्न और निर्वाण महोत्सवके समय भक्ति करे इस कर्तव्यानुसार सर्व महोत्सव कीये अन्तमें इन्द्र महाराजने अष्टापद पर्वतपर रत्नमय [illegible] की विशाल स्तूप कराये और भरत महाराजने अष्टापद पर २४ भगवान के २४ मंदिर बनवा के अपना जन्म सफल कीया था इस वख्त तीसरा आराके तीन वर्ष साढा आठ मास बाकी रहे हैं शांति युगलाय मरके एक देव गति में ही जाते थे अब यह मनुष्य कर्मभूमि होने से नरक तिर्यंच मनुष्य देव [illegible] गतिमें भी जाने लगगये है तीसरे आरा के अन्तमें [illegible] पूर्वका आयुष्य, पांचसौ धनुष्य का

शरीर, मान ३२ पासलीयों यावत् वर्ण गन्ध रस स्पर्श संहनन संस्थानादिके पर्यव अनंते अनंते हानि होते गये. परन्ती भी सरमाइ सुख जैसी रही.

तीसरा आरा उतर के चौथा आरा लगा यह ४२००० वर्ष कम, एक क्रोडाक्रोड सागरोपमका है जिसमें कर्मभूमि मनुष्य जघन्य अन्तर महूर्त, उत्कृष्ट क्रोड पूर्वका आयुष्य जघन्य अंगुल के असंख्य भाग उत्कृष्ट पांचसो धनुष्य कि अवगाहना थी शरीर के पांसलीयों ३२थी संहनन छे, संस्थान छे था. [illegible] विशेष संयुक्त मनुष्यों के प्रतिदिन आहार करने कि इच्छा उत्पन्न होती थी भगवान ऋषभदेव और भरतचक्रवर्ति यह दो तीर्थंकर पुरुष तो तीसरे आरा के अन्तमें हुवे और शेष २३ तीर्थंकर, ११ चक्रवर्ति ९ बलदेव, ९ वासुदेव, ९ प्रतिवासुदेव यह सब चौथा आरामें हुवे है।

भगवान ऋषभदेव के पाटोंपाट असंख्याते जीव मोक्ष गये पश्चात् अजितनाथ भगवान का शासन प्रवृत्तमान हुवा क्रमशः नौवां सुविधिनाथ भगवान तक अविच्छिन्न शासन चला और दुसरा तीर्थों के अन्तर्गत शासन विच्छेद हुवा और शीतलनाथ भगवान के शासन बहुत वर्ष भी धर्मनायकों के शासन तक. ऐसे बखत पर विच्छेद हुवा बाद [illegible] शान्तिनाथ तक भगवान [illegible] [illegible]

सिद्धार्थ जन्म महोत्सव कीया था उनसमय जिन मन्दिरोंमें सेंकडों पुजाओ कर अनुक्रमशः ३० वर्ष भगवान् गृहवास में रहके बाद दिक्षा ग्रहन कर साढे बारह वर्ष घोर तपश्चर्या कर के केवलज्ञान कि प्राप्ती कर तीस वर्ष लग भव्य जीवोंका उद्धार कर सर्व ७२ वर्षो का आयुष्य पाल आप मोक्ष में पधार गये उससमय भगवान् गौतम स्वामि को केवलज्ञान उत्पन्न हुवा जिनका महा महोत्सव इन्द्रादिकने कीया।

चोथा आरामें दुःख ज्यादा और सुख स्वल्प है आरा के अन्तमें मनुष्यों का आयुष्य उत्कृष्ट १२० वर्षका शरीरकी उंचाइ सात हाथकी पांसलीयों १६ धरतीकी सरसाइ मटी जैसी थी एक दिनमें अनेकवार आहारकी इच्छा उत्पन्न होती थी

जब चोथा आरा समाप्त हो पांचवा आरा लगा तब वर्ण-गन्ध रस स्पर्श संहनन संस्थान के पर्यव अनंते हीन हुवे धरतीकी सरसाइ मट्टी जैसी रही।

पांचवा आरा २१००० वर्षोका होगा आरा के आदिमें १२० वर्षोंका मनुष्योंका आयुष्य ७ हाथका शरीर-शरीर के छे संहनन व संस्थान १६ पांसलीयां होंगे चोसठ वर्ष केवलज्ञान (.. श्री गौतमस्वामि १२ सौधर्मस्वामि ८८ जम्बुस्वामि । पांचवें आरे के मनुष्यों को आहारकी इच्छा अनियमित होंगे

जम्बु स्वामि मोक्ष जाने बाद १० बोलोंका उच्छेद होगा यथा-परमावधिज्ञान, मन:पर्यव ज्ञान, केवलज्ञान परिहार विशुद्धि चारित्र, सूक्ष्मसंपराय चारित्र यथाख्यात चारित्र पुलाक लब्धि आहारक शरीर क्षायकश्रेणी, जिन कल्पीपना

प्रभाविक पांचवे आरे के धर्म धुरंधर आचार्यों के नाम:

(१) श्री स्वयंप्रभसूरि जैनपोरवाल श्रीमालों के कर्ता
(२) श्री रत्नप्रभसूरि उपलदे राजादि को जैन ओसवाल कीये
(३) श्री यक्षदेवसूरि सवालक्ष जैन बनानेवाला
(४) श्री प्रभवस्वामि सय्यंभवभट्ट के प्रतिबोधक
(५) श्री सय्यंभवाचार्य दशवैकालिक के कर्ता
(६) श्री भद्रबाहुस्वामि निर्युक्ति के कर्ता
(७) श्री सुहस्ती आचार्य राजा संप्रति प्रतिबोधक
(८) श्री उमास्वामि आचार्य पांचसौ ग्रन्थ के कर्ता
(९) श्री श्यामाचार्य श्री प्रज्ञापना सूत्र के कर्ता
(१०) श्री सिद्धसेन दीवाकर विक्रमराजा प्रतिबोधक
(११) श्री वज्रस्वामि जिनमन्दिरोंकी आशातना मीटानेवाले
(१२) कालकाचार्य शालीवाहन राजा प्रतिबोधक
(१३) श्री गन्धहस्ती आचार्य प्रथम टीकाकार
(१४) श्री जिनभद्रगणी आचार्य भाष्यकर्ता
१५ श्री देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण आगम पुस्तकारूढ कर्ता
१६ श्री हरिभद्रसूरि १४४४ ग्रन्थ के कर्ता
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

(२३) श्री हिरविजयसूरी पादशाह अकबर प्रतिबोधक।

इत्यादि हजारों आचार्य जो जैनधर्मके स्थंभभूत हो गये है उनोंके प्रभावशाली धर्मोपदेशसे विमलशा, वस्तुपाल, कर्माशा जावडशा भैंसाशा धन्नासा भामाशा सोमासादि अनेक वीरपुत्रोंने जैनधर्मकि प्रभावना करी थी इति

पांचवे आरा में कालके प्रभावसे कीतनेक लोग ऐसेभी होंगे और इस आर्यभूमिका वर्णन जो पूर्व महा ऋषियोंने इस माफीक कीया है।

(१) बडे बडे नगर उजडसा या गामडे जैसे हो जायेंगे
(२) ग्राम होगा वह स्मसान जैसे हो जायगें
(३) उच्च कूलके मनुष्य दास दासीपना करने लग जायगें
(४) जनता जिन्होंपर आधार रखें वह प्रधान लांचखोये होगें मुदाइ मुदायले दोनोंका भक्षण करेंगे
(५) प्रजाके पालन करनेवाले राजा यम जैसे होगें
(६) उच्च कूलकि ओरतें निर्लज्ज हो अत्याचार करेंगी
(७) अच्छे खानदानकि ओरतों वैश्या जैसे वेश या नाच करेंगी निर्लज्ज हो अत्याचार करेंगे
(८) पुत्र कुपुत्र हो आपत्त कालमें पिताको छोडके भाग जायेंगे मारपीट हाथा फीरयादि करेंगे
(९ शिष्य अविनीत हो गुरु देवोंका अवगुनवाद बोलेंगे
(१०) दुर्जन लंपट दुर्जन लोग कुच्छ समय सुखी होगें
(११) दर्भिक्ष दुष्काल बहुत पडेगें
(१२) सदाचारी सज्जन लोग दुःखी होगें
(१३) ऊंदर सर्प टोडों आदि क्षुद्र जीवोंके उपद्रव होगें
(१४) ब्राह्मण योगी साधु अर्थ (धन) के लालची होंगे

(१५) हिंसा धर्म (यज्ञहोम) के प्रवर्तक पाखण्डी बहुत होंगे

(१६) एकेक धर्मके अन्दर अनेक अनेक भेद होंगे

(१७) जैन धर्मके अन्दरसे निकलेंगे उनहि धर्मकी निंदा करेंगे उपकारके बदले अपकार करेंगे

(१८) मिथ्यात्वीदेव देवीयोंकी बहुत पूजा पावेंगे । उन्हीके उपासकभी बहुत होंगे ।

(१९) [illegible] देवोंके दर्शन मनुष्योंको दुर्लभ होंगे ।

(२०) विद्याधरोंकि विद्याओंका प्रभाव कम हो जावेंगे

(२१) गोरस (दुध दही घृत) तैल गुड आदिमें रस कम होंगे

(२२) बृषभ गज अश्वादि पशु पक्षीयोंका आयुष्य कम होगा

(२३) साधु साध्वीयोंके मासकल्प जैसे क्षेत्र स्वल्प मीलेंगे

(२४) साधुकि १२ श्रावककी ११ प्रतिमाओंका लोप होंगे

(२५) गुरु अपने शिष्योंको पढानेमें संकुचितता रखेंगे ।

(२६) शिष्यशिष्यनीयों स्वछंद कदाग्रही होंगे ।

(२७) लोगोंमें कलेश दंगा फीसाद करनेवाले बहुत होंगे ।

(२८) आचार्योंकि समाचारी अलग २ होंगे अपनि अपनि समाचारीके लिये [illegible] बोलेंगे वह पूर्वाचार्योंकी मुद्रा बतला[illegible] बहुत होंगे ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

श्रावण कृष्ण प्रतिपदा के दिन संवर्तक नामका वायु चलेगी पहले पहर जैनधर्म, दूसरे पहर ३६३ पाखंडीयोंका धर्म, तीजे पहर राजनीति, चौथे पहर बादर अग्निकाय विच्छेद होंगे उस समय गंगा सिंधु नदी, वैताढ्यगिरि पर्वत (ऋषभकूटगिरि) और लवण समुद्र ये आदि इनके सिवाय सब पर्वत पहाड जंगल झाडी वृक्षादि वनस्पति सब क्षय होंगी तालावादि सर्व वस्तु नष्ट हो जावेंगी. उसपर खार खार विष खार प्रकारके मेघ वर्षेंगे वह अग्नि कोमल विष धूल खार आदि के वरसने से सब भूमि पर्वत हो जावेगी-हाहाकार मच जावेगा उस समय कुछक मनुष्य तीर्यंच पक्षी इनों को देवता उठाके गंगा सिन्धु नदीके किनारेपर ७२ बील रहेंगे जिनमें ६३ बीलोंमें मनुष्य ६ बीलोंमें स्थलचर तीर्यंचादि भूमिचर पशु आदि ३ बीलोंमें खेचर पक्षीयों रहेंगे उनोंका शरीर बहोतही मुष्टहर काला कावरा मांसरा लूला लंगड़ा अनेक रोगग्रस्त कुरूप मनुष्य होंगे जिनोंके मैथुनकर्मकी अधिकाधिक इच्छा रहेगी अर्थात् कामके बहुत होंगे छ वर्षोंकी ओरतें गर्भ धारण करेंगी. कछवी कुत्ती-वोकि मारीक सब स्त्रीयोंमें ही बहुत बच्चा बच्चीयोंको पैदा करेंगी बराह दु:खमय अपना जीवन पूर्ण करेंगे।

गंगा सिन्धु नदी कुलकी ६२ । कोसकी है परन्तु कालके प्रभावसे अल्प पानी छूटना छूटना इस समय नाडीके बीचमें [illegible] और [illegible] आदि दुर्गे इनकी [illegible] [illegible] उस पानीमें बहुतसा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रहेंगे

[illegible]

को पकड उन नदीके कीनारेकी रेतीमें गाड देंगें वह दिनको सूर्यकि आतापनासे रात्रीमें चन्द्रकी शीतलतासे पक जावेंगे फीर सुबे गाडे हुयेका श्यामको भक्षण करेंगे श्यामको गाडे हुयेका सुबे भक्षण करेंगे इसी माफीक वह पापीष्ट जीव छठे आरेके २१००० वर्ष व्यतित करेंगे। उन मनुष्योंका आयुष्य लागते छठे आरे उत्कृष्ट २० वर्षका होगा शरीर एक हायका हुन्डक संस्थान छेवट्ठं संहनन आठ पासलीयों और उतरते आरे १६ वर्षोंका आयुष्य, मुढत हायका शरीर, च्यार पांसलीयां होगी. उन दुःखमा दुःखम आरामें वह मनुष्य नियम व्रत प्रत्याख्यान रहीत मृत्यु पाके विशेष नरक और तीर्यंच गतिमें जावेंगे। पाठको! अपना जीव भी एसे छट्ठे आरेमें अनंती अनंती वार उत्पन्न होके मरा है वास्ते इस वखत अच्छी सामग्री मीली है जिस्मे सावचेत रहनेकी आवश्यका है। फीर पश्चाताप करनेसे कुच्छ भी न होंगे।

अब उत्सर्पिणी कालका संक्षेपमें वर्णन करते है।

(१) पहला आरा छठा आरेके माफीक २१००० वर्षका होगा।

(२) दुसरा आरा पांचवा आरे जेसा २१००० वर्षोंका होगा; परन्तु साधु साध्वी नहीं रहेंगे. प्रथम तीर्थंकर पद्मनाभका जन्म होगा याने श्रेणिकराजाका जीव प्रथम पृथ्वीसे आके अवतार धारण करेंगे। अच्छी अच्छी वर्षात होनेसे भूमिमें रस अच्छा होगा.

(३) तीसरा आरा-चोथा आरेके माफीक बीयालीसहजार वर्ष कम एक कोडाकोड सागरोपमका होगा जिस्मे २३ तीर्थंकर आदि शलाके पुरुष होंगे मोक्षमार्ग चलु होगा शेष अधिकार चोथा आरा कि माफीक समझ लेना।

(४) [illegible] होगा।

[illegible] होगा।

[illegible]

[illegible]

सेवं भंते सेवं भंते-तमेव सच्चम्



नवतत्त्वपर सात नय नैगमनय नवतत्त्व शब्दनयो मान्य माने. संग्रहनय [illegible] तत्त्व माने. व्यवहार नय जीव अजीव यह दोय तत्त्व माने. ऋजुसूत्रनय छे तत्त्व माने. जीव अजीव पुण्य पाप आश्रव बन्ध. शब्दनय सात तत्त्व माने छे पूर्ववत् संवर. समभिरूढनय आठ तत्त्व माने निर्जराधिक. एवंभूत नय नव तत्त्व माने ।

नव तत्त्वपर द्रव्य क्षेत्र काल भाव—द्रव्यसे नवतत्त्व जीव अजीव द्रव्य है क्षेत्रसे जीव अजीव पुण्य पाप आश्रव बन्ध सर्व लोकमें है. संवर निर्जरा और मोक्ष त्रस नालीमें है. कालसे नवतत्त्व अनादि अनंत है. भावसे नवतत्त्व लोकमें शाश्वत है भावसे अपने अपने गुणोंमें प्रवृत्त रहे है ।

नवतत्त्वका विशेष विवेचन इस माफिक है ।

(१) जीवतत्त्व जीवका लक्षण [illegible] ज्ञान [illegible] जीवके असंख्य प्रदेश है [illegible] है [illegible] जीता है [illegible] प्रदेशीय [illegible] है [illegible] ([illegible]) [illegible] है. भूतकालमें जीवता वर्तमानकालमें जीव है भविष्यमें जीव रहेंगे । [illegible] जीवका [illegible] है [illegible] जीव अमर है [illegible] है और [illegible] जीव [illegible] है [illegible] है अनादि कालसे [illegible] है [illegible]

र्ज्जरा और मोक्षतत्व आत्मके अंगीकार करने योग्य है पुन्यतत्व नैगमनयके मतसे स्वीकार करने योग्य है कारण मनुष्यजन्म उत्तम कुल, शरीर निरोग्य, पूर्ण इन्द्रिय, दीर्घ आयुष्य, धर्म सामग्री आदि सब पुन्योदयसे ही मीलती है व्यवहार नयके मतसे पुन्य जानने योग्य है और एवंभुत नयके मतसे पुन्य आत्मके परित्याग करने योग्य है कारण मोक्ष जानेवालोंको पुन्य बाधाकारी है पुन्य पापका क्षय होनेसे जीवोंका मोक्ष होता है।

नवतत्वमें च्यार तत्व जीव है-जीव, संवर, निर्ज्जरा, और मोक्ष. तथा पांच तत्व अजीव है-अजीव-पुन्य-पाप-आश्रव और बन्धतत्व।

नवतत्वका च्यार तत्व रूपी है पुन्य-पाप-आश्रव और बन्ध च्यार तत्व अरूपी है जीव संवर निर्ज्जरा और मोक्ष तथा अजीवतत्व रूपी अरूपी दोनों है.

निश्चयनयसे जीवतत्व है सो जीव है और अजीवतत्व है सो अजीव है शेष सात तत्व जीव अजीवकि पर्याय है यथा संवर निर्ज्जरा मोक्ष यह तीन तत्व जीवकि पर्याय है, पाप पुन्य आश्रव बन्ध यह च्यार तत्व अजीवकी पर्याय है।

अजीव पाप पुन्य आश्रव और बन्ध यह पांचतत्व जीवके शत्रु है संवर तत्व जीवका मित्र है, निर्ज्जरातत्व जीवको मोक्ष पहुंचानेवाला चोलाया है. मोक्ष तत्व जीवका घर है.

नवतत्वपर च्यार निक्षेपा नामनिक्षेपा. जीवाजीवका नाम नवतत्व रखाहै. अक्षर लिखना तथा चित्रादिकि स्थापना करना यह नवतत्वका स्थापना निक्षेपा है उपयोग रहीत नवतत्वाध्ययन करना यह द्रव्यनिक्षेपा है सम्यक्प्रकारे यथार्थ नवतत्वका स्वरूप समझना यह भावनिक्षेपा है

नवतत्त्वपर सात नय नैगमनय नवतत्त्व शब्दको तत्त्व माने. संग्रहनय तत्त्वांश सत्ताको तत्त्व माने. व्यवहार नय जीव अजीव यह दोय तत्त्व माने. ऋजु सूत्रनय छे तत्त्व माने. जीव अजीव पुन्य पाप आश्रव बन्ध, शब्दनय सात तत्त्व माने छे पुर्ववत् एक संवर. संभिरूढनय आठ तत्त्व माने निर्ज्जराधिक. एवंभूत नय नव तत्त्व माने ।

नव तत्त्वपर द्रव्य क्षेत्र काल भाव—द्रव्यसे नवतत्त्व जीव अजीव द्रव्य है क्षेत्रसे जीव अजीव पुन्य पाप आश्रव बन्ध सर्व लोकमें है संवर निर्ज्जरा और मोक्ष त्रस नालीमें है. कालसे नवतत्त्व अनादि अनंत है कारण नवतत्त्व लोकमें सास्वता है भावसे अपने अपने गुणोंमें प्रवृत रहे है।

नवतत्त्वका विशेष विवेचन इस माफीक है।

(१) जीवतत्त्व-जीवका सम्यक् प्रकारे ज्ञान होना जैसे जीवके चैतन्य लक्षण है व्यवहारनयसे जीव पुन्य पापका कर्त्ता है सुख दुःखके भोक्ता है पर्याय प्राण गुणस्थानादिकर संयुक्त द्रव्येजीव सास्वता है पर्याय (गतिअपेक्षा) असास्वताभी है. भूतकालमें जीवथा वर्तमानकालमें जीव है भविष्यमें जीव रहेंगे । तीनकालमें जीवका अजीव होवे नही उसे जीव कहते है निश्चयनयसे जीव अमर है कर्मोंका अकर्त्ता है और व्यवहार नयसे जीव मरे है कर्मोंका कर्त्ता है अनादि कालसे जीवके साथ कर्मोंका संयोग है जैसे दुधमे घृत तीलोंमें तेल धूलमे धातु पुष्पमें रस पुष्पोंमें सुगन्ध चन्द्रकान्ता मणिमें अमृत इसी माफीक जीव और कर्मोंका अनादि कालसे सबन्ध है दृष्टान्त सोना निर्मल है परन्तु अग्निके संयोगसे अपना स्वरूपको छोड अग्निके स्वरूपको धारण कर लेता है इसी माफीक अनादि कालके अज्ञान व कर्म आदि संयोगसे जीव अज्ञानी कर्मवाला कह

जाते है जब सोनाको जगह पत्थरादिकी सामग्री मीलती है तब परगुण (मैल) त्याग कर अपने असली स्वरूपको धारण करते है इसी माफीक जीव भी दर्शनज्ञान चारित्रादिकि सामग्री पाके कर्ममेलको त्याग कर अपना असली (सिद्ध) स्वरूपको धारण कर लेता है।

द्रव्यसे जीव असंख्यात प्रदेशी है। क्षेत्रसे जीव स्वगुरुण शरीर परिमाणी है (एक जीवका आत्मप्रदेश लोकाकाश जीतना है) कालसे जीव आदि अन्त रहीत है भावसे जीव ज्ञानदर्शन गुणसंयुक्त है। नाम जीव सो नाम निक्षेपा, जीवकि मूर्ति तथा आकार लिखना वह स्थापना जीव है उपयोग शून्य जीवको द्रव्यनिक्षेपा कहते है उपयोगयुक्त जीवको भावजीव कहते है।

नय-जीव शब्दको नैगमनय जीव मानते है असंख्याता प्रदेश समानवाले जीवको संग्रहनय जीव कहते है-त्रस स्थावरके भेदवाले जीवोंको व्यवहारनय जीव कहते है सुखदुःखके परिणामवाले जीवोंको ऋजुसूत्र नयवाले कहते है क्षायकगुणवालोंको शब्दनय जीव कहते है केवलज्ञान संयुक्तको संभिरूढ नयवाले कहते है सिद्धावस्था प्राप्त होने को एवंभूत नयवाले कहते है।

जीवोंके मूलभेद दोय है (१) सिद्धोंके जीव और (२) संसारी जीव सिद्धोंके सिद्धोंके जीव जैसा पहले कहते तथे स्वरूपमें मुक्त है जिनके अनन्तज्ञान [illegible] अनन्तदर्शन अनन्तसुख [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

समय लोकालोकके भावोंको देख रहे हैं. सिद्धोंका नाम लेनेसे नामनिक्षेपा, सिद्धोंकी प्रतिमा स्थापन करनेसे स्थापना निक्षेपा, यहां पर रहे हुवे महात्मा सिद्ध होनेवाले हैं वह सिद्धोंका द्रव्य निक्षेपा है सिद्धभावमें वरत रहे है वह सिद्धोंका भाव निक्षेपा है उन सिद्धोंके मूल भेद दोय हैं (१) अनंतरसिद्ध (२) परम्परसिद्ध, जिस्मे अनंतर सिद्धों जोकि सिद्ध हुवेको प्रथमही समय वरत रहे हैं जिनोंके पंदरा भेद है (१) तिर्थसिद्धा-तीर्थ स्थापन होनेके बाद मुनिवरादि सिद्ध हुवे (२) अतीत्थसिद्धा-तीर्थ स्थापन होनेके पहेले मरूदेव्यादि सिद्ध हुवे (३) तीत्थयर सिद्धा-खुद तीर्थंकरसिद्ध हुवे (४) अतीत्थयरसिद्धा-तीर्थंकरोंके सिवाय गणधरादि सिद्ध हुवे (५) सयंबोद्धसिद्धा-जातिस्मरणादि ज्ञानसे असोचा केवली आदि सिद्ध हुवे. (६) प्रतिबोद्धिसिद्धा-करकंडु आदि प्रत्येक बुद्ध सिद्ध हुवे (७) बुद्धबोहीसिद्ध-तीर्थंकर गणधरा मुनिवरोंके प्रतिबोधसे सिद्ध हुवे. (८) इत्थिलिंगसिद्धा. द्रव्यसे स्त्रिलिंग है परन्तु भावसे वेदक्षय होनेसे अवेदि है वह ब्राह्मी सुन्दरी आदि (९) पुरुषलिंगसिद्धे-पुरुषवत् अवेदि-पुंडरिकादि-(१०) नपुंसकलिंगसिद्धे-पुरुषवत् अवेदि गांगेयादि मुनि (११) स्वलिंगीसिद्धे-स्वलिंग रजोहरण मुखवस्त्रिका संयुक्त मुनियोंकि मोक्ष (१२) अन्यलिंगसिद्धे-अन्य लिंग [illegible] लिंगमें भावसम्यक्त्व चारित्र आनेसे मोक्ष जाना (१३) गृहलिंगसिद्ध गृहस्थके लिंगमें सिद्ध होना म रुदेवा आदि (१४) एक समयमें एक सिद्ध (१५) एक समयमें अनेक [illegible] सिद्धोंका होना इन सबको अनंतर सिद्ध कहते हैं [illegible] जो परम्पर सिद्ध होते हैं उनोंके अनेक भेद हैं [illegible] समयसिद्ध अर्थात प्रथम समय वजके द्वि

इत्यादि संख्याते असंख्याते अनंते समयके सिद्धोंको परस्पर सिद्ध कहते है इति.

(२) अब संसारी जीवोंके अनेक भेद बतलाते है जैसे संसारी जीवोंके एक भेद यानि संसारीजीव. दो भेद त्रस-स्थावर। तीन भेद स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद। च्यार भेद. नारकी तीर्यंच मनुष्य देवता। पांच भेद एकेन्द्रिय बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चौरिन्द्रिय पांचेन्द्रिय। छे भेद. पृथ्वीकाय अपकाय तेउकाय वायुकाय वनस्पतिकाय त्रसकाय। सात भेद नारकी तीर्यंच तीर्यंचणी मनुष्य मनुष्यणी देवता देवी। आठ भेद च्यार गतिके पर्याप्ता अपर्याप्ता। नौभेद पांच स्थावर च्यार त्रस। दश भेद पांच इन्द्रियोंके पर्याप्ता अपर्याप्ता। इग्यारा भेद पांचेन्द्रियके पर्याप्ता अपर्याप्ता एवं १० और अनेन्द्रिय। बारहा भेद छे कायाके पर्याप्ता अपर्याप्ता। तेरहा भेद छे कायाके पर्याप्ता अपर्याप्ता ते-रहवा अकाया जीवोंके चौदा भेद सूक्ष्मएकेन्द्रिय बादरएकेन्द्रिय बेइन्द्रिय तेन्द्रिय चौरिन्द्रिय असंज्ञीपांचेन्द्रिय संज्ञीपांचेन्द्रिय एवं सातोंके पर्याप्ता अपर्याप्ता मीलाके चौदा भेद जीवोंके समझना।

विशेष ज्ञान होनेके लिये संसारी जीवोंके ५६३ भेद बत- लाते है जिसमें संसारी जीवोंके मूल भेद पांच है यथा (१) एकेन्द्रिय (२) बेइन्द्रिय (३) तेइन्द्रिय (४) चौरिन्द्रिय (५) पांचे- न्द्रिय एकेन्द्रियके [illegible] भेद है (१) सूक्ष्म एकेन्द्रिय (२) बादर एकेन्द्रिय [illegible]

जानते देखते है. उनोंने हो फरमाया है कि सूक्ष्म नामकर्मके उदयसे उन जीवोंको सूक्ष्म शरीर मीला है वह जीव मारे हुवा नहीं मरते है, बाले हुवा नहीं बलते है, काटे हुवा नहीं कटते है अर्थात् अपने आयुष्यसे ही जन्म-मरण करते है. उनोंका आयुष्य मात्र अंतरमुहुर्तका ही है जिस्में सूक्ष्म, पृथ्वी, अप, तेउ, वायुके अन्दर तो असंख्याते २ जीव है और सूक्ष्म वनस्पतिमें अनंते जीव है. इन पांचोंके पर्याप्ता अपर्याप्ता मीलानेसे दश भेद होते है।

दुसरे बादर एकेन्द्रियके पांच भेद है यथा—पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय. जिस्में पृथ्वीकायके दो भेद है. (१) मृदुल (कोमल) (२) कठन. जिस्में कोमल पृथ्वीकायके सात भेद है काली मट्टी, नीली मट्टी, लाल मट्टी, पीली मट्टी, सुपेद मट्टी, पाणीके नीचे तली जमी हुइ मट्टी उसे 'पणग' कहते है. पांडु गोपीचन्दनादि।

(२) कठनपृथ्वीके अनेक भेद है यथा—मट्टी खानकी, पोहली मट्टी [illegible] पाषाण हीरा, लूण अनेक [illegible]

रुचकरत्न, अंकरत्न, स्फटिकरत्न, लोहीताक्ष, मरकतरत्न, मसारगल्लरत्न, भुजमोचकरत्न, इन्द्रनिलरत्न, चन्द्रप्रभरत्न, गोरीकरत्न, हंसगर्भरत्न, पुलाकरत्न, सौगन्धीरत्न, अरष्टरत्न, नीलम, पीरोजीया, जमणीयाररत्न, वैडूर्यरत्न, चन्द्रप्रभामणि, सूर्यमणि, सुर्यप्रभामणि जलकांतमणि इत्यादि जिनका स्वभाव कठन है जिनकी सात लक्ष योनि है. इसोंके दो भेद है, पर्यापा अपर्याप्ता जो अपर्याप्ता है वह असमर्थ है जो पर्याप्ता है वह समर्थ है वर्ण गन्ध रस स्पर्श कर संयुक्त है जहां एक पर्याप्ता है वहां नियम असंख्या अपर्याप्ता होते है एक गिरसी जीतनी पृथ्वीकायमें असंख्य जीव होते है वह अगर एक सरसंमे भव करे तो जम्बुद्वीपमें न समावे एक मुहूर्तमें भव करे तो उत्कृष्ट १२८२४ भव करते है।

अप्काय अपकायके अनेक भेद है ओसका पाणी धुमसका पाणी कर्ड़ीयंत्रीकापाणी, आकाशकापाणी, समुद्रोंकापाणी तालाबपाणी वरुणीपाणी घृतसमुद्रकापाणी क्षीरसमुद्रकापाणी इक्षुसमुद्रका पाणी लवणसमुद्रकापाणी कुंवे तलावद्रह पाणी आदि अनेक प्रकारका पाणी तथा स्वेद्य जलमाय वर्णादि है इत्यादि इसोंके दो भेद है प.ाप्ता अपर्याप्ता जो अपर्याप्ता है वह असमर्थ है जो पर्याप्ता है वह वर्णगन्धरस स्पर्श कर संयुक्त है एक पर्याप्ताकि नेश्राय [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]



कर्कतरत्न, चंद्ररत्न, स्फटिकरत्न, कांतीनाथ, मरकतरत्न, मसार गल्लरत्न, पुलमांसरत्न, इन्द्रनीलरत्न, चन्द्रकान्तरत्न, सौगंधि-रत्न, हंसगर्भरत्न, पुलाकरत्न, सौगन्धिरत्न, अरुणरत्न, लोहम-णीरत्नीया अञ्जनीयरत्न, विद्युद्रत्न, जलकान्तमणि, सूर्यमणि, सूर्यकान्तमणि चन्द्रकान्तमणि इत्यादि जितना बखान करना है जिसकी नाम मात्र गांधि है. क्योंकि ये भेद हैं, पनोंका जल्दीका ना जलवीका है वह असमर्थ है औ पनोंका है वह सबसे है [illegible] मालूम है जहां तक पनोंका है वहां तिसका अतिसका प्रभाव होते है एक जिसकी कीमती पुन्यीका-र्थ अनेकन भी होते है यह असर तक बहुतेक [illegible] को [illegible] वध करते है।

बाहर [illegible] अनेक भेद है [illegible] नामी पुरुषकी नामी [illegible] [illegible]

[illegible]

स्पर्श कर संयुक्त है एक पर्याप्ताकि नेश्राय असंख्याते अपर्याप्ता उत्पन्न होते हैं एक बुन्दगीयामें असंख्य जीव हैं सातलक्ष योनि है एक महुर्तमें उत्कृष्ट १२८२४ भव करते है।

बादर वायुकायके अनेक भेद है । पूर्ववायु पश्चिमवायु दक्षिणवायु उत्तरवायु उर्ध्ववायु अधोवायु विदिशावायु उत्कलिक वायु मंडलीयावायु मंडवायु उदंडवायु द्विपवायु समुद्रवायु इत्यादि जिनोंका दो भेद है पर्याप्ता अपर्याप्ता जो अपर्याप्ता है वह असमर्थ है जो पर्याप्ता है वह वर्णगन्धरस स्पर्श कर संयुक्त पर्याप्ताकि निश्राय निश्चय असंख्याते अपर्याप्ता जीव उत्पन्न होते हैं एक झबुकडेमें असंख्य जीव होते है वह एक महुर्तमें उत्कृष्टभव करे तो १२८२४ भव करते हैं । सात लक्ष जाति है।

बादर वनस्पतिकायके दो भेद है (१) प्रत्येक शरीरी (२) साधारण शरीरी जिस्मे प्रत्येक शरीरी (जिस शरीरमें एकही जीव हो) के बारहा भेद है वृक्ष, गुच्छा, गुम्मा, लता, वेल्ली, इक्षु तृण, वलय, हरिय औषधि, जलरूह, कुहणा-जिस्में वृक्षके दो भेद हैं।

(१ जिस वृक्षके फलमें एक गुठली हो उसे एकगठीये कहते हैं और जिस वृक्षके फलमें बहुतसे गुठलीयो (बीज) होते हो उसे बहुबीजा कहते हैं जैसे एक गुठलीवालोंके नामयथा निंबवृक्ष [illegible] जिस वृक्षके फलमें एक [illegible] जिस्के [illegible] असंख्य जीव है [illegible] एक जीव होते है

[illegible] वृक्षके नाम [illegible]

अयाढग वृक्ष, दाडिम, उम्बर वडनदी वृक्ष, पीपरी अंगाली मिथावृक्ष दालीवृक्ष कादालीवृक्ष इत्यादि औरभी जिस वृक्षके फलमें अनेक बीज हो वह सब इसके सामिल समझना चाहिये जिस्के मूल कन्द स्कन्ध भाग परवालमें असख्यात जीव है पत्रोंमें प्रत्येक जीव पुष्पोंमें अनेक जीव फलमें बहुत जीव है।

(२) गुच्छा=अनेक प्रकारके होते है वैगण सलाइ धुवली जिमुणीके लच्छाइके मलानीके माडाइके इत्यादि—

(३) गुल्मा–अनेक प्रकारके होते है जाइ जुइ मोगरा मालती नौमालती वसन्ती माधुली फाघुली नगराइ पोहिना इत्यादि।

(४) लता–अनेक प्रकारकी होती है पद्मलता वसन्तलता नागलता अशोकलता चम्पकलता सुमनलता वेणलता आइमुक्तलता कुन्दलता श्यामलता इत्यादि।

(५) वेलीके अनेक भेद है तुंबीकीवेली तीसंडी, तिउसी, पुंसफली, वालंगी, पल, वाल्हुकी, नागरवेली घोसाडा (तोरू) इत्यादि।

(६) इक्षुके अनेक भेद है इक्षु इक्षुवाडी वारुणी वाल इक्षु पुडइक्षु वरदइक्षु चकइक्षु इत्यादि।

(७) तृणके अनेक भेद है साहाखातृण मालियातृण दाभा [illegible] तृण [illegible] अजुनतृण आमाईतृण इकडतृण इत्यादि

(८) [illegible] अनेक भेद [illegible] इत्यादि

(९) [illegible] अनेक भेद है [illegible] इत्यादि

(१०) औषधिके अनेक भेद–शाली व्याली ब्रही गोधम जव जवाजव ज्वारफल मसुर चिल मुंग उडद नफा कुलत्थ चागधु आलिस दूस तीलपलो मेथा आयेसी कसुंब कोदर कंगू रालग माम कोद्रासंण सरिसब मूल बीज इत्यादि अनेक प्रकारके धान्य होते हैं वह सब इन औषधिके अन्दर गीने जाते है।

(११) जलरूहा–उत्पलकमल पद्मकमल कौमुदिकमल निल-निकमल शुभकमल सौगन्धीकमल पुंडरिककमल महापुंडरिक-कमल अरविंदकमल शतपत्रकमल सहस्रपत्र कमल इत्यादि।

(१२) कुहुणका अनेक प्रकारके हैं आत काल पात सिघो-टीक कच कनड इत्यादि वह वनस्पति भी जलके अन्दर होती है।

इन बारह प्रकारकि प्रत्येक वनस्पतिकायपर दृष्टान्त जैसे सरसवका समुह एकत्र होनेसे एक लड्डु बनता है परन्तु उन सरसवके दाने सब अलग अलग अपने अपने स्वरूपमें है इसी माफीक प्रत्येक वनस्पतिकायभी असंख्य जीवोंका समुह एकत्र होते हैं परन्तु एकेका जीवके अलग अलग शरीर अपना अपना भिन्न है जैसे अनेक तीलोंके समुह एकत्र हो तीलपापडी बनती है इसी माफीक एक फल पुष्पमें असंख्यजीव रहते है वह सब अपने अपने अलग अलग शरीरमें रहते है जहांतक प्रत्येक वनास्पति हरि रहेती है वहांतक असंख्याते जीवोंके समुह एकत्र रहते हैं जब वह फल पुष्प पक जाते है तब उनोंके अन्दर एक जीव रह जाते हैं तथा उनोंके अन्दर बीज हो तो जीतने बीज उतनेही जीव और एक जीव फलका मूलगा रहता है इति

(२) दूसरा साधारण वनास्पतिकाय है जिसके अनेक भेद हैं सूरण कान्दा लसण आदो अदरखी रतालु पींडालु आलु [illegible] गाजर सुवर्णकन्द वज्रकन्द कृष्णकन्द मालकी मूल [illegible] कंदुरी नागरमोथ उगते अंकुरे थोथ पत्ते कि जि[illegible] कूपल कोमल फल पुष्प जिसके [illegible] भामी भूमि पैदा हुई पुष्पमें अनन्तकाय है औरभी जमीनके अन्दर उत्पन्न होनेवाले वनास्पति सब अनन्तकायमें आती आती है [illegible] जैसा [illegible] अग्निमें [illegible] जिस [illegible] सब सुईके अग्र [illegible] होजाती है इसी माफीक साधारण वनास्पतिके सब अनन्ते अनन्ते जीव होते है वह अनन्ते जीव [illegible] पैदा होते है साथही में आहार ग्रहन करते है साथही में मरते है अ- र्थात् उन अनन्ते जीवोंका एक ही शरीर होते है इसे साधारण वनास्पतिकाय या बादर निगोदभी कहते है।

वनास्पतिकायके च्यार भेद बतलाये जाते है।

(१) प्रत्येक वनास्पतिकायके जिसमें प्रत्येक वनास्पति उत्पन्न होती है [illegible]।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

इन साधारण और प्रत्येक वनस्पतिको छद्मस्थ मनुष्य कैसे पेछान सके इस वास्ते दृष्टान्त बतलाते हैं.

जीस मूल कन्द स्कन्ध साखा प्रतिसाखा त्वचा प्रवाल पत्र पुष्पफल और बीजको तोडते वखत अन्दरसे चिकणास निकले तुटतो सम तुटे उपरकि त्वचा गीरदार हो वह वनस्पति साधारण अनंतकाय समजना और तुटतो विषम तुटे त्वचा पातली हो अन्दरसे चिकणास न हो उन वनस्पतिकायको प्रत्येक समझना

सीघोडे कचे होते है उनोंमें संख्याते असंख्याते और अनन्ते जीव रहते है इन प्रत्येक और साधारण वनस्पति कायके दो दो भेद है (१) पर्याप्ता (२) अपर्याप्ता एवं वादर एकेन्द्रियका १२ भेद समझना । इति एकेन्द्रियके २२ भेद है

(२) बेइन्द्रियके अनेक भेद है । लट गीडोले कीडे कृमिये कुक्षीकृमिये पुरा । जलोख लेवों खापरीयो इली रसचलीत अस पाणीमें रसइये जीव. या शंख शीप, कोडी चनणा वेसीमुखा सूचीमुखा वाला अलालीया मूनाग अक्ष लालीये जीव ठंडीरोटी विगेरेमें उत्पन्न होते है इनके सिवाय जीभ और त्वचावाले जीतने जीव होते है वह सब बेइन्द्रियकि गीनतीमें है ।

(३) तेइन्द्रियके अनेक भेद है–उपपातिका रोहणीया मांकड माकड कीडी मकोडे डंस मंस उदाइ उधाली कष्टहारा पत्राहारा पुष्पाहारा फलाहारा तृणविटोत पुष्प० फल० पत्रविटित जु. लिख. कानखोजुर इली धनेडीका जो धनमे पेदा होती है चंम जु गोकीटक जो पशुवोंके कानोंमे पेदा होते है । गर्दभ गोशालामें पेदा होते है. गोकीट गोवरमे पेदा होते है । धान्यकीट कुंथु इलीका इन्द्रगोप चतुर्मासामे पेदा होते है. इत्यादि जीसके तीन इन्द्रिय शरीर जीभ नाक हो । वह तेइन्द्रिय है ।

(४) चोरिन्द्रिय के अनेक भेद ह अंधिका पत्तिका मक्खी मत्सर कीडे तीड पतंगीये विच्छु जलविच्छु कृष्णविच्छु श्यामपत्तिका यावत् श्वेत पत्तिका भ्रमर चित्रपक्षा विचित्रपक्षा जलचारा गोमयकीडा भमरी मधु मक्षिका-टाटीया डंस मसगा कीसारी मेलक ढंमक इत्यादि जीव जीवोंके शरीर जीव नाड. भेद होते है यह सब चोरिन्द्रियकी गीणतीमें समझना. इन तीन वैकलेन्द्रियके पर्याप्ता अपर्याप्ता मिलानेसे ६ भेद होते है।

(५) पांचेन्द्रिय जीवोंके च्यार भेद है नारकी, तीर्यंच, मनुष्य, देवता, जिस्मे नारकीके सात भेद है यथा=घम्मा वैसा शीला अञ्जना रिठा मघा माघवती-सात नरकके गौत्र. रत्नप्रभा, शार्करामभा, वालुकाप्रभा, पङ्कप्रभा, धूमप्रभा, तमःप्रभा तमस्तमःप्रभा इन सातों नरकके पर्याप्ता अपर्याप्ता मीलानेसे चौदे भेद होते है।

(२) तीर्यंच पांचेन्द्रियके पांच भेद है यथा-जलचर, स्थलचर, खेचर, उरपुरिसर्प भुजपुरिसर्प. जिस्मे जलचरके पांच भेद है मच्छ कच्छ मगरा गाहा और सुसमारा।

(१) मच्छके अनेक भेद है यथा-सन्हमच्छा युगमच्छा विद्युत्मच्छा हलीमच्छा मागरमच्छा रोहणीयामच्छा नंदुलमच्छा कनकमच्छा शालीमच्छा पताकामच्छा इत्यादि (२) कच्छुके दो भेद है (१) अस्थि हड्डीवाले कच्छु (२) मांसवाले कच्छु (३) गाहके अनेक भेद ढोलीगाह वेढीगाह मुदीगाह पुला-गाह सामागाह मयच्छागाह कालागाह पुलीगाह इत्यादि (४) मगरा मगरा माहमगरा दन्तान मगरा पा... मगरा सायरमगरा दन्तीयमगरा इत्यादि (५) सुसमारा एकही प्रकारका होता है यह भेद ५ ... होते है यह पांच प्रकारके जलचर जीव संज्ञी भी होते है और असंज्ञी भी होते है सो ... होते

है वह गर्भजस्त्रि पुरुष नपुंसक तीनों प्रकारके होते है और जो समुत्सम होते है वह एक नपुंसकही होते है।

(२) स्थलचरके च्यार भेद है यथा-एकखुरा दोखुरा गंडीपदा सन्हपदा जिस्मे एक खुरोंका अनेक भेद है अश्व खर खचर इत्यादि दो खुरोंके अनेक भेद है गौ भेंस ऊंट बकरी रोझ इत्यादि-गंडीपदाके भेद गज हस्ति गेंडा गोलड इत्यादि सन्हपदके भेद सिंह-व्याघ्र नाहार केशरीसिंह बन्दर मञ्जार इत्यादि इनोंके दो भेद है गर्भज और समुत्सम।

(३) खेचरके च्यार भेद है यथा. रोमपक्खी चर्मपक्खी समुगपक्खी. वीततपक्खी-जिस्मे रोमपक्खी-ढंकपक्खी कंक-पक्खी, बदासपक्खी. हंसपक्खी. राजहंस० कालहंस, क्रौंच-पक्खी. सारसपक्खी. कोयल० राडीराडा, मयूर पारेवा तोता मैना चीडी कमेडी इत्यादि चर्मपक्खी चमचेड विगुल भारंड समुद्रपख इत्यादि समुगपक्खी जीस्की पांखों हमेशां जुडी हुइ रहेते है वितित पक्खी जीस्की पांखों हमेशां खुली हुइ रहती है इनोंकेभी दो भेद है गर्भज समुत्सम पूर्ववत्।

(४) उरपरीसर्प के च्यार भेद है अहिसर्प अजगरसर्प मोहरगसर्प. अलसीयो. जिस्मे अहिसर्पके दो भेद है एक फण करे दुसरा फण नही करे. फण करे जिस्के अनेक भेद है आसी-विष सर्प दृष्टिविषसर्प त्वचाविषसर्प उग्रविषसर्प भोगविषसर्प लालविषसर्प उश्वासविषसर्प निश्वासविषसर्प कृष्णसर्प सु-पेदसर्प इत्यादि जो फण न करे उनोंका अनेक भेद है-दोघोणा गोणस चीतल पैणा ओणा होलसर्प पैडगसर्प इत्यादि। अजगर एकही प्रकारका होते है मोहरग नामका सर्प अढाइद्विपके बाहार होते हैं इनोंकी अवगाहना उत्कृष्ट १००० योजनकी होती है

आसालीया आढाइद्विपके पंदरा क्षेत्रमें ग्राम नगर सेना चक्रवर्ति आदिके अन्दर तथा चक्रवर्ति वासुदेवकी सेनाके नीचे जघन्य अंगुलके असंख्यात भाग उत्कृष्ट बारहा योजनका शरीर होता है जिसके शरीरमें इतना पानी पना तो जोरदार होता है कि इस पानीसे वह बारहा योजनकी भूमिको पोली पना देते है।

(५) भुजपरसर्पोंकी अनेक भेद है जैसे नकुल गोह मूषा आदि यह जलचर थलचर खेचर उरपुरसर्प भुजपुर सर्प पांच प्रकारके सभी तीर्यंच समपाके होते है और यहही पांचों प्रकारके तीर्यंच असंज्ञी मन रहीत समुच्छम होते है जो तीर्यंच है वह कि गर्भज नपुंसक होते है और जो समुच्छम होते है वह मात्र नपुंसक होते है एवं १० भेद हुवे इन दशोंके पर्याप्ता और दश अपर्याप्ता मिलाकर तीर्यंच पांचेन्द्रियके २० भेद होते है एकेन्द्रियके २२ विकलेन्द्रियके ६ और पांचेन्द्रियके २० सर्वे मीलाके तीर्यंचके ४८ भेद होते है।

(३) मनुष्यके दो भेद है (१) गर्भज मनुष्य (२) समुच्छम मनुष्य—जिसमें समुच्छम मनुष्य जो आढाइ द्वीप पंदरा क्षेत्र व कर्मभूमि १५ अकर्मभूमि ३० अन्तरद्विपा ५६ एवं १०१ जाति के मनुष्योंके विष्टादिक चौदा स्थानक अंगुलके असंख्यात [illegible] [illegible]

अन्तरद्विप बतलाते है यथा यह जम्बुद्विप एक लक्ष योजनके विस्तारवाला है इनोंकी परिधि ३१६२२७।३।१२८।१३॥-१-१-६।८ इतनी है इनोंके बाहार दो लक्ष योजनके विस्तारवाला लवण समुद्र है। जम्बुद्विपके अन्दर जो चूल हेमवन्त नामका पर्वत है उनोंके दोनों तर्फ लवणसमुद्रमें पूर्व पश्चिम दोनो तर्फ दाढके आकार टापुवोंकी स्रेन आ गइ है यह जम्बुद्विपकि जगतीसे लवणसमुद्रमें ३०० योजन जानेपर पहला द्विपा आता है यह तीनसो योजनके विस्तारवाला है इन द्विपसे लवणसमुद्रमें ४०० योजन जानेपर दुसरा द्विपा आता है यह ४०० योजनके विस्तारवाला है यहभी ध्यानमें रखना चाहिये कि यह दुसरा द्विपा जम्बुद्विपकी जगतीसेभी ४०० योजनका है। दुसरा द्विपासे लवणसमुद्रमें पांचसो योजन तथा जगतीसेभी पांचसो योजन जावे तब तीसरा द्विपा आता है यह पांचसो योजनके विस्तारवाला है उस तीसरा द्विपासे ६०० योजन लवणसमुद्रमें जावे तथा जगतीसेभी ६०० योजन जावे तब चौथा द्विपा आवे यह ६०० योजनके विस्तारवाला है इस चौथा द्विपासे ७०० योजन लवणसमुद्रमें जावे तथा जगतीसेभी ७०० योजन जावे तब पांचवा द्विपा [illegible] योजनके विस्तारवाला आता है उस पांचवा द्विपासे [illegible] योजन तथा जगतीसे [illegible] योजन लवणसमुद्रमें [illegible]

आहासिय. वेमाणिय, नागल, हयकन्न, गयकन्न, गोकन्न ब्याकुल-कन्न, अयंसमुहा. मेघमुहा, अयमुहा, गोमुहा, आसमुहा, हत्थिमुहा, सिंहमुहा, वाग्घमुहा. आसकन्ना, हरिकन्ना, अकन्ना, कन्नपाउरणा, उक्कामुह, मेहमुहा, विज्जुमुहा, विज्जुदान्ता, घणदान्ता, लट्ठ-दान्ता, गुढदान्ता, सुद्धदान्ता एवं २८ द्विपचुल्ल हेमवन्त पर्वतकि निश्राय है इसी माफीक २८ द्विप इसी नामके सीखरी पर्वतकी निश्राय समझना एवं ५६ द्विपा है उन प्रत्येक द्विपमें युगल मनुष्य निवास करते है उन्होंका शरीर आठसो धनुष्यका है पल्योपमके असंख्यातमें भागकी स्थिति है. दश प्रकारके कल्पवृक्ष उन्होंकी मनोकामना पुरण करते है वहांपर असी मसी कसी राजा राणी चाकर ठाकुर कुच्छ भी नहीं है. देखो छे आरोंके थोकडेमें विस्तार इति ।

अकर्मभूमियोंके ३० भेद है पांच देवकुरु, पांच उत्तरकुरु, पांच हरिवास, पांच रम्यक्वास, पांच हेमवय, पांच एरणवय एवं ३० जिसमें एक देवकुरु, एक उत्तरकुरु, एक रम्यक्वास, एक हरीवास, एक हेमवय, एक एरणवय एवं ६ क्षेत्र जम्बुद्विपमें. इनसे दुगुणा बारहा क्षेत्र धातकीखंडमें बारहा क्षेत्र पुष्करार्द्ध द्विपमें एवं ३० भेद यह अकर्मभूमिमें मनुष्ययुगल है वहां भी असी मसी कसी आदि कर्म नहीं है. उनोंके भी दश प्रकारके कल्पवृक्ष मनोकामना पुरण करते है ([illegible] आराधिकारसे देखो)

कर्मभूमि मनुष्योंके पंदरा भेद है पांच भरतक्षेत्रके मनुष्य, पांच एरवत पांच महाविदेह जिसमें एक भरत एक एरवत, एक महाविदेह एवं तीन क्षेत्र जम्बुद्विपमें इनसे दुगुणा छे क्षेत्र धातकीखंड द्विपमें है छे क्षेत्र पुष्करार्द्ध द्विपमें है कर्मभूमि कहा [illegible] असी मसी कसी आदि [illegible] करते है, इसे कर्मभूमि

करते है. यहांपर भरतक्षेत्रके मनुष्योंका विशेष वर्णन करते है. मनुष्य दो प्रकारके है (१) आर्य मनुष्य, (२) अनार्य मनुष्य. जिस्में अनार्य मनुष्योंके अनेक भेद है. जैसे शकदेशके मनुष्य, बब्बरदेशके, यवनदेशके, सबरदेशके. चिलातदेशके, पोक्कदेशके, पापालदेशके, गोंडदेशके. पुलाकदेशके, पारसदेशके इत्यादि जिन मनुष्योंकी भाषा अनार्य व्यवहार अनार्य, आचार अनार्य, खानपान अनार्य. धर्म अनार्य है इस वास्ते उनोंको अनार्य कहा जाते है उनोंके ३१९७४॥ देश है।

आर्य मनुष्योंके दो भेद है (१) ऋद्धिमन्ता, (२) अनऋद्धिमन्ता, जिस्मे ऋद्धिमन्ते आर्य मनुष्योंके छे भेद है. तीर्थंकर, चक्रवर्ति, बलदेव, वासुदेव, विद्याधर और चारणमुनि।

अनऋद्धिमन्ता मनुष्योंके नौ भेद है. क्षेत्रार्य, जातिआर्य, कुलआर्य, कर्मार्य, शिल्पार्य, भाषार्य ज्ञानार्य, दर्शनार्य, चारित्रार्य. जिस्में क्षेत्रआर्यके साडापचवीस क्षेत्रआर्य माने जाते है. उनोंके नाम इस माफिक है. मागधदेश राजगृहनगर, अंगदेश चम्पानगरी, बंगदेश ताम्रलीपुरी, कलिंगदेश कंचनपुर, काशीदेश बनारसी, कोशलदेश संकेतपुर, कुरुदेश गजपुर, कुशावर्त सौरीपुर पंचालदेश कपिलपुर, जंगलदेश (मारवाड) अहिछत्रा, सोरठदेश द्वारामति, विदेहदेश मिथिला, वच्छदेश कोसुंबी, मल्लिलदेश नंदिपुर मलयादेश भद्दलपुर, वत्सदेश वैराटपुर, वरणदेश अच्छापुर दशार्णदेश मृत्तकावती चेदीदेश शुक्तावती, सिन्धुदेश वीतभयपट्टन, सुरसेनदेश मथुरा, भंगदेश पावापुरी, पुरिवर्तदेश सुसमापुर, कुनाला सावत्थी, लाटदेश कोटीवर्ष, केकय नामका अर्द्ध देशमें श्वेताम्बिकानगरी इति। इन आर्यदेशोंका लक्षण जहांपर तीर्थंकर चक्रवर्ति वासुदेव, बलदेव, प्रतिवासुदेव आदिके जन्म होते है तीर्थंकरोंके पंचकल्याणक होते है.

जहांपर भाषा, आचार, व्यवहार, वैपारादि आर्यकर्म होते है ऋतु समफल देवे उनीकों आर्यदेश कहते है।

आर्यजातिके छे भेद है. यथा—अम्बष्टजाति, कलिंदजाति, विदेहजाति, वेदांगजाति, हरितजाति, चुंचणरुपाजाति. उन जमानेमें यह जातियों उत्तम गीनी जाती थी।

कुलार्यके छे भेद है. उग्रकुल, भोगकुल, राजन्यकुल, इक्ष्वाक्कुल, ज्ञातकुल, कोरवकुल. इन छे कुलोंसे केइ कुल निकले है, इन कुलोंकों उत्तम कुल माने गये थे।

कर्मआर्य—वैपार करना. जैसे कपडाका वैपार, रुइका वैपार, सुतके वैपार, सोनाचान्दीके दागीनेका वैपार, कांसी पीतलके बरतनोंके वैपार, उत्तम जातिके किराणाके वैपार. अर्थात् जिस्में पंदरा कर्मादान न हो, पांचेन्द्रियादि जीवोंका वध न हो उसे कर्मआर्य कहते है।

शिल्पार्य—जैसे सुनारकी कला. तंतुवय याने कपडे बनानेकी कला, काष्ट कोरनेकी, चित्र करनेकी, सोनाचन्दी घडनेकी मुंजकला, दान्तकला, मेखकला, पत्थर चित्रकला, पत्थर कोरणी कला, रांगनकला, कोष्टागार निपजानेकी कला, गुंथणकला, बन्धणलवन्धन कला, पाक पकावनेकी कला इत्यादि. यह आर्यभूमिकी आर्य कलाओं है।

भाषार्य—जो अर्ध मागधी भाषा है, वह आर्य भाषा है. इनके सिवाय भाषाके लिये अठारा जातिकी लीपी है वह भी आर्य है।

ज्ञानार्यके पांच भेद है. मतिज्ञान श्रुतिज्ञान, अवधिज्ञान. मन पर्यवज्ञान, केवलज्ञान इन पांचों ज्ञानोंको आर्य ज्ञान कहते है।

दर्शनार्यके दो भेद है (१) सराग दर्शनार्य, (२) वीतराग दर्शनार्य. जिस्में सराग दर्शनार्यके दश भेद है।

(१) निसर्गरुची-जातिस्मरणादि ज्ञानसे दर्शनरुची।
(२) उपदेशरुची-गुरुआदिके उपदेशसे ,,
(३) आज्ञारुची-वीतरागदेवकी आज्ञासे ,,
(४) सूत्ररुची-सूत्रसिद्धान्त श्रवण करनेसे ,,
(५) बीजरुची-बीजको माफिक पदसे अनेक ज्ञान, दर्शनरुची।
(६) अभिगमरुची-द्वादशांगी जाननेसे विशेष ,,
(७) विस्ताररुची-धर्मास्ति आदि पदार्थसे ,,
(८) क्रियारुची-वीतरागके बताइ हुइ क्रिया करनेसे ,,
(९) धर्मरुची-वस्तुस्वभावके ओलखनेसे ,,
(१०) संक्षेपरुची- अन्य मत ग्रहन न किये हुये भद्रिक जीवोंको ,,

दुसरा वीतराग दर्शनार्यके दो भेद है. (१) उपशान्त कषाय, (२) क्षीण कषाय. इत्यादि सयोगी अयोगी केवली तक कहना।

(९) चारित्रार्यके पांच भेद है. सामायिक चारित्र, छेदोपस्थापनीय चारित्र, परिहारविशुद्ध चारित्र, सूक्ष्मसंपराय चारित्र, यथाख्यात चारित्र इति. आर्य मनुष्य इति मनुष्य।

(४) देव पांचेन्द्रियके च्यार भेद यथा-भुवनपति, वाणव्यंतर ज्योतिषी, वैमानिक। जिस्मे भुवनपतियोंके दश भेद है। असुरकुमार नागकुमार, सुवर्णकुमार, विद्युत्कुमार अग्निकुमार द्विपकुमार दिशाकुमार, उदधिकुमार पवनकुमार, स्तनितकुमार। पंदरा परमाधामियों असुरकुमारकी जातिमे हैं नाम अम्ब आम्बरीष शाम सबले रुद्दे विरुद्दे काले महाकाले असीपत्र धणु कुम्भ वालु वैतरणि खरस्वरे महाघोषे।

सोलह वाणव्यंतरके नाम पिशाच भूत यक्ष राक्षस किन्नर किंपुरुष महोरग गंधर्व आणपन्ने पाणपन्ने इसिवाए भूतिवाए

कण्डे महाकण्डे कोहंड पयंगदेवा, वाणव्यंतरोंमें दश जातिके जंभृक देवोंके नाम आणजंभृक पाणजंभृक लेणजंभृक शेनजंभृक वत्थजंभृक पुष्पजंभृक फलजंभृक पुष्पफलजंभृक विद्युत्‌जंभृक अग्निजंभृक।

ज्योतिषीदेव पांच प्रकारके है. चन्द्र सूर्य, ग्रह नक्षत्र, तारा पांच स्थिर अढाइ द्विपके बाहार है जिनोंकि कान्ति अन्दरके ज्योतिषीयोंसे अधिक है सूर्य सूर्यके लक्ष योजन और सूर्य चन्द्रके पचासहजार योजनका अन्तर है. आढाइ द्विपके बाहार जहां दिन है वहां दिनही है और जहां रात्री है वहां रात्रीही है और पांचो प्रकारके ज्योतिषी आढाइ द्विपके अन्दर है वह सदैव गमनागमन करते रहते है। चन्द्र सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा।

वैमानिक देवोंके दो भेद है. (१) कल्प, (२) कल्पअतित. जो कल्प वैमानवासी देव है उनोंमें इन्द्र सामानिक आदि देवों का छोटा बडापणा है जिनोंके बारहा भेद है सौधर्मकल्प, इशानकल्प सनत्कुमार, महेन्द्र ब्रह्मदेवलोक लंतकदेवलोक महाशुक्रदेवलोक सहस्रादेवलोक अणतदेवलोक पणतदेवलोक अरणदेवलोक अच्युतदेवलोक॥ जो तीन किल्विषीदेव है वह मनुष्यभवमें आचार्योपाध्यायके अवगुण बाद बोलके किल्विषीदेव होते है वहां पर अच्छे देव उनोंसे अछुत रखते है. अपने विमानमें आने नहीं देते है अर्थात् बडा भारी तिरस्कार करते है जिनोंके तीन भेद है (१) तीन पल्योपमकि स्थितिवाले पहले दुसरे देवलोकके बाहार रहते है (२) तीन सागरोपमकी स्थितिवाले तीजा चोथा देवलोकके बाहार रहते है (३) तेरह सागरोपमकी स्थितिवाले छठा देवलोकके बाहार रहते है और पांचमा देवलोकके तीसरा रिष्ट नामक परतरमें नौ लोकांतिकदेव रहते है उनोंका नाम

सारस्वत आदित्य वन्हि वारुण गर्दतोये तुषिते अव्याबाध अग्निच्चा और रिष्ट ॥

कल्पातित-जहां छोटे बडेका कायदा नही है अर्थात् जहां सबदेव अहमिन्द्र हैं उनोंके दो भेद है ग्रीवेग और अनुत्तर वैमान जिस्में ग्रीवेगके नौ भेद है यथा—भद्दे सुभद्दे सुजाये सुमानसे सुदर्शने प्रीयदर्शने आमोय सुपडिबुद्धे और यशोधरे। अनुत्तरवैमानके पांच भेद है. विजय विजयवन्त जयन्त अपराजित और सर्वार्थ सिद्ध वैमान इति १०-१५-१६-१०-१२-९-३-९-५ एवं ९९ प्रकारके देवतोंके पर्याप्ता अपर्याप्ता करनेसे १९८ भेद देवतोंके होते है देवतोंके स्थान=भुवनपतिदेवता अधोलोकमे रहते है वाणमित्र (व्यंतर) ज्योतिषीदेव तीर्छालोकमें और वैमानिकदेव उर्ध्वलोकमें निवास करते है इति ।

उपर बतलाये हुये ५६३ भेद जीवोंका संक्षेपमें निर्णय--

१४ नरकके जीवोंका पर्याप्ता अपर्याप्ता ।

४८ तीर्यचके सूक्ष्म पृथ्वीकायके पर्याप्ता अपर्याप्ता बादर पृथ्वीकायके पर्याप्ता अपर्याप्ता एवं ४ भेद अपकायके चार भेद तउकायके च्यार भेद वायुकायके च्यार भेद और वनास्पति जो सूक्ष्म साधारण प्रत्येक इन तीनोंमें पर्याप्ता अपर्याप्ता से छे भेद मीलाके २२ भेद बे इन्द्रिय तेइन्द्रिय चौरिन्द्रिय इन तीनोंके पर्याप्ता अपर्याप्ता मीलाके ६ भेद तीर्यच पांचेन्द्रियके जलचर स्थलचर खेचर उरपुर भुजपुर यह पांच संज्ञी और पांच असंज्ञी मील दश भेद इनोंके पर्याप्ता अपर्याप्ता मीलके २० भेद होते है २२-६-२० एवं ४८ भेद ।

३०३ मनुष्य कर्मभूमि १५ अकर्मभूमि ३० अन्तर द्विपा ५६

मीलाके १०१ भेद इनोंके पर्याप्ता अपर्याप्ता करनेसे २०२ पन्दरो-पद मनुष्योंके चौदा स्थानमें समुत्सम जीव उत्पन्न होते है वह अपर्याप्ता होनेसे १०१ मीलाकेमर्व ३०३ देवतोंके दशभुवन-पति १५ परमाधामी १६ वाणमित्र १० जंभृक्क दश ज्योतीषी बारहा देवलोक तीन कल्बिषी नौ लौकान्तिक नौ ग्रीवेक पांच अनुत्तर वैमान एवं ९९ इनोंके पर्याप्ता अपर्याप्ता मीलाके १९८ भेद हुवे १४-४८-३०३-१९८ एवं जीव तत्त्वके ५६३ भेद होते है इनके सिवाय अगर अलग अलग किया जावे तो अनंते जीवोंके अनंते भेदभी हो सकते है। इति जीव तत्त्व।

(२) अजीवतत्त्वके लक्षण-चैतन्यता रहित पुन्यपापका कर्ता सुख दुःखके अभोक्ता पर्याय प्राण गुणस्थान रहित द्रव्यसे अजीव शाश्वता है भूत कालमें अजीव था वर्तमान कालमें अजीव है भविष्यमें अजीव रहेगा तीनो कालमें अजीवका जीव होवे नही. द्रव्यसे अजीवद्रव्य अनंते है क्षेत्रसे अजीवद्रव्य लोकालोक व्यापक है कालसे अजीवद्रव्य अनादि अनंत है भावसे अगुरु लघुपर्याय संयुक्त है. नाम निक्षेपासे अजीव नाम है स्थापना निक्षेपासे अजीव एसे अक्षर तथा अजीवकि स्थापना करना. द्रव्य से अजीव अपना गुणोंकी कार्यमें नही है. भावसे अजीव अपना गुणोंकी अपने कार्यमें आवे जैसे धर्मास्तिक चलन गुण सहायी है जबतक इस मनुष्यके वह लकडी कार्यमें न आती हो तबतक इस मनुष्यकि अपेक्षा वह लकडी द्रव्य है और वह ही लकडी इस मनुष्यके कार्यमें आवे [illegible] तब वह लकडी [illegible] माना जाता है

[illegible]

देश, प्रदेश, आकाशास्तिकायके स्कन्ध, देश, प्रदेश, एवं ९, भेद और एक कालका समय मीलनेसे दश भेद हुवे. धर्मास्तिकाय पांच बोलोंसे जानी जाती है द्रव्यसे एक द्रव्य, क्षेत्रसे लोकव्यापक कालसे आदि अन्त रहित भावसे अरूपी जिस्मे वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श नहीं है गुणसे चलन गुण, जैसे पाणीके आधारसे मच्छी चलती है एसी माफीक धर्मास्तिकायके आधारसे जीवाजीव गमनागमन करते है। अधर्मास्तिकाय पांच बोलोंसे जानी जाती है द्रव्यसे एक द्रव्य, क्षेत्रसे लोकव्यापक कालसे आदि अन्त रहित भावसे अरूपी वर्ण, गन्ध रस, स्पर्श रहित, गुणसे-स्थिरगुण जैसे थक पाये हुए पुरुषोंको वृक्षकी छायाका दृष्टान्त। आकाशास्तिकाय पांच बोलोंसे जानी जाती है। द्रव्यसे एक द्रव्य, क्षेत्रसे लोकालोक व्यापक कालसे आदि अन्त रहित भावसे अरूपी वर्ण गन्ध रस स्पर्श रहित गुणसे आकाशमें विकाशका गुण भीतमें खुंटी तथा पाणीमें पतासाका दृष्टान्त। कालद्रव्य पांच बोलोंसे जाने जाते है द्रव्यसे अनन्त द्रव्य कारण काल अनन्ते जीव पुद्गलोंकि स्थितिको पुरण करता है इस वास्ते अनन्त द्रव्य माना गया है क्षेत्रसे अढाइ द्विप परिमाणे कारण [illegible] अढाइ द्विपमें ही है समयावलिका आदि [illegible] अढाइ द्विपमें ही गीना जाते है कालसे आदि [illegible] है भावसे अरूपी [illegible] गन्ध रस स्पर्श रहित है [illegible]

[illegible]

स्कन्ध, तीन प्रदेशी स्कन्ध एवं च्यार पांच यावत् दश प्रदेशी स्कन्ध संख्यात प्रदेशी स्कंध, असंख्यात प्रदेशी स्कंध, अनंत प्रदेशी स्कन्ध कहे जाते हैं. निश्चयनयसे परमाणु जीस वर्णका होते है वह उसी वर्णपणे रहते है कारण वस्तुधर्मका नाश कीसी प्रकारसे नहीं होता है व्यवहारनयसे परमाणुवोंका परावर्तन भी होते हैं व्यवहारनयसे एक पदार्थ एक वर्णका कहा जाता है जैसे कोयल स्याम, तोताहरा, मांमलीया लाल, हल्दी पीली, हंस सुपेद परन्तु निश्चयनयसे इन सब पदार्थोमें वर्णादि वीसों बोल पाते हैं कारण पदार्थोंकि व्याख्या करनेमें गौणता और मुख्यता अवश्य रहेती है जैसे कोयलको स्यामवर्णी कही जाती है यह मुख्यता पेक्षासे कहा जाता है परन्तु गौणतापेक्षासे उनोंके अन्दर पांच वर्ण, दो गन्ध, पांच रस, आठ स्पर्श भी मीलते हैं इसी अपेक्षानुसार पुद्गलोंके ५३० भेद कहते हैं यथा पुद्गल पांच प्रकारसे प्रणमते हैं (१) वर्णपणे (२) गन्धपणे (३) रसपणे (४) स्पर्शपणे (५) संस्थानपणे इनोंके उत्तर भेद २५ है जैसे वर्ण स्याम हरा, रक्त (लाल), पीला, सुपेद. गन्ध दो प्रकार सुभिगन्ध, दुर्भिगन्ध, रस–तिक्त, कटुक कषायत, अम्बील, मधुर, स्पर्श, कर्कश, मृदुल, गुरु, लघु, शीत उष्ण, स्निग्ध, रुक्ष. संस्थान–परिमंडल (चुडीके आकार) वट (गोल लड्डुके आकार) तंस (तीखुणासीघोडेके आकार) चौरस–चोकीके आकार, आयतन (लंबा वांसके आकार एवं ५–२–५–८–५ मीलाके २५ भेद होते हैं।

कालावर्णकि पृच्छा शेष च्यार वर्ण प्रतिपक्षी रखके शेष कालावर्णमें दो गन्ध पांच रस, आठ स्पर्श पांच संस्थान एवं २० बोल मीलते हैं इसी माफीक हरावर्णकि पृच्छा शेष च्यार वर्ण

प्रतिपक्षी है उन हरावर्णमें दो गन्ध, पांच रस, आठ स्पर्श, पांच संस्थान एवं वीस बोल पाये इसी माफीक लालवर्णमें २० बोल पीला वर्णमें २० बोल श्वेतवर्णमें २० बोल. कुल पांचो वर्णोके १०० बोल होते है।सुभि गन्धकि पृच्छा दुर्भिगन्ध रहा प्रतिपक्षी जिस्मे बोल पांच वर्ण पांच रस, आठ स्पर्श, पांच संस्थान एवं २३ बोल पाये इसीमाफीक दुर्भिगन्धमें भी २३ बोल पाये एवं गन्धके ४६ बोल रस तिक्त रसकि पृच्छा च्यार रस प्रतिपक्षी जीस्मे बोल पांच वर्ण, दो गन्ध, आठ स्पर्श,पांच संस्थान एवं २० एवं कटुकमें २० कषायलेमें२० आम्बिलमें २० मधुरमें २० एव मीलानेसे रसके १०० बोल होते है।

कर्कशस्पर्श कि पृच्छा मृदुलस्पर्श प्रतिपक्षी शेष बोल पांच-वर्ण दोगन्ध पांच रस छे स्पर्श पांच संस्थान एवं बोल २३ पाये एवं मृदुल स्पर्शमें भी २३ बोल पाये एवं गुरु स्पर्श कि पृच्छा लघु प्रतिपक्ष बोल २३ पाये एवं लघुमें २३ शीतकि पृच्छा उष्ण प्रतिपक्ष बोल २३ एवं उष्णमें २३ बोल स्निग्ध कि पृच्छा रूक्ष प्रतिपक्ष बोल पाये २३ इसी माफीक रूक्ष स्पर्शमें भी २३ बोल पाये. परिमण्डल संस्थान की पृच्छा च्यार संस्थान प्रति पक्ष बोल पाये पांच वर्ण दोगन्ध पांच रस आठ स्पर्श एवं २० बोल. इसी माफीक वट संस्थानमें २० त्रंस संस्थानमें २० चौरंस संस्थानमें २० आयतान संस्थानमें २०। कुल बोल वर्णके १०० गन्धके ४६ रसके १०० स्पर्शके १८४ संस्थानके १०० सर्व मीलके ५३० बोल और च्यार अरूपीके ३० सर्व एवं अजीव तत्त्वके ५६० भेद होते है इनके [illegible] अजीव [illegible] अनंत है [illegible] अनेक भेद भी होते है इति अजीवतत्त्व

[illegible]

है और सुखपूर्वक भोगवीये जाते है जब जीवके पुन्य उदय रस विपाक में आते है तब अनेक प्रकारसे इष्टपदार्थ सामग्री प्राप्त होती है उनके जरिये देवादिके पौद्गलिक सुखोंका अनुभव करते है परन्तु मोक्षार्थी पुरुषोंके लिये यह पुन्य भी सुवर्ण कि बेडी तुल्य है यद्यपि जीवको उच्च स्थान प्राप्त होनेमें पुन्य अवश्य सहायताभूत है जैसे कोसी पुरुषको समुद्र पार जाना है तो नौका कि आवश्यकता जरुर होती है इसी माफीक मोक्ष जानेवालोंको पुन्यरूपी नौकाकी आवश्यकता है मानों पुन्य-रूप संसार अटवी उल्लंघनेके लिये भोम्याकी माफीक सहायक तरीके है यह पुन्य नौ कारणोंसे बन्धाता है यथा—

(१) अन्न पुन्य-भूखोंको अन्नपानादि भोजन करानेसे।
(२) पाणी पुन्य-प्यासोंको जल पीलानेसे पुन्य होते है।
(३) लेण पुन्य-मकान आदि स्थानका आश्रय देनासे।
(४) सेणपुन्य-शय्या पाट पाटला आदि देनेसे पुन्य।
(५) वस्त्रपुन्य-वस्त्र कम्बल आदि के देनेसे पुन्य।
(६) मनपुन्य-दूसरोंके लिये अच्छा मन रखनेसे।
(७) वचन पुन्य-दूसरोंके लिये अच्छा मधुर वचन बोलनेसे।
(८) काय पुन्य दूसरोंकी व्यावच वा वन्दना करनेसे।
९ नमस्कार पुन्य शुद्ध भावोंसे नमस्कार करनेसे।

इन नौ कारणोंसे पुन्य बन्धते है वह जीव भविष्यमें इस पुन्यका फल ४२ प्रकारसे भोगवते है यथा—

सातावेदनी [illegible], उच्चगोत्र, मनुष्यगति मनुष्यानुपूर्वी देवगति देवानुपूर्वी पांचेन्द्रियजाति औदारीक शरीर वैक्रय शरीर आहारीक शरीर तेजस शरीर कार्मण शरीर औदारीक अंगोपांग वैक्रय अंगोपांग, आहारीक

शरीर अंगोपांग. वज्र ऋषभनाराचसंहनन, समचतुरस्रसंस्थान, शुभ वर्ण, शुभगंध शुभरस, शुभस्पर्श. अगुरु लघु नाम (ज्यादा भारीभी नही ज्यादा हलका भी नही) पराघात नाम. (बलवानको भी पराजय करसके) उश्वास नाम (श्वासोश्वास सुखपूर्वक ले सके) आताप नाम. (आप शीतल होनेपर भी दुसरोंपर अपना पुरा असर पाडे) उद्योत नाम, (सूर्य कि माफीक उद्योत करने वाला हो) शुभगति (गजकी माफीक गति हो) निर्माण नाम, (अंगोपांग स्वस्वस्थानपर हो) त्रस नाम, बादर नाम, पर्याप्त नाम प्रत्येक नाम, स्थिर नाम (दांत हाड मजबुत हो) शुभ नाम (नाभीके उपरका अंग सुशोभीत हो तथा हरेक कार्यमें दुनिया तारीफ करे) सौभाग्य नाम (सब जीवोंको प्यारा लगे और सौभाग्यको भोगवे) सुस्वर नाम जिस्का (पंचम स्वर जेसा मधुर स्वर हो) आदेय नाम (जीनोंका वचन सब लोग माने) यशो कीर्ति नाम-यश एक देशमें कीर्ति बहुत देशमे, देवतोंका आयुष्य, मनुष्यका आयुष्य, तीर्यंचका शुभ आयुष्य, और तीर्थंकर नाम, जिनके उदयसे तीनलोगमें पूजनिक होते है एवं ४२ प्रकृति उदय रस विपाक आनेसे जीवको अनेक प्रकारसे आल्हाद सुख देती है जिस्के जरिये जीव धन धान्य शरीर कुटम्बानुकुल आदि सर्व सुख भोगवता हुवा धर्मकार्य साधन कर सके इसी वास्ते पुन्यको शास्त्रकारोंने बोलावा समान मदद गार माना हुवा है इति पुन्यतत्त्व

(९) पापतत्त्व अशुभ फल दुःखपूर्वक भोगते हैं. दुःख-पूर्वक भोगवते हैं जब जीवोंके पाप उदय होते है तब अनेक प्रकारके अनिष्ट दशा हो नरकादि गतिमें अनेक प्रकारके दुःख रस विपाकको भोगवते रहते हैं कारण नरकादि गतिमें मुख्य

[illegible] है [illegible] हैं-जैसा प्राणाति-
पात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया,
लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, परपरिवाद, माया
मृषावाद और मिथ्यादर्शन [illegible] अठारह [illegible]
[illegible] १८ [illegible] है [illegible]—

[illegible]

[illegible]

स्थिति बारहमास. गति तिर्यंचकी । प्रत्याख्यानी क्रोध-गाडाकी लीक. मान-काष्टका स्थंभ. माया-चालते बैलका मात्रा. लोभ-काजलका रंग (घात करेतो संयमकी स्थिति च्यार मासकी गति मनुष्यकी) संज्वलनके क्रोध (पाणीकी लीक) मान (तृणके स्थंभ) मायावांसकी छाल. लोभ (हल्द पतंगका रंग) घात वीतराग तावकी स्थिति क्रोधकी दो मास मानकी एक मास, मायाकी पंद्रादीन, लोभकी अंतरमहुर्त. गति देवतोंकी करे. और हांसी (ठठा मसकरी) भय. शोक. जुगप्सा रति अरति. स्त्रिवेद, पुरुषवेद. नपुंसकवेद. नरकायुष्य नरकगति नरकानुपुर्वि, तीर्यंचगति. तीर्यंचानुपुर्वि एकेन्द्रियजाति बेइन्द्रियजाति चौरिंद्रियजाति ऋषभ नाराचसंहनन नाराच० अर्द्धनाराच० किलका० छेवटो संहनन, निग्रोदपरिमंडल संस्थान. सादीयां० वामन० कुब्ज० हुंडक० स्थावरनाम सूक्ष्मनाम अपर्याप्तानाम साधारणनाम, अशुभनाम अस्थिरनाम दुर्भाग्यनाम दुःस्वरनाम अनादेयनाम अयशनाम अशुभगतिनाम. उपघातनाम निचगोत्र अशुभवर्ण गन्ध रस स्पर्श—दानान्तराय लाभान्तराय भोगान्तराय उपभोगान्तराय वीर्यान्तराय एवं पापकर्म ८२ प्रकारसे भोगवीया जाते है इति पापतत्त्व.

५ आश्रवतत्त्व जीवोंके शुभाशुभ प्रवृत्तिसे पुन्य पाप रूपी शुभ अशुभ कर्मोका आना जैसे जीवरूपी तलाव कर्मरूपी नाला पुन्य पापरूपी पाणीका आनेका रास्ता यह हो संसारमें परिभ्रमण करता है इसे आश्रवतत्त्व कहते हैं जिसके सामान्य प्रकारसे ४२ भेद है मिथ्यात्वाश्रव यावत् मूर्छा कुशमात्र [illegible] जैसा [illegible] आश्रव (देखो पैंतीस बोलसे बोलका [illegible]) विशेष २० प्रकार प्राणातिपात (जीवहिंसा

करना) मृषावाद (झूट बोलना) अदत्तादान चोरीका करना. मैथुन, परिग्रह (ममत्व बढाना) श्रोत्रेन्द्रिय चक्षुरिन्द्रिय घ्राणेन्द्रिय रसेन्द्रिय स्पर्शेन्द्रिय मन वचन काय इन आठोंको खुल्ला रखना अर्थात् अपने कब्जामें न रखना आश्रव है क्रोध मान माया लोभ एवं १७ बोल हुवे। अब क्रिया कहते है.

काइयाक्रिया - अयत्नासे हलना चलना तथा अव्रतकी
अधिकरणियाक्रिया - नये शस्त्र बनाना तथा पुराने तैयार कराना
पावसीयाक्रिया - जीवाजीवपर द्वेषभाव रखनेसे
परतापनियाक्रिया - जीवोंको परिताप देनेसे
पाणाइवाइक्रिया - जीवोंको प्राणसे मारनेसे
आरंभीयाक्रिया - जीवाजीवका आरंभ करनेसे
परिग्रहीक्रिया - परिग्रहपर ममत्व मूर्छा रखनेसे
मायावत्तीयाक्रिया - कपटाइसे दूसरा [illegible]
मिथ्यादर्शनक्रिया - तत्त्वकि अश्रद्धा रखनेसे
अप्रत्याख्यानीक्रिया - प्रत्याख्यान न करनेसे
दिट्ठीयाक्रिया - [illegible] देखना
पुट्ठीयाक्रिया - [illegible] करना
पाडुच्चीयाक्रिया - [illegible] करना
सामंतोवणीवाइ [illegible] करना [illegible]
[illegible]
[illegible] होती है

[illegible]

आणवणियाक्रिया-राजादिके आदेशसे कार्य करनेसे

वेदारणीयाक्रिया-जीवाजीवके टुकडे कर देनेसे ।

अणाभोगक्रिया-शुन्योपयोगसे कार्य करनेसे

अणवकंखवत्तीया-वीतरागके आज्ञाका अनादर करनेसे

पोग-प्रयोगक्रिया-अशुभ योगोंसे क्रिया लगती है

पेम्न-रागक्रिया-माया लोभ कर दुसरोंको प्रेमसे ठगना

दोस-द्वेषक्रिया-क्रोध-मानसे लगे द्वेषको वढाना

समुदाणीक्रिया-अधर्मके कार्यमें वहुत लोग एकत्र हो वहां सवके एकसा अध्यवसाय होनेसे सबके समुदाणी कर्म बन्धते है

इरियावहीक्रिया वीतराग ११-१२-१३ गुणस्थानवालोंके केवलयोगोंसे लगे एव २५ क्रिया

इन ४२ द्वारोंसे जीवके आश्रव आते है इति आश्रवतत्त्व ।

(६) [illegible]

[illegible]



अथ सामान्य प्रकारसे निर्ज्जराके बारहा भेद इसी माफीक है। अनसन, उनोदरी, भिक्षाचरी, रस परित्याग, कायाक्लेश, प्रतिसंलेषना, प्रायश्चित, विनय, वैयावच, स्वाध्याय, ध्यान, कायोत्सर्ग इनोंके विशेष ३५४ भेद है।

अनसन तपके दो भेद है (१) स्वल्पमर्यादितकाल (२) यावत् जीव जिस्मे स्वल्पकालके तपका छे भेद है श्रेणितप, परतरतप, घनतप, वर्गतप, वर्गावर्गतप, आकरणीतप.

श्रेणितपके चौदा भेद ह एक उपवास करे, दो उपवास करे, तीन उपवास करे, च्यार उपवास करे, पांच उपवास करे, छ उपवास करे, सात उपवास करे, अर्द्ध मास करे, मास करे, दो मास करे, तीन मास करे, च्यार मास करे, पांच मास करे, छे मास करे.

परतरतप जिस्मे सोलह पारणा करे इसी यत्रसे. एसी च्यार परिपाटी करे पहले परपाटीमें विगइ सहित आहार करे दुसरी परपाटीमें विगइ रहित आहार करे तीसरी परिपाटीमें लेप रहित आहार करे चोथी परिपाटीमें पारणेके दिन आंबिल करे एक उपवास करे पारणा करे दो उपवास करे पारणा करे तीन उपवास करे, पारणा करे च्यार उपवास करे यह पहली परिपाटी हुइ इसी माफीक क्रमसे अंक माफीक तपस्या करे अन्तरामें पारणा करे एवं च्यार परिपाटी करे घनतपके सोलह पारणा करे च्यार परिपाटीके चौसठ समझना।

१	२	३	४
२	३	४	१
३	४	१	[illegible]
४	१	[illegible]	३

१	२	३	४	५	६	७	८
२	३	४	५	६	७	८	१
३	४	५	६	७	८	१	[illegible]
४	५	६	७	८	१	२	३
५	६	७	८	१	२	३	४
६	७	८	१	२	३	४	५
७	८	१	२	३	४	५	६
८	१	२	३	४	५	६	७

एक उपवास पारणों दो उपवास पारणों तीन उपवास पारणों एवं यावत आठ उपवास कर पारणों करे यह पहली ओलीकी मर्यादा हुइ. इसी माफिक सम्पूर्ण लय कनेसे एक परिपाटी होती है. इसी माफिक च्यार परिपाटी समजना.

[illegible] वर्ष करे ४०९६ पारणे [illegible] है

[illegible]

(२) इंगीतमरण, (३) पादुगमन, जिस्में भत्तप्रत्याख्यान मरण जेसे कारणसे करे अकारण से करे, ग्रामनगरके अन्दर करे, जंगल पर्वत आदिके उपर करे, परन्तु यह अनसन सप्रतिक्रमण होते हैं. अर्थात् यह अनसन करनेवाले व्यावच करते भी है और कराते भी है कारण हो तो विहार भी कर सकते है दुसरा इंगीतमरणमें इतना विशेष है कि भूमिकाकी मर्यादा करते है उन भूमिसे आगे नही जा सके शेष भत्तप्रत्याख्यानकी माफीक. तीसरा पादुगमन अनसनमें यह विशेष है कि यह छेदा हुवा वृक्षकी डालके माफीक जीस आसन से अनसन करते है फीर उन आसनको पलटाते नही है. अर्थात् काष्टकी माफीक निश्चलपणे रहते हैं उनोंके अप्रतिक्रमण अनसन होते है यह वज्रऋषभनाराच संहननवाला ही कर सकते है इति अनसन.

(२) ओणोदरीतपके दो भेद है. (१) द्रव्य ओणोदरी (२) भाव ओणोदरी जिस्में द्रव्य ओणोदरीके दो भेद है (१) उपधि ओणोदरी (२) भात पाणी ओणोदरी. उपधि ओणोदरीके अनेक भेद है जेसे एकवस्त्र, एकपात्र, जीर्णवस्त्र, जीर्णपात्र, पकवस्त्र, पकपात्र, दोयवस्त्र, दो पात्र इत्यादि दुसरा आहार ओणोदरीके अनेक भेद है अर्थात् आहार खुराक हो उनका ३२ विभाग करके उनों से आठ विभागका आहार करे तो तीन भागका ओणोदरी होती है और बारहा विभागका आहार करे तो आधासे अधिक० सोलहा विभागका आहार करे तो आदि० चोवीस विभागका आहार करे तो एक हिस्साका ओणोदरी होती है अगर ३१ विभागका आहार करे एक विभाग भी कम करे तो कुछ किंचित ओणोदरी और एक विभागका ही आहार करे तो उत्कृष्ट ओणोदरी होती है अर्थात् अपना खुराकसे किंचित् भी कम खाना उसे ओणोदरी तप कहा जाता है.

भाव औणोदरीके अनेक भेद हैं. क्रोध नहीं करे, मान नहीं करे, माया नहीं करे, लोभ नहीं करे, रागद्वेष नहीं करे. द्वेष न करे क्लेश नहीं करे, हास्य भयादि नहीं करे अर्थात् जो कर्मबन्धके कारण हैं उनोंको क्रमशः कम करना उसे औणोदरी कहते हैं।

(३) भिक्षाचारी-मुनि भिक्षा करनेको जाते हैं उस समय अनेक प्रकारके अभिग्रह करते हैं यह उत्सर्ग मार्ग है जीतना जीतना हाल सहित कायाको कष्ट देना उतनी उतनी कर्मनिर्जरा अधिक होती है उन्ही अभिग्रहोंके यहांपर तीन चार बतलाये जाते हैं। यथा—

(१) द्रव्याभिग्रह-अमुक द्रव्य मीले तो लेना.

(२) क्षेत्राभिग्रह-अमुक क्षेत्रमें मीले तो लेना.

(३) कालाभिग्रह-अमुक टाइममें मीले तो लेना.

(४) भावाभिग्रह-पुरुष या स्त्री इस रूपमें दे तो लेना.

(५) उक्खीत्ताभिग्रह-बरतन से निकालके देवे तो लेना.

(६) निक्खीत्ताभिग्रह-बरतनमें डालताहुवा देवेतो लेना.

(७) उक्खीत्तनिक्खीत-ब० निकालते डालते दे तो लेना.

(८) निक्खीत्तउक्खीत-ब० डालते निकालते दे तो लेना.

(९) वट्टीज्जमाणाभिग्रह-जीमते हुवे आहार दे तो लेना.

(१०) साहारीज्जमाणाभिग्रह-एक बरतन से दुसरे बरतनमें डालते हुवे देवे तो लेना.

(११) उवनीत अभिग्रह-दातार गुण कीर्तन करते हुवे देवे तो लेना.

(१२) अवनित अभिग्रह-दातार अवगुण बोलके आहार देवे तो लेना

(१३) उवनित अवनित-पहले गुण और पीच्छे अवगुण करते हुवे आहार देवे तो लेना.

(१४) अव० उव० पहले अवगुण और पीछे गुण करता देवे

(१५) संसट्ठ ,, पहलेसे हाथ भरडे हुवे हो वह देवें तो लेना

(१६) असंसट्ठ ,, पहलेसे हाथ साफ हो वह देवें तो लेना.

(१७) तज्जात ,, जोस द्रव्यसे हाथ भरडे हो वहही द्रव्य लेवे.

(१८) अणयण ,, अज्ञात कुलकि गौचरी करे।

(१९) मोण ,, मौनव्रत धारण कर गौचरी करे।

(२०) दिट्ठाभिग्रह, अपने नेत्रोंसे देखा हुवा आहार लें.

(२१) अदिट्ठ ,, भाजनमें पडा हुवा अदेखा हुवा " लेवें.

(२२) पुट्ठाभिग्रह पुच्छके देवे क्या मुनि आहार लोगें तो लेना.

(२३) अपुट्ठाभिग्रह-विनो पुच्छे देवे तो आहार लेना.

(२४) भिक्ख ,, आदर रहीत तिरष्कारसे देवे तो लेना.

(२५) अभिक्ख ,, आदार सत्कार कर देवे तो लेना

(२६) अणगीलाये बहुत क्षुधा लगजाने पर आहार लेवे.

(२७) ओवणिया नजीक नजीक घरोंकी गोचरी करे

(२८) परिमत आहारके अनुमानसे कम आहार ले

(२९) शुद्धेषना एकही जातका निर्दोष आहार ले

(३०) संख्यादात दातारादिकी मर्यादा मान करे

इनके सिवाय पेडागोचरी अद्पेडागोचरी संखावृतन गोचरी घमयाल गोचरी गाउगोचरी पतंगीया गोचरी इत्यादि अनेक प्रकारके अभिग्रह कर सकते हैं यह सब भिक्षाचरीके ही भेद हैं।

(४) रस परित्यागतपके अनेक भेद हैं सरसाहारका त्याग, निवी करे, आंबिल करे ओसामणसे एक सीतले, अरस आहार ले विरस आहार ले, लुख आहार ले, तुच्छ आहार ले, अन्ताहार ले, पांताहार ले, बचा हुवा आहार ले, कोइ रांक भिक्षु, काग कुत्ते भी नहीं वांछे एस फासुक आहार ले अपनि संयमयात्राका निर्वाह करे.

(५) कायाक्लेशतप–काटकि माफीक खडा रहे. ओकडू आसन करे, पद्मासन करे, वीरासन निषेधासन दंडासन लगडासन, आम्रखुजासन, गोदुआसन, पीलांकासन, अधोशिरासन, सिंहासन, कोचासन, उष्णकालमें आतापना ले, शीतकालमें वस्त्ररहित रह ध्यान करे, थुक थुंके नहीं खाज खीणे नहीं मैल उतारे नहीं, शरीरकी विभूषा करे नहीं और मस्तकका लोच करे इत्यादि.

६ पडिसंलीनतातपके च्यार भेद (१) कषाय पडिसंलीनता याने नवाकषाय करे नहीं उदय आयेको उपशान्त करे जिसके च्यार भेद क्रोध मान माया लोभ (२) इन्द्रिय पडिसंलीनता इन्द्रियोंके विषय विकारमें जानेको रोके उदय आये विषय [illegible] उपशान्त करे जिसके पांच भेद हैं श्रोतेन्द्रिय चक्षुरिन्द्रिय [illegible] रसनेन्द्रिय और स्पर्शेन्द्रिय (३) योग पडिसंलीनता [illegible] अशुभ योगोंको रोके और शुभ योगों में [illegible] प्रवृत्ति करे जिसके तीन भेद हैं मनयोग वचन

(१२) अवनित अभिग्रह-दातार अवगुण बोलके आहार देवे तो लेना

(१३) उवनित अवनित-पहले गुण और पीछे अवगुण करते हुवे आहार देवे तो लेना.

(१४) अव० उव० पहले अवगुण और पीछे गुण करता देवे.

(१५) संसट्ठ ,, पहलेसे हाथ खरडे हुवे हो वह देवे तो लेना

(१६) असंसट्ठ ,, पहलेसे हाथ साफ हो वह देवे तो लेना.

(१७) तज्ञात ,, जोन द्रव्यसे हाथ खरडे हो वहही द्रव्य लेवे.

(१८) अणचण ,, अज्ञात कुलकि गौचरी करे।

(१९) मोण ,, मौनव्रत धारण कर गौचरी करे।

(२०) दिट्ठाभिग्रह, अपने नेत्रोंसे देखा हुवा आहार लें.

(२१) अदिट्ठ ,, भाजनमें पडा हुवा अदेखा हुआ " लेवे.

(२२) पुट्ठाभिग्रह पुच्छके देवे क्या मुनि आहार लोगे तो लेना.

(२३) अपुट्ठाभिग्रह-बिनो पुच्छे दे तो आहार लेना.

(२४) भिक्ख ,, आदर रहीत तिरस्कारसे देवे तो लेना.

(२५) अभिक्ख ,, आदार सत्कार कर देवे तो लेना

(२६) अणगीलाये , बहुत क्षुधा लगजाने पर आहार लेवे.

(२७) ओवणिया नजीक नजीक घरोंकी गोचरी करे

(२८) परिमत आहारका अनुमानसे कम आहार ले

२९ शुद्धेसना पहली जानकर निर्दोष आहार ले

३० संख्यादात दातारकी संख्याका मान करे

इनके सिवाय पेटागोचरी अर्द्धपेटागोचरी संगावृतन गो-चरी घम्मयाल गोचरी गाउगोचरी पतंगीया गोचरी इत्यादि अनेक प्रकारके अभिग्रह कर सकते है यह सब भिक्षाचरीके ही भेद है।

(४) रस परित्यागतपके अनेक भेद है सरसाहारका त्याग, निवी करे, आंबिल करे ओसामणसे एक सीतले, अरस आहार ले विरस आहार ले, लुग आहार ले, तुच्छ आहार ले, अन्ताहार ले, पांताहार ले, बचा हुवा आहार ले, कोइ रांक भिक्षु, काग कुते भी नही वांच्छे एस फासुक आहार ले अपनि संयमयात्राका निर्वाह करे.

(५) कायाक्लेशतप—यथाशक्ति मासीक खडा रहे, ओकडू आसन करे, पद्मासन करे, वीरासन निर्पेषासन दंडासन लगडासन, आम्रकुब्जासन, गोदुआसन, पीलांकासन, अधोशिरासन, सिंहासन, क्रोंचासन, उष्णकालमें आतापना ले, शीतकालमें वस्त्रदूर रख ध्यान करे. थुक थुके नही खाज खोणे नही मैल उतारे नही, शरीरकी विभूषा करे नही और मस्तकका लोच करे इत्यादि.

(६ पडिसलीणतातपके च्यार भेद (१) कषाय पडिसलेणता याने नयाकषाय करे नही उदय आयेको उपशान्त करे जिस्के च्यार भेद क्रोध मान माया लोभ।४। (२) इन्द्रिय पडिसलेणता, इन्द्रियोंके विषय विकारमें जातेको रोके उदय आये विषय विकारको उपशान्त करे जिस्के पांच भेद है श्रोत्रेन्द्रिय चक्षुइन्द्रिय घ्राणेन्द्रिय, रसेन्द्रिय और स्पर्शेन्द्रिय। ३) योग-पडिसलिणता। अशुभ योगोंके व्यापारको रोके और शुभ योगों के व्यापारमें प्रवृति करे जिस्के तीन भेद है मनयोग, वचन

(१२) अपनित अभिग्रह-दातार अवगुण बोलके आहार देवे तो लेना

(१३) उपनित अपनित-पहले गुण ओर पीच्छे अवगुण करते हुवे आहार देवे तो लेना.

(१४) अप० उप० पहले अवगुण और पीछे गुण करता देवे.

(१५) संसठ्ठ ,, पहलेसे हाथ खरडे हुवे हो वह देवे तो लेना

(१६) असंसठ्ठ ,, पहलेसे हाथ साफ हो वह देवे तो लेना.

(१७) तज्जात ,, जोस द्रव्यसे हाथ खरडे हो वहही द्रव्य लेवे.

(१८) अणयण ,, अज्ञात कुलकि गौचरी करे।

(१९) मोण ,, मौनव्रत धारण कर गौचरी करे।

(२०) दिठ्ठाभिग्रह, अपने नेत्रोंसे देखा हुवा आहार ले.

(२१) अदिठ्ठ ,, भाजनमें पडा हुवा अदेखा हुआ " लेवे.

(२२) पुठ्ठाभिग्रह पुच्छके देवे क्या मुनि आहार लोगे तो लेना.

(२३) अपुठ्ठाभिग्रह-बिनो पुच्छे दे तो आहार लेना.

(२४) भिक्ख ,, आदर रहीत तिरस्कारसे देवे तो लेना.

(२५) अभिक्ख ,, आदार सत्कार कर देवे तो लेना

(२६) अणगीलाये ,, बहुत क्षुधा लगजाने पर आहार लेवे.

(२७) ओवणिया - नजीक नजीक घरोंकी गोचरी करे.

(२८) परिमत्त ,, आहारके अनुमानसे कम आहार ले.

(२९) सुद्देसना एकही ग्रामका निर्दोष आहार ले

(३०) भिक्षादान , दातारकी मस्याका मान करे

[illegible]

१ [illegible]

२ [illegible]

३ [illegible]

(१२) अवनित अभिग्रह-दातार अवगुण बोलके आहार देवे तो लेना
(१३) उवनित अवनित-पहले गुण और पीच्छे अवगुण करते हुये आहार देवे तो लेना.
(१४) अव० उव० पहले अवगुण और पीछे गुण करता देवे.
(१५) संसठ्ठ ,, पहलेसे हाथ खरडे हुवे हो वह देवे तो लेना
(१६) असंसठ्ठ ,, पहलेसे हाथ साफ हो वह देवे तो लेना.
(१७) तज्ञात ,, जोन द्रव्यसे हाथ खरडे हो वहही द्रव्य लेवे.
(१८) अणणण ,, अज्ञान कुलकि गौचरी करे।
(१९) मोण ,, मौनव्रत धारण कर गौचरी करे।
(२०) दिठ्ठाभिग्रह, अपने नेत्रोंसे देखा हुवा आहार ले.
(२१) अदिठ्ठ ,, भाजनमें पड़ा हुवा अदेखा हुआ " लेवे.
(२२) पुठ्ठाभिग्रह पुच्छके देवे क्या मुनि आहार लोगे तो लेना.
(२३) अपुठ्ठाभिग्रह-विनो पुच्छे दे तो आहार लेना.
(२४) भिक्ख ,, आदर रहीत तिरस्कारसे देवे तो लेना.
(२५) अभिक्ख ,, आदार सत्कार कर देवे तो लेना
(२६) अणगीलाये ,, बहुत क्षुधा लगजाने पर आहार लेवे.
(२७) ओवणिया , नजीक नजीक घरोंकी गोचरी करे
(२८) परिमत आहारके अनुमानसे कम आहार ले
(२९) सुद्धेसना पकही जातका निर्दोष आहार ले
३० संख्यादात दातारकी संख्याका मान करे

इनके सिवाय पेडागोचरी अर्द्धपेडागोचरी संखावृतन गोचरी चक्रवाल गोचरी गाउगोचरी पतंगीया गोचरी इत्यादि अनेक प्रकारके अभिग्रह कर सकते है यह सब भिक्षाचरीके ही भेद है।

(४) रस परित्यागतपके अनेक भेदहै सरसाहारका त्याग, निवी करे, आंबिल करे ओसामणसे एक सीतले, अरस आहार ले विरस आहार ले, लुख आहार ले, तुच्छ आहार ले, अन्ताहार ले, पांताहार ले, बचा हुवा आहार ले, कोइ रांक भिक्षु, काग कुते भी नहीं वांछे एस फासुक आहार ले अपनि संयमयात्राका निर्वाह करे.

(५) कायाक्लेशतप–शाटकि माफीक खडा रहे. ओकडू आसन करे, पद्मासन करे, वीरासन निषेधासन दंडासन लगडासन, आम्रकुब्जासन, गोदुआसन, पीलांकासन, अधोशिरासन, सिंहासन, कोंचासन, उष्णकालमें आतापना ले, शीतकालमें वस्त्रदूर रख ध्यान करे, थूक थूके नहीं खाज खीणे नहीं मैल उतारे नहीं शरीरकी विभूषा करे नहीं और मस्तकका लोच करे इत्यादि

६ पडिसंलीणतातपके च्यार भेद (१) कषाय पडिसंलेणता: यानि नया कषाय करे नहीं उदय आयेको उपशान्त करे जिस्के च्यार भेद क्रोध मान माया लोभ। (२) इन्द्रिय पडिसंलेणता: इन्द्रियोंके विषय विकारमें जानेकी रोक उदय आये विषय विकारको उपशान्त करे जिस्के पांच भेद है श्रोत्रेन्द्रिय चक्षुइन्द्रिय घ्राणेन्द्रिय रसेन्द्रिय और स्पर्शेन्द्रिय (३) योग पडिसंलीणता। अशुभ योगोंके व्यापारको रोक और शुभ योगों व्यापारमें प्रवृत्ति करे जिस्के तीन भेद है मनयोग वचन

योग, काययोग, (४) विवतसयनासन याने स्त्रि नपुंसक और पशु आदि विकारीक निमत्त कारण हो एसे मकानमें न रहे इति

इन छे प्रकारके तपको बाह्यतप कहते है।

(७) प्रायश्चितप–मुनि ज्ञान दर्शन चारित्रके अन्दर सम्यक् प्रकारसे प्रवृत्ति करते हुवेको कदाचित् प्रायश्चित लग जाये, तो उस प्रायश्चितकी तत्काल आलोचना कर अपनि आत्माको विशुद्ध बनाना चाहिये यथा—

दश प्रकारसे मुनिको प्रायश्चित लगते है यथा–कंदर्प पीडित होनेसे, प्रमादवस होनेसे, अज्ञातपणेसे, आतुरतासे, आपत्तियों पडनेसे, शंका होनेसे, सहसात्कारणसे, भयोत्पन्न होनेसे द्वेषभाव प्रगट होनेसे, शिष्योंकि परिक्षा करनेसे।

दश प्रकार मुनि आलोचन करते हुवे दोष लगावे कम्पता कम्पता आलोचन करे पहले उन्मान पुच्छे कि अमुक प्रायश्चित सेवन करनेका क्या दंड होगा फीर ठीक लागे तो आलोचना करे। लोकोंने देखा हो उन पापकि आलोचना करे दुसरेको नही अदेखा हुवे दोषकि आलोचना करे। बडे बडे दोषोंकी आलोचना करे, छोटे छोटे पापोंकी आलोचना करे. मंद स्वरसे आलोचना करे. जोर जोरसे शब्दोंसे॰ एक पापकी बहुतसे गीतार्थोंके पास आलोचना करे, अगीतार्थोंके पास आलोचना करे

दशगुणोंका धर्णी हो वह आलोचना करे जातिवन्त कुलवन्त विनयवन्त उपशान्तकषायवन्त जितेन्द्रियवन्त ज्ञानवन्त दर्शनवन्त चारित्रवन्त अमायवन्त और प्रायश्चित ले के पश्चाताप न करे

दश गुणोंके धर्णीके पास आलोचना कि जाति है यथा [illegible] [illegible] व्यवहारवन्त [illegible] आधारवन्त व्यवहार [illegible] [illegible] समय का उत्कृष्टपन याद हो और

लोके मर्म प्रकाश न करे. निर्वाहाकरने योग्य हो अनालोचनाके अनर्थ बतलानेमे चातुर हो. प्रीय धर्मी हो. और दृढधर्मी हो।

दश प्रकारके प्रायश्चित आलोचना, प्रतिक्रमण, दोनों साथमें कराये. विभाग कराना. कायोत्सर्ग कराना. तप, छेद. मूलसे फीर दीक्षा देना. अणुठप्पा. और पारंचिय प्रायश्चित इन ५० बोलोंका विशेष खुलासा दे,खो शीघ्रबोध भाग २२ के अन्तमे इति।

(८) विनयतप जिस्का मूल भेद ७ हैं यथा. ज्ञानविनय, दर्शनविनय. चारित्रविनय. .मनविनय, वचनविनय, कायविनय, लोकोपचार विनय. इन सात प्रकार विनयके उत्तर भेद १३४ है।

ज्ञानविनयके पांच भेद है मतिज्ञानका विनय करे, श्रुतिज्ञानका विनय करे. अवधि ज्ञानका विनय करे, मन: पर्यवज्ञानका विनय करे. केवलज्ञानका विनय करे. इन पांचों ज्ञानका गुण करे. भक्ति करे. पूजा करे. बहुमान करे तथा इन पांचों ज्ञानके धारण करनेवालोंका बहुमान भक्ति करे तथा ज्ञानपद कि आराधना करे।

दर्शन विनयका मूल भेद दो है. (१) शुश्रुषा विनय २ अनाशातना विनय. जिस्मे शुश्रुषा विनयका दश भेद है गुरु महाराजको देख खडे होना आसनकि आमन्त्रण करना. आसन बिछादेना वन्दन करना पधारे तब नमस्कार करना सत्कार व सन्मान करना सत्कारसे सन्मान करना गुरु पधारे तब सामने लेनेको जाना विराजे वहांतक सेवा करना पधारे जब साथमें पहुंचानेको जाना इत्यादि इनको शुश्रूषा विनय कहते है

अनअशातना विनयके ४५ भेद है अरिहन्तोंकि आशातना

न करे. अरिहंतोक्ति धर्मादि आठ आचारोना उपकरणोना [illegible] समय [illegible] मिथ्यात्वना [illegible], अविनाश, [illegible] सर्व-स्थान [illegible] ओर [illegible] १८ [illegible] आशातना न करे [illegible] करे [illegible] अविन करे [illegible] विनय [illegible]।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

प्रकारका अप्रशस्त विनय होते है अर्थात् विनय तो करे परन्तु मन उक्त अशुद्ध कार्यमें लगा रखे इनोंसे अप्रशस्त विनय होते है एवं २४ भेद मन विनयका है।

वचन विनयका भी २४ भेद है. मूल भेद दो. (१) प्रशस्त विनय. (२) अप्रशस्त विनय. दोनोंके २४ भेद मन विनयकि माफीक समझना।

काय विनयके १४ भेद है मूल भेद दो (१) प्रशस्तविनय, (२) अप्रशस्त विनय. जिस्मे प्रशस्त विनय के ७ भेद है. उपयोग सहित यत्नापूर्वक चलना. बैठना उभारहना सुना एक वस्तुको एक दफे उलंघन करना तथा वारंवार उलंघन करना इन्द्रियों तथा कायाको सर्व कार्यमें यत्ना पूर्वक वरताना. इसी माफीक अप्रशस्त विनयके ७ भेद है परन्तु विनय करते समय कायाको उक्त कार्योंमें अयत्नासे वरतावे एवं १४.

लोकोपचार विनयके ७ भेद है यथा (१) सदैव गुरुकुलवासाको सेवन करे (२) सदैव गुरु आज्ञाको ही परिमाण करे और प्रवृति करे (३) अन्य मुनियोका कार्य भि यथाशक्ति करके परको माना उपजावे (४) दूसरोका अपने उपर उपकार है तो उनोंके बहुमानसे प्रत्युपकार करना (५) ग्लानि मुनियो कि गवेषणा कर उनोंकि व्यावच्च करना (६) द्रव्य क्षेत्र काल भावका जानकार [illegible] सर्व समयका विनय करना (७) [illegible] यहही [illegible]

[illegible] उपा [illegible] बहुमानपूर्वक [illegible] मुनिकी क्रिया [illegible] बहुमान पूर्वक

वैयावच्च करे याने आहारपाणी लाके देवें और भी यथा उचित कार्यमें सहायता पहुंचाना जिससे कर्मोंकी महा निर्ज्जरा और संसारसमुद्रसे पार होनेका सिधा रहस्ता है ।

(१०) स्वाध्याय तपके पांच भेद है. वाचना देना या लेना, पृच्छना-प्रश्नादिका पुच्छना, परावर्तना-पठनपाठन करना, अनुप्रेक्षा पठनपाठन कीये हुवे ज्ञानमें तत्त्वरमणता करना, धर्मकथा-धर्माभिलाषीयोंको धर्मकथा सुनाना ॥ तीन जनोंको वाचना नहीं देना, (१) नित्य विगइ याने सरस आहारके करनेवालेको, (२) अविनयवंतको, (३) दीर्घ कषायवालेको । तीन जनोंको वाचना देना चाहिये. विनयवंतको, निरस भोजन करनेवालेको २ जिसके क्रोध उपशान्त हो गया है तथा अन्यतीर्थी पाखंडी धर्मका द्वेषी हो उनको भी वाचना न देनी और न उनोंसे वाचना लेनी कारण वाचना देनेसे उनोंको विपरीत होगा तो धर्मकी निंदा करेगा और वाचना लेना पडे तो भी वह उपहास करेंगे कि जैनोंको हम पढाते है, हम जैनोंके गुरु है इस वास्ते ऐसे धर्मद्वेषीयोंसे दूर ही रहना अच्छा है अगर अधिक समार्थ हो तो उनको उपदेश देना और मिथ्यात्वका रहस्ता छुडाना मुनियोंका फर्ज है ।

[illegible]

प्रश्न करनेके दो भेद है, अपनेको शंका होनेसे प्रश्न करे. दुसरे मिथ्यात्वीयोंको निरुत्तर करनेको प्रश्न करे। अनुयोग ज्ञानकी प्राप्तिके लीये प्रश्न करे. दुसरोंको बोलानेके लिये प्रश्न करे. जानता हुवा दुसरोंको बोधके लीये प्रश्न करे. अनजानता हुवा गुरवादिकी सेवा करनेके लिये प्रश्न करे।

परावर्तन करनेके आठ भेद है. काले, विनये, बहुमाणे, उवहाणे, अनिन्हवणे, व्यञ्जन, अर्थ, तदुभय इन आठ आचारोंसे स्वाध्याय करे तथा इनोंको ३४ अस्वाध्याय है उनकों टालके स्वाध्याय करे. अस्वाध्याय आगे लिखी है सो देखो।

अनुपेक्षाके अनेक भेद है. पढा हुवा ज्ञानको वारंवार उपयोगमें लेना. ध्यान, श्रवण, मनन, निदिध्यासन, वर्तन, चैतन्य, जडादिके भेद करना।

धर्मकथाके च्यार भेद है. अक्षेपणी, विक्षेपणी, संवेगणी. निर्वेगणी. इनके सिवाय विविध प्रकारकी धर्मकथा है.

जैन सिद्धान्त पढनेवालोंको पहलां इस माफीक—

१ द्रव्यानुयोगके लिये न्यायशास्त्र पढो

२ चरणकरणानुयोगके लिये नीतिशास्त्र पढो.

३ गणितानुयोगके लिये गणितशास्त्र पढो

४ धर्मकथानुयोगके लिये अलंकारशास्त्र पढो

इन च्यार अनुयोगके शास्त्र च्यारों अनुयोगद्वारके लिये मद्दगार है. इनोंके पढनेसे सूत्राभ्यासकी खास आवश्यकता है इस लिये जैन सिद्धान्त पढनेवालोंको पहले इन शास्त्रोंकी उपासना करना चाहिये

[illegible]

[illegible]

[illegible]

कलेवर जीव मकानमें पड़ा हो वहांतक सूत्र न पढे। यह बीस अस्वाध्याय ठाणांगसूत्रके दशवे ठाणामें कही है। प्रभात, श्याम मध्यान्ह आदि रात्री एवं च्यार अकाल अंतर मुहुर्त तक सूत्र न पढे।२१। २२। २३।२४। आषाढ शुद १५ श्रावण वद १ भाद्रवा शुद १५ आश्विन वद १ आश्विन शुद १५ कार्तिक वद १ कार्तिक शुद १५ मागशर वद १ चैत्र शुद १५ वैशाख वद १ एवं इन दिन सूत्र न पढे यह १२ अस्वाध्याय निशिथसूत्रके उन्नीसवे उद्देशामें कही है और दो अस्वाध्याय ठाणांगसूत्रमें कही है एवं सर्व मिल ३४ अस्वाध्याय अवश्य टालनी चाहिये।

सवैया—तारातुटे, रातोदिश, अकालमें गाजविज, कडक आवाज तथा भूमि कम्प भारी है, बालचन्द्र यक्षचेन्ह आकाश अग्निकाय काली धोली धूमर और रजपात भारी है, हाड मांस लोहीराद दूरसे मसान जले चन्द्र सूर्य ग्रहण और राजमृत्यु गालीमें पंचेन्द्रिका कलेवर राजयुद्ध सर्व सौ [illegible] हाथ [illegible] आषाढ भाद्रवों आसोज, काती, [illegible]

फीकर चिंता शोकका करना, आशुपातका करना, आक्रन्द शब्द करना रोना, छाती मस्तक पीटना विलापातका करना.

रौद्रध्यानके च्यार पाये. जीवहिंस्या कर खुशीमनाना, जुठ बोल खुशीमनाना, चौरी कर खुशीमनाना, दुसरोंको कारागृहमें डलाके हर्ष मानना. एवं रौद्रध्यानके च्यार लक्षण है. स्वल्प अपराधका बहुत गुस्सा द्वेष रखना, ज्यादा अपराधका अत्यन्त द्वेष रखना, अज्ञानतासे द्वेष रखना, जाव जीवतक द्वेष रखना. इस परिणामवालोंको रौद्रध्यान कहते है।

धर्मध्यानके च्यार पाये. वीतरागकि आज्ञाका चितवन करना, कर्म आनेके स्थानोंको विचारना, कर्मोंके शुभाशुभ विपाकका विचार करना, लोकका संस्थान चितवन करना, धर्मध्यानके च्यार लक्षण इस मुजब है आज्ञारुची याने वीतरागके आज्ञाका पालन करनेकी रुची नि.सर्गरुची याने जातिस्मरणादिज्ञानसे धर्मध्यानकि रुची होना उपदेशरुची याने गुर्वादिके उपदेश श्रवण करनेकि रुची हो सूत्ररुची सूत्रसिद्धान्त श्रवण कर मनन करनेकी रुची यह धर्मध्यानके च्यार लक्षण है। धर्मध्यानके च्यार अवलम्बन है सूत्रोंकि वाचना पृच्छना परावर्तना और धर्मकथा करना धर्मध्यानके च्यार अनुप्रेक्षा है संसारको अनित्य समझना संसारमें कोसी शरणा नहीं है एकत्व अपने आप ही को आत्मामें रहना यह जीव एकेला आया है और एकेला ही जायगा अन्यत्वपणा चितवे के चैतन्य तु इस संसारमें पदार्थोसे भिन्नता रखनेवाला सम्बन्ध कीया है इस सम्बन्धी याम नरा कान है तु कामका है कोमल दिये न ममत्वभाव करना है आत्माके सब सम्बन्धीयोंका छोडनेका ही ज्ञाना पडना।



करना कर्म ज्ञानावर्णियादिका त्याग करना, संसार-नरकादि गतिका त्याग करना इति त्याग ॥ इति निर्जरातत्त्व ।

(८) बन्धतत्त्व-जीवरूपी तलाव, कर्मरूपी पत्थर दान-कणकी चूनाके माफक बनाना इसी माफिक जीवोंके शुभाशुभ अध्यवसायसे कर्म पुद्गल ग्रहन कर आत्माके प्रदेशोंपर बन्ध होना उसे बन्धतत्त्व कहते है

(१) प्रकृतिबन्ध–१४८ प्रकृतियोंका बन्धना.

(२) स्थितिबन्ध १४८ प्रकृतियोंकी स्थितिका बन्धना.

(३) अनुभागबन्ध–कर्मप्रकृति बन्धने समय रस पडना.

(४) प्रदेशबन्ध-प्रदेशोंका ग्रहन हो आत्मप्रदेशोंपर बन्ध होना

इसपर लड्डुका दृष्टान्त जैसे लड्डु सूंठी वायुका बनता है वह प्रकृति है वह लड्डु कितने काल रहेगा वह स्थिति है वह लड्डु कडवा मधुरा [illegible] है वह [illegible] स्थिति है वह लड्डु [illegible] बना है इत्यादि

[illegible]

एवं ५७ हेतु हैं इनोंसे कर्मबन्ध होते है यह सामान्य है अब विशेष प्रकारसे कर्मबन्धका हेतु अलग अलग कहते है।

ज्ञानावर्णिय कर्मबन्धके छे कारण है ज्ञानका प्रतनिक (वैरी) पणा करना. अथवा ज्ञानी पुरुषोंसे प्रतनिकपणा करना. ज्ञान तथा जिनोंके पास ज्ञान सुना हो पढा हो उनोंका नामको बदला के दुसरेका नाम बतलाना। ज्ञान पढते हुयेको अंतराय करना। ज्ञान या ज्ञानी पुरुषोंकि आशातना करना. पुस्तक पाना पाटी आदिकी आशातना करना। ज्ञान तथा ज्ञानी पुरुषोंके साथ द्वेष भाव रखना, ज्ञान पढते समय या ज्ञानी पुरुषोंपर विषमवाद तथा पढनेका अभाव करना इन छे कारणों से ज्ञानावर्णिय कर्मबन्धता है।

दर्शनावर्णीय कर्मबन्ध के छे कारण है जो कि उपर ज्ञानावर्णिय कर्मबन्ध के छे कारण बतलाया है उसी माफीक समझना.

वेदनिय कर्मबन्ध के कारण इस मुजब है साता वेदनिय [illegible] वेदनिय कर्म जिसके साता वेदनिय कर्मबन्ध के [illegible] अनुकम्पा करे [illegible] उद्विग्न न करे [illegible] इन कारणों से साता वेदनिय [illegible]

मोहनिय कर्मबन्ध के [illegible]

आयुष्य कर्मबन्ध होनेका कारण-नरकायुष्य बन्धनेका च्यार कारण है महा आरंभ, महा परिग्रह पांचेन्द्रियका घातां मांस भक्षण करना इस च्यार कारणोंसे नरकायुष्य बन्धता है। माया करे गूढ माया करे. कूडा तोल माप करे. असत्य [illegible] [illegible] इस च्यार कारणोंसे तीर्यचका आयुष्य बन्धता है। प्रकृतिका भद्रीक हो विनयवान हो. दयाका परिणाम है गुणोंका [illegible] ईर्षा न करे इस च्यार कारणोंसे मनुष्यका आयुष्य बन्धता है। सराग संयम संयमासंयम, अकाम निर्जरा, बालतप इस च्यार कारणोंसे देवतावोंका आयुष्य बन्धता है।

नाम कर्मबन्ध कि कारण-कायका सरल, भावोंका सरल, भाषाका सरल और अविसंवाद योग इस च्यार कारणोंसे शुभ नाम कर्मका बन्ध होता है तथा कायका असरल भावोंका, असरल, भाषाका असरल विसंवाद योग इस च्यार कारणोंसे अशुभ नाम कर्मबन्ध होता है इति

गौत्र कर्मबन्धके कारण जातिका मद न करे कुलका मद न करे बलका मद न करे [illegible]

[illegible]

[illegible]

उनोंको अनेक प्रकारकी तपश्चर्या कर सर्वथा कर्मोंका नाश कर जीवको निर्मल बना अक्षयपद को प्राप्त करना उसे मोक्ष तत्व कहते हैं जिस्के सामान्य चार भेद ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य. विशेष नौ भेद हैं

(१) सत्पद परूपना, सिद्ध पद सदाकाल शास्वता है

(२) द्रव्य प्रमाण–सिद्धोंके जीव अनंता है।

(३) क्षेत्र प्रमाण–सिद्धोंके जीव सिद्ध शीलाके उपर पैंतालीस लक्ष योजन के विस्तारवाला एक योजनके चौवीसवां भाग में सिद्ध भगवान विराजते है।

(४) स्पर्शना–एक सिद्ध अनेक सिद्धोंको स्पर्श कर रहे हैं अनेक सिद्ध अनेक सिद्धोंको स्पर्श कर रहे हैं।

(५) काल प्रमाण एक सिद्धोंकि अपेक्षा आदि है परन्तु अन्त नहीं है और बहुत सिद्धोंकि अपेक्षा आदि भी नहीं और अन्त भी नहीं है।

(६) अन्तर सिद्धोंमें परस्पर अंतरा नहीं है

(७) [illegible]

[illegible]

(८) [illegible]

(९) [illegible]

१ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

(६) अप्कायाचे [illegible] सिद्ध हून [illegible] गुणे.
(७) भुवनपति देवीचे " " "
(८) भुवनपति देवाचे " " "
(९) व्यंतर देवीचे " " "
(१०) व्यंतर देवाचे " " "
(११) ज्योतिषी देवीचे " " "
(१२) ज्योतिषी देवाचे " " "
(१३) मनुष्यणीचे " " "
१४ मनुष्याचे " "
१५ [illegible]
१६ [illegible]
१७ [illegible]

(३२) पहला देवलोककी देवी " "
(३३) पहला देवलोकके देवसे " "

नोट—नरकादिसे निकल मनुष्यका भव कर मोक्ष जाने कि अपेक्षा है।

इति मोक्ष तत्व ॥ इति नव तत्व संपूर्ण.

सेवंभंते सेवंभंते तमेवसच्चम्.

थोकडा नम्बर २.

(श्री पन्नवणादि सूत्रोंसे क्रियाधिकार)

(१) नामद्वार
(२) अर्थद्वार
(३) समियाद्वार
(४) क्रिया कौनसे करे
(५) क्रियाकरतां कौनसे कर्म बन्धे.
(६) कर्म बान्धतां क्रिया
(७) एक जीवको कीतनी०
(८) कायवादि क्रिया
(९) अस्रीजीवा क्रिया
(१०) जीवो क्रिया करे
(११) आरंभीयादि क्रिया
(१२) क्रियाका भांगा
(१३) प्राणातिपादि
(१४) क्रियाका स्पर्शना
(१५) अल्पाबहुत्व
(१६) शरीरोत्पन्न
(१७) पांचक्रिया लागे
(१८) नो जीवोंको क्रिया
(१९) मृगादि क्रिया
(२०) अग्नि
(२१) झाल
(२२) किरियाणे
(२३) सेठ देवे
(२४) ऋषीश्वर
(२५) अन्न क्रिया
(२६) समुद्घात
(२७) नौ क्रिया
(२८) तेरह क्रिया
(२९) पचवीस क्रिया

इस थोकडेमें सर्व १५४७२ भांगा है।

(१) नामद्वार क्रिया पांच प्रकारकि है यथा—काइया क्रिया अधिकरणीया क्रिया, पावसिया क्रिया, परितावणिया क्रिया, पाणाइवाइया क्रिया।

(२) अर्थद्वार—काइया क्रिया-अजयणासे हाले चाले अनुपयोगसे काम। अधिकरणीया क्रिया, नयाशस्त्र बनानेसे तथा पुराना शस्त्र तैयार करानेसे। पावसिया क्रिया-स्वआत्मापर द्वेष करना परआत्मापर द्वेष करना, तदुभयात्मापर द्वेष करनासे, परितावणिया क्रिया स्वआत्माको संताप उत्पन्न करना, परआत्माको संताप करना, उभयात्माको संताप करना, पाणाइवाइया क्रिया-स्वआत्माकी घात करना परआत्माकी घात करना, उभयात्माकी घात करना। इसी वास्ते क्रियाका कहना है

[illegible]

[illegible]

अथवा रूप और रूपके अनुकूल द्रव्योसे करते है। परिग्रहकि क्रिया सर्व द्रव्यसे करते है एवं क्रोध, मान, माय, लोभ, राग, द्वेष, कलह अभ्याख्यान, पैशुन्य परपरीवाद रति अरति माया मृषावाद और मिथ्यादर्शन इन सबकी क्रिया सर्व द्रव्यसे होती है अर्थात् प्राणातीपात, अदत्तादान, मैथुन इन तीन पापकि क्रिया देश द्रव्यो है शेष पंदरा पापकी क्रिया सर्व द्रव्यी है। समुच्चय जीवापेक्षा अठारा पापकि क्रिया बतलाइ है इसी माफीक नरकादि चौवीस दंडक भी समझ लेना. इसी माफीक समुच्चय जीवों और नरकादि चौवीस दंडकके जीवों (बहुवचन) का सूत्र भी समझना एवं ५० बोलोकों अठारा गुने करनेसे ९०० तथा १२५ पहले पांच क्रियाके मीलाके सर्व यहांतक १०२५ भांगे हुवें.

जीव प्राणातिपातकि क्रिया करता हुवा. स्यात् सात कर्म बान्धे स्यात् आठ कर्म बन्धे एवं नरकादि २४ दंडक। बहुत जीवोंकि अपेक्षा सात कर्म बान्धनेवाला भी घणा, आठ कर्म बन्धनेवाले भी घणा। बहुतसे नारकीके जीवों प्राणातिपातकि क्रिया करते हुवे सात कर्म तो सदैव बांधते है सात कर्म बान्धनेवाले बहुत आठ कर्म बांधनेवाले एक. सात कर्म बांधनेवाले बहुत और आठ कर्म बान्धनेवाले भी बहुत है. इसी माफीक पचेन्द्रिय के दंडक १९ दंडकमे तीन तीन भांगे होनेसे ५७ भांगे हुवे पचेन्द्रिय छोडके दंडकमें सात कर्म बन्धनेवाले बहुत और आठ कर्म बान्धनेवाले भी बहुत है इसी माफीक मृषावादादि यावत् [illegible] पापकि क्रिया करते हुवे समुच्चय जीव और [illegible] अठारा पापके [illegible] तथा आठ कर्मोंके [illegible] ५७ [illegible] हुवे है [illegible] १०२६ भांगा हुवे

जीव ज्ञानावर्णिय कर्म बान्धे तो कितनी क्रिया लागे? स्यात् तीन क्रिया स्यात् च्यार क्रिया स्यात् पांच क्रिया लागे. कारण दुसरोंके जिसे अनुपयोग होनेसे तीन क्रिया लगती है दुसरोंको नजदीक होनेसे च्यार क्रिया लगती है अगर जीवोंके प्राण होनेसे पांचों क्रिया लगती है. जब जीव ज्ञानावर्णिय कर्म बान्धे समय पुद्गलोंको ग्रहन करते है उसी पुद्गल ग्रहन समय जीवोंको नजदीक होती है जीससे क्रिया लगती है। इसी माफीक नरकादि चोवीस दंडक एक वचनापेक्षा स्यात् ३-४-५ क्रिया लागे एवं बहुवचनापेक्षा. परन्तु यहां स्यात् नहीं कहना कारण प्राण बहुत है इसी वास्ते बहुतसी तीन क्रिया, बहुतसी च्यार क्रिया बहुतसी पांच क्रिया समुच्चय जीव और चोवीस दंडक एक वचन और समुच्चय जीव और चोवीस दंडक बहुवचन एवं सूत्र हुवे जैसे ज्ञानावर्णिय कर्मके पचास सूत्र कहा इसी माफीक दर्शनावर्णिय वेदनिय मोहनिय आयुष्य नाम, गौत्र और अन्तराय एव आठों कर्मो के पचास पचास सूत्र होनेसे ४०० आलाप हुवा है।

एक जीव एक जीवकि अपेक्षा कितनी क्रिया लागे? समुच्चय एक जीवके एक जीवकि स्यात् तीन क्रिया स्यात् च्यार क्रिया स्यात् पांच क्रिया स्यात् अक्रिय कारण मनुष्य [illegible]
[illegible]

नारकोको स्यात् ३-४-०। एवं घणा जीवोंने एक नारकिको स्यात् ३-४-० एवं घणा जीवोंको घणी नारकी की तीन क्रियाभी घणी च्यार क्रियाभी घणी अक्रियाभी है. इसी माफीक १३ दंडक देवलोकाभी समझना. तथा पांच स्थावर, तीन विकलेन्द्रि, तीर्यंचपांचेन्द्रिय और मनुष्य यह दश दंडक औदारीकके समुच्चय जीवकी माफीक ३-४-५-० समझना। समुच्चय जीवसे समुच्चयजीव और चौवीस दंडकसे १०० भांगा हुये। एक नारकीने एक जीवकी कीतनी क्रिया लागे? स्यात् ३-४-५ क्रिया लागे. एक नारकोने घणा जीवोंकि कीतनी क्रिया? स्यात् ३-४-५ क्रिया लागे. घणी नारकोने एक जीवकी कीतनी क्रिया? स्यात् ३-४-५ क्रिया लागे, घणी नारकीने घणा जीवोंकी कीतनी क्रिया? घणी ३-४-५ क्रिया लागे. एक नारकीने वैक्रिय शरीवाले १४ दंडकके एकेक जीवोंकी स्यात् ३-४ क्रिया लागे. एवं एक नारकीने १४ दंडकके घणा जीवोंको स्यात् ३-४ क्रिया एवं घणा नारकीने १४ दंडकोंके एकेक जीवोंको स्यात् ३-४ क्रिया एवं घणा नारकीने १४ दंडकोंके घणा जीवोंकी घणी ३-४ क्रिया लागे. इसी माफीक दश दंडक औदारीकके परन्तु यह स्यात् ३-४-५ क्रिया कहना कारण वैक्रिय शरीर मारा हुवा नही मरते है और औदारीक शरीर मारा हुवा मरभी जाते है। इति नरकके १०० भांगा हुवा इसी माफीक शेष २३ दंडकके २३०० भांगा समझना परन्तु यह ध्यानमें रखना चाहिये कि मनुष्यका दंडक समुच्चय जीवकी माफीक कहना कारण मनुष्यमें चौदवे गुणस्थान वालोंको [illegible] क्रिया है हो नहीं इस वास्ते समुच्चय जीवकी माफीक [illegible] कहना [illegible] समुच्चयजीवके १०० और चौवीस दंडकके २३०० सर्व मील २४०० भांगा हुवे

क्रिया [illegible] अधिकार [illegible]

परतापनिया. पाणाइवाइया. जीव काइया क्रिया करेसो क्या अधिगरणी या भी करे ? यंत्रसे देखे समुचय जीव और चौवीस

क्रियाकेनाम	काइया	अधिगरणी	पावसीया	परताप निका	पाणाई वाइया
काइयाक्रिया	नियमा	नियमा	नियमा	भजना	भजना
अधिगरणिया	नियमा	नियमा	नियमा	भजना	भजना
पावसीया	नियमा	नियमा	नियमा	भजना	भजना
परतापनिका	नियमा	नियमा	नियमा	नियमा	भजना
पाणाइवाइया	नियमा	नियमा	नियमा	नियमा	नियमा

दंडकमें पांच पांच क्रिया होनेसे १२५ भांगा हुवा पचेंद्र भांगे यंत्र मुजब नियमा भजना लगानेसे १२५ भांगा होते है । यहांतो समुचय सूत्र हुवा इसी माफीक जीस समय काइयाक्रिया करे उस समय अधिगरणीया क्रिया करे इसकाभी यंत्रकी माफीक १२५ भांगा कहना अधिकता एक समय ? कि है इसी माफिक जीस देशमें काइया क्रिया करे उस देशमें अधिगरणीया क्रिया करे ? यह माफीक १२५ भांगा कहना एव प्रदेशकाभी १२५ भांगा जीस प्रदेशमें काइया क्रिया करे उस प्रदेशमें अधिगरणीया क्रिया करे समुचयके १२५ समयके १२५ देशा [illegible] प्रदेशके [illegible] भांगा होते है इसी मा- [illegible] भांगा कहना [illegible] कि समुचयके [illegible] भांगा [illegible] भांगा है [illegible]

क्रिया पांच प्रकारकि है काइयाक्रिया अधिगरणीया पावक्रिया परतापनिया पाणाइवाइक्रिया समुच्चयजीव और चोवीस दंडकमें पांच पांच क्रिया पावे. एवं १२५ भांगा हुवा. (१) जीव-काइया अधिकरणीया पावक्रिया यह तीन क्रिया करे यह परतापनीया पाणाइवाइयाभी करे (२) तीन क्रिया करे यह चोथी क्रिया करे पांचमी नही करे. (३) तीन क्रिया करे यह चोथी पांचवी नभी करे. (४) तीन क्रिया न करे यह चोथी पांचवी क्रियाभी न करे. इसी माफीक च्यार भांगा स्पर्श करनेकाभी समझ लेना. यह समुच्चय जीवोंमें आठ भांगा कहा इसी माफीक मनुष्यमेंभी समजना शेष २३ दंडकमें चोथो आठवों भांगो छोडके छे छे भांगा समझना. कुल भांगा १५४ हुवे ।

क्रिया पांच प्रकारकी है आरंभिया, परिग्रहिया, मायावत्तिया मिथ्यादर्शन वत्तिया, अपचखानिया, समुच्चजीव और चोवीसदंडकमें पांच पांच क्रिया पानेसे १२५ भांगा होते हैं ।

समुच्चयजीव आरंभियाक्रिया करे वह परिग्रहीयाक्रिया करते हैं या नही करते हैं देखो यंत्रसे

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मिथ्यादर्शन	अपच्चखानि
आरंभिया	नियमा	भजना	नियमा	भजना	भजना
परिग्रहीया	नियमा	नियमा	भजना	भजना	भजना
मायावत्ति	भजना	भजना	नियमा	भजना	भजना
मिथ्यादर्शन	नियमा	नियमा	नियमा	नियमा	नियमा
अपच्चखानि	नियमा	नियमा	नियमा	भजना	नियमा

एवं २५ भांगे हुये। समुचय जीव और चोवीस दंडकपर पचवीस गुण करनेसे ६२५ भांगे हुये. जीस समयके ६२५ जीस देशमें के ६२५ जीस प्रदेशके ६२५ एवं सर्व २५०० एवं बहुवच नापेक्षा २५०० मीलाके सर्व ५००० भांगे हुये।

जीव प्राणातीपातका विरमण (त्याग) करे वह छे जीवनी कायासे करे. मृषावाद का त्याग सर्व द्रव्यसे करे. अदत्तादानका त्याग ग्रहनधरण द्रव्योंसे करे मैथुनका त्याग रूप और रूप के अनुकुल द्रव्योंसे करे परिग्रह के त्याग सर्व द्रव्यसे करे क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह अभ्याख्यान पैशुन्य परपरीवाद रति अरति मायामृषावाद और मिथ्यादर्शन शल्यका त्याग सर्व द्रव्य से करे. एवं मनुष्य तथा २३ दंडक के जीव सतरा पापों का त्याग नहीं कर सके यावत पांचेन्द्रिय के १६ दंडक के जीव मिथ्यादर्शन शल्यका त्याग कर सके है शेष आठ दंडक नही करे एवं समुचय जीव और चौवीस दंडक का अठारा गुणे करनेसे ४५० भांग होते है

समुचय जीव प्राणातिपात का त्याग [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

संख्या.	सात कर्म के सामन्ता	आठ कर्म	छे कर्म	अबन्धक
१	३	०	०	०
२	३	१	०	०
३	३	३	०	०
४	३	०	१	०
५	३	०	३	०
६	३	०	०	१
७	३	०	०	३
८	३	१	१	
९	३	१	३	०
१०	३	३	१	०
११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	
[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]
[illegible]	[illegible]			[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]
[illegible]	[illegible]		[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]		[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]		[illegible]	[illegible]

जहांपर तीनका अंक है वह बहुवचन और एक का अंक है उसे एकवचन समझे जहां (०) है वह कुच्छभी नही।

समुचय जीवकी माफीक मनुष्यमेंभी २७ भांगे समझना. एवं ५४ एक प्राणातीपातके त्याग के ५४ भांगे हुये इसी माफीक अठारा पापो के भी ५४-५४ भांगे गीननेसे ९७२ भांगे हुये शेष तेवीस दंडकमें अठारा पापका विरमाण नही होते हैं परन्तु इतना विशेष है की मिथ्यादर्शन शल्यका विरमण नारकी देवता और तीर्यंच पांचेन्द्रिय एवं १५ दंडक कर सकते हैं वह जीव सात आठ कर्म बान्धते हैं बहुत जीवों कि अपेक्षा सात कर्म बान्धनेवाले सदैव साश्वत हैं आठ कर्म बान्धनेवाले [illegible] हैं जिस्के भांगे तीन होते हैं [illegible] कर्म बान्धनेवाले साश्वते [illegible] बान्धनेवाले बहुत और [illegible] बान्धनेवाला एक [illegible] सात [illegible] आठ कर्म [illegible] है [illegible] बहुत [illegible] है सब [illegible]

[illegible]

१९	३	०	३	३
२०	३	१	१	१
२१	३	१	१	३
२२	३	१	३	१
२३	३	१	३	३
२४	३	३	१	१
२५	३	३	१	३
२६	३	३	३	१
२७	३	३	३	३

लागे ? स्यात् लागे (छट्ठे गुणस्थान) स्यात् न भी लागे (अप्रमातादि गुणस्थान) परिग्रह, मिथ्यादर्शन, और अप्रत्याख्यानकि क्रिया नहीं लागे । तथा मायावत्तिया क्रिया स्यात् लागे (दशवें गुणस्थान तक) स्यात् न भी लागे (वीतरागी गुणस्थान) एवं मृषावादादि यावत् मिथ्यादर्शन शल्यतक अठारा पाप के त्याग किये हुवे को भी समझना समुचय जीवकी माफीक मनुष्य को भी समझना शेष २३ दंडक के जीव १८ पापों के त्याग नहीं कर सकते है इतना विशेष है कि मिथ्यादर्शन के त्याग नारकी देवता तीर्यंच पांचेन्द्रिय एवं १७ दंडक के जीव कर सकते है उन्हीं को मिथ्यात्वकी क्रिया नहीं लगती है । समुचय जीव चौवीस दंडक को अठारा पापसे गुणा करनेसे ४५० भांगे हुवे ।

[illegible] आरंभिकि क्रियावाला जीव है अप्रत्याख्यानकि क्रियावाला जीव [illegible] है परिग्रहकि क्रियावाला जीव [illegible] है [illegible] क्रियावाला जीव [illegible] है मायावत्तिया क्रियावाला [illegible] है

समुचय जीव [illegible]

योग, सत्तरा दंडकके जीव चक्षु इन्द्रिय, अठारा दंडकके जीव घ्राणेन्द्रिय उनीस दंडकके जीव रसेन्द्रिय, और वचनके योग उत्पन्न करते हुवेको स्यात् तीन क्रिया स्यात् च्यार क्रिया स्यात् पांच क्रिया लगती है।

समुच्चय एक जीवको एक औदारीक शरीर कि कीतनी क्रिया लागे? स्यात् तीन क्रिया स्यात् च्यार क्रिया स्यात् पांच क्रिया स्यात् अक्रिया, एवं एक जीवने घणा औदारीक शरीरकी घणा जीवोंको एक औदारीक शरीर की घणा जीवोंको घणा औदारीक शरीरकी, घणी तीन क्रिया घणी च्यार क्रिया घणी पांच क्रिया घणी अक्रिया। एक नारकीके जीवको औदारीक शरीरकि स्यात् ३-४-५ क्रिया, एवं एक नारकीने घणा औदारीक शरीरकी घणा नारकीको एक औदारीक शरीरकी और घणा नारकीको घणा औदारीक शरीरकी घणी ३-४-५ क्रिया लागे एवं चौवीस दंडक मीलाके १०० भांगे हुवे इसी माफीक जीव और वैक्रिय शरीर परन्तु क्रिया ३-४ एवं आहारीक शरीर क्रिया ३-४ लागे कारण वैक्रिय आहारीक शरीरके उपक्रम [illegible] नहीं केवल कारमण शरीरके ३-४-५ क्रिया, एवंक शरीरसे [illegible] जीव और चौवीस दंडक पचवीसका च्यार [illegible] करनेसे [illegible] भांगे हुवे एवं पांच शरीरके [illegible] भांगे समझना।

एक [illegible] मारे [illegible] उनकि [illegible] तो जीवोंको [illegible] क्रिया लगती है जैसे मृग मारनेवाले मनुष्यकी धनुष्य [illegible] है उन [illegible] जीव अन्य गतिमें उत्पन्न हुवे है वह अब [illegible] नहीं किया हो तो उनोंके शरीरसे धनुष्य बना है वास्ते [illegible] वह धनुष्य भी सहायक होनेसे उन जीवोंको भी पांच क्रिया लगती है।

जीवा जो धनुष्यके अग्र भागमें सुतकी डोरी, भैंसाका शृंग जो धनुष्यके अधोभागमें रखा जाता है. गाणय, धर्म, बाण मालोडी फूदा इन उपकरणोंके जीव जीन गतिमें है उनो स-बको पांच पांच किया लगती है। कोइ जीव मृग मारनेको बाण तैयार कीया कोन तक जीवके बाण फेंकनेकि तैयारीमें था इतनेमें दुसरा मनुष्य आके उनका शिरच्छेद किया जीनके जरिये वह बाण हाथसे छूटा जीनसे मृग मर गया तो कोनसा जीवपे पापसे कोन स्पर्श हुवा ? मृग मारनेके परिणामवालोंको मृगका पाप लगा और मनुष्य मारनेवालेके परिणामवालोंको मनुष्यका पाप लगा।

एक मनुष्य बाणसे पाक्षी मारनेका विचारमें था. उन बाणसे पाक्षीको मारा पाक्षी नीचे गिरता हुवा उनके शरीरसे दुसरा जीव मर गया तो पाक्षी मारनेवाला मनुष्यको पाक्षीकी पांच क्रिया और दुसरे जीवकि व्यापार क्रिया लागे पाक्षीको दुसरा जीवकी पांचो क्रिया लागे।

अग्नि कीसी पुरुषने अग्नि लगाइ और कीस पुरुषने अग्नि बुझाइ जिसमें अग्नि लगानेवालेको महाकर्म महारंभ महाक्रिया महावेदना है और अग्नि बुझानेवालेको अल्पकर्म अल्पारंभ अल्पक्रिया अल्पवेदना है [illegible] अग्नि [illegible] अग्नि [illegible]

कीसी याचकको अन्न पानी वस्त्रादिकी आवश्यक्ता होनेसे उने तीव्र क्रिया लगति है और कीसी दातारने अपनि वस्तुकि ममत्व उतार उसे देदी तो उन याचक को पतली क्रिया लगती है और दातारको ममत्व उतारनेसे उन पदार्थकि क्रिया बन्ध हो गइ है।

क्रियाणा–कीसी मनुष्यने क्रियाणा बेचा. कीसी मनुष्यने क्रियाणा खरीद किया, बेचनेवालेको क्रिया हलकी हुइ, और लेनेवालोंको भारी हुइ कारण बेचनेवालोंको तो संतोष हो गया अब लेनेवालोंको उनका संरक्षण तथा–तेजी मंदीका विचार करना पडता है. माल बेचीयों तोकों तोल दीनों रूपैया लीना नहीतो बेचनेवालोंको दोनों क्रिया हलकी. लेनेवालोंको दोनो क्रिया भारी लगती है। मालतो तोलीयो नही और रूपैया ले लीना इनसे बेचनेवालोंको क्रिया भारी खरीदनेवालोंको रूपैया कि क्रिया हलकी हुइ। माल तोलके रूपैया ले लीना तो रूपैया लेनेवालोंको रुपैयाकी क्रिया भारी. माल उठानेवालोंको मालकी क्रिया भारी लगती है

कीसी मनुष्यकी दुकानपरसे एक आदमि एक वस्तु ले गया उनकी [illegible] कीसीको मालुम न हुवा उनोंको कौनसी क्रिया [illegible] क्रिया [illegible] [illegible] करनेसे यह [illegible] क्रिया [illegible] है

[illegible]

ऋषिको कोइ पापीष्ट मारे तो उन ऋषिके घातके साथ निश्चय अनंत जीवोंके घातसे स्पर्श करे कारण मुनि अनंत जीवोंके प्रतिपालक है. इसी माफीक एक ऋषिको समाधि देना अनंत जीवोंको समाधि होती कहीजे.

हे भगवान जीव अन्त क्रिया करे? जो जीव हलन चलनादि क्रिया करता है वह जीव अन्त क्रिया नही करे कारण तेरहवे गुणस्थान तक हलन चलनादि क्रिया है वहां तक अन्त क्रिया नही है चौदवे गुणस्थान योगनिरुद्ध होते है हलन चलन क्रिया बन्ध होती है तब अंत समय कि अन्त क्रिया होती है (पन्नवणा)

जीव वेदनि समुद्घात करते हुवेको स्यात् ३-४-५ क्रिया लगती है इसी माफीक कषाय समु० मरणान्तिक समु० वैक्रिय समु० आहारीक समु० तेजस समुद्घात करते हुवेको स्यात् ३-४-५ क्रिया लागे. दंडक अपने अपने कहना। (पन्नवणा)

मुनिक्रिया—मुनि जहां आत्मकल्प तथा अनुमान रहे हो और दुर्गा निगुणोंकाल [illegible] बिना इसी नगरमें आवे तो कालातिक्रान्त क्रिया लागे। बार बार इसी मकानमें उतरे तो क्रिया लागे [illegible] कारण [illegible] रहना [illegible] है

[illegible]

वर्ज्यक्रिया—अगर कोइ गृहस्थ मुनियोंके वास्ते हो मकान कराया है कदाच मुनि उनमें न ठेरे तो गृहस्थ विचार करे कि अपने रहनेका मकान मुनिको देदो अपने दुसरा बन्धा लेंगे अगर एसा मकानमें मुनि ठेरे तो उने वर्ज क्रिया लागे ।

महावर्ज क्रिया—कोइ श्रद्धालु गृहस्थ अन्य तीर्थीयोंके लिये मकान बन्धाया है जिस्में भी उनोंका नाम लेलेके अलग अलग मकान बन्धाया हो उनमें तो साधुवोंको उतरना कल्पता ही नहीं है अगर उतरे तो महावर्ज्ज क्रिया लागे ।

सावद्य क्रिया—बहुतसे साधुवोंके नामसे एक धर्मशालादिक मकान कराया है उनमें मुनि ठेरे तो सावद्य क्रिया लागे. महा एक साधुका नामसे मकान बनाये उनमें उतरे तो महा सावद्य क्रिया लागे । गृहस्थ अपने भोगवने के लिये मकान बनाया है परन्तु साधुवोंके ठेरनेके लिये उन मकानको लोपणसे लिपाये. छान छवाये, छपरा कराये एसा मकानमें साधुवोंको ठेरना नही कल्पे ।

अगर गृहस्थ अपने उपभोग के लिये मकान बनाया है वह [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

हालनेसे पाप लागे। मृषावाद बोलनेसे क्रिया लागे। चोरी कर्म करनेसे क्रिया लागे। मराय अध्यवसायसे० मित्रद्रोहीपणा करनेसे। मानसे, मायासे, लोभसे, इर्यावहिकी क्रिया. (सूत्रकृतांग सूत्र).

हे भगवान कोइ श्रावक सामायिक कर बेठा है उनको क्रिया क्या संपराय कि लगती है या इर्यावहि कि ? उन श्रावकको संपराय की क्रिया लगती है किन्तु इर्यावहिकी क्रिया नहीं लागे! कारण सामायिकमें बेठे हुवे श्रावककी आत्मा अधिकरण है यहां अधिकरण दो प्रकारके होते है द्रव्याधिकरण हलसाकटादि सो तो सामायिकके समय श्रावक के पास है नहीं और दूसरा भावाधिकरण जो क्रोध, मान माया, लोभ, यह आत्म प्रदेशोंमें रहा हुवा है इस वास्ते श्रावकके इर्यावहि क्रिया नहीं लागे किन्तु संपराय क्रिया लगती है।

बृहत्कल्पसूत्र उद्देशा १ अधिकरण नाम बोलका है.

बृहत्कल्पसूत्र उद्देशा ३ अधिकरण नाम बोलका है.

व्यवहारसूत्र उद्देशा ४ अधिकरण नाम बोलका है

निशिथसूत्र उद्देशा १३ वा अधिकरण नाम बोलका है

भगवतिसूत्र शतक १६ उ० १ [illegible]

[illegible]



अथ श्री

शीघ्रबोध भाग ३ जो।

थोकडा नम्बर. २०

सूत्र श्री अनुयोग द्वारादि अनेक सूत्रोंसे.

(बालावबोध द्वार पच्चीस)

(१) नयसात (२) निक्षेपा च्यार (३) द्रव्यगुण पर्याय (४) द्रव्य क्षेत्र काल भाव (५) द्रव्य भाव (६) कार्य कारण (७) निश्चय व्यवहार (८) उपादान निमित्त (९) प्रमाण च्यार (१०) सामान्य विशेष (११) गुण गुणी (१२) ज्ञेय ज्ञान ज्ञानी (१३) उपजन्ना विगमेवा धुवेवा (१४) आधेय आधार (१५) आविर्भाव तिरोभाव (१६) गौणता मुख्यता (१७) उत्सर्ग अपवाद (१८) आत्मा तीन (१९) ध्यान च्यार (२०) अनुयोग च्यार (२१) [illegible] (२२) [illegible] (२३) [illegible] (२४) [illegible] (२५) [illegible] इतिद्वार

[illegible]

संक्षिप्तसे सार लिख आपसे निवेदन करते हैं कि इस नयादिको कण्ठस्थ कर फीर विशेषवाले ग्रंथ पढो ।

(१) नयाधिकार

(१ नय–वस्तु के एक अंश को गृहन कर वक्तव्यता करना उसको नय कहते हैं जब वस्तुमें अनंत (पर्याय) अंश हैं उनोंकि वक्तव्यता करने के लिये नयभी अनंत होना चाहिये। जीतना वस्तुमें धर्म (स्वभाव) हैं उनोंकि व्याख्या करनेको उतनाही नय हैं परन्तु स्वल्प बुद्धिवालों के लिये अनंत नयका ज्ञानको संक्षिप्त कर सात नय बतलाया है। अगर नैगमादि एकेक नयसे ही एकांत पक्ष ग्रहन कर वस्तुतत्वका निर्देश करे तो उनोंको नयाभास (मिथ्यात्वी) कहा जाता है कारण वस्तुमें अनंतधर्म हैं उनोंकि व्याख्या एकही नयसे संपूरण नहीं होसक्ती है अगर एक नयसे एक अंशकि व्याख्या करेंगे तो शेष जो धर्म रहे हुवे हैं उनोंका अभाव होगा इसी वास्ते शास्त्रकारोंका फरमान है कि एक वस्तुमें एकेक नयकि अपेक्षा से अलग अलग धर्मकि अलग अलग व्याख्या करनासेही सम्यग् ज्ञानकि प्राप्ती हो सके [illegible] है

[illegible] मनुष्य [illegible] हस्ति [illegible] मनुष्योंके [illegible] हस्तिके [illegible] हस्ति [illegible] जैसा होता है [illegible] कहा कि हस्ति [illegible] जैसा होता है [illegible] हाथ लगाके कहा कि हस्ति सुपडे जैसा होता है बाद मे [illegible] हाथ लगाके कहा कि हस्ति [illegible]

होता है पांचवाने पैरोंपर हाथ लगाके देखाकि हस्ति स्तंभ जैसा होता है छठ्ठाने पुच्छपर हाथ लगाके देखाकि हस्ति चम्र जैसा होता है सातवाने कुम्भस्थलपर हाथ लगाके देखाकि हस्ति कुम्भ जैसा है हस्तिको देख ग्राम के लोग ग्राममें गये और वह सातों अन्धे मनुष्य एक वृक्ष निचे बेठे आपसमें विवाद करने लगे अपने अपने देखे हुवे एकेक अंगपर मिथ्याग्रह करने लगे एक दुसरोंको झुठे बनने लगे इतनेमें एक सुझ मनुष्य आया और उन सातों अन्धे मनुष्योंकि वातों सुन बोला के भाइ तुम एकेक वातको आग्रहसे तांनते हो तवतो सबके सब झुटे हो अगर मेरे कहने माफीक तुमने एकेक अंगहस्तिके देखे है अगर सातों अंगों सामील हो विचार करोंगे तो एकेकापेक्षा सातों सत्य हो। अन्धोंने कहा की कैसे? तब उन सुझ विद्वानने कहाकी तुमने देखा वह हस्तिका दान्तशूल है दुसराने देखा वह हस्तिकि शुंड है यावत् सातवाने देखा वह हस्ति के पुच्छ है इतना सुनके उन अन्ध मनुष्योंको ज्ञान होगया कि हस्ति महा कायावाला है अपने जो देखा था वह हस्तिका एकक अंग है इसका उपनय-वस्तु एक हस्ति माफीक अनेक अंश (विभाग) संयुक्त है उनको माननेवाले एक अंगको मानके शेष अंशका उच्छेद करनेसे अन्धे मनुष्योंके कदाग्रह तुल्य होते है अगर संपुरण अंगोंको अलग अलग अपेक्षासे माना जावे तो सुझ मनुष्य कि माफीक हस्ती ठीकस्वरूप समझ सकते है इति

नय के मूल दो भेद है (१) द्रव्यास्तिक नय जो द्रव्यको ग्रहन करते है। (२) पर्यायास्तिक नय वस्तुके पर्यायको ग्रहन करे। जिसमें द्रव्यास्तिक नयके दश भेद है यथा। नित्य द्रव्यास्तिक एक द्रव्यास्तिक सत् द्रव्यास्तिक वक्तव्य द्रव्यास्तिक, अशुद्ध द्रव्यास्तिक अन्वय द्रव्यास्तिक परमद्रव्यास्तिक शुद्धद्रव्या-

स्तिक, सत्ताद्रव्यास्तिक, परम भाव द्रव्यास्तिक। पर्यायास्तिक- नयके छे भेद है द्रव्यपर्यायास्तिक, द्रव्यव्यंजनपर्यायास्तिक गुण- पर्यायास्तिक, गुणव्यंजनपर्यायास्तिक, स्वभाव पर्यायास्तिक, विभावपर्यायास्तिकनय। इन द्रव्यास्तिक पर्यायास्तिक दोनों नयों के ७०० भांगे होते है।

तर्कवादि श्रीमान सिद्धसेनदिवाकरजी महाराज द्रव्यास्ति कनय तीन मानते है नैगमनय, संग्रहनय, व्यवहारनय, और सिद्धान्तवादी श्रीमान जिनभद्रगणी क्षमाश्रमणा द्रव्यास्तिनय च्यार मानते है नैगमनय संग्रहनय व्यवहारनय ऋजुसूत्र नय। अपेक्षासे दोनों महा ऋषियोंका मानना सत्य है कारण ऋजु सूत्र नय प्रणाम ग्राही होनेसे भावनिक्षेपा के अन्दर मानके उसे पर्यायास्तिक नय मानी गइ है और ऋजुसूत्रनय शुद्ध उपयोग रहित होनेसे। श्री जिनभद्रगणी क्षमाश्रमणजीने द्रव्यास्तिक नय मानी है दोनों मतका मतलब एक ही है.

नैगम, संग्रह, व्यवहार, और ऋजुसूत्र, इन च्यार नयको द्रव्यास्तिक नय कहते है अथवा अर्थ नय कहते है तथा क्रियानय भी कहते है और शब्द संभिरूढ और एवंभूत इन तीनों नय को पर्यायास्तिक नय कहते है इन तीनों नयको शब्द नयभी कहते है इन तीनो नयको ज्ञान नयभी कहते है एवं द्रव्यास्तिक नय और पर्यायास्तिक नय दोनोंको मीलानेसे सातनय-यथा नैगमनय संग्रहनय व्यवहारनय ऋजुसूत्रनय शब्दनय संभि रूढनय एवंभूतनय एवं इन सातों नयके सामान्य लक्षण कहा जाते है

(१) नयअनेक [illegible] एक गम स्वभाव नहीं है अनेक मान [illegible] वस्तुका वस्तुमान जैसे सामान्यमान विशेषमान [illegible] भावमान निक्षेपाचार माने तीनो

कालमें वस्तुका अस्तित्व भाव माने जिन नैगमनय के तीन भेद हैं (१) अंश. (२) आरोप (३) विकल्प ।

(क) अंश-वस्तुका एक अंशको ग्रहन कर वस्तुको वस्तुमाने जैसे निगोदीये जीवोंको सिद्ध समान माने कारण निगोदीये जीवों के आठ रूचक प्रदेश+ सदैव निर्मल सिद्धों के माफीक है इस वास्ते एक अंशको ग्रहन कर नैगमनयवाला निगोदीये जीवोंकोभी सिद्ध ही मानते है। तथा चौदवे अयोगी गुणस्थानवाले जीवों को संसारी जीव माने; कारण उन जीवोंके अभीतक चार अघाति कर्म बाकी है अन्तर महुर्त संसार बाकी है उतने अंशको ग्रहन कर चौदवे गुणस्थानक वृति जीवोंको संसारी माने यह नैगम नयका मत है।

(ख) आरोप-आरोपके तीन भेद है (१) भूत कालका आरोप (२) भविष्य कालका आरोप (३) वर्तमान कालका आरोप जिस्मेभूत कालका आरोप जैसे भूतकालमें वस्तु हो गइ है उनको वर्तमान कालमें आरोप करना. यथा-भगवान् वीरप्रभुका जन्म चैत्र शुक्ल १३ के दिन हुवा था उनका आरोप, वर्तमान कालमें कर पर्युषण में जन्म महोत्सव करना उन्होंकी मूर्ति स्थापन कर सेवा पुजा भक्ति करना तथा अनंते सिद्ध हो गये है उन्होंके नामका स्मरण करना तथा उन्होंकि मूर्ति स्थापन कर पूजन करना यह सब भूतकालका वर्तमानमें आरोप है (२) भविष्यकाल में होने वालोंका वर्तमान कालमें आरोप करना जैसे श्री पद्मनाभ

+ [illegible]

तीर्थंकर उत्सर्पिणी कालमें होंगे उनोंको (ठाणायांगजी सूत्र के नौवे ठाणेमें) तीर्थंकर समक्ष उनोंकी मूर्ति स्थापनकर सेवाभक्ति करना तथा मरीचीयाके भवमें भावि तीर्थंकर समक्ष भरतमहाराज उनको वन्दन नमस्कार कीयाथा. यह भविष्यकालमें होनेवालोंका वर्तमानमें आरोप करना (३) वर्तमानमें वर्तती वस्तुका आरोप जैसे आचार्योपाध्याय तथा मुनि महांगोंके गुण कीर्तन करना यह वर्तमानका वर्तमानमें आरोप है तथा एक वस्तुमें तीन कालका आरोप जैसे नारकी देवता जम्बुद्विप मेरुगिरी देवलोकोंमें सास्वते चैत्य-प्रतिमा आदि जोजो पदार्थ तीनो कालमें सास्वते है उनोंका भूतकालमें थे भविष्यमें रहेंगे वर्तमान में वर्त रहे है एसा व्याख्यान करना यह एकही पदार्थ में तीनों कालका आरोप हो सकते है.

(ग) विकल्प विकल्पके अनेक भेद है जैसे जैसे अध्यवसाय उत्पन्न होते है उनको विकल्प कहते है द्रव्यास्तिक और पर्यायास्तिक नयके विकल्प ७०० होते है यह नय चक्र सारादि ग्रंथ से देखना चाहिये इन नैगमनयका मूल दो भेद है (१) शुद्ध नैगमनय (२) अशुद्ध नैगमनय जिसपर वसति पायली और प्रदेशका दृष्टान्त आगे लिखा जायगा उसे देखना चाहिये।

[illegible]

माने तीन कालकीयात माने निक्षेपाचारोंमाने एक शब्द में अनेक पदार्थ माने जेसे कीसीने कहाको 'वन' तो उसके अन्दर जीतने वृक्ष लता फल पुष्प अलादि पदार्थ है उन सबको संग्रह नयवाले ने माना तथा कीसी सेठने अपने अनुचरको कहाकी जावों तुम दान्तण लावो तो उन संग्रह नयके मतवाला अनुचरने दान्तण काच जल झारी वस्त्रादि पोसाक सब लेके आया-इसी माफीक सेठने कहाकी एकलिखना है कागद लावो तो उस दासने कागद कल्म दवात हस्तरी आदि सब ले आया. इस वास्ते संग्रहनय-वाला एक शब्दमें अनेक वस्तु ग्रहन करते है जिस्के दोय भेद है (१) सामान्य संग्रहनय (२) विशेष संग्रहनय।

(३) व्यवहारनय-बाह्य दीखती वस्तुका विवेचन करे कारण की जीसका जेसा बाह्य व्यवहार देखे वेसाही उनीका व्यवहार करे अर्थात् अन्तः करणको नही माने जेसे यह जीव जन्मा है यह जीव मृत्युकोप्राप्त हुवा है जीव कर्म बन्ध करते हैं जीव सुख दुःख भोगवते है पुद्गलोंका संयोग वियोग होते है इस निमित कारणसे हमारा भला बुरा हो गया यह सब व्यवहार नयका मत है व्यवहार नयवाला सामान्यके साथ विशेषमाने निक्षेपा च्यार माने तीनों कालकी बात माने जेसे व्यवहारमें कोयल श्याम शुकहरा मामलीयालाल हल्दी पीली हंस सुपेद परन्तु निश्चय नयसे इन पदार्थोमें पाचो वर्ण दोगन्ध पाच रस आठ स्पर्श पावे व्यवहारमें गुलाब सुगन्ध मृत्यक्लेवर दुर्गन्ध सुठ तिक्त निंब कटुक आम्लाकषायत आम्र आविल साकर मधुर कम्बोल कर्कश ना गुथा मृदुल लोहागुरु अर्कतुल लघु पाणी शीतल, अग्निउष्ण घृत स्निग्ध राख रूक्ष यह सब व्यवहारमे मौख्यता गुण बतलाये परन्तु निश्चयमें गोणतामें सब वातोमें वर्णादि वीस वीस बोल

मीलते हैं। जिस व्यवहारनयके दो भेद है (१) शुद्ध व्यवहारनय (२) अशुद्ध व्यवहारनय।

(४) ऋजुसूत्रनय—सरलतासे बोध होना उसे ऋजुसूत्रनय कहते हैं ऋजुसूत्रनय भूत भविष्यकाल को नही माने मात्र एक वर्तमानकालको ही मानते हैं ऋजुसूत्रनयवाला सामान्य नही माने विशेष माने. एक वर्तमानकालकि बात माने निक्षेपा एक भाव माने. परवस्तु कों अपने लिये निरर्थक माने 'आकाशकुसुमवत्' जेसे कीसीने कहा की सो वर्षो पहले सुवर्णकि वर्षाद हुइथी तथा सो वर्षो के बाद सुवर्ण कि वर्षाद होगा? निरर्थक अर्थात् भूत भविष्यमें जो कार्य होगा वह हमारे लिये निरर्थक हैं यह नय वर्तमानकाल को मौख्य मानते है जेसे एक साहुकार अपने घरमें सामायिक कर बेठा था इतनेमें एक मुसाफर आके उन सेठके लडकेकी औरतसे पुछा की बेहन! तुमारा सुसराजी कहां गये है? उन औरतने उत्तर दीया कि मेरे सुसराजी पसारीकी दुकांन सुंठ हरडे खरीदने कों गये है वह मुसाफर वहां जाके तलास की परन्तु सेठजी वहांपर न मीलनेसे वह पीछा सेठजीके घरपर आये पुच्छा तो उन औरतने कहाकि मेरे सुसराजी मोचीके वहा जुते खरीदनेको गये है इसपर वह मुसाफर मोचीके वहा जाके तलास करी वहांपर सेठजी न मीले. तब फीरके पुन सेठजीके घरपे आये इतनेमें सेठजीके सामायिकका काल होजानेसे आपने सामायिक पार उन मुसाफरसे बात कर विदा कीया और अपने लडकेकी औरतसे पुच्छा कि क्यों बहुजी मै सामायिक कर घरके अन्दर बेठाथा यह तुम जानती थी और उन मुसाफर को ख्वारी तकलीफ क्यों दीयी वहुजीने कहा क्यों ससराजी आपका चित दोनो स्थानपर गयाथा

या नहीं ? सेठजीने कहा बात सत्य है मेरा शील खोनेसे व्यापार गयाथा इससे यह पाया जाता है कि सेठजी के लडकेकी औरत सामायिक की इसी माफीक ऋजुसूत्रनय गृहवासमें बैठ हुए के भाव प्रणाम होनेसे साधु माने और साधुवेश धारण करनेवाले मुनियोंका प्रणाम गृहव्यापारका होनेसे उसे गृहस्थ माने । इति इस प्रकार नयको व्यावहारिकनय कहते है इस प्रकार नयकि समर्पित तथा देशव्रत सर्वव्रत मध्यादृष्टि दोनोंको होते है परन्तु शुद्ध उपयोग रहीत होनेसे जीवोंका कल्याण नही हो सके !

(५) शब्दनय -शब्दनयवाला शब्दपर आरूढ हो सरीखे शब्दोंका एकही अर्थ करे शब्दनयवाला सामान्य नही माने, विशेष माने वर्तमानकालकी बात माने लिंगका भेद भाव माने वस्तुमें लिंगभेद नही माने जैसे शक्रेन्द्र देवेन्द्र पुरेन्द्र सचि-पति इन सबको एकही माने । यह शब्दनय शुद्ध उपयोग को माननेवाला है ।

(६) समभिरूढनय—सामान्य नही माने विशेष माने वर्त-मानकालकी बात माने लिंगका भाव भेद भिन्न शब्द माने शब्द का अर्थ भिन्न भिन्न माने [illegible]

के प्रदेश है कारण एसा कहनेसे यह शंका होगी कि यह पांचों प्रदेश धर्मास्तिकायका होगा। यावत् पांचों प्रदेश 'स्कन्धके होंगे एसे २५ प्रदेशोंकी संभावना होगी. इस वास्ते एसा कहो कि स्यात् धर्मास्तिकायका प्रदेश यावत् स्यात् स्कन्धका प्रदेश है। इस पर शब्दनयवाला बोला कि एसा मत कहो कारण एसा कहनेसे यह शंका होगी कि स्यात् धर्मास्तिकायका प्रदेश है वह स्यात् अधर्मास्तिकायका प्रदेश भी हो सकेंगे इसी माफीक पांचों प्रदेशोंके आपसमें अनवस्थित भावना हो जायगी इस वास्ते एसा कहो कि स्यात् धर्मास्तिकायका प्रदेश सो धर्मास्तिकायका प्रदेश है एवं यावत् स्यात् स्कन्ध प्रदेश सो स्कन्धका ही प्रदेश है। इसी माफीक शब्दनयवाला के कहनेपर समभिरूढनयवाला बोला कि एसा मत कहो यहांपर दो समास है तत्पुरुष और कर्मधारय जो तत्पुरुषसे कहा तो अलग अलग कहो और कर्मधारयसे कहो तो विशेष कहो कारण जहां धर्मास्तिकायका एक प्रदेश है वहां जीव पुद्गलके अनंत प्रदेश है वह सब अपनि अपनि क्रिया करते है वह दुसरे के साथ शामल नहीं है इस पर एवं भूतनयवाला बोला कि तुम एसा मत कहो [illegible]

[illegible]

द्रोण समझा. ऋजुसूत्रनयवाला अपने कर्मोंका द्रोण समझा. शब्दनयवाला कर्मोंके कर्ता अपने जीवका द्रोण समझा. समभिरूढनयवालाने भवितव्यता याने ज्ञानीयोंने अनंतज्ञान पहले यह ही भाव देख रखाथा. एवंभूत कहता है कि जीवको तो सुख दुःख है ही नहीं. जीवको आनन्दघन है।

राजा उपर सात नय. नैगमनयवाला कोलीके हाथी पगोंमें राजचिन्ह जैसा नील पद्मादि चिह्न देखके राजा माने. संग्रहनयवाला राजकुलमें उत्पन्न हुवा बुद्धि, विवेक, शौर्यादि देख राजा माने. व्यवहारनयवाला युवराज पदवालेको राजा माने. ऋजुसूत्रनयवाले राजकार्यमें प्रवृत्तको राजा माने. शब्दनयवाला सिंहासनपर आरूढ होनेपर राजा माने. समभिरूढनयवाला राज अवस्थाकी पर्याय प्रवृत्तरूप कार्य करते हुयेको राजा माने. एवंभूतनय उपयोग सहित राज भोगवतां नृपतिको नये मंजूर करे, राजाकी आज्ञा पालन करे उस समय राजा माने. इसी माफिक सर्व पदार्थोंपर सात सात नय लगा लेना इति नयद्वार।

([illegible] सप्तभंगीद्वार

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]



और अरिहन्तोंकि स्थापना (मूर्त्ति) सिद्धोंका नाम और सिद्धोंकि स्थापना एवं आचार्योपाध्याय साधु, ज्ञान, दर्शन, चारित्र इत्यादि जेसा गुण पदार्थमें है वैसे गुणयुक्त स्थापना करना उसे सत्यभाव स्थापना कहते है और असत्यभाव स्थापना जेसे गोल पत्थर रखके भेरूकि स्थापना तथा पांच सात पत्थर रख शीतला-माताकि स्थापना करनी इसमें भेरू और शीतलाका आकार तो नही है परन्तु नामके साथ कल्पना देखकी कर स्थापना करी है.

इस वास्ते ही सुज्ञ जन स्थापना देवकी आशातना टालते है जिस रीतीसे आशातना का पाप लगता है इसी माफीक भक्ति करनेका फल भी होते है उस स्थापनाका दश भेद है (सूत्र अनुयोगद्वार)

(१) कट्ठकम्मेया-काष्टकि स्थापनाजेसेआचार्यादिकि प्रतिमा.

(२) पोत्थ कम्मेया-पुस्तक आदि रखके स्थापना करना.

(३) चित्त कम्मेया-चित्रादिकरके स्थापना करना.

(४) लेप्प कम्मेया-लेप याने मट्टी आदिके लेपमें ॥

(५) गंठीम्मेया-पुष्पोंके वींटसे वींटको मीलाके स्था० ॥

(६) वेढीम्मेया-चीडा प्रमुक को प्रयोग करना ॥

(७) पुरिम्मेया-सुवर्ण चान्दी पीतलादि धरनका काम

(८) संघाइम्मेया-बहुत वस्तु एकत्र कर स्थापना

(९) अक्खइया चन्द्राकार समुद्रके अक्षकि स्थापना

(१०) वराडइया सप्त कोडी आदि की स्थापना

एवं दश प्रकार की सद्भाव स्थापना और दशप्रकारकी असद्भाव स्थापना एवं २० प्रकार प्रकार की स्थापना एवं बीस

अनेक प्रकार कि स्थापना सर्व मील स्थापना के ४० भेद होते हैं. इनके अतिरिक्त अन्य प्रकारसे भी स्थापना होती है.

प्रश्न—नाम और स्थापना में क्या भेद विशेष है ?

उत्तर—नाम यावत्काल याने चीरकाल तक रहता है और स्थापना स्वल्पकाल रहती है अथवा नाम निक्षेपाकि निष्पत्र स्थापना निक्षेपा—विशेष ज्ञानका कारण है जैसे—

लोक का नाम लेना और लोक कि स्थापना (नकशा) देखना. अरिहंतोंका नाम लेना और अरिहन्तोंकि मूर्त्ति को देखना. जम्बुद्विपका नाम लेना और नकशा देखना. संस्थान दिशा भांगा इत्यादि अनेक पदार्थ हैं कि जिनोंका नाम लेने कि निष्पत्र स्थापना (नकशा) देखनेसे विशेष ज्ञान हो सकते है इति स्थापना निक्षेप।

(३) द्रव्य निक्षेपा-भावशून्य वस्तु को द्रव्य कहते हैं जीस वस्तुमें भूतकाल में भावगुण था तथा भविष्य में भावगुण प्रगट होनेवाला है उसे द्रव्य कहा जाता है जैसे भुतकालमें तीर्थंकर नाम कर्म उपार्जन किया है वहांसे लगाके जहांतक केवल ज्ञान उत्पन्न न हुये ३४ अतिशय पैंतीस वाणि गुण अष्ट महा प्रतिहार प्राप्त न हुये वहां तक द्रव्य तीर्थंकर कहा जाता है तथा तीर्थंकर मोक्ष पधारगये बाद उनोंका नाम लेना वह सिद्धों का भाव निक्षेपा है परन्तु अरिहन्तोंका द्रव्य निक्षेपा है वह भूत भविष्य कालके अरिहन्त वन्दनीय पूजनीय है उन द्रव्य निक्षेपाके दो भेद है (१) आगमसे (२) नोआगमसे जिस्मे आगमसे द्रव्य निक्षेपा जो आगमो का अर्थ उपयोग शून्यतासे करे जिस पर आवश्यक का दृष्टान्त यथा कोइ मनुष्य आवश्यक सूत्र का अध्ययन किया है जैसे—

पदं सिक्खितं—पद पदार्थ अच्छी तरफसे पढा हो.
ठितं—वाचनादि स्वाध्यायमें स्थिर कीया हुवा हो.
जितं—पढा हुवा ज्ञानको भूलना नहीं. सारणा वारणा धारणासे अस्खलित.

मितं—पद अक्षर बराबर याद रखना
परिजितं—क्रमोत्क्रम याद रखना.
नामसमं—पढा हुवा ज्ञान को स्व नामवत् याद रखना.
घोस समं—उदात्त अनुदात्त स्वर व्यंजन संयुक्त.
अहीण अक्खरं—अक्षर पद हीनता रहीत हो.
अणाच्चअक्खरं—अक्षर पद अधिक भी न बोले.
अव्वाइ अक्खरं—उलट पुलट अक्षर रहित.
अक्खलियं—अस्खिलत पणसे बोलना.
अमिलियं अक्खरं—विरामादि संयुक्त बोलना.
अवच्चामेलियं—पुनरुक्ती आदि दोषरहित बोलना.
पडि पुन्नं—अष्टस्थानोंचारणसंयुक्त.
कंठोट्ठविप्पमुक्कं—बालक की माफीक अस्पष्टता न बोले।
गुरुवायणोवगयं—गुरु मुखसे वाचना ली हो उस माफीक
सेण तत्थ वायणाए—सूत्रार्थ की वाचना करना.
पुच्छणाए—शंका होनेपर प्रश्न का पुच्छना
परिअट्ठणाए—पढा हुवा ज्ञानकि आवृत्ति करना.
धम्मकाहाए—उच्चस्वर से धर्मकथाका कहना

इतनि शुद्धताके साथ आवश्यक करनेवाला होनेपर भी नोआगमसे द्रव्यावश्यक क्योंकि लिखने पढने वाचने व अन्दर ओर्तोका अनुप्रेक्षा (उपयोग) नहीं है उन सबका द्रव्य निक्षेपा में माना



मढा—शरीरको तेलादिकसे मालिसपीटी करे.
तुपुढा—नागरवेली के पानोंसे होठें को लाल बना रखे.
पंडूर पट्ट पाउरणा—उज्वल सुपेद वस्त्रो धोलपट्टा पहने।
जिणाणमणाणाए—जिनाज्ञाके भंगको करनेवाले।
सच्छंद विहारीउणं—अपने छंदे माफीक चलनेवाला।

उभओकालं आवस्सयस्स उवट्ठंति " अण उपओगदव्वं " दोनोंवक्त आवश्यक करने पर भी " उपयोग " न होनेसे द्रव्य-आवश्यक कहते है इति.

कुप्रवचन द्रव्यावश्यक जैसे चक्रचीरीया चर्मखेडा दंडधारी फलाहारी तापसादि प्रातः समय स्नान मज्जन कर देव सभामें इन्द्रभुवनमें अर्थात् अपने अपने माने हुवे देवस्थानमें जाके उपयोग शून्य क्रिया करे उसे कुप्रवचन द्रव्यावश्यक कहते है। इति द्रव्यनिक्षेपा।

(४) भावनिक्षेपा—जीस वस्तुका प्रतिपादन कर रहे हो उसी वस्तुमें अपना संपूरण गुण प्रगट होगया हो उसे भाव निक्षेप कहते है जैसे अरिहन्तोंका भाव निक्षेपा केवलज्ञान दर्शन संयुक्त समवसरणमें विराजमानको भाव निक्षेप कहते है इन भावनिक्षेप के दो भेद है (१) आगमसे (२) नो आगमसे। जिस्मे आगमसे आगमोंका अर्थ उपयोग संयुक्त उभओकालं आवा० दूसरा नो आगम भावावश्यक के तीन भेद है (१) लौकीक भावावश्यक (२) लोकोत्तर भावावश्यक (३) कुप्रवचन भावावश्यक.

लौकीक भावावश्यक जैसे राजा राजेश्वर युवराजा तलवर माडम्बी कौटुम्बी सेट सेनापति आदि प्रातः समय स्नान मज्जन तीलक छापा कर अपने अपने माने हुवे देवोंको भाव सहित

नमस्कार कर पूछे महाभारत, दोपहरको रामायण सुने उसे लौकिक भावावश्यक कहते हैं.

लोकोत्तर भावावश्यक जैसे साधु साध्वि श्रावक श्राविकाओं सहमने सहचित्ते सहलेश्या सहअध्यवसाय उपयोग सहित आवश्यक होनेवाले प्रतिक्रमणादि नित्य कर्म करे उसे लोकोत्तर भावावश्यक कहते हैं।

कुप्रवचन भावावश्यक जैसे जटाधारीयों धर्मका हंसधारा फलाहारा तपस्यादि प्रातः समय स्नान मज्जन कर गोपीचन्दन के तीलक कर अपने माने हुवे नाग यक्ष भूतादि के देवालय में भावसहित ईश्वर शब्दादिसे देव स्तुति कर भोजन करे उसे कुप्रवचन भावावश्यक कहते हैं इति भावनिक्षेप।

कीसी प्रकारके पदार्थ का स्वरूप जानना हो उनोंको पहले च्यारों निक्षेपाओंका ज्ञान हांसल करना चाहिये। जैसे अरिहंतोंके च्यार निक्षेपे नाम अरिहन्त सो नाम निक्षेपा-स्थापन अरिहन्त अरिहन्तोंकि मूर्ति - द्रव्यअरिहंत तीर्थंकर नाम गौत्र [illegible] भाव अरिहन्त [illegible]

[illegible]

कायका संख्यातकि स्थापना करना तथा धर्मास्तिकाय एसा अक्षर लिखना सो स्थापना निक्षेपा है जहां धर्मास्तिकाय हमारे काममें नहीं आति हो वह द्रव्य धर्मास्तिकाय द्रव्य निक्षेप है जहां हमारे चलन में सहायता करती हो उसे भावनिक्षेप भाव धर्मास्तिकाय है इसी माफीक जीवाजीव पदार्थ है उन सब पर च्यार च्यार निक्षेपा उतारदेना इति निक्षेप द्वार।

(९) द्रव्य-गुण-पर्यायद्वारद्रव्य धर्मास्तिकाय द्रव्य, अधर्म द्रव्य, आकाश द्रव्य, जीवद्रव्य पौद्गल द्रव्य कालद्रव्य इन छे द्रव्यकागुण अलग अलग है जैसे चलन गुण स्थिर गुण अवगाहन गुण उपयोग गुण मीलन पुरणगुण, वर्तनगुण, यह षट् द्रव्यके गुण है इन षट्द्रव्यके अन्दर जो अगुरु लघु पर्याय है वह समय समयमें उत्पात व्यय हुवा करती है [illegible] जो द्रव्य गुरु लघु है उनका गुण अगुरुता और पर्याय गुरुता से न्यूनाधिक होना जो द्रव्य जीव गुण ज्ञानादि-पर्याय अगुरु लघु तथा पर्यायका [illegible] अंत है [illegible] मार्गी । ७ आत्म [illegible] [illegible]

[illegible]

अन्त रहात भावसे ज्ञानदर्शन चारित्र संयुक्त इत्यादि सब पदार्थोपर द्रव्यक्षेत्र काल भाव लगा लेना. इन च्यारोंमें सर्व स्तोक काल है उनसे क्षेत्र असंख्यात गुणा है कारण एक सूचीके निचे जितने आकाश आये है उनको एकेक समय में एकेक आकाशप्रदेश निकाले तो असंख्यात सर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतित हो जावे. उनसे द्रव्य अनंत गुणे है कारण एकेक आकाश प्रदेशपर अनंते अनन्ते द्रव्य है उनोंसे भाव अनंत गुणे है कारण एकेक द्रव्यमें पर्याय अनंत गुणी है। जैसे कोइ मनुष्य अपने घरसे मन्दिरजी आया जिस्में सर्व स्तोक काल स्पर्श कीया है उनोंसे क्षेत्र स्पर्श असंख्यात गुणे कीया उनोंसे द्रव्यस्पर्श अनंत गुणे कीया उनोंसे भाव स्पर्श अनंतगुण कीया। भावना उपर लिखी माफीक समझना।

(९) द्रव्य-भाव—द्रव्य है सो भावको प्रगट करने में सहायता भूत है. द्रव्य जीव अमर सास्वता है भावसे जीव असास्वता है. द्रव्यसे लोक सास्वता है भावसे लोक असास्वता है द्रव्यसे नारकी सास्वती. भावसे असास्वती. अर्थात् द्रव्य है सो मूल वस्तु है वह सदैव सास्वती है भाव वस्तुकि पर्याय है वह [illegible]

[illegible]

जब जीवों कि आवश्यकता रहती है रत्नद्विप जाना वह कार्य है। और रत्नद्विपमें पहुंचने के लिये नौका में बेठना वह नौका कारण है। कीसी जीव को मोक्ष जाना है उन्होंके लिये दान शील तप भाव पूजा प्रभावना स्वामि वात्सल्य संयम ध्यान ज्ञान मौन इत्यादि सब कारण है इन कारणोंसे कार्यकी सिद्धि हो मोक्षमें जा सक्ते है। कारण कार्य के च्यार भांगा होते है।

(क) कार्य शुद्ध कारण अशुद्ध जैसे सुबुद्धि प्रधान-दुर्गंध पाणी व्याइसे लाके उनोंको विशुद्ध बना जयशत्रु राजाको प्रतिबन्ध दिया उस कारणमें यद्यपि असंख्य जीवोंकि हिंसा हुइ परन्तु कार्य विशुद्ध था कि प्रधानका इरादा राजाकोप्रतिबोध देनेका था.

(ख) कार्य अशुद्ध है और कारण शुद्ध जैसे जमाली अनगार ने कष्ट क्रिया तपादि बहुत ही उग्र कारी का किया था परन्तु अपना कदाग्रह की जय बनाने का कार्य अशुद्ध था आखिर निन्हवों की पंक्ति में दाखल हुवा।

(ग) कारण शुद्ध और कार्यभी शुद्ध जैसे गृह गौतम स्वामि आदि मुनिवरो तथा आनन्दादि श्रावकोने इन महापुरुषों का कारण तप संयम पूजा प्रभावना आदि कारण भी शुद्ध और [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

पहला व्यवहार होगा तो फीर निश्चय भी कभी आ जावें गे। जैसे निश्चयमें जीव अमर है व्यवहार में जीव मरे जन्मे, निश्चयमें कर्मोंका कर्ता कर्म है व्यवहारमें कर्मोंका कर्ता जीव है, निश्चयमें जीव अव्याबाध गुणोंका भोक्ता है व्यवहार में जीव सुखदुःख का भोक्ता है निश्चयमें पाणी चये. व्यवहार में घर चये. निश्चयमें आप जाये. व्य० ग्राम आये. नि० बेल चाले. व्य० गाडी चाले. नि० पाणी पडे. व्य० पनालपडे इत्यादि अनेक दृष्टान्तोंसे निश्चय व्यवहारको समजना चाहिये. निश्चयकि श्रद्धना और व्यवहार कि प्रवृति रखना शास्त्रकारों कि आज्ञा है।

(८) उपादान निमत्त-निमत्त है सो उपादान का साधक बाधक है जैसे शुद्ध निमत्त मीलनेसे उपादानका साधक है अशुद्ध निमत्त मीलना उपादानका बाधक है। जैसे उपादांन माताके निमत्त पिताको पुत्रकि प्राप्ती हुइ-उपादांन गौको निमत्त गोपालको दुध की प्राप्ती हुइ। उपादांन दुध निमत्त खटाइ दहीकी प्राप्ती हुइ। उपादांन दहीका निमत्त भीलोंने का घृतकि प्राप्ती हुइ. उपादान गुरुका निमत्त सुशील शिष्य को ज्ञानकि प्राप्ती हुइ. उपादांन भव्य जीवकों निमत्त ज्ञानदर्शन चारित्र तप ध्यान मौन पूजा प्रभावनादिका जीनसे मोक्षकी प्राप्ती हुई

(९) प्रमाण च्यार प्रत्यक्ष प्रमाण. आगम प्रमाण अनुमान प्रमाण औपमा प्रमाण जिस्मे प्रत्यक्ष प्रमाण के दो भेद है (१) इन्द्रिय प्रत्यक्ष प्रमाण (२) नो इन्द्रिय प्रत्यक्ष प्रमाण. इन्द्रिय प्रत्यक्ष प्रमाण के पांच भेद श्रोत्रेन्द्रिय प्रत्यक्ष प्रमाण चक्षु इन्द्रिय प्रत्यक्ष प्रमाण घ्राणेन्द्रिय प्रत्यक्ष प्रमाण रसेन्द्रिय प्रत्यक्ष प्रमाण. स्पर्शेन्द्रिय प्रत्यक्ष प्रमाण. । नो इन्द्रिय प्रत्यक्ष प्रमाण के दो भेद (१) देशसे (२) सर्वसे जिस्मे देशसेका दो भेद अवधिज्ञान प्रत्यक्ष प्रमाण मन पर्यव ज्ञान प्रत्यक्ष प्रमाण सर्वसेका एक भेद

परमाणु पुद्गल, सामान्य अरूपी अजीवद्रव्य, विशेष धर्मद्रव्य अधर्मद्रव्य, आकाशद्रव्य, कालद्रव्य इत्यादि सामान्य तीर्थंकर विशेष च्यार निक्षेपे नाम तीर्थंकर स्थापना तीर्थंकर, द्रव्य तीर्थंकर भाव तीर्थंकर सामान्य नाम तीर्थंकर विशेष वीस प्रकारसे तीर्थंकर नाम कर्म बन्धता है, अरिहन्तोंकि भक्ति करनेसे यावत् समकितका उद्योत करनेसे (देखो भाग १ लेमें वीस बोल) सामान्य अरिहन्तोंकि भक्ति विशेष स्तुति गुणकीर्तन पूजा नाटक इत्यादि सामान्यसे विशेष विस्तारवाला है.

(११) गुण और गुणी पदार्थमें वर्ण गन्ध है उसे गुण कहा जाते है और जो गुणको धारण करनेवाले है उसे गुणी कहा जाता है. यथा—गुणी जीव और गुणज्ञानादि, गुणी अजीव गुणवर्णादि। गुणी अजाव सगुण जीव गुणसिद्धत्व, गुणीपुद्गल, गुणपूर्णत्व गुणीधर्मद्रव्य, गुणचलनसहाय कारणता, गुणी और गुण भिन्न नहीं है अर्थात् अभेद है।

(१२) ज्ञेय ज्ञान ज्ञानी—ज्ञेय जो जानने योग्य पदार्थ है उसे ज्ञेय कहते है, उसीका जानपना वह ज्ञान और जाननेवाला वह ज्ञानी है. ज्ञानी पुरुषोंके लिये जानने योग्य पदार्थ विचारना है कारण है कारण इह अनित्य पदार्थ सब ज्ञेय जानने योग्य है [illegible]

[illegible]

जो पहले समय भाव देखा था वह उत्पात है. उसी समय जिस पर्यायका नाश हो दुसरी पर्यायपणे उत्पन्न हुवा वह व्यय हो उसी समय है और सिद्धोका ज्ञान है वह ध्रुव है. जैसे किसीको बाजुबन्ध तोडाके सुडी कराती है तो सुडीका उत्पात बाजुका नाश और सुवर्णका ध्रुवपणा है। जैसे धर्मास्तिकायमें जो पहले समय पर्याय थी वह नाश हुइ. उसी समय नये पर्याय उत्पन्न हुवा और चलनादि गुण प्रदेशोंमें है वह ध्रुवपणे रहे इसी माफीक सर्व द्रव्यके अन्दर समझ लेना।

(१४) आधेय और आधार—आधेय भगनके घटपटादि पदार्थ आधार पृथ्वी आधेय जीव और पुद्गल आधार आकाश, आधेय ज्ञानदर्शन आधार जीव इत्यादि सर्व पदार्थमें समझना।

(१५) आविर्भाव-तिरोभाव—तिरोभाव जो पदार्थ दूर है. आविर्भाव आकर्षित कर नजीक लाना. जैसे घृतकी सत्ता घासके तृणोंमें होती है. वह तिरोभाव है और गायके स्तनोंमें दुध है वह आविर्भाव है। गायके स्तनोंमे घृत दूर है और दुधमें नजदीक है दुधमें घृत दूर है और दहीमें नजदीक है. दहीमें घृत दूर है और मक्खनमें नजदीक है इसी माफीक सरागीको मोक्ष दूर है अरागीको मोक्ष नजदीक है वीतरागको मोक्ष नजदीक है. [illegible] दूर है [illegible] मोक्ष नजदीक है [illegible] दूर है [illegible] समझ [illegible]

[illegible]

भेद रहनेसे अभेद व्यवहारके नये नये रूप धारण करने पर भी मैनस्व तो अरूपी है परन्तु छद्मस्थोंके ध्यानके लिये कीसीन कीसी आकारकि आवश्यकता है जैसे अरिहंत अरूपी है तथापि क्योंकि मूर्ति स्थापन कर उन शान्त मुद्राका ध्यान करना । रूपा तित ध्यान जो निरंजन निराकार निष्कलंक आकृति अरूपी अलख अलख अगम्य अचेदी अभेदी अनादि अखेदी इत्यादि सच्चिदानन्द पूर्णानन्द महानन्द अनन्त ज्ञानमय केवल दर्शनमय का सिद्ध भगवान है उनोंका स्वरूपका ध्यान करना उसे रूपा- तित ध्यान कहते है ।

(१०) अनुमान प्रमाण द्रव्यानुयोग-जिसमें जीवाजीव अ नन्त भव करके अंतरा परिणाम अनन्तकाल व्यतितनसे हेतु कारण सिद्धि सिद्ध अवस्था इत्यादि स्वरूपको समझाये जावे तो उसे द्रव्या नुयोग कहा जाता है जिसमें सब वर्णन नाशक नहीं यह हैतवाद आदिका [illegible] इत्यादि [illegible] विषय हो उसे [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

(१) द्रव्यमें द्रव्यका उपचार जैसे काष्टमें वंशलोचन.

(२) द्रव्यमें पर्यायका उपचार यह जीव ज्ञानवन्त है.

(३) द्रव्यमें पर्यायका उपचार यह जीव स्वरूपवान है.

(४) गुणमें द्रव्यका उपचार-अज्ञानी जीव है.

(५) गुणमें गुणका उपचार-ज्ञानी होनेपरभी क्षमावन्तहै.

(६) गुणमें पर्यायका उपचार-यह तपस्वी बडे रूपवन्त है

(७) पर्यायमें द्रव्यका उपचार-यह प्राणी देवतोंका जीव है

(८) पर्यायमें गुणका उपचार-यह मनुष्य बहुत ज्ञानी है.

(९) पर्यायमें पर्यायका उपचार-मनुष्य-श्यामवर्णीका है.

(२३) अष्टपक्ष-एक वस्तुमें अपेक्षा ग्रहनकर अनेक प्रकारसे व्याख्या हो सकी है. जैसे नित्य, अनित्य, एक, अनेक, सत् असत्, वक्तव्य अवक्तव्य. यह अष्टपक्ष एक जीवपर निश्चय और व्यवहारकि अपेक्षा उतारे जाते है यथा—

व्यवहारनयकि अपेक्षा जीव गतिमें उदासि भावमें वर्तता हुवा नित्य है और समय समय आयुष्य क्षीण होनेकि अपेक्षा अनित्य भी है. निश्चयनयकि अपेक्षा ज्ञान दर्शन चारित्रापेक्षा नित्य है और अगुरु लघु पर्याय समय समय उत्पात व्यय होनेकि अपेक्षा अनित्य भी है.

व्यवहार नयसे जीव गतिमें जीव उदासिभावमें वर्तता हुवा एक है और दूसरे माता पिता पुत्र स्त्रि बन्धवादिकि अपेक्षा अनेक भी है. निश्चयनयापेक्षा सब जीवोंका चैतन्यता गुण एक होनेसे आप एक है और आत्माके असंख्यात प्रदेश और एकेक प्रदेशोंमें गुण पर्याय अनन्ता अनंत होनेसे

व्यवहार नयकि अपेक्षा जीव जीव गतिमें वर्त रहा है इस गतिमें स्वद्रव्य स्वक्षेत्र स्वकाल स्वभावापेक्षा सत् है और परद्रव्य परक्षेत्र परकाल परभावापेक्षा असत् है। निश्चयनयापेक्षा जीव अपने ज्ञानादि गुण अपेक्षा सत् है और पर गुण अपेक्षा असत् है।

व्यवहारनयापेक्षा मिथ्यात्व गुणस्थानसे चौदवां अयोगी केवली गुणस्थान तक कि ज्ञानादि केवली भगवान कहे वह वक्तव्य है और जो ज्ञानादि केवली कह नहीं सके वह अवक्तव्य है। निश्चयनयापेक्षा सिद्धोंके अनन्तगुणोंमें जिनजि गुणोंकि व्याख्या केवली कर सके वह वक्तव्य है और जिनजि गुणोंकि व्याख्या केवलीओंसे न हो सके वह अवक्तव्य है। जीवादि आदि और सिद्धोंका [illegible] अवक्तव्य है।

(७) सप्तभंगी—स्यात् अस्ति, स्यात् नास्ति, स्यात् अस्ति नास्ति, स्यात् अवक्तव्य, स्यात् अस्ति अवक्तव्य, स्यात् नास्ति अवक्तव्य, स्यात् अस्ति नास्ति युगपत् अवक्तव्य यह सप्तभंगी है [illegible]

[illegible]

समय है अर्थात् अस्ति नास्ति एक समयमें है परन्तु है अवक्तव्य। कारण वचनके योगमें वक्तव्यता करनेमें असंख्यात समय लगते है वास्ते एक समय अस्तिनास्ति का व्याख्यान हो नही सकते है। इसी माफीक जीवादि सर्व पदार्थो पर सप्तभंगी लग सकती है। यह बात खास ध्यानमें रखना चाहिये कि जहां स्वगुणकी अस्ति होगी वहां परगुणकि नास्ति अवश्य है। इति

(२५) निगोदस्वरूपद्वार-निगोद दो प्रकार की है (१) सूक्ष्म निगोद (२) बादर निगोद. जिस्में बादर निगोद जेसे कन्दमूल कान्दा मूला आलु रतालु पींडालु आदो अडवी सूवर्ण कन्द वज्रकन्द लसनकन्द निलण फूलण लसणादि इनोंमे अनन्त जीवोंका पंड है और जो सूक्ष्म निगोद है सो दो प्रकारकि है (१) व्यवहाररासी २ अव्यवहाररासी जिस्में अव्यवहाररासी है वह तो अभीतक बादर पणेका घर देखाही नहीं है उन जीवों की-शास्त्रकारोंने कीसी प्रकारकी गीणतीमें व्याख्या करीभी नहीं है जो अठाणु बोलादि अल्पाबहुत्व है उनमें जो जीवोंकि अल्प बहुत्व बतलाइ है वह सब व्यवहाररासी की-अपेक्षा है उन व्यवहार रासीसे जीतने जीव मोक्ष जाते है व उतने ही जीव अव्यवहाररासीसे निकल व्यवहाररासी में आजाते है वास्ते व्यवहाररासीमें जीव कम नही होते है। व्यवहाररासी कि जो सूक्ष्म निगोद है उनोंका स्वरूप इस माफीक है

सूक्ष्म निगोद के गोले संपूर्ण लोकाकाशमें भरा हुवा है एकभी आकाश प्रदेश एसा नही है कि जीसपर सूक्ष्म निगोदके गोले न हो। संपूर्ण लोकका एक घन बनानेसे सात राजका घन होता है उनोंमें एक सूची अंगुलक्षेत्र के अन्दर असंख्यात श्रेणि है एकेक श्रेणिमें असंख्याते प्रतर है एकेक प्रतर में अ

असंख्यात २ गोले है। एकेक गोले में असंख्यात २ शरीर है। एकेक शरीर में अनंते अनंते जीव है एकेक जीवों के असंख्यात २ आत्म प्रदेश है. एकेक आत्म प्रदेशपर अनंत अनंत कर्म वर्गणावों है। एकेक कर्म वर्गणा में अनन्ती अनंते परमाणु है एकेक परमाणु में अनन्ती अनन्ती पर्याय है एकेक परमाणु में अनंतगुन हानि वृद्धि होती है यथा अनंतभाग हानि असंख्यातभाग हानि संख्यातभाग हानि. संख्यात गुन हानि असंख्यातगुन हानि अनंतगुन हानि। वृद्धि अनंतभाग वृद्धि असंख्यातभाग वृद्धि संख्यातभाग वृद्धि संख्यातगुन वृद्धि असंख्यातगुन वृद्धि अनंतगुन वृद्धि। इसी माफीक षट्द्रव्य में भी समय समय षट्गुन हानि वृद्धि हुवा कर रही है। जब शरीर के निर्माण के जीव अपने [illegible] [illegible] साधारण शरीर बान्धते है साथ ही में आहार लेते है साथ ही में श्वासोश्वास लेते है साथ ही में उत्पन्न होते है साथही में मरते है इस जीवोंकी अनन्तकालकी जीवनी निगोद होती है जैसे कोइ अथवा [illegible] तथा जीव ही इसी के शरीर में बड़ा अंधकार [illegible] प्रकार के [illegible] हुवा है [illegible] दुसरे अनुभव से [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

हे भव्यजीवों यह अपना जीव अनंतीवार इन सूक्ष्म बादर निगोदमें सदा मरकर्म दुःखो का अनुभव कर आया है इस समय मनुष्यादि अच्छी सामग्री मीली है वास्ते यह परम पवित्र पुरुषोंका फरमाया हुवा स्याद्वादनय निक्षेप द्रव्यगुण पर्यायादि अध्यात्म ज्ञान का अभ्यास कर अपनि आत्मामें रमणता करो तांके फीर इन दुःखमय स्थानोंको देखने का अवसर ही न मीले। सज्जनों! आधुनिक लोगों को आलस्य प्रमाद बहुत बढजानेसे बडे बडे ग्रन्थो को अलमारी में रख छोडते है इस वास्ते यह संक्षिप्त में सार लिख सूचना करते है कि इस संग्रन्थ को आप कंठस्थ कर फीर रमणता करे तांके आपकि आत्मा को बडी भारी शान्ति मिलेगी। इति।

सेवंभंते सेवंभंते—तमेव सच्चम्।



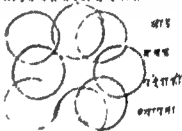
थोकडा नम्बर. २२

षट् द्रव्यके द्वार ३१।

नामद्वार आदिद्वार संस्थानद्वार द्रव्यद्वार क्षेत्रद्वार कालद्वार भावद्वार, सामान्यविशेषद्वार निश्चयद्वार नयद्वार निक्षेपद्वार गुणद्वार पर्यायद्वार साधारणद्वार साधर्मिद्वार परिणामिकद्वार जीवद्वार मूर्तिद्वार प्रदेशद्वार एकद्वार क्षेत्र द्वार क्रियाद्वार कर्ताद्वार नित्यद्वार कारणद्वार गतिद्वार प्रवेशद्वार पृच्छाद्वार स्पर्शनाद्वार प्रदेशस्पर्शनाद्वार अल्पाबहुत्वद्वार

१ । नामद्वार -धर्मास्तिकायद्रव्य, अधर्मास्तिकायद्रव्य आकाशास्तिकायद्रव्य, जीवास्तिकायद्रव्य, पुद्गलास्तिकायद्रव्य और कालद्रव्य.

(२) आदिद्वार—द्रव्यकी अपेक्षा षट्द्रव्य अनादि है, क्षेत्रकी अपेक्षा भी लोकव्यापक षट्द्रव्य है. सब सादि है, एक आकाश सादि है कालकी अपेक्षा षट्द्रव्य अनादि है और भावापेक्षा षट्द्रव्य [illegible] [illegible] गुणपर्यायापेक्षा सादि सान्त है। यद्यपि सभी [illegible] कहते है कि [illegible] [illegible] [illegible] है इसीलिये [illegible] [illegible] इसीलिये [illegible]



[illegible]

है आगे आठ, एवं दो दो प्रदेश वृद्धि होनेसे लोकान्त तक असंख्यात प्रदेशी है. एवं अधर्मास्तिकाय और आकाशास्तिकायका संस्थान लोकमें ग्रीवाके आभरण जेसा और अलोकमें गाडाके ओधनाकार है. जीव पुद्गलके अनेक प्रकारके संस्थान है कालका कोइ आकार नहीं है।

(४) द्रव्यद्वार—गुणपर्यायके भाजनको द्रव्य कहते है जिस्मे समय समय उत्पाद व्यय होते रहे–कारण कार्य एकही समयमें हो जो एक समय कार्य में उत्पाद व्यय है उसी समय कारणका उत्पाद व्यय है मूलजो एक द्रव्य है उनोंका निश्चय दो खंड नही होता है कारण जीवद्रव्य तथा परमाणुद्रव्य इनोका विभाग नही होते है। अगर द्रव्यके स्कन्ध देश प्रदेश कहा जाते है यह सब उपचरित नयसे कहा जाते है। द्रव्यके मूल सामान्य छे स्वभाव है।

(१) अस्तित्वं—नित्यानित्य परिणामिक स्वभाव।

(२) वस्तुत्वं—गुणपर्यायका आधारभूत स्वभाव।

(३) द्रव्यत्वं—षट्द्रव्य एकस्थानमें रहने परभी एकेक द्रव्य अपना अपना स्वभाव मुक्त नही होते है अर्थात् एक दुसरे स्वभावमें नहीं मीलते हुवे अपनि अपनि क्रिया करे।

(४ प्रमेयत्व स्वात्मा परात्माका ज्ञान होना यह स्वभाव जीवद्रव्यमें है। शेषद्रव्यमें स्वपर्याय स्वभावको प्रमेयत्वं स्वभाव कहते है

(५ सतत्व उत्पाद व्यय ध्रुव एकही समय होनेपर भी वस्तु अपने स्वभावका त्याग नही करती है।

(६) अगुरुलघुत्व समय समय षट्गुण हानिवृद्धि होने पर भी अपने अपने गुणोंमें प्रणमते हैं।

द्रव्यके उत्तर सामान्य स्वभाव।

(१) अभिन्नस्वभाव-द्रव्य-द्रव्यका गुणपर्याय, जैसे जिस द्रव्यमें द्रव्य रहा हुवा है-काल द्रव्यमें वर्तमान काल भूत-भावि काल समय कारणकार्य स्वभाव। जैसे घटमें घटका अभिन्न और पटमें पटका अभिन्न।

(२) नास्तिस्वभाव-एक द्रव्यकि अपेक्षा दूसरे द्रव्यमें वह द्रव्य नित्य काल नाम नहि है जैसे घटमें पटकि नास्ति पटमें घटकि नास्ति।

(३) नित्यस्वभाव-द्रव्यमें अगुरुलघु अवस्थाका स्वभाव नित्य है.

(४) अनित्यस्वभाव-द्रव्यमें षड्गुण हानिवृद्धिका स्वभाव अनित्य है।

(५) एक स्वभाव—द्रव्यके अन्वय गुण एक है.

(६) अनेकस्वभाव—द्रव्यमें गुण पर्याय स्वभाव अनेक है

(७) भेदस्वभाव—[illegible]

[illegible]

(८) [illegible]

(९) [illegible]

[illegible]

उसे अभव्य स्वभाव कहते हैं। अर्थात् भव्य कि अनेक विवस्थायो होति है और अभव्य कि विवस्था नहीं पलटती है।

(११) वक्तव्य स्वभाव—एक द्रव्यमें अनंत वक्तव्यता है उसमें जीतनि वक्तव्यता कर सके उसे वक्तव्य स्वभाव कहते हैं।

(१२) अवक्तव्य स्वभाव—शेष रहे हुवे गुणोंकि वक्तव्यता न हो उसे अवक्तव्य स्वभाव कहते हैं।

(१३) परम स्वभाव—जो एक द्रव्यमें गुण है यह कीसी दुसरे द्रव्यमें न मीले उसे परम स्वभाव कहते हैं। जैसे धर्मद्रव्यमें चलनगुण

द्रव्यके विशेष स्वभाव अनंते है। षट्द्रव्यमें धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य, आकाशद्रव्य यह एकेक द्रव्य है और जीवद्रव्य, पुद्गलद्रव्य अनंते अनंते द्रव्य है कालद्रव्य वर्तमानापेक्षा एक समय है यह अनंते जीवपुद्गलोंकी स्थिति पुरण कर रहा है वास्ते उपचरितनयसे कालद्रव्यको भी अनंते कहते है और भूत भविष्यकालके समय अनंत है परन्तु उने यहांपर द्रव्य नही माना है।

(५) क्षेत्रप्रकार—जीस क्षेत्रमें द्रव्य रहे के द्रव्य कि क्रिया करे उसे क्षेत्र कहते है धर्मद्रव्य अधर्मद्रव्य जीवद्रव्य और पुद्गलद्रव्य यह च्यार द्रव्य लोक व्यापक है। आकाशद्रव्य लोकालोक व्यापक है कालद्रव्य वर्तन रूप अढाइ द्विप व्यापक है और उत्पाद व्यय रूप लोकालोक व्यापक है।

(६) कालप्रकार—जीस समय के द्रव्य क्रिया करते है उसे काल कहते हैं धर्मद्रव्य अधर्मद्रव्य आकाशद्रव्य द्रव्यापेक्षा आदि अंत रहित है और जीव गत्यापेक्षा सादि सान्त है पुद्गलद्रव्य द्रव्यापेक्षा आदि अंत रहित है द्विप्रदेशी तीन प्रदेशी यावत् अनंत प्रदेशी अपेक्षा सादि सान्त है कालद्रव्य द्रव्यापेक्षा आदि अंत रहित है और वर्तमान समयापेक्षा सादि सान्त है।

[illegible] जीवस्य अधिक [illegible]।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] अधिक [illegible]

(१३) [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] „ „
[illegible] „ „ „ „
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] „
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] „

(१४) [illegible] — [illegible] [illegible] है [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है [illegible] [illegible] [illegible] है [illegible] [illegible] [illegible] है [illegible] [illegible] [illegible] है [illegible] [illegible] [illegible] है [illegible]

[illegible] है

(१६) परिणामिद्वार—निश्चय नयसे षट्द्रव्य अपने अपने गुणों में सदैव परिणमते हैं वास्ते परिणामि स्वभाव वाले हैं और व्यवहार नयसे जीव और पुद्गल अन्याअन्य स्वभावपणे परिणमते हैं जैसे जीव, नरक तीर्यंच मनुष्य देवतापणे और पुद्गल द्वि प्रदेशी यावत् अनंत प्रदेशी पणे परिणमते है।

(१७) जीवद्वार—षट् द्रव्य में पांच द्रव्य अजीव है और एक जीव द्रव्य है सो जीव है वह असंख्यात आत्म प्रदेश ज्ञान दर्शन चारित्र वीर्य गुण संयुक्त निश्चय नयसे कर्मोंका अकर्ता अभक्ता सिद्ध सामान्य है।

(१८) मूर्तिद्वार— षट् द्रव्य में पांच द्रव्य अमूर्ति याने अरूपी है एक पुद्गल द्रव्य मूर्तिमान है परन्तु जीव जो कर्म संगसे नये नये शरीर धारण करते है इनापेक्षा जीव भी उपचरित नयसे मूर्तिमान है।

(१९) प्रदेश द्वार—षट् द्रव्य में पांच द्रव्य सप्रदेशी है एक काल द्रव्य अप्रदेशी है कारण धर्म द्रव्य अधर्म द्रव्य असंख्यात प्रदेशी है, एक जीव के असंख्यात प्रदेश हैं और अनंत जीवों के अनंत प्रदेश है आकाश द्रव्य अनंत प्रदेशी है। पुद्गल द्रव्य [illegible] अनंते परमाणु [illegible]

[illegible]

[illegible] और [illegible]

[illegible] में रहनेवाले होती है अर्थात् धर्म, आकाश [illegible] अधर्मास्तिकाय जीव पुद्गल और काल द्रव्य अनादि अनंत [illegible] करके कोई भी द्रव्य दूसरे के स्वरूप नहीं होजाते है।

२७ —निश्चयनय [illegible] नयसे षट् द्रव्य अनादि [illegible] रहा करते है परन्तु व्यवहार नयसे जीव और पुद्गल [illegible] करते है [illegible] द्रव्य अनित्य है।

२८। निश्चयनय द्रव्यार्थिक नयसे षट् द्रव्य नित्य [illegible] है और पर्यायार्थिक नयसे [illegible]। षट् द्रव्य [illegible] है व्यवहार नयसे जीव द्रव्य और पुद्गल द्रव्य अनित्य [illegible] द्रव्य नित्य है।

२९। [illegible] जीव द्रव्य है [illegible] जीव द्रव्य के कारण है परन्तु [illegible] द्रव्य [illegible] कारण नहीं है। [illegible] और [illegible] द्रव्य कारण [illegible] जीव [illegible]

३० [illegible]

[illegible]

अपनि कार रवाइ करे परन्तु एक दुसरेको न तो याधा करे न एक दुसरे से मीले। इसी माफिक षट् द्रव्य समझ लेना।

(२८) पृच्छाद्वार—क्या धर्मास्तिकाय के एक प्रदेशको धर्मास्तिकाय कहते है? यहांपर एवंभूत-नयसे उत्तर दिया जाता है कि एक प्रदेशको धर्मास्तिकाय नहीं कहा जावे। एवं दो तीन च्यार पांच यावत् दश प्रदेश संख्याते प्रदेश असंख्याते प्रदेश सर्व धर्मास्तिकायसे एक प्रदेश कम होनेसे भी धर्मास्तिकाय नहीं कही जावे. तर्क—क्या कारण है? उ—समाधान खंडे दंडको संपुरण दंड नहीं कहा जाते है एव खंड छत्र. चक्र. चर्म. चमर इत्यादि जहां तक संपुरण वस्तु न हो वहां तक एवंभूतनय उन वस्तुको वस्तु नहीं माने इस वास्ते संपुरण लोक व्यापक असंख्यात प्रदेशी धर्मास्तिकाय को धर्मास्तिकाय कहते हैं एवं अधर्मास्तिकाय एवं आकाशास्तिकाय परन्तु प्रदेश अनंत कहना एवं जीव पुद्गल और काल समझना।

लोकका मध्य प्रदेश रत्नप्रभा नाम पहली नरक १८०००० योजनकी है उनोंके निचे २०००० योजनकी घणोदधि. असंख्यात योजनका घणवायु. असंख्यात योजनका तनवायु उनोंके निचे जो असंख्यात योजनका आकाश है उन आकाशके असंख्यातमें भागमें लोकका मध्य प्रदेश है इसी माफीक अधो लोकका मध्य प्रदेश चोथी पंकप्रभा नरकके आकाश कुच्छ अधिक आधा चले जानेपर अधो लोकका मध्य प्रदेश आता है। उर्ध्व लोकका मध्य प्रदेश पांचवा देवलोकके तीजा रिष्टनामका परतरमें है। तीच्छा लोकका मध्य प्रदेश मेरुपर्वतके आठ रूचक प्रदेशोंमें है इसी माफीक धर्मास्तिकायका मध्य प्रदेश अधर्मास्ति कायका मध्य प्रदेश आकाशास्ति कायका मध्य प्रदेश समझना जीवका मध्य प्रदेश आत्मा के आठ रुचक प्रदेशोंमें है, कालका मध्य प्रदेश वर्तमान समय है

[illegible]

[illegible]

स्पर्श करे स्यात् न भी करे कारण आढा तिरछे अन्दर जो धर्मास्ति है वह तो कालके प्रदेशको स्पर्श करे वह अनंत प्रदेश स्पर्श करे यहां उपचरित नयसे कालके अनंत प्रदेश माना है और जो आढातिरछे बाहार धर्मास्ति है वह कालके प्रदेश स्पर्श नही करते है। इसी माफीक अधर्मास्तिकाय भी समझना स्वकाया पेक्षा ज० तीन प्रदेश उ० छ प्रदेशपर कायापेक्षा धर्मास्तिकाय वत्-आकाशास्तिकायका एक प्रदेश-धर्मद्रव्यका जघन्य १-२-३ प्रदेश स्पर्श करे उ० सात प्रदेश स्पर्श करे-कारण आकाशास्ति अलोकमें भी है वास्ते लोकके एक प्रान्तमें एक प्रदेश भी स्पर्श कर सकते है। शेष धर्मास्ति कायवत् जीवका एक प्रदेश धर्मास्तिकायका ज० च्यार उ० सात प्रदेशोंका स्पर्श करते है शेष धर्मास्तिवत्। पुद्गलास्तिकायका एक प्रदेश-धर्मास्तिकायके ज० च्यार उ० सात प्रदेश स्पर्श करते है शेष धर्मास्तिकायवत्। कालका एक समय धर्मास्तिकायको स्यात् स्पर्श करे स्यात् न भी करे अढाइद्विपके बाहार करते है यहां ज० च्यार उ० सात प्रदेश स्पर्श करे. शेष धर्मास्तिकायवत्। पुद्गलास्तिकायके दो प्रदेश-धर्मास्तिकायके ज० दुगुणोसे दो अधिक याने छप्रदेश उत्कृष्ट पांच गुणोसे दो अधिक याने बारहा प्रदेश स्पर्श करे एवं तीन च्यार पांच छ सात आठ नौ दश संख्याते असंख्याते अनंते. सब जगह जघन्य दुगुणोसे दो अधिक उ० पांचगुणोसे दो अधिक.

३१ अल्पाबहुत्वद्वार-द्रव्यापेक्षा सर्व स्तोक धर्मद्रव्य अधर्मद्रव्य आकाशद्रव्य तीनों आपसमें तुल्य है कारण तीनोंका एकेक द्रव्य है उनोंसे जीवद्रव्य अनंत गुणे है उनोंसे पुद्गलद्रव्य अनंत गुणे है कारण एकेक जीवके अनंते अनंते पुद्गलद्रव्य लगे हुवे है उनोंसे काल द्रव्य अनंत गुणे है इति। प्रदेशापेक्षा सर्व स्तोक धर्मद्रव्य अधर्मद्रव्य के प्रदेश है कारण दोनोंके प्रदेश असंख्याते २ है २ उनोंसे जीव प्रदेश अनंतगुणे है ३ उनोंसे

होनेसे भाषापणे अग्रहन है जेसे एक आकाश प्रदेश अवगाये एवं दो तीन यावत् संख्यात प्रदेश अवगाये नही लेते है किन्तु असंख्यात प्रदेश अवगाया अनंत प्रदेशी द्रव्य भाषापणे लीये जाते है। एक बोल।

(ग) कालसे. एक समयकि स्थितिवाले एवं दो तीन यावत् दश समयकि स्थिति संख्यात समयकि स्थिति असंख्यात समयकि स्थिति के पुद्गल भाषापणे ग्रहन करते है। कारण स्थिति है सो सूक्ष्म पुद्गलों कि भी एक समय यावत् असंख्यात समयकि होती है और स्थूल पुद्गलों की भी एक समय से असंख्यात समयकि स्थिति होती है। इस वास्ते एक समय से असंख्यात समयकि स्थिति के द्रव्य ग्रहन करते है. एवं १२ बोल।

(घ) भावसे. वर्ण गन्ध रस स्पर्श के पुद्गल जीव भाषापणे ग्रहन करते है वह वर्ण से चाहे. एक वर्ण का हो, चाहे दो तीन च्यार पांच वर्णोका हो, एक वर्ण होनेसे चाहे वह श्याम वर्ण हो, चाहे हरा-लाल पीला सुपेद वर्णोका हो, अगर श्याम वर्णका होनेपर चाहे वह एक गुन श्याम वर्ण हो, दो तीन च्यार यावत् दश गुण श्याम वर्ण संख्यातगुण श्याम वर्ण ११ असंख्यात गुण श्याम वर्ण १२ अनंतगुण श्यामवर्ण १३ हो जैसे एक गुणसे अनंत गुण एवं तेरहा बोलोंसे श्याम वर्ण कहा है इसी माफीक पांचों वर्ण के ६० बोल एवं गन्ध से सुगिन्धत दुर्गिन्धत के तेरहा तेरहा बोल २६ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

एवं संख्या. द्रव्यका एक बोल. अनंत प्रदेशी स्कन्ध, क्षेत्रका एक बोल असंख्यात प्रदेशी अगाहा. कालके बारहा बोल एक समयसे असंख्यात समय तक. एवं १४ भावके वर्णके ६० गन्धके २६ रसके ६० स्पर्शके ५२ कुल २२२ बोल हुवे.

उक्त २२२ बोलोंमें द्रव्य भाषापणे ग्रहन करते है सो (१ स्पर्श कीये हुवे. (२) आत्म अवगाहन कीये हुवे. (३) वह भी परस्पर अवगाहान कीये नहीं किन्तु अणन्तर अवगाहान कीये हुवे (४) अणुवा-छोटे द्रव्य भी लेवे (५) बादर स्थुल द्रव्य भी लेवे (६) उर्ध्व दिशाका (७ अधोदिशाका (८) तीर्यग्दिशाका (९) आदिका (१०) अन्तका (११)मध्यका (१२) स्वविषयका (भाषाके योग्य) (१३) अनुपूर्वी (क्रमशः) (१४ भाषापणे द्रव्य ग्रहन करनेवाले त्रसनालोमें होनेसे नियमा छे दिशाका द्रव्य ग्रहन करे (१५) भाषाका द्रव्य सान्तर ग्रहन करे तो जघन्य एक समय उत्कृष्ट असंख्यात समय का अन्तर महुर्त. (१६) निरान्तर लेवे तो ज० दो समय उ० असंख्यात समयका अन्तरमहुर्त (१७) भाषाका पुद्गल प्रथम समय ग्रहन करे. अन्त समय त्याग करे. मध्यम ग्रहन करे और छडता रहे. एवं २२२ के अन्दर १७ बोल मीलानेसे २३९ बोल होते है। समुच्चयजीव और १९ दंडक एवं २० गुना करनेसे ४७८० बोल हुवे।

(१) समुच्चयजीव सत्यभाषापणे पुद्गल ग्रहन करे तो २३९ बोल पंचवन कहना इसीमाफीक पांचेन्द्रियके सोलहादंडक एवं सतरेको २३९ गुना करनेसे ४०६३ बोल हुवा इसी माफीक असत्यभाषाकाभी ४०६३ इसीमाफीक मिश्रभाषाकाभी ४०६३ व्यवहार भाषा मे समुच्चय जीव और १९ दंडक है कारण वकलेन्द्रिय मे व्यवहार भाषा है वीनको २३९ गुणा करनेसे ४७८० बोल हुवे समुच्चयके ४७ २ बोल मीलानेसे एक वचनापेक्षा २०७४९

और यह पदमापेक्षा भी २१७४९ बोल मीलानेसे ४३४९८ भागाके भांगे हुवे.

(१०) भाषाके पुद्गल मुंहसे निकलते है यह अगर भेदाये हुवे निकलेतो रहस्ते में अनंतगुणे वृद्धि होते होते लोकान्त तक चले जाते है तथा अभेदाते पुद्गल निकलेतो संख्याते योजन जाके विध्वंस हो जाते है.

(११ भाषाके पुद्गल जो भेदाते है वह पांच प्रकारसे भेदाते है.

(क) खंडाभेद—पत्थर लोहा काष्टके खंडवत्.
(ख परतराभेद—भोडल अवरखवत्.
(ग चूर्णभेद—गाहु चीणा मूगमठवत्.
(घ) अनुतडियाभेद तालाव कि जिसकी मट्टी सुककर.
(ङ) उत्करियाभेद—मुग फलीआदि फलीयो तापसे फुटे.

इन पांचों प्रकारके भेदाते पुद्गलोंकि अल्पाबहुत्व [illegible] सर्वस्तोक उत्करिया भेद भेदाते पुद्गल [illegible] अनुतडिया भेद भेदाते पु० अनंतगुणा [illegible] चूर्णभेद भेदाते पु० अनंतगुणा [illegible] परतर भेद भेदाते पु० अनंतगुणा [illegible] खंड भेद भेदाते पु० अनंत गुणा [illegible]

[illegible]

[illegible]

परिभ्रमन करे वास्ते अनंत काल तक भाषा पणे द्रव्य लेही न सके एवं समु० १९ दंडक ।

(१४) भाषाके द्रव्य कायाके योगसे ग्रहन करते है (१५) भाषाके पुद्गल वचनके योगसे छोडते है एवं समु० १९ दंडक ।

(१६) कारण ज्ञान मोहनिय कर्म और अन्तराय कर्मके क्षयोपशम और वचनके योगसे सत्य और व्यवहार भाषा बोली जाती है । ज्ञानावर्णिय कर्म ओर मोहनियकर्म के उदयसे तथा वचनके योगसे असत्यभाषा ओर मिश्रभाषा बोली जाती है एवं १६ दंडक परन्तु केवली जो सत्य ओर व्यवहार भाषा बोलते है उनो के च्यार घातिकर्मका क्षय हुवा है केवलेन्द्रिय एक व्यवहार भाषा संज्ञारूप बोलते है ।

(१७ [illegible] जीव सत्यभाषा पणे द्रव्य ग्रहन करते है वह सत्य भाषा बोलते है । असत्य भाषापणे द्रव्य ग्रहन करते वह असत्य भाषा बोलते है मिश्रपणे ग्रहन करनेवाले मिश्रभाषा बोले ओर व्यवहार पणे द्रव्य ग्रहन करनेवाले व्यवहार भाषा बोले एवं १६ दंडक तथा [illegible] व्यवहार भाषापणे द्रव्य ग्रहन करे सो व्यवहार [illegible] एक वचन कि माफीक बहुवचन भी समझना [illegible]

[illegible] प्रत्याख्यान करनेवाले [illegible] चार- [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

(६) नपुंसकवचन-ज्ञान कमल गुण
(७) अध्यात्मवचन-दूसरोंके मनका भाव जानना.
(८) वर्णवचन-दूसरों के गुण कीर्तन करना
(९) अवर्णवचन-दूसरोंका अवर्णवाद बोलना
(१०) वर्णावर्णवचन-पहले गुण पीछे अवगुण
(११) अवर्णवर्ण पहले अवगुण पीछे गुण करना
(१२) भूतकालवचन-इसने यह कार्य कीया था
(१३) भविष्यत्कालवचन-आगामी को करनाही पडेगें
(१४) वर्तमान कालवचन-मैं यह कार्य कर रहा हूं.
(१५) प्रत्यक्ष—प्रत्यक्षका वचन बोलना.

(१६) परोक्ष—अप्रत्यक्षका वचन बोलना इनके सिवाय प्रश्न व्याकरण सूत्र में भी कहा है कि कालविभक्ति नदुत धातु प्रत्यय वचन आदिका ज्ञानवान होना परम आवश्यक है।

(१७) सत्य असत्य मिश्र और व्यवहार यह च्यार भाषा उपयोग सयुक्त बोलना भी आराधिक हो सकते है। कारण कोई व्याकरण सूत्रादि नीव रखाय किये ज्ञानता वा असत्य बोल सकते है परन्तु उसका सच्चा हाल कह विराधिक नहीं होता है भी आराधकपूर्वक [illegible]

[illegible]

अज्ञानके वस मूलजानेसे क्रोधादि वस सत्य हो असत्य भाषाकि माफीक है और पर-परतापनावालो भाषा तथा जीवोंके प्राण चला जाय एसी भाषा बोलना यह दशों असत्य भाषा है।

मिश्र भाषाके दश भेद है-इस नगरमें इतने मनुष्यों उत्पन्न हुवे है; उस नगरमें इतने मनुष्योंका मृत्यु हुवा है, इस नगरमें आज इतने मनुष्योंका जन्म और मृत्यु हुवे यह सब पदार्थ जीव है यह सब पदार्थ अजीव है यह सब पदार्थोंमें आदे जीव आदे अजीव है. यह वनास्पति सब अनंतकाय है यह सब परितकाय है कालमिश्र. उठो पोरसी दोन आगये है। लो इतने वर्ष हो गये है भावार्थ जब तक जिस बातका निश्चय न हो जाय वहां तक अगर कार्य हुवा भी हो तो भी वह मिश्रभाषा है जिसमें कुच्छ सत्य हो कुच्छ असत्य हो उसे मिश्रभाषा कहते है।

व्यवहार भाषाका बार भेद है (१) आमंत्रणि भाषा-हे वीर, हे देव. (२) आज्ञा देना यह कार्य एसा करो (३) याचना करना यह वस्तु हमे दो (४) प्रश्नादिका पुच्छना (५) वस्तु तत्वकि प्ररूपना करना (६) प्रत्याख्यानादि करना (७) आगन्तेकी इच्छानुसार बोलना 'जहासुखम्' (८) उपयोग शुन्य बोलना. (९) इरादा पूर्वक व्यवहार करना (१०) शंका मयुक्त बोलना (११) अस्पष्ट बोलना (१२) स्पष्टतासे बोलना। जिस भाषामें असत्य भी नहीं और पूर्ण सत्य भी नहीं उसे व्यवहार भाषा कही जाति है जैसे जीव मरगया इस्मे पूर्ण सत्य भी नहीं है कारणकि जीव कभी मरता नहीं है और पूर्ण असत्य भी नहीं है कारण व्यवहारसे सब लोगोंने मरना जन्मना स्वीकार कीया है इत्यादि—

(२१) अल्पाबहुत्वद्वार (१) सबसे स्तोक सत्य भाषा बो-

[illegible]

पांचवा अध्याय [illegible]

[illegible]

[illegible]

(१) आहार [illegible] है [illegible] पदार्थों [illegible] आहार [illegible] अथवा [illegible] आहार [illegible] है और [illegible]

[illegible]

है उसीका काल-नरकमें असंख्यात समय के अन्तर महुर्तसे. आहारकी इच्छा उत्पन्न होती है असुरकुमार देवोंके जघन्य एक दिनसे उ० एकहजार वर्ष साधिक से, नागादि नौ काय के देवोंको तथा व्यंतर देवों को ज० एक दिन उ० प्रत्येक दिनोंसे ज्योतिषी देवोंको जघन्य उत्कृष्ट प्रत्येक दिनोंसे-वैमानीक देवोंमें सौधर्म देवलोक के देवोंको ज० प्रत्येक दिन उ० २००० वर्ष इशान देवलोक के देवों ज० प्रत्येक दिन उ० साधिक २००० वर्ष, सनतकुमार देवलोक के देवोंको ज० २००० वर्ष. उ० ७००० वर्ष महेन्द्र देवोंके ज० साधिक २००० वर्ष, उ० साधिक ७००० वर्ष, ब्रह्मदेवों को ज० ७००० वर्ष उ० १०००० वर्ष लांतक देवों के ज० १०००० उ० १४००० वर्ष महाशुक्र देवोंको ज० १४००० उ० १७००० वर्ष सहस्रादेवोंको ज० १७००० उ० १८००० वर्ष अणत्देवोंके ज० १८००० उ० १९००० वर्ष पणत् ज० १९००० उ० २०००० वर्ष. आरण्य ज० २०००० वर्ष उ० २१००० वर्ष अच्युत देवोंको ज० २१००० उ० २२००० वर्ष. ग्रीवैक प्रथम त्रीक ज० २२००० उ० २५००० वर्ष मध्यम त्रीक ज० २५००० उ० २८००० उपरकी त्रीक को ज० २८००० उ० ३१००० वर्ष च्यार अनुत्तर वैमानवासी देवों को ज० ३१००० उ० ३३००० वर्ष सर्वार्थसिद्ध वैमानवासी देवोंको ज० उ० ३३००० वर्षोंसे आहार इच्छा उत्पन्न होती है। पांच स्थावर को निरान्तराहार इच्छा होती है तीन वकलेन्द्रिय को अन्तर महुर्तसे तीर्यंच पांचेन्द्रि ज० अन्तर महुर्त उ० [illegible] दिनोंसे और मनुष्यको आहार इच्छा ज० अन्तरमहुर्त उ० तीन दिनोंसे आहार इच्छा उत्पन्न होता है।

(२) नारकी व नैरिय जो आहारपणे पुद्गल ग्रहन करते है वह [illegible] अनन्त अनन्तप्रदेशी [illegible] असंख्यात प्रदेश [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] एक समयादि स्थिति यावत् असंख्यात

समयकि स्थिति के पुद्गल. भावसे वर्ण गन्ध रस स्पर्श जेसे भाषाधिकारमें कहा है इसी माफीक. परन्तु इतना विशेष हैं कि भाषापणे च्यार स्पर्शवाले पुद्गल लेते थे यहां आहारपणे आठों स्पर्शवाले पुद्गल ग्रहन करते हैं. इस वास्ते पांच वर्ण दोगन्ध पांच रस आठ स्पर्श एवं बीस बोलसे प्रत्येक बोल पर तेरह तेरह बोलोंकि भावना करणी जेसे एक गुण काला पुद्गल दोगुण तीनगुण च्यारगुण पांचगुण छेगुण सात गुण आठगुण नौगुण दशगुण संख्यातगुण असंख्यातगुण और अनंतगुणकाले इसी माफीक बीसों बोलोंकों तेरहा गुणे करनेसे २६० बोल हुवे. स्पर्शादि १४ देखो भाषाधिकारमें बोल मीलानेसे १-१-१२-२६०-१४ सर्व २८८ बोलोंका आहार नारकी ग्रहन करते हैं। अधिकतर नारकी वर्णमें श्याम वर्ण हरावर्ण गन्धमें दुभिगन्ध रसमें तिक्त कटुक रस. स्पर्शमें कर्कश गुरु शीत रूक्ष स्पर्श के पुद्गलों का आहार लेते हैं वह ग्रहन कीये हुवे. पुद्गलोंको भी नडार्क खराब करके पूर्वका वर्णादि गुणोंको विप्रीत कर नये खराब वर्णादि उत्पन्न कर फीर ग्रहन कीये हुए पुद्गलों का आहार करे

इसी माफीक देवतों व तेरहा दंडकों मे भी २८८ बोलोंका आहार लेते हैं परन्तु वह शुभ वर्णमें पीला सुपेद गन्धमें सुभिगन्ध रसमें आंबिल मधुर रस स्पर्शमें मृदुल लघु उष्ण स्निग्ध पुद्गलों का आहार करे वह भी उन पुद्गलोंका पूर्वका खराब गुणों को अच्छा बनाके मनोज्ञ पुद्गलोंका आहार करे इसी माफीक पृथ्व्यादि दश दंडकों मे समुच्चय पुद्गलों को ग्रहन करे चाहे उसे अच्छा के खराब बनावे चाहे खराब के अच्छा बनाके २८८ बोल एकत्र आहार ग्रहन करे परन्तु पांच स्थावरमें ३-४-५ दिशाका भी आहार लेते हैं कारण

जहां अलोक कि व्याघात है वहां ३-४-५ दिशाका ही पुद्गल लेते है शेष छे दिशा सर्व ७२०० बोल हुवे ।

(५) नारकी जो आहारपणे पुद्गल ग्रहन करते है वह क्या सर्व आहार करे. सर्वप्रणमें सर्वउश्वासपणे सर्वनिश्वासपणे प्रणमे तथा पर्याप्ता कि अपेक्षा वारवार आहार करे प्रणमें उश्वासे निश्वासे और अपर्याप्ता कि अपेक्षा कदाचू आहारे कदाचू प्रणमे. कदाचू उश्वासे कदाचू निश्वासे ? उत्तरमें बारहा बोल ही करे है एवं २४ दंडकों में बारहा बोल होनेसे २८८ बोल हुवे ।

(६) नारकी के नैरियों के आहार के योग्य पुद्गल है उन्होंसे असंख्यात में भाग के द्रव्यों को ग्रहन करते है ग्रहन कीये हुवे द्रव्योंसे अनंतमें भागके द्रव्य अस्वादन में आते है शेष पुद्गल विगर अस्वादन कियेही विध्वंस हो जाते है इसी माफीक २४ दंडकमें परन्तु पांच स्थावरमें एक स्पर्शेन्द्रिय होनेसे वह विगर स्पर्श कीये अनंत भाग पुद्गल विध्वंस हो जाते है ।

(६) नारकी देवताओं और पांचस्थावर एवं १९ दंडकोंके आहार पणे पुद्गल ग्रहन करते है वह सर्वके सर्व आहार करते जीव [illegible] है कारण उन्होंके रोम आहार है और वैक्रिय भी आहार लेते है वह दो प्रकारसे लेते है एक रोम आहार जो समय समय लेते है वह तो सब के सब पुद्गलोंका आहार करते है और दुसरा जो कवलाहार है उन्होंमे ग्रहन कीये हुवे पुद्गलों के असंख्यातमे भागका आहार करते है और अनेक हजारो भाग पुद्गल विगर स्वाद विगर स्पर्श कियेही विध्वंस हो जाते है [illegible] सब स्वाद विगर अस्वादन कीये पुद्गल [illegible] उन्होंमे अल्पता पुद्गल अनंत गुणा है [illegible] [illegible] विगर [illegible] स्वादा [illegible] सब स्वाद विगर

[illegible]

जिस स्पर्श किये पुद्गल अनिष्टपणे इसी माफीक चौरिंन्द्रिय पांचेन्द्रिय और मनुष्यभी समझना।

(८) नारकी जो पुद्गल आहारपणे ग्रहन करते है वह नारकीके कौन कार्यपणे प्रणमते है? नारकीके आहार किये हुवे पुद्गल श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुरेन्द्रिय घ्राणेन्द्रिय रसेन्द्रिय स्पर्शेन्द्रिय अनिष्ट अकान्त अप्रिय अमनोज्ञ विशेष अमनोज्ञ अशुभ अनिच्छापणे भेदपणे ऊंचापणे नहीं किन्तु नीचापणे, सुखपणे नहीं, किन्तु दुःखपणे, इस तरह पोलोपणे वारवार प्रणमते है. पांच स्थावर तीनवैकलेन्द्रिय तीर्यच पांचेन्द्रिय और मनुष्य इन दश दंडकोंमें औदारीक शरीर होनेसे अपनि अपनि इन्द्रियोंके सुख और दुःख दोनोपणे प्रणमते है। देवतोंके तेरह दंडकोंमें नरकसे उलटे यानें सतरा बोलोंभी अच्छे सुखकारी प्रणमते है अर्थात् नारकीमें आहारके पुद्गल एकान्त दुःखपणे देवतोंमें एकान्त सुखपणे और औदारीक शरीरवाले दंडकोंके सुख दुःख दोनोपणे प्रणमते है।

( ) नारकीके नेरिय जो पुद्गल आहारपणे ग्रहन करते है वह क्या एकेन्द्रियके शरीर है यावत् क्या पांचेन्द्रियके शरीर है? पूर्वभावापेक्षा जो जीव अपना शरीर छोडा है एकेन्द्रियका शरीर है वह एकेन्द्रियका यावत् पांचेन्द्रियका है और वर्तमान वह पुद्गल नारकी ग्रहन किये हुवे है वास्ते पांचेन्द्रियके पुद्गल कहा जाते है एवं १६ दंडक एवं पांच स्थावर परन्तु वर्तमान एकेन्द्रियके पुद्गल कहा जाते है एवं बेन्द्रिय तेइन्द्रिय चौरिन्द्रिय अपनि अपनि इन्द्रिय कहना कारण पहले आहार लेनेवाले जीव उन पुद्गलोंको अपना करलेते है वास्ते उनीके ही पुद्गल कहलाते है।

(१०) नारकी देवता और पांच स्थावर—रोमाहारी है किन्तु प्रक्षेप आहारी नहीं है. तीन वैकलेन्द्रिय. तीर्यंच पांचेन्द्रिय और मनुष्य रोमाहारी तथा प्रक्षेपाहारी दोनों प्रकारके होते है।

(११) नारकी पांच स्थावर तीन वैकलेन्द्रिय तीर्यंच पांचेन्द्रिय और मनुष्य ओजाहारी है और देवता ओज आहारी और मन इच्छताहारी भी है कारण देवता मन इच्छा करे वैसे पुद्गलोंका आहार कर सके है शेष जीवोंको जैसा पुद्गल मीले वैसोंका ही आहार करना पडता है इति

॥ सेवं भंते सेवं भंते—तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नम्बर. २५

(सूत्र श्री पन्नवणाजी पद ७ वा श्वासोश्वास)

नारकीके नैरिया श्वासोश्वास लोहारकी धमणकी माफीक लेते है तीर्यंच और मनुष्य वे मात्रा याने जल्दीसे या धीरे धीरे दोनों प्रकारसे श्वासोश्वास लेते है। देवतोंमें असुर कुमारके देव जघन्यसे सात स्तोक कालसे उत्कृष्ट साधिक एक पक्ष (पन्द्रा-दिन) से श्वासोश्वास लेते है। नागादि नौ निकायके देव तथा व्यन्तर देव ज० सात स्तोक कालसे उ० प्रत्येक महूर्तसे। ज्योतिषी देव ज० प्रत्येक महूर्त उ० प्रत्येक महूर्त सौधर्म देवलोकके देव ज० प्रत्येक महूर्त उ० दो पक्षसे इशानदेव ज० प्रत्येक महूर्त उ० साधिक दो पक्षसे सनत्कुमारके देव ज० दो पक्ष उ० सात पक्ष महेन्द्र ज० दो पक्ष साधिक उ० साधिक सात पक्षसे ब्रह्म देव ज० सात पक्ष उ० दश पक्षसे लान्तक देव ज० दश पक्ष उ० चौ-

दशपक्ष महाशुक्र देव ज० चौदापक्ष उ० सत्तरापक्ष सहस्रादेव ज० सत्तरापक्ष उ० अठारापक्षसे आणतदेव ज० अठारापक्ष. उ० उगणिसपक्षसे, प्राणतदेव ज० उगणिसपक्ष उ० वीस पक्षसे आरण्यदेव ज० वीसपक्ष उ० एकवीस पक्षसे अच्युतदेव ज० एकवीस पक्ष उ० बावीसपक्षसे ग्रीवैकके पहले त्रीकके देव ज० बावीसपक्ष उ० पचवीस पक्ष दुसरी त्रीकके देव ज० पचवीस पक्ष उ. अठावीस पक्षसे तीसरी त्रीकके देव ज० अठावीस पक्ष उ० एकत्रीस पक्ष च्यारानुत्तर वैमानके देव ज० एकत्रीस पक्ष उ० तेत्तीसपक्ष सर्वार्थसिद्ध वैमानके देव अजघन्य उत्कृष्ट तेत्तीसपक्षसे श्वासोश्वास लेते है। जैसे जैसे पुन्य बढते जाते है वैसे वैसे सांसोकी स्थिरता भी बढती जाती है देवतावोंमें जहां हजारों वर्षोंकि स्थिति है वह सात स्तोक कालसे. पल्योपमकि स्थिति है वह प्रत्येक दिनोंसे और सागरोपमकी स्थिति है वहां जीतने सागरोपम उतनेही पक्षसे श्वासोश्वास लेते है। नोट—असंख्यात समयकि एक आविलका संख्याते आविलका. का एक श्वासोश्वास सात श्वासोश्वासका एक स्तोक काल होते है इति।

सेवंभंते सेवंभंते तमेवसच्चम्.

—⁂—

थोकडा नम्बर. २६

सूत्रश्री पन्नवणाजी पद ८ वा संज्ञाधिकार

संज्ञा जीवोंके इच्छा वह संज्ञा दश प्रकारकि है आहारसंज्ञा भयसंज्ञा मैथुनसंज्ञा परिग्रहसंज्ञा क्रोधसंज्ञा मानसंज्ञा मायासंज्ञा लोभसंज्ञा लोकसंज्ञा ओघसंज्ञा.

आहारसंज्ञा उत्पन्न होनेके च्यार कारण है. उदररीता होनेसे क्षुधावेदनिय कर्मोदयसे आहारको देखनेसे और आहारकि चिंतवना करनेसे आहार संज्ञोत्पन्न होती है।

भयसंज्ञा उत्पन्न होने के च्यार कारण है अधैर्य रखनेसे, भयमोहनिय कर्मोदयसे, भय उत्पन्न करनेवाला पदार्थ देखने से और भय कि चिंतवना करने से। हा हा अब क्या करुंगा?

मैथुन संज्ञा उत्पन्न होने के च्यार कारण है. शरीर को पौष्ट याने हाड मांस रौद्र बढानेसे. वेद मोहनिय कर्मोदयसे, मैथुन उत्पन्न करनेवाले पदार्थ स्त्रि आदि को देखने से मैथुन कि चिंतवना करने से मैथुनसंज्ञा उत्पन्न होती है।

परिग्रह संज्ञा उत्पन्न होने का च्यार कारण है. ममत्वभाव बढाने से, लोभ मोहनिय कर्मोदय से, धनादि के देखने से परिग्रह कि चिंतवना करनेसे "

क्रोध संज्ञा उत्पन्न होने के च्यार कारण है क्षेत्र खेता बाग-बगेचे, घर, हाट, हवेली, शरीरादि से धनधान्यादि औषधि से क्रोध उत्पन्न होते है एवं मान माया लोभ

लोकसंज्ञा अन्य लोकों को देख के आप भी वह क्रिया करता रहे ओघसंज्ञा शुन्य चित्तसे विलापादि करे [illegible] [illegible] भरनी [illegible] इत्यादि उपयोग शुन्यतासे।

[illegible] [illegible] दशों संज्ञा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आहारसंज्ञा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मैथुनसंज्ञा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

अल्पाबहुत्व—नरक में (१) स्तोक मैथुनसंज्ञा (२) आहार संज्ञा संख्यातगुणे (३) परिग्रहसंज्ञा संख्यातगुणे (४) भयसंज्ञा संख्यातगुणे-तीर्यंच में (१) सर्वस्तोक परिग्रहसंज्ञा. (२) मैथुन संज्ञा संख्यातगुणे. (३) भयसंज्ञा संख्यातगुणे (४) आहारसंज्ञा संख्यातगुणे । मनुष्य में (१) सर्वस्तोक भयसंज्ञा, (२) आहार-संज्ञा संख्यातगुने (३) परिग्रहसंज्ञा संख्यातगुणे (४) मैथुनसंज्ञा संख्यातगुणे । देवतों में (१) सर्वस्तोक आहारसंज्ञा (२) भय-संज्ञा संख्यातगुणे (३) मैथुनसंज्ञा संख्यातगुणे (४) परिग्रहसंज्ञा संख्यातगुने.

नरकमें सर्वस्तोक लोभसंज्ञा मायासंज्ञा संख्यातागुणे मान-संज्ञा संख्या० क्रोधसंज्ञा संख्यागु तीर्यंच मनुष्य में सर्वस्तोक मानसंज्ञा, क्रोधसंज्ञा, विशेषाधिक मायासंज्ञा विशेषाधिक, लोभ-संज्ञा विशेषाधिक देवतों में सर्वस्तोक क्रोधसंज्ञा मानसंज्ञा सं-ख्यातगुणे मायासंज्ञा संख्यातगुणे लोभसंज्ञा संख्यातगुणे इति ।

[illegible]

[illegible] नम्बर . ६

—

[illegible] पद [illegible] वां [illegible]

[illegible] जाते हैं [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

मय है पांचवी नरक में शीतयोनि जानिये क्रम है उष्णयोनि ज्यादा है छट्ठी सातवी नरक में उष्णयोनि बैठिया है। गर्भज मनुष्य तिर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्यों [redacted] शीतोष्णयोनि है। चार प्रकार के देव एकेन्द्रिय में तीनों योनि पावे, और तेउ काय सबसे उष्णयोनि है। सिद्ध भगवान अयोनि हैं। (१) सबसे थोड़ा शीतोष्ण योनिवाले जीव. (२) उनसे उष्णयोनिवाले जीव असंख्यातगुणे। (३) अयोनिवाले जीव अनंतगुणे (४) शीतयोनिवाला जीव अनंतगुणे।

योनि तीन प्रकार कि है सचित्तयोनि, अचित्तयोनि, मिश्रयोनि नारकी देवता अचित्तयोनि में उत्पन्न होते हैं पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय असंज्ञी तिर्यंच, असंज्ञी मनुष्य में योनि तीनों पावे गर्भज मनुष्य तिर्यंच में एक मिश्रयोनि है. (१) सिद्ध भगवान अयोनि है (२) सबसे थोड़ा, मिश्रयोनिवाले जीव, (३) अचित्तयोनि वाले जीव असंख्यातगुणे (४) अयोनीवाले जीव अनंतगुणे (५) सचित्त योनिवाला अनंतगुणे

[illegible]

नहीं है। धम्मोपत्तायोनि शेष सर्व संसारी जीवोंकि माताके होती है जीस योनि में जीव उत्पन्न होते है वह जन्मते भी है विध्वंस भी होते है। इति

सेवंभंते सेवंभंते तमेवसच्चम् ।

थोकडा नम्बर २८.

सूत्रश्री भगवतीजी शतक १ उदेशा १

सर्व जीव दो प्रकार के है उसे आरंभी कहते है (१) आत्मा का आरंभ करे, परका आरंभ करे, दोनो का आरंभ करे, (२) कीसी का भी आरंभ नही करे वह अनारंभीक है, इसका यह कारण है कि जो सिद्धो के जीव है वह तो अनारभी है और जो संसारी जीव है वह दो प्रकार के है १) संयति (२ असंयति. जिस्मे संयति के दो भेद है. १ प्रमादि संयति दुसरे अप्रमादि संयति जो अप्रमादि संयति है वह तो अनारंभी है और जो प्रमादि संयति है उनके दो भेद है एक शुभयोगि दुसरा अशुभ योगि जिसमे शुभ योगि है वह तो अनारंभी है और जो प्रमादि संयति [illegible] [illegible]

[illegible]

पद मनुष्य शेष २३ दंडक के लेश्या समुच्चय जीव आत्मारंभी परारंभी उभयारंभी है. कृष्ण, निल, कापोत, लेश्यावाले समुच्चय जीव और बावीस बावीस दंडक के जीव सबके सब आरंभी है कारण यह तीनों अशुभ लेश्या है इसीके परिणाम आरंभसे पच नहीं सकते है। तेजो लेश्या समुच्चय जीव और अठारा दंडकोमें है जिस्मे समुच्चय जीव और मनुष्यके दंडकमें जो संयति अप्रमादि और सुभयोगवाले तो अनारंभी है शेष सब आरंभी है एवं पद्म लेश्या तथा शुक्ल लेश्या भी समझना परन्तु यह समुच्चय जीव वैमानिक देव और संज्ञी मनुष्य तीर्यचमें ही है जिस्मे संयति अप्रमादिपणा मनुष्यमें ही होते है वह अनारंभी है शेष जीव तो आत्मारंभी परारंभी उभय आरंभी होते है वह अनारंभी नहीं है।

आत्मारंभी स्वयं आप आरंभ करे। परारंभी दुसरोंसे आरंभ करावे उभयारंभी आप स्वयं करे तथा दुसरोंसे भी आरंभ करावे इति

सेवंभंते सेवंभंते-तमेवसच्चम्

थोकडा नम्बर २६.

अल्पाबहुत्व

श्री भगवती [illegible] पर्याप्ता अपर्याप्ता. सूक्ष्म और बादर इन आठ बोलोंके [illegible] पर्याप्ता पदं १६ ।

[illegible]

र्यासा के अलद्धिये असंख्यात गुणे (८) पर्यासा के अलद्धिये विशेष. (९) पर्यासाके लद्धिया संख्यात गुणे (१०) अपर्यासाके अलद्धिये विशेष. (११) सूक्ष्मके लद्धिये विशेष. (१२) बादरके अलद्धिये वि० (१३) स्थावरके लद्धिये विशे० (१४) त्रसके अलद्धिये वि० (१५) असंज्ञीके लद्धिये वि० (१६) संज्ञीके अलद्धिये विशेषाधिक। लद्धिया जैसे संज्ञीके लद्धिये. कहनेसे संज्ञी जीव और संज्ञीके अलद्धिये कहनेसे असंज्ञी जीव और सिद्धोंके जीव गीने जाते है इसी माफीक जीसके लद्धिये कहनेसे यह जीव है और जीसको अलद्धिया कहनेसे उन जीवोंके सिवाय शेष जीव अलद्धिये में गीने जाते है इति।

चौदाभेद जीवोंकी अल्पाबहुत्व. (१) सर्व स्तोक संज्ञी पांचेन्द्रियका अपर्यासा. २) संज्ञी पांचेन्द्रियके पर्यासा संख्यात-गुणे. (३) चौरिन्द्रिय पर्यासा संख्या. गु० (४) असंज्ञी पांचेन्द्रिय पर्यासा विशेषः ५) बेइन्द्रियके पर्यासा विशे० (६) तेइन्द्रियके पर्यासा विशेषः ७) असंज्ञी पांचेन्द्रिय के अपर्यासा असंख्यात गुणे (८) चौरिन्द्रियके अपर्यासा विशे० (९) तेइन्द्रियके अपर्यासा विशे० १०) बेइन्द्रियके अपर्यासा विशे. ११) बादर एकेन्द्रियके पर्यासा अनंत गुणे (१२) बादर एकेन्द्रियके अपर्यासा असंख्यात गुणे १३) सूक्ष्म एकेन्द्रियके अपर्यासा असंख्यात गुणे १४ सूक्ष्म एकेन्द्रियके पर्यासा संख्यातगुणे इति

आठ बोलोंकि अल्पाबहुत्व १ सर्वस्तोक अभव्यजीव (२ प्रतिपाति सम्यग्दृष्टि अनंतगुणे ३) सिद्धभगवान् अनंतगुणे ४) संसारीजीव अनंतगुणे ५) सर्व पुद्गल अनंतगुणे (६ सर्व काल अनंतगुणे ७ आकाशप्रदेश अनंतगुणे ८ केवलज्ञान केवलदर्शनके पर्यव अनंत गुणे।

स्तोक परत्तसंसारी जीव. शुक्लपक्षी जीव अनंतगुणे, कृष्ण

पक्षोमीय अनंतगुणे, अपरत्त संसारी जीव विशेषः । पुनः । स्तोक अपर्याप्ता जीव सुत्ताजीव संख्यातगुणे जागृतजीव संख्यातगुणे पर्याप्ताजीव विशेषः ॥ पुनः ॥ स्तोक समोह वा मरणवाले जीव. इन्द्रिय वहुता संख्यात गुणे नोइन्द्रिय वहुते विशेषः असमोइये जीव विशेषाः । पुनः । स्तोक बादरजीव, अनाहारी जीव संख्यात गुणे, सूक्ष्मजीव संख्यातगुणे आहारीक जीव विशेष ॥ पुनः ॥ स्तोक बादरके लद्धिये, सूक्ष्मके अलद्धिये विशेषः सूक्ष्मके लद्धिये असंख्यातगुणे बादरके अलद्धिये विशेषः इति ।



थोकडा नम्बर ३०.

स्तोक अभव्यके लद्धिये (२) शुक्लपक्षके लद्धिये अनंत गुणे (३) भव्यके अलद्धिये अनंतगुणे (४) भव्यके लद्धिये अनंत गुणे (५) कृष्णपक्षीके लद्धिये विशेषः (६) कृष्णपक्षीके अलद्धिये अनंतगुणे (७) शुक्लपक्षीके अलद्धिये विशेषः (८) अभव्य के अलद्धिये विशेषः ॥ पुनः ॥ स्तोक मनुष्यके लद्धिये (२) नारकीके लद्धिये असंख्यातगुणे (३) देवतोके लद्धिये असं० गु० (४) तीर्थंकके अलद्धिये विशेष (५) तीर्थंकके लद्धिये अनंतगुणे (६) देव अलद्धिये वि० ७ नरक अलद्धिये वि० मनुष्य अलद्धिये विशेषः ॥

स्तोक मिश्रदृष्टि [२] पुरुषवेद असंख्यात गुणे ३ स्त्रि-वेद संख्यात गुणे (४ अवधिदर्शन विशेष ५ चक्षुदर्शन सं० गु ६) केवलदर्शन अनंतगुणे ७ सम्यग्दृष्टि विशेष (८ नपुंसकवेद अनंतगुणे ९ मिथ्यादृष्टि वि० १०) अच क्षुदर्शन विशेष पुन । स्तोक अपर्याप्तजीव २ नामहोजीव अनंतगुणे ३ नामनयोगोजीव विशेष ४ नागअसंज्ञीव विशेष

स्तोक मनः बलप्राण [२] वचन बलप्राण असंख्यातगुणे [३] श्रोत्रेन्द्रिय बलप्राण असंख्यात गुणे [४] चक्षुइन्द्रिय बलप्राण विशेषः [५] घ्राणेन्द्रिय बलप्राण विशेषः वि० [६] रसेन्द्रिय बलप्राण वि० (७) स्पर्शेन्द्रिय बलप्राण अनंतगुणे [८] काय बल प्राण विशेषः [९] श्वासोश्वास बलप्राण वि० [१०] आयुष्य बलप्राण विशेषः ॥ पुनः ॥ स्तोक मनः पर्याप्तिके जीव [२] भाषापर्याप्तिके जीव असंख्यात गुणे [३ श्वासोश्वास पर्याप्ति के जीव अनंतगुणे [४] इन्द्रिय पर्याप्ति० वि० [५] शरीर पर्याप्तिके जीव वि० [६] आहार पर्याप्तिके जीव विशेषः ॥पुनः॥ स्तोक मनुष्य [२] नारकी असंख्यात गुणे [३] देवता असंख्यातगुणे [४] पुरुषवेद विशेषः [५] स्त्रियेद संख्यातगुणे [६] नपुंसकवेद अनंत गुणे [७] तीर्यच विशेषाधिक ॥ इति

थोकडा नम्बर ३१.

स्तोक मनुष्यणी [२] मनुष्य असंख्यात गुणे [३] नैरिये असंख्यातगुणे [४] तीर्यचणी असंख्यातगुणी [५] देवता संख्यात गुणे [६] देवी संख्यातगुणी [७] पांचेन्द्रिय संख्यात गुणे [८] चौरिन्द्रिय वि० [९] तेइन्द्रिय वि० [१०] बेइन्द्रिय वि० [११] त्रसकाय वि० [१२] तेउकाय असंख्यात गुणे [१३] पृथ्वी काय वि० [१४] अपकाय वि० [१५] वायुकाय वि० [१६] सिद्ध असंख्यात अनंतगुण [१७] अनन्द्रिय विशेष [१८] वनास्पति अनंतगुण [१९] एकन्द्रिय वि [२०] तीर्यच विशेष [२१] सेन्द्रिय वि० [२२] सकाया वि [२३] समुचय जीव विशेषः

स्तोक मनुष्य [२] नारकी असंख्यात गुणे [३] देवता असंख्यात गुणे [४] पुरुषवेद विशेष [५] स्त्रियासंख्यातगुणी

[६] पांचेन्द्रिय वि० [७] चोरिन्द्रिय वि० [८] तेइन्द्रिय वि० [९] बेइन्द्रिय वि० [१०] त्रसकाय वि० [११] तेउकाय असंख्यात गुणे [१२] पृथ्वीकाय वि० [१३] अपकाय वि० [१४] वायुकाय विशेषः [१५] वनास्पतिकाय अनंतगुणे [१६] एकेन्द्रिय विशेषः [१७] नपुंसक जीव विशेषः [१८] तीर्यचजीव विशेष।

सर्व स्तोक पांचेन्द्रियके लब्धिये [२] चोरिन्द्रियके लब्धिये विशेषः [३] तेइन्द्रियके लब्धिये वि० [४] बेइन्द्रियके लब्धिये वि० [५] तेउकायके लब्धिये असं० गु० [६] पृथ्वीकायके लब्धिये वि० [७] अपकायके लब्धिये वि० [८] वायुकायके लब्धिये वि० [९] अभव्यके लब्धिये अनंतगुणे [१०] परत समारी जीवोंके लब्धिये अनंतगुणे [११] शुक्लपक्षी विशेषः [१२-१३] सिद्धोंके लब्धिये और संसारके अलब्धिये आपसमें तुल्य और अनंतगुणे [१४] वनास्पतिकायके अलब्धिये विशेषः [१५] भव्य जीवोंके अलब्धिये विशेषः [१६] परतजीवोंके अलब्धिये वि० [१७] कृष्णपक्षीके अलब्धिये वि० [१८] वनास्पतिके लब्धिये अनंतगुणे [१९] कृष्णपक्षीके लब्धिये वि० [२०] अपरतजीवोंके लब्धिये वि० [२१] भव्यजीवोंके लब्धिये वि० [२२-२३] संसारी जीवोंके लब्धिये और सिद्धोंके अलब्धिये आपसमें तुल्य वि० [२४] शुक्लपक्षीके अलब्धिये वि० [२५] परतजीवोंके अलब्धिये वि० [२६] अभव्यजीवोंके अलब्धिये वि० [२७] वायुकायके अलब्धिया वि० [२८] अपकायके अलब्धिये वि० [२९] पृथ्वीकायके अलब्धिये वि० [३०] तेउकायके अलब्धिये वि० [३१] बेइन्द्रियके अलब्धिये वि० [३२] तेइन्द्रियके अलब्धिये वि० [३३] चोरिन्द्रियके अलब्धिये वि० [३४] पांचेन्द्रियके अलब्धिये विशेषाधिकार इति।

इति शीघ्रबोध भाग तीजो समाप्तम्

श्री स्वयंप्रभसूरीश्वराय नमः

शीघ्रबोध भाग ४ था.

थोकडा नम्बर ३२.

सूत्र श्री उत्तराध्ययनजी अध्ययन २४.

(अष्ट प्रवचन)

ईर्यासमिति, भाषासमिति, एषणासमिति, आदान भंडमत्तोषगणसमिति, उच्चार पासवण जल्ल खेल मेल परिठावणिया समिति, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति इन पांच समिति तीन गुप्तिके अन्दर पांच समिति अपवाद है और तीन गुप्ति उत्सर्ग है जैसे मुनिको उत्सर्ग मार्गमें गमनागमन करना मना है परन्तु अपवाद मार्गमें आहार, निहार, विहार और जिनमन्दिर दर्शन करनेको जाना हो तो इर्यासमितिपूर्वक जाये उत्सर्ग मार्गमें मुनिको मौन रखना परन्तु अपवाद मार्गमें याचना पूछना, आज्ञा लेना और प्रश्नादि पूछनेका उत्तर देना इन कारणों से बोलना पडे तो भाषा समिति संयुक्त बोले उत्सर्ग मार्गमें मुनिको आहार करना ही नहीं अपवादमें संयम यात्रा शरीरका निर्वाहके लिये आहार करना पडे तो एषणासमिति निर्दोष आहार लाके करे, उत्सर्ग मार्गमें मुनिको निरुपाधि रहना अपवादमें लज्जा तथा शीतादि सहन न हो तो मर्यादा माफिक ओपधि रखे, उत्सर्गमें

मल मात्र करे नही, आहार पाणीके अभाव परठे नही; अपवाद मार्गमें निर्वद्य भूमिपर विधिपूर्वक परठे ।

(१) इर्यासमितिका च्यार भेद है—आलम्बन, काल, मार्ग, यत्ना. जिस्में आलम्बन—ज्ञान, दर्शन, चारित्र. काल—अहोरात्री. मार्ग—कुमार्ग त्याग और सुमार्ग प्रवृत्ति. यत्नाका च्यार भेद है—द्रव्य, क्षेत्र, काल भाव. द्रव्यसे इर्यासमिति—छे कायाके जीवोंकि यत्ना करते हुवे गमन करे. क्षेत्रसे—च्यार हाथ परिमाण भूमि देखके गमनागमन करे. कालसे दिनको देखके रात्रीमें पुंजके चाले. भावसे—गमनागमन करते हुवे वाचना, पुच्छना, परावर्तना, अनुपेक्षा, धर्मकथा न करे. शब्द, रूप गन्ध, रस, स्पर्शपर उपयोग न रखते हुवे इर्यासमिति पर ही उपयोग रखे ।

(२) भाषासमितिके च्यार भेद—द्रव्य क्षेत्र काल, भाव. द्रव्यसे—कर्कशकारी, कठोरकारी, छेदकारी भेदकारी मर्मकारी, सावद्य पापकारी मृषावाद और निश्चयकारी भाषा न बोले क्षेत्रसे—गमनागमन करते समय रहस्तेमें न बोले कालसे-एक पहर रात्री जानेके बाद सूर्योदय हो वहांतक उच्चस्वरसे नहीं बोले. भावसे—राग द्वेष संयुक्त भाषा नहीं बोले ।

(३) एषणासमितिके च्यार भेद—द्रव्य क्षेत्र, काल भाव द्रव्यसे मुनि निर्दोष आहार पाणी वस्त्र पात्र, मकानादिका ग्रहन करे कारण निर्दोष आहारादि भोगवनेमें चित्तवृत्ति निर्मल रहती है इसवास्ते प्रासुक आहार देनेवाले और लेनेवाले दुष्कर बतलाया है और बिना कारण सदोष आहारादि देनेवाले वा लेनेवालेको अल्प आयुष्यका बंध बतलाया है औ ठाणायांग सूत्र स्थान ३ में तथा भगवती सूत्र शतक ५ उ० ६ में दोषित आहार देनेसे स्वल्प आयुष्य तथा अशुभ दीर्घायुष्य बन्धता है और भगवती सूत्र शतक १ उ० ९ में आधाकर्मी आहार करनेवालेका

मानाढ कर्मोका-बन्ध अनंत संसारी और छे कायाकी अनुकम्पा रहित बतलाये है और निर्दोषाहार करनेवालेको शीघ्र संसारसे पार होना बतलाया है। निर्दोषाहार ग्रहन करनेवाले मुनियोंको निम्नलिखित दोषोंपर पूर्ण ध्यान रखना चाहिये।

(१) आधाकर्मी दोष—जिनोंके पर्याय नाम च्यार है (१) आधाकर्मी-साधुके निमत्त छे काया जीवोंकि हिंस्या कर अन्नादि तैयार करे (२) अधोकर्मी-ऐसा दोषिताहार करनेवाले आत्मोंको अधोगतिमे जाते है (३) आत्मकर्मी-आत्माके गुण ज्ञान दर्शन चारित्र है उनोंके उपर आच्छादन करनेवाले है (४) आत्मघ्नकर्मी आत्मप्रदेशोंके साथ चीकट कर्मोका बन्ध कर मारिक करनेवाले है। आधाकर्मी आहार लेनेसे आठ जीव प्रायश्चितके भागी होते है यथा आधाकर्मी आहार करनेवाला करानेवाला लेनेवाला, देनेवाला, दीलानेवाला, अनुमोदन करनेवाला, खानेवाला, और आलोचना नही करनेवाला, इसवास्ते मुनियों सदैव निर्दोषाहार ही करना चाहिये

[illegible]

मुनिश्रीको सुखसाता हुवा और अवलम्बन प्रधानोंने राजाको सुखाव हुवा. दोनोंके पापोंका अंश निकल जाने से राजा राज्यमें और मुनि अपने योगमें रमणता करने लगे.

(१) उद्देशीक दोष—एक साधुके लिये किसीने आहार बनाया है वह साधु गवेषणा करने पर उसे मालुम हुवा कि यह आहार मेरे ही लिये बना है उसे आधाकर्मी समझके ग्रहन नहीं किया अगर वह आहार कोइ दुसरा साधु ग्रहन न करे तो उनोंके लिये उद्देशीक दोष है.

(३) पूतिकर्म दोष—निर्दोषाहारके अन्दर एक सीत मात्र भी आधाकर्मीके सीत गइ हो तथा सहस्र घरोंके अन्तर भी आधाकर्मीका लेप मात्र भी लगा हुवा शुद्धाहारभी ग्रहन करनेसे पूतिकर्म दोष लगते है. श्री सूत्रकृतांग अध्ययन पहले उद्देशे तीजे पूतिकर्माहार भोगनेवालोंको द्रव्ये साधु और भावे गृहस्थ पक्ष का सेवन करनेवाला कहा है।

(४) मिश्रदोष—कुच्छ गृहस्थोंका कुच्छ साधुवोंका मिश्र के बनाया आहार लेनेसे मिश्रदोष लगता है

(५) ठवणा दोष [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[११] अभिहड दोष—अन्यस्थानसे सन्मुख लाके देवे.

[१२] भिन्नेदोष—छान्दो कोमाडादि खुलवाके देवे.

[१३] मालोहड दोष—उपरसे जो मुश्किलसे उतारी जावे एसे स्थानसे उतारके दी जावे।

[१४] अच्छीजे दोष—निर्बल जनोंसे सबल जबरदस्ति बलात्कारे दीरावे उसे लेना.

[१५] अणिसिट्ठे दोष—दो जनोंके विभागमें हो एकको देने का भाव हो एकके भाव न हो वह वस्तु लेवे तो भी दोषित है.

[१६] अज्झोयर दोष—साधुके निमित्त कमाहार बनाते समय ज्यादा करदे वह आहार लेना।

इन १६ दोषोंको उद्गमन दोष कहते है यह दोष जो गृहस्थ भद्रीक साधु आचारसे अज्ञात और भक्तिके नामसे दोष लगाते है.

[१७] धाईदोष— धात्रीपना याने गृहस्थ लोगोंके बालबच्चों को रमाना, खिलाना इनोंसे आहार लेना।

[१८] दूतदोष—दूतिपना इधर उधर के समाचार कहके आहार लेना

[१९] निमित्तदोष— भूत भविष्यका निमित्त कहके आ

[२०] आजीविकदोष— अपनि जातिकुल गोत्र बतलाके [illegible]

[२१] वनिमगदोष— रांकवि मांगित याचना कर आ०

[२२] तिगिच्छदोष— औषधि उपचार बतलाके आ०

[२३] क्रोधदोष— क्रोध कर भय बतलाके आहार लेना

[२४] मानदोष— मान अहंकार कर आहार लेना

[२५] मायादोष— मायावृत्ति कर आहार लेना

[२६] लोभदोष— लालच लोलुपता से आहार लेना

[२७] पूर्वपश्चात्संस्तव दोष— आहार ग्रहण करनेके पहले व पश्चात दातारके गुण वर्णन करके आहार लेना

[२८] विद्यादोष—गृहस्थोंको विद्या बतलाके अर्थात् रोहिणि आदि देवीयोंको साधन करनेकी विधि ॥

[२९] मंत्रदोष—यंत्र मंत्र सीखाना अर्थात् हरिणगमेषी आदि देवोंका साधन करवाना ॥

[३०] चूर्णदोष—एक पदार्थके साथ दुसरा पदार्थ मीलाके एक तीसरी वस्तु साफ करना सीखाके ॥

[३१] जोगदोष—जैसे वशीकरणादि बताके आ० ॥

[३२] मूलकर्मदोष—गर्भपातादि औषधीयों उपायों बताके आहार पाणी ग्रहन करना दोष है.

[नोट] यह सोलह दोष मुनियोंके कारण से लगते हैं साधु साध्वियोंको अपने चारित्र विशुद्धि लिये इन दोषोंको टालना चाहिये इन १६ दोषोंको उत्पात दोष कहते हैं।

३३ शंकित दोष—आहार ग्रहन समय मुनिको शंका हो [illegible] कि यह आहार शुद्ध है या अशुद्ध है [illegible] हारको ग्रहन करना [illegible] दोष है

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

यह थटोरी कुटछी लीन पडी रहने से जीवोंकि विराधना होती है और धोने से पाणीके जीवोंकी विराधना हो ..

[४] दायगोदोष—दातार अंगोपांगसे हिन हो, अंधा हो जिनसे गमनागमनमें जीव विराधना होती हो ..

[४१] लीतुदोष—तत्कालका लिपा हुवा आंगण हो .

[४२] छंडियेदोष घृतादिके छांटे दीपके पडते देवे ..

[स] यह दश दोष मुनि गृहस्थो दोनोंके प्रयोग से लगते है वास्ते दोनोंको ख्याल रखना चाहिये। एवं ४२ दोष श्री आचारांग सूयगडायांग तथा निशिथसूत्रोंमें और विशेष खुलासा पिंडनिर्युक्तिमें है। प्रसंगोपात अन्य सूत्रों से मुनि भिक्षाके दोष लिखे जाते है।

श्री आवश्यकसूत्रमें १ गृहस्थोंके घरका कमाड दरवाजा खुलाके तथा कुच्छ खुला हो उनोंके अन्दर जा के भिक्षा लेना मुनियोंके लिये दोषित है २ कीतनेक देशोंमें पहले उतरी हुइ रोटी तथा छाट थोंच यावत् अग्रभागका गौ कुत्तादिकों डालते है वह लेना मुनिको दोषित है [३] देव देवीके बलीका आहार [illegible] [४] [illegible] हुइ वस्तु लेना दोष है [५] [illegible] गृहस्थोंने मरम[illegible] [illegible] करने समय विचार [illegible] आहार [illegible] दोषित है [illegible] प्रायश्चित है

[illegible]

[illegible] अपने मकान मसध[illegible] [illegible]] [illegible] वाले बिना [illegible] आहार [illegible] प्रकारके है [illegible] ब्रह्मचर्य न पडना हो [illegible]

जीव रक्षा निमित्त० तपश्चर्या निमित्त० और अनशन करने निमित्त इन छे कारण से आहारका त्याग कर देना चाहिये। और छे कारण से आहार करना कहा है क्षुधा वेदना सहन नहीं हो सके, आचार्यादिकि व्यावच्च करना हो, इर्या सोधनेके लिये, संयम यात्रा निर्वाहानेको, प्राणभूत जीव सत्वकि रक्षा निमित्त, धर्मध्यान करनेके लिये इन छे कारणों से मुनि आहार कर सके है।

श्री दशवैकालिक सूत्रमें—

[१] जिस दरवाजा छोटा हो वहां गोचरी जानेमें दोष है या सब जिसके तले जावे याचा जिनके दूर जानेका संभव है।

[२] अंधेरा अन्धकार पडता हो वहां जानेमें दोष है.

[३] मुलकोठाक तर प्राञ्जर बकरे बकरी [४] बच्चे बच्ची [५] श्वान कुत्ता [६] जातीके बालक बैठे हो उनोंको उलंघके जाना दोष है। कारण वह जीवक-भय पावे इत्यादि [७] औरभी चार प्राणी हो उनोंको उलंघके जानेमे दोष है कारण वहां छाति नहीं अन्तर्मधिकी भाव हानिका प्रसंग आ जाते है।

[८] [illegible] वहां मुनि आहार [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

मयका आहार (शुभाशुभ निमित्त) या राजाके यहांका आहारमें पंडालोगोंके भाग होते हैं वास्ते अन्तरायका कारण होनेसे दोष है।

[१४] शय्यातर—मकानके दाताका आहार लेनेसे दोष.

[१५] नित्यपिंड—नित्य एक ही घरका आहार लेना दोष

[१६] पृथ्व्यादिके संघट्टे से आहार लेना दोष है।

[१७] इच्छा पुरण करनेवाली दानशालाका आहार लेना,,

[१८] कम खानेमें आवे ज्यादा परठना पडे एसा आहार,,

[१९] आहार ग्रहन करनेके पहले हस्तादि धोके तथा आहार ग्रहन करनेके बाद सचित्त पाणी आदिसे हाथ धोके एसा आहार लेना दोष है।

[२०] प्रतिनिषेध कुल स्वल्पकालके लिये सुतकादि जन्म मरण वाले कुलमें तथा जावजीव चंडालादि कुलमें गोचरी जाना मना है अगर जावे तो दोष है।

[२१] जाति कुलमें ओसवालोंका वास्ते चलन अच्छा न हो एसे अप्रतितकारी कुलमें मुनि गोचरी जावे तो दोष है।

[२२] गृहस्थ अपने घरमें आनेके लिये मना करदो हो फिर [illegible] कुलमें गोचरी जाना दोष है।

[२३] [illegible] दोष है [illegible]

[२४] [illegible]

[२५] [illegible] दोष है

[२६] [illegible] अमुक [illegible] दोष है

(५) यहां बहुत मनुष्योंके लिये भोजन किया हो तथा स्वादि सम्बन्धी जीमणवार हो वहां आहार ले तो दोष है।

(६) जहांपर बहुतसे भिक्षुक भोजनार्थी एकत्र हुवे हो उस मार्गमें जा के आहार ले तो दोष [अविश्वास हो]

(७) वृद्धियुक्त निमन्त्रणादिसे निकालके आहार देवे तो दोष।

(८) उष्णादि आहारका शुक ले आहार ले तो भी दोष है।

(९) वीजणादि से शीतल कर आहार ले तो भी दोष है।

श्री भगवतीसूत्रमें—

१ लाये हुवे आहारका प्रमाण बतानेके लिये मूर्छा करके [illegible] [illegible] भोजन भी [illegible] आना हवे [illegible] [illegible] है।

२ [illegible] आहार [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कारण।

३ [illegible] प्रमाण आहार [illegible] बुद्धि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कारण

४ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कारण [illegible] [illegible] [illegible] कारण है।

५ [illegible]

६ [illegible]

[illegible]

(१०) ग्लानोंके लिये किया आहार लेना दोष।

(११) बादलोंमें अनाथोंके लिये बनाया आहार लेना दोष.

(१२) गृहस्थ नैमंत्रिक तौर कहे कि हे स्वामिन आज हमारे घरे गोचरीको पधारो इस मार्फत जाने तो दोष।

श्री प्रश्नव्याकरण सूत्रमें—

(१) मुनिके लिये स्थानान्तर रखना करके जैसे नुकती दानोंका लड्डू बना देवे इत्यादि तो दोष है।

(२) पर्याय बदलके-जैसे दहीका मट्ठा करना बनाके देवे

(३) गृहस्थोंके यहां अपने हाथोंसे आहार लेवे तो दोष.

(४) मुनिके लिये अन्दर आरडादि से आहार लावे देवे तो दोष।

(५) मधुर मधुर वचन बोलके आहारादिकि याचना करे.

श्री निशिथसूत्रमें—

१ गृहस्थोंके यहां जाके पूछे कि इस बर्तनमें क्या है? इसमें क्या है ऐसा याचना करने से दोष है।

(२) अन्यतीर्थि अनाथ भजनोंके लिये बना हुवा से याचना कर मांगना से आहार लेना दोष है।

(३) अन्यतीर्थी या भिक्षाचरोंसे लाया हुआ आहार है उनसे याचना कर आहार लेना दोष है

(४) पासत्थादि आचारहीनोंसे आहार लेना दोष।

(५) [illegible] जैन मुनियोंकि [illegible] आहार लेना दोष।

(६) शय्यातरका साथ लेके जाके [illegible] दलालीसे अशनादिकि याचना करना दोष है

श्री दशाश्रुतस्कन्ध सूत्रमें—

(१) साधुओंके लिये बनाया हुआ आहार मुनि लेवे तो दोष है कारण साधुके लिये [illegible] लेवे।

(२) साधर्मीके लिये बनाया आहार लेवे तो दोष।

श्री बृहत्कल्पसूत्रमें

(१) अशन पान, खादिम, स्वादिम यह चार प्रकारके आहार रात्रीमें बासी रखके भोगवे तो दोष।

[illegible] १३ ८ १२ [illegible] लिखे दोष [illegible] और १०७ दोष [illegible] है. [illegible]

(२) [illegible]

(३) [illegible]

(४) [illegible]

[illegible]

[illegible]

धिक किया हुवा, शंकावाला, मूल्य लाया हुवा, सचित्त पाणीकी बुन्द जो शीतल आहारमें गीर गइ है यह इति । एषणा समिति ।

(४) आदान मत्त भंडोपगरणीय समिति के च्यार भेद है द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव.

द्रव्यसे संयम यात्रा निर्वाहनेको वस्त्रपात्रादि भंडोमत्तोपगरण रखा जाते है उन्होंकि संख्या ।

(१) रजोहरण-जीवरक्षानिमित्त तथा जैन मुनियोंका चन्ह इनको शास्त्रकारोने धर्मध्वज कहा है यह आठ अंगुलकि दसीयों चौवीस अंगुल कि दंडी कुल ३२ अंगुलका रजोहरण होनाचाहिये।

(२) मुखवस्त्रिका-मक्खी मच्छरादि त्रस जीवों कि बोलते समय विराधना न हो या मुखादिक पर थुक से अशातना न हो. बोलते समय मुंह आगे रखनेको एकविलस च्यार अंगुल समचोरस होना चाहिये ।

(३) चोलपट्टा-कटीबन्ध पांच हाथका होता है ।

(४) चद्दर-मुनियोंको तीन साध्वीयोको च्यार ।

(५) कम्बली-जीवरक्षानिमित्त, गमनागमन समय शरीर आच्छादन करनेको चतुर्मासमें छेघडी शीतकालमें च्यार घडी. उष्णकालमें दो घडी पाछला दिनसे उक्त काल दिन उगणे के बाद कम्बली रखना चाहिये ।

(६) दंडा मुनियोंको अपने कान प्रमाणे दंडा संयम या शरीर रक्षणनिमित्त रखना चाहिये ।

(७) पात्र काष्ठ तुंबेका मट्टीके आहार पाणी लानेके लिये. वह मिलमय चाहे हो तीन विस्तार च्यारांगुलसे परधीवाले ।

झोली पात्र बन्ध जानेपर बाद गांठसे च्यारो पले च्यारांगुल ज्यादा रहना चाहिये आहार लेनेका ।

(८) गुच्छा उनपर गुच्छा पात्रोपर उपर नीचे देके जीवरक्षानिमित्त पात्रा बान्धनेको रख जाते है ।

(१०) रसनाका पाने मध्यमें समय [illegible] जाते है शीघ्रता मना पांचोंकी रमा निमित्त।

(११) पडिले-अशाह हाथमें मेघे, अपना हाथमें [illegible] आई पर [illegible] ३ ४-५ पडिले गोचरी जाते समय [illegible] हाथ जाते है शीघ्रता निमित्त।

(१२) [illegible] पाने पुंजनेके लिये [illegible] शीघ्रता निमित्त।

(१३) पेशाब आहार करने समय इनका [illegible] [illegible] जाते है जिनके आहार [illegible] शीघ्रताके निमित्त रखते है।

(१४) [illegible] इनका [illegible] पात्रोंमें [illegible] समय निकाला जाता है।

[illegible] और [illegible] पात्रोंका शीघ्रता निमित्त [illegible] है इन [illegible] दो उपकरण भी है—

ज्ञाननिमित्त [illegible] आदि आदि।

दर्शननिमित्त [illegible] आदि।

चारित्रनिमित्त [illegible] आदि।

[illegible]

३ उतावला-आतुरतासे प्रतिलेखन न करे ।

४ वस्त्रके आदि अन्त मध्य प्रतिलेखन करे ।

इन चार प्रकारकी प्रतिलेखनको दृष्टिप्रतिलेखन कहते हैं ।

५ वस्त्रपर जीव यदि नजर हो तो उसे छोडाना [illegible] ।

६ [illegible] न निकले तो हथेलीपरसे पुंजे ।

७ वस्त्र या शरीरको हिलावे नहीं ।

८ वस्त्रके हाथ [illegible] नहीं [illegible] न [illegible] ।

९ [illegible] भी वस्त्र [illegible] प्रतिलेखन धीरा न करे ।

१० ऊंचा नीचा तीरछा भित दिवारेसे अटकावे नहीं ।

११ प्रतिलेखन करते जीवादि दृष्टिगोचर हो तो यत्नापूर्वक करे ।

१२ वस्त्रादिको झटका पटका न करे ।

इनको प्रशस्त प्रतिलेखन कहते हैं अन्य अप्रशस्त कहते हैं, जल्दी जल्दी करे, वस्त्रको मसले, उंचा नीचा अटकावे, जीव [illegible] वस्त्रको झटकावे, बाद इधर उधर नजर प्रतिलेखन किया हुआ बिना किया हुआ शामिल करे, [illegible] प्रतिलेखन करे, [illegible]

नीपजी करे, उपयोगशुन्य तो सर्व १६ प्रकारकी प्रतिलेखन हुइ इसमें न्युन भी न करे, अधिक भी न करे, विपरीत न करे, जिसके विकल्प आठ है।

नं.	ज्यादा.	कम.	विपरीत.	नं.	ज्यादा.	कम.	विपरीत.
१	नहीं	नहीं	नहीं	५	करे	नहीं	नहीं
२	नहीं	नहीं	करे	६	करे	नहीं	करे
३	नहीं	करे	नहीं	७	करे	करे	नहीं
४	नहीं	करे	करे	८	करे	करे	करे

इन आठ भांगोंमें प्रथम भांगा विशुद्ध है, शेष भांगा अशुद्ध है. प्रतिलेखन करते समय परस्पर बातें न करे, चार प्रकारकी विकथा न करे प्रत्याख्यान न देवे न करावे, [illegible] [illegible] [illegible] न करे [illegible] [illegible] विराधक होते है।

(४) [illegible]

[illegible]

[illegible]

पाणाईवायाओ वेरमणं, सव्वाओ मृषाओ वायाओ वेरमणं, सव्वाओ अदीन्नादानाओ वेरमणं, सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं, सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं।

(६) छे काय—पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय। छ लेश्या—कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या, तेजसलेश्या पद्मलेश्या, शुक्ललेश्या।

(७) सात भय—आलोक भय, परलोक भय, आदान भय, अकस्मात भय, मरण भय, अपयश भय, आजीवका भय।

(८) आठ मद—जातीमद, कुलमद, बलमद, रूपमद, तप मद, सूत्रमद, लाभमद, ऐश्वर्यमद।

(९) नौ ब्रह्मचर्यगुप्ति—स्त्री पशु नपुंसक सहीत उपाश्रयमें न रहे। यथा बिल्ली और मूषकका दृष्टांत १ स्त्रियोंकी कथा वारता न करे। यथा नींबूकी खटाईका दृष्टांत २ स्त्री जिस आसनपर बैठी हो उस आसनपर दो घडीसे पहिले न बैठे। अगर बैठे तो तपा हुवे जमीन पर ठंडे हुवे घृतका दृष्टांत। ३ स्त्रीके अंगोपांग इन्द्रिय सराग न देखे जैसे कच्ची आंख और सूर्यका दृष्टांत ४ [illegible] आदिके अन्तरसे [illegible]

[illegible]

३) कायगुप्तिका च्यार भेद. द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव. द्रव्यसे कायाको हलावे नहीं, मैल उतारे नहीं, खुज खुजे नहीं, आदि शरीरकी सुश्रुषा न करे. क्षेत्रसे सर्वत्र लोकमें. कालसे यावज्जीव तक. भावसे सावद्य कायायोगसे न प्रवर्तावे. इति तीन गुप्ति

सेवं भंते सेवं भंते—तमेव सच्चम्.

थोकडा नम्बर ३३

(३९ बोलोंका संग्रह)

१) [illegible]

२) [illegible]

३) [illegible]

४) [illegible]

[illegible]

पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वाओ मुसावाओ वेरमणं, सव्वाओ अदीन्नादानाओ वेरमणं, सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं, सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं।

(६) छे काय—पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय। छ लेश्या—कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या, तेजसलेश्या पद्मलेश्या, शुक्ललेश्या।

७ सात भय—आलोक भय, परलोक भय, आदान भय, अकस्मात भय, मरण भय, अपयश भय, आजीविका भय।

८ आठ मद—ज्ञातीमद, कुलमद, बलमद, रूपमद, तप मद, सुत्रमद, लाभमद, ऐश्वर्यमद।

९ नौ ब्रह्मचर्यगुप्ति—स्त्री पशु नपुंसक सहीत उपाश्रयमें न रहे। यथा बिल्ली और मुरगेका दृष्टांत १ स्त्रियोंकी कथा वारता न करे। यथा नींबूकी खटाईका दृष्टांत २ स्त्री जिस आसनपर बैठी हो उस आसनपर दो घडीसे पहिले न बैठे। अगर बैठे तो क्या हुवे अग्नि पर रखे हुवे घृतका दृष्टांत। ३ स्त्रीके अंगोपांग इन्द्रिय वगेरह न देखे जैसे कच्ची आंख और सूर्यका दृष्टांत। ४ [illegible] भीत बाटा कनात आदिके अन्तरसेभी न सुने यथा [illegible] मयूरका दृष्टांत। ५ पूर्व (गृहस्था [illegible] न करे [illegible] पथिक और डोकरी [illegible] सरस आहार न करे। अगर करे [illegible] हुवे [illegible] दृष्टान्त ७ प्रमाणसे अ[illegible] न करे जैसे सेरकी हांडीमे सवासेर पकाना। (८ [illegible] शरीरकी सुश्रूषा विभूषा न करे अगर करे [illegible] दृष्टान्त।

[illegible]

आवली हलकता । मर्थ · माल भांजे०) मेगवे (१० प्रकार संयम पाळे · मते · १७ प्रकारचा तप करे । महंत / रत्नसिद्धिनी आदरे प्रमुख माने , वेदनीये । मरणने पाळे ·

(११) इग्यारा श्रावक प्रतिमा · अतिचार विशेष । दर्शन प्रतिमा व्रतप्रतिमा, सामायिकप्रतिमा, पौषधप्रतिमा, प्रतिमाप्रतिमा ब्रह्मचर्यप्रतिमा, सचित्तप्रतिमा, आरंभप्रतिमा, प्रेष्य प्रतिमा, उद्दिष्टवर्जनप्रतिमा, श्रमणभूतप्रतिमा, जिनदासे श्रीप्रबोध भाग ४ था मे

१२ बारह भिक्षुप्रतिमा कहता. बारह प्रतिमा एक माहिना है आदमी एक मास रहे दाती बीजी कुलमे माम रहे, इसही तीमरे मास रहीता इग्यारेना वा रात्रीनी, बारमी एक रात्रीकि महाप्रतिमा इनका भी अधिकार कहीये श्रीप्रबोध भाग · पूर्व में कहा ,

(१३) तेरह क्रिया अर्थदंडक्रिया अनर्थदंडक्रिया, हिंसादंड अकस्मातदंड दृष्टिविपर्यासक्रिया मृषाक्रिया, अदत्तादानक्रिया आध्यात्मिकक्रिया मानक्रिया मित्रद्वेषक्रिया मायाक्रिया लोभक्रिया ईर्यापथिकक्रिया

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

है और दूसरे श्रुत स्कंधके सात अध्ययन—पुण्डरणीयाध्ययनका• क्रियाका• भाषाका• अनाचारका• आहारप्रज्ञा• आर्द्रकुमारका• उदक पेढालपुत्रका• एवं २३

(२४) चौवीस तीर्थंकर—ऋषभदेवजी, अजीत, संभव, अभिनंदन, सुमती, पद्मप्रभु, सुपार्श्व, चन्द्रप्रभु, सुविधि, शीतल, श्रेयांस, वासुपूज्य विमल, अनन्त, धर्म, शान्ति, कुन्थु, अर, मल्लि, मुनिसुव्रत, नमि, नेमि पार्श्व, वर्धमान• एवं २४ तथा देवता-दश भुवनपति, आठ वाणव्यंतर, पांच ज्योतिषि, एक वैमानिक, एवं २४ देव।

(२५) पांच महाव्रतकी पचवीस भावना (संयमकी पुष्टी) यथा पहिले महाव्रतकी पांच भावना—ईर्याभावना, मनभावना, भाषाभावना, भंडोपगरण यत्नापूर्वक लेने रखनेकि भावना, आहारपानीकी शुद्ध गवेषणा करना भावना ॥ दूसरे महाव्रतकी पांच भावना—द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव देखकर विचार पूर्वक बोले, क्रोधके वस न बोले (क्षमा करे) लोभवस न बोले, सन्तोष रखे भयवस न बोले धैर्य रखे) हास्यवस न बोले मौन रखे ॥ तीसरे महाव्रतकी पांच भावना—विचार कर अवग्रह मकानादिकी आज्ञा ले, आहारपानी आचार्यादिककी आज्ञा लेकर वापरे आज्ञा लेना कालक्षेत्रादिककी आज्ञा ले, साधर्मीका भंडोपगरण वापरे तो रजा लेकर वापरे ग्लानी आदिककी वैयावच्च करे चौथे महाव्रतकी पांच भावना—वारंवार स्त्रीके शृंगारादिककी कथा वार्ता न करे स्त्रीके मनोहर इन्द्रियों को न देखे पहेले किये हुवे काम क्रीडाओंको याद न करे प्रमाण उपरान्त आहारपानी न वापरे स्त्रीपुरुष नपुंसकवाले मकानमें न रहे पांचवे महाव्रतकी पांच भावना—विषयकारी शब्द न

पूरे विनयकारीपन न देवे, विनयकारी शब्द न कहे, विनयकारी मन न चीन्तवे, विनयकारी कार्य न करे.

(३९) [illegible] अनशन, [illegible] अनशन, [illegible] अनशन, कुल मिलाकर २३ अनशन हुवे.

(४०) [illegible] —[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आसक्ति आशा नहीं

(४१) [illegible] —[illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible] नील [illegible] की [illegible] भी [illegible] सेवक [illegible] ॥ [illegible] [illegible] [illegible] तथा [illegible] नीति.

३१) [illegible] गुण ३१ [illegible] [illegible] पांच प्रकृति [illegible] हैं यथा—[illegible]. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] भी प्रकृति [illegible] हैं यथा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्रकृति [illegible] हैं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] प्रकृति [illegible]. [illegible] [illegible] [illegible] प्रकृति—[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्रकृति [illegible] [illegible]. [illegible] [illegible] प्रकृति [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] प्रकृति [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] प्रकृति [illegible] [illegible] ३१ गुण [illegible] हुवे हैं

(३० [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

(३३) गुरुकी तेतीस आशातना—गुरुके आगे शिष्य चले तो आशातना, गुरुकी बराबर चलेतो० गुरूके पीछे स्पर्श करता चलेतो० एवम् तीन, बैठते समय और तीन खडे रहते समय तीन एवं नौ प्रकारसे गुरुकी आशातना होती है गुरूशिष्य एकसाथ स्थंडिल जावे और एक पात्रमें पानी होतो गुरूसे शिष्य पहिले सुचि करे तो. स्थंडिलसे आकर गुरूसे पहिले इरियावही पडिकमेंतो० विदेशसे आयेहुये श्रावकके साथ गुरुसे पहिले शिष्य वार्तालाप करेतो० गुरू कहे कौन सूते हैं और कौन जागते है. तो जागताहुवा शिष्य न बोलेतो० शिष्य गौचरी लाकर गुरूसे आलोचना न ले और छोटेके पास आलोचना करेतो० पहिले छोटेको आहार बताकर फिर गुरूको आहार बतावेतो० पहले छोटे साधुको आमंत्रण करके फिर गुरुको आमंत्रण करेतो० गुरुसे विना पुछे दूसरोंको मनमान्य आहार देतो० गुरुशिष्य एक पात्रमें आहार करे और उसमेंसे शिष्य अच्छा २ आहार करेतो० गुरुके बोलानेपर पीछा उत्तर न देतो० गुरुके बुलानेपर शिष्य आसनपर बैठाहुवा उत्तर देतो० गुरुके बुलानेपर शिष्य कहे क्या कहते हो ऐसा बोलेतो० गुरु कहे यह काम मतकरो शिष्य जबाब दे कि तू कौन कहनेवालाता गुरु कहे इस ग्लानोंकी वैयावच करो तो बहोत लाभ होगा इसपर जबाब दे क्या आपको लाभ नहीं चाहिये ऐसा बोलेतो गुरुको तुकारा तुंकारा दे लापर-वाहसे बोले तो० गुरुको ज्ञानादिका करेतो० गुरु धर्मकथा करे और शिष्य अप्रसन्न होवेतो० गुरु धर्मदेशना देते हो उसवक्त शिष्य कहे यह शब्द ऐसा नहीं ऐसा है तो० गुरु धर्मकथा कहे उस परिषदामें छेदभेद करेतो० जो कथा गुरु परिषदामें कहीहो ऐसी कथाको उनावपरिषदामें शिष्य अच्छीतरहसे वर्णन करेतो० गुरु धर्मकथा कहतेहो और शिष्य कहे गौचरीकी वखत होगई

कालोदधि [illegible] द्वारे नीचे गुरुके आसनपर शिष्य बैठे तो० गुरुके पास या बिछोनेका ठोकर लगाकर क्षमा न मांगे तो० गुरुके आसनपर बैठे तो० एवं तेतीस आशातना अगर शिष्य करें तो वह गुरु आज्ञाका विराधि हो समाधिमें परिभ्रमन करेंगे ।

३० मोहनीयकर्म बांधनेका स्थान--मोहनीयकर्म बंध, [illegible] सुत्ताविलमें रहे० शरीर विराधे० [illegible] [illegible] आज्ञा [illegible] [illegible] आचार्य [illegible] आचार्यामें [illegible] रहे० [illegible] आचार्यामें [illegible] [illegible] आचार्योंमें [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

हेमचन्द्रानुकूल० सम्मानुरूप० प्रस्तुत व्याख्याः परस्पर अवि-रुद्ध० अभिजात० अति स्निग्ध० मधुर० अन्य मर्म रहित० अर्थ धर्मयुक्त० उदार० परनिंदा स्वप्रशंसा रहित० उपगतश्लाघा० अनपनीत० पुनरुक्त रहित० अद्भुत स्वरूप० विलंब रहित० विभ्रमादि दोष रहित विचित्र वचन० आहित विशेष० साकार विशेष० सत्य विशेष० खेद रहित० अव्युच्छेद०

(३६) उत्तराध्ययनसूत्रके ३६ अध्ययन—विनय० परिसह० चउरंगिय० असंखय० अकाम सकाम मरण० खुड्डागनियंठि० एलय० काविल० नमिपव्वज्जा० दुमपत्तय० बहुस्सुय० हरिएस-बल० चित्तसंभू० उसुयार० भिक्खू० बंभचेरसमाहि० पाव-समण संजईज्ज० मियापुत्ती० महानियंठी० समुद्दपालिय० रहनेमी० केसीगोयम० पवयणमाया० जयघोस विजयघोस० सामायारी० खलुंकि० मुक्खमग्गई० समत्त परिक्कमिय० तवमग्ग० चरणविहीय० पमायठाण० अठकम्मपगडी० लेस० अणगारमग्ग जीव जीव विभत्ती इति ।

सेवंभंते सेवंभंते तमेवसच्चम्

--:o:--

थोकडा नम्बर ३८.

श्री भगवतीजीसूत्र श० २५ उ० ६

(नियंठा ३६ द्वार)

पन्नवणा परमाना वेय वद २ राग सराग - कप्प-कल्प - चारित्र म. प्रतिसेवना ६ पडिसेवन हार ज्ञान नहो

[illegible]

मनोगतादि [illegible] कृतानुमात्र [illegible] ३ अंगूठ [illegible] दृष्टिवाद [illegible] अनुमोदना [illegible] कुल [illegible] १२ भांगा।

(२) पच्चक्खाण-निवृत्ता (त्याग) के प्रकार हैं

(१) [illegible] के प्रकार हैं। [illegible]

[illegible]

पदघो घांचते। जैसे शालीके गाइनाकों उपण वायुसे वारीक
झोणे कचरेको उठा दीया परन्तु वडे वडे डांखले रह गये।

(४) कपायकुशील-५ भेद-ज्ञान. दर्शन. चारित्रमें कपाय
करे. कपायकरके लिंग पलटावे. अहासुक्ष्म. (तप करी कपाय
करे। कचरा रहित शाली।

(५) निग्रंथ-५ भेद-प्रथम समय निग्रंथ, (दशमें गु
स्थानकसे, इग्यारवें गु० वारावें गु० वाले प्रथम समयवर्
अप्रथम समय. (दो समयसे ज्यादा हो) चर्मसमय, जिसक
समयका उपस्थापना शेष रहा हो) अचर्मसमय. (जिसको
समयसे ज्यादा वाकी हो) अहासुक्ष्म. (सामान्य प्रकारे
शालीको दल छातु निकालके चावल निकाले हुये।

(६) स्नातक-५ भेद-अच्छवी, (योगनिरोध) अ
(अतिचारादि सवला दोष रहित) अकर्म्मे. (घातीकर्म
संसुद्ध ज्ञानदर्शन धारी केवली अपरिस्सावी, (अ
ज्ञान दर्शनधारी अरिहंत जिन केवलीजैसे निर्मल अखंडि
न्य चावलोंकी माफीक।

वेसे हि दृष्टान्त मात्र [illegible] इनकों परस्पर
[illegible] समझाना है जैसे यहां महि
[illegible]

[illegible] आठ पावते है [illegible] कषाय [illegible] हुई [illegible] के [illegible] है. [illegible] है. [illegible] किया हुआ [illegible] किसी [illegible] नहीं [illegible] है [illegible]

(५) [illegible] [illegible] और [illegible] होते है. [illegible] होते है [illegible] और [illegible] और [illegible] होते है और [illegible] होते है [illegible]

३ [illegible] होते है [illegible] और [illegible] होते है. [illegible] होते है [illegible]

४ [illegible]

वाँदि पूर्वधर, इस पूर्वधर, श्रुतकेवली, और जातिस्मरणादि-वाले। पुलाक-स्थितीकल्पी, अस्थितीकल्पी, स्थितकल्पी होते हैं, बकुश, पडिसेवणा पर्यन्त तीन और जिनकल्प भी होते, कषायकुशील पर्यन्त चार और कल्पातीतमें भी होते, निर्ग्रंथ, स्नातक-स्थित० अस्थित० और कल्पातीतमें होते द्वारम्

(५) चारित्र ५ सामायिक, छेदोपस्थापनिय परिहारवि-शुद्धि, सुक्ष्मसंपराय, यथाख्यात —पुलाक, बकुश, पडिसेवणमें० समायक छेदो० चारित्र होता है, कषायकुशीलमें सामा० छेदो० परि० सूक्ष्म० चारित्र होते हैं, और निर्ग्रंथ, स्नातकमें यथाख्यात चारित्र होता है, द्वारम्

(६) पडिसेवण २ मूलगुणप० उत्तरगुणप० पुलाक, पडिसे-वणी मूलगुणमें (पंचमहाव्रत) और उत्तरगुणमें (पिण्डविशु-द्धादि) दोनों लगावे बकुश मूलगुणअपडिसेवी उत्तरगुणपडिसेवी बाकी तीन नियंठा अपडिसेवी. द्वारम्.

(७) ज्ञान, ५ मत्यादि पुलाक, बकुश, पडिसेवणमें दो-ज्ञान मति श्रुति ज्ञान और तीन हो तो मति श्रुति, अवधि, क-षायकुशील और निर्ग्रंथमें ज्ञान दो [illegible] तीन चार पावे, दो हो तो मति [illegible] तीन हो तो मति श्रुति अवधि या मनःपर्यव० चार हो [illegible] मति श्रुति अवधि और मन पर्यव स्नातकमें एक केवलज्ञान [illegible] पूर्वधर उत्कृष्ट तो [illegible] [illegible] जघन्य अष्टप्रवचनमाता [illegible] [illegible] अष्टप्रवचनमाता [illegible] पूर्व निर्ग्रंथ [illegible] [illegible] स्नातक सूत्र व्यतिरिक्त द्वारम्

[illegible] पुलाक बकुश [illegible] होवे [illegible]

तीन नियंठा तीर्थमें और अतीर्थमें भी होते है. तीर्थंकर हो और प्रत्येक बुद्धि हो. कारण.

(९) लिंग—छेदो नियंठा (साधु) द्रव्य लिंग आश्री स्वलिंग, अन्यलिंग, गृहलिंग तीनोंमें होवे. और भावलिंग आश्री स्वलिंगमें होते है. कारण.

(१०) शरीर—५ औदारिक वैक्रिय, आहारक, तैजस, कार्मण, पुलाक. निग्रंथ, स्नातकमें औ० तै० का० तीन शरीर. बकुश. पडिसेवणमें औ० तै० का० वै० और कषायकुशीलमें पांचों शरीरवाले मिलते है कारण।

(११) क्षेत्र २ कर्मभूमी. अकर्मभूमी—दो ही नियंठा जन्म आश्री १५ कर्मभूमीमें होवे और संहरणआश्री पुलाकको छोडके शेष ५ नियंठा कर्मभूमी. अकर्मभूमी, दोनोंमें होते है. प्रमत्तसंयत पुलाक लब्धि आहारिक शरीर साध्वीयां, अप्रमादी उपशम श्रेणीवालोंका अपगतवेदी०, केवलज्ञान उत्पन्न हुवे पीछे, इन का तो संहरण नहीं होता कारण

(१२) काल—पुलाक उत्सर्पिणीकालमें जन्मआश्री तीजे चौथे आरामें जन्मे और सत्ताआश्री ३-४-५ आरामें वरते. अव सर्पिणीकालमें हुवे, तो [illegible] आरामें जन्म और [illegible] आरामें वरते [illegible] उत्सर्पिणी [illegible]

[illegible]

(१३) गति—देखो यंत्रसे.

	गति.		स्थिति.	
नाम.	जघन्य.	उत्कृष्ट.	जघन्य.	उत्कृष्ट.
पुलाक	सुधर्म देवलोक	सहस्रार दे०	प्रत्येक	१८ सागर
बकुश	..	अच्युत दे०	पल्योपम	२२ सागर
पडिसेवण	..	..	..	..
कषायकुशील	..	अनुत्तर वि०	..	३३ साग
निग्रंथ	अनुत्तर वि०	सर्वार्थसिद्ध	३१ सागर	..
स्नातक	०	मोक्ष	३३ सागर	..

देवताओंमें पद्वि ५ है. इन्द्र, लोकपाल, त्रायत्रिंषक, सामानिक, अहमइन्द्र. पुलाक, बकुश, पडिसेवणमें पहिलेकी ४ पद्विमेंसे १ पद्विवाला होवे. कषायकुशीलको ५ मेंकी १ पद्वि होवे. निग्रंथको अहमइन्द्रकी १ पद्वि होवे एवं स्नातक तथा मोक्षमें जावे और जघन्य विराधक हो तो चार जातिका देवता होवे. उत्कृष्ट विराधक चौवीस दंडकमें भ्रमण करे द्वारं.

(१४) संयम—संयमस्थान असंख्याते हैं. पुलाक, बकुश, पडिसेवण कषायकुशील इन चारोंके संयमस्थान असंख्याते २ है निग्रंथ स्नातकका संयमस्थान एक है अल्पाबहुत्व सर्वस्तोक निग्रंथ स्नातकके संयमस्थान एक है इनोंसे असंख्यातगुणे पुलाकके संयमस्थान इनोंसे असं० गुणे बकुशके इनोंसे असं० गुणे पडिसेवणके इनोंसे असं० गुणे कषायकुशीलके संयमस्थान द्वारं

(१५) निकासे — संयमके पर्याय चारित्र पर्याय अनन्त

[illegible] और [illegible] भी होते है [illegible] और [illegible] मालूम.

[illegible] भिन्न-भिन्न [illegible] (मालूम [illegible] और [illegible] है [illegible]

[illegible] नैतिक, [illegible] और [illegible] और [illegible] है [illegible]

[illegible] और [illegible] है [illegible]

[illegible] और [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

किन प्रत्यक्ष चार मास पर्यन्त है स्थान. (२) बाईस तीर्थंकरों के तथा महाविदेह क्षेत्रमें मुनियोंके सामायिक संयम यावज्जीव तक रहते हैं. (२) छेदोपस्थापनीय संयम [illegible] दो भेद हैं. (१) जो अतिचार लगे पूर्व संयमको छेदकर आलोचना प्रायश्चित्त लेकर करके पुनः महाव्रतोंका संयम लिया जाता है २, तेवीसवें तीर्थंकरोंके साधु चौवीसवें तीर्थंकरोंके शासनमें आते हैं उनको जो दोबारा संयम दिया जाता है वह निरतिचार छेदोप संयम है (३) परिहार विशुद्ध संयमके दो भेद हैं (१) निर्विशमान जैसे नौ मनुष्य नौ ही वर्षके, हो दीक्षा ले बीस वर्ष गुरुकुलवासमें रहकर नौ पूर्वका अध्ययन कर विशेष गुण प्राप्त करके, गुरु आज्ञासे परिहार विशुद्ध संयमको स्वीकार करे। प्रथम छे मास तक चार मुनि तपश्चर्या करे चार मुनि तपस्वी मुनियोंकि व्यावच्च करे एक मुनि व्याख्यान वांचे दूसरे छ मासमें तपस्वी मुनि व्यावच्च करे व्यावच्चवाले तपश्चर्या करे तीसरे छ मासमें व्याख्यानवाला तपश्चर्या करे सात मुनी उन्होंकि व्यावच्च करे, एक मुनि व्याख्यान वांचे। तपश्चर्या क्रमः उष्णकालमें एकान्तर शीत कालमें छठ छठ पारणा चतुर्मासामें अठम अठम पारणा करे. एवं १८ मास तक तपश्चर्या करे। फीर जिनकल्पका स्वीकार करे अगर एसा न हो तो वापिस गुरुकुल वासाका स्वीकार करे। (४) सूक्ष्म संपराय संयमके दो भेद हैं (१) संक्लेश परिणाम उपशम श्रेणिसे गिरते हुवे (२) विशुद्ध परिणाम श्रेणी चढते हुवे। (५) यथाख्यात संयमके दो भेद हैं (१) उपशान्त वीतराग (२) क्षिणवित [illegible] के दो भेद हैं [illegible] अयोगी [illegible]

१ [illegible] समय होय।

[illegible] है और [illegible]

[illegible] है [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] है, [illegible] है। [illegible]

[illegible] है। [illegible]

[illegible] है। [illegible]

[illegible] है। [illegible]

[illegible] है। [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]	[illegible]		[illegible]	
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible]

[illegible]	[illegible]		[illegible]	
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]			[illegible]	[illegible]
[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible]

(३) यथाख्यात संयमवाले संख्यात गुने ।
(४) छदोपस्थापनिय संयमवाले संख्यात गुने ।
(५) सामायिक संयमवाले संख्यात गुने ।

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव सचम् ॥

थोकडा नम्बर ३६

सूत्र श्री दशवैकालिक अध्ययन ३ जा.

(५२ अनाचार)

जिस वस्तुका त्याग कीया हो उस वस्तुको भोगवनेकी इच्छा करना, उसको अतिक्रम कहते है और उस वस्तुग्रहणके लिये कदम उठाना प्रयत्न करना, उसको व्यतिक्रम कहते है तथा उस वस्तुको ग्रहन कर भोगवनेकी तैयारीमें हो उसको अतिचार कहते है और त्याग करी वस्तुको भोगव लेनेसे शास्त्रकारोंने अनाचार कहा है। यहांपर अनाचारके ही ५२ बोल लिखते है।

(१) मुनिके लिये वस्त्र पात्र मकान और असनादि च्यार प्रकारका आहार मुनिके उद्देशसे कीया हुवा मुनि लेवे तो अनाचार लागे

(२) मुनिके लिये मूल्य लाइ हुइ वस्तु जो मुनि भोगवे तो अनाचार लागे

(३) मुनि नित्य एक घरका आहार भोगवे तो अनाचार

(४) साम्हने लाया हुवा आहार भोगवे तो अनाचार ,,

[illegible] अनाचार लागे

(२९) गृहस्थ लोगोंकि वैयावच्च करनेसे अनाचार „

(३०) अपनि जाति कुल बतलाके आजीविका करे तो „

(३१) सचित्त पदार्थ जलहरी आदि भोगवे तो अना „

(३२) शरीरमें रोगादि आनेसे गृहस्थोंकि सहायता लेनेसे „

(३३) मूलादि वनस्पति (३४) इक्षु (३५) कन्द (३६) मूल भोगवे तो अनाचार लागे.

(३७) फल फूल (३८) बीजादि भोगवेतो अनाचार „

(३९) सचित्तलवन (४०) सिंधु देशका सिंधालुण (४१) सांभर देशका सांभरलुण (४२) शूम व्यादिका लुण (४३) समुद्रका लुण (४४) कालालवन यह सर्व सचित्त भोगवे तो अनाचारलागे।

(४५) कपडोंको धूपादि पदार्थोंसे सुगन्ध बनानेसे अना०

(४६) भोजन कर वमन करने से अनाचार „

(४७) विगर कारण जुलाबादिका लेनासे अनाचार „

(४८) गुह्यस्थानकी शोभा समारनादि करनेसे अना०

(४९) नेत्रोंमें सुरमा अञ्जन लगाके शोभनिक बनावे „

(५०) दांतोंको अलतादिका रंग लगाके सुन्दर बनावें „

(५१) शरीरको मैलादिसे उबटनादि कर सुन्दर बनानेसे „

(५२) शरीरकि शुश्रूषा करना रोम नख समारनादि शोभा करनेसे.

उपर लिखे अनाचारको संयम सम्यक् निर्मल चारित्र पालना चाहिये।

सेवं भंते सेवं भंते—तमेव सच्चम्.



थर. इन चार प्रकारके जीवोंको मनसे हणे नहीं, हणावे नहीं, हणताकों अनुमोदे नहीं एवम् बाराह और बाराह वचनका, तथा बाराह कायासे कुल छत्रीश हुए इनकों दिनकों, रातकों अकेलेमें, पर्षदा में, निद्रावस्थामें, जागृत अवस्थामें, ६-इन भागोंको ३६ से साथ गुणा करनेसे प्रथम महाव्रतके २१६ तणाये हुए.

(२) महाव्रत मृषावाद—क्रोधसे, लोभसे, हास्यसे, और भयसे. इस तरह चार प्रकारका झूठ मनसे बोले नहीं, बोलावे नहीं, बोलतेकों अनुमोदे नहीं, एवम् वचन और कायासे गुणतां ३६ हुए इनको दिन, रात्रि अकेलेमें, पर्षदामें, निद्रा और जागृत अवस्था, ये छे प्रकारसे गुणा करनेसे २१६ तणावा दूसरे महाव्रतके हुए.

(३) महाव्रत अदत्तादान—अल्पवस्तु, बहुतवस्तु, छोटी वस्तु, बडी वस्तु, सचित, (शीष्यादि) अचित, (वस्त्रपात्रादि) ये छे प्रकारकी वस्तुको किसीके विना दिये मनसे लेवे नहीं, लेवावे नहीं, और लेतेको अनुमोदे नहीं. एवम् मन वचन और काया से गुणानेसे ५४ हुए जिनको दिन, रात्रि आदि ६ का गुणा करनेसे ३२४ तणावे तीसरे महाव्रतके हुए.

(४) महाव्रत मैथुन—देवी, मनुष्यणी, और तीर्यचणी, के साथ मैथुन मनसे सेवे नहीं, सेवावे नहीं, सेवतेको अनुमोदे नहीं. एवम् वचन और कायासे गुणातां २७ हुए जिनको दिन रात्रि आदि ६ का गुणा करनेसे १६२ तणावे चौथे महाव्रतके हुए.

(५) महाव्रत परिग्रह—अल्प, बहुत, छोटा, बडा, सचित, अचित, छ प्रकार परिग्रह मनसे रखे नहीं रखावे नहीं, रखतेकों अनुमोदे नहीं, एवम् वचन और कायासे गुणातां ५४ हुए जिन कों दिनरात्रि आदि ६ का गुणा करनेसे ३२४ तणावे पांचवे महाव्रतके हुए.

(६) रात्रिभोजन—असन पांण खादिम, स्वादिम, ये चार

प्रकारका आहार मनसे रात्रिको करे नही, कराये नही. करतेको अनुमोदे नही, एवम् वचन और कायासे गुणातां ३६ हुए इनको दिनमें (पहिले दिनका लाया हुवा दूसरे दिन) रात्रिमें, अकेलेमें, पर्षदामें, निद्राअवस्था, और जागृत अवस्था ६ का गुणां करनेसे २१६ तणाये हुए.

(७) छकाय—पृथ्वीकाय, अप्पकाय, तेउकाय, वायुकाय वनास्पतिकाय, और त्रसकायको मनसे हणे नही. हणावे नही. हणतेको अनुमोदे नही. एवम् वचन और कायासे गुणतां ५४ हुए जिसको दिन रात्रि आदि ६ का गुणा करनेसे ३२४ तणाये हुए.

एवम् सर्व २१६-२१६-३२४-१६२-३२४-२१६-३२४ सब मिला कर १७८२ तणावा हुए.

अब प्रसंगोपात दशवैकालिक सूत्रके छट्ठे अध्ययनसे अठाराह स्थानक लिखते हैं. यथा पांच महाव्रत, तथा रात्रिभोजन, और छ काय एवं १२ अकल्पनीय वस्त्र, पात्र, मकान और चार प्रकारका आहार १३ गृहस्थके भाजनमें भोजन करना १४ गृहस्थके पलंग खाट आसन पर बैठना १५ गृहस्थके मकानपर बैठना अर्थात् अपने उतरे हुये मकानसे अन्य गृहस्थके मकान बेठना १६ स्नान देससे या सर्वसे स्नान करना १७ नख केस रोम आदि समारना १८ इन अठाराह स्थान में से एक भी स्थानकको सेवन करनेवालोंको आचारसे भ्रष्ट कहा है ।

गाथा—दश अठ्ठय ठाणाई, जाई बालो वरज्झइ
तथ्य अन्नयरे ठाणे, निग्गंथ ताउ भेसइ

अर्थ—दस आठ अठाराह स्थानक है उनको बालजीव विराधे या अठाराहमेंसे एक भी स्थान सेवे तो निर्ग्रंथ (साधु) उन स्थानसे भ्रष्ट होता है. इस लिये अठाराह स्थानकी सदैव यतना करणी चाहिये. इति

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।।

थोकडा नंबर ३८

श्री भगवती सूत्र श० ८ उद्देसा १०

आराधना.

आराधना तीन प्रकारकी है. ज्ञान आराधना १, दर्शन आराधना २ और चारित्र आराधना.

ज्ञान आराधना तीन प्रकारकी है उत्कृष्ट, मध्यम और जघन्य. उत्कृष्ट ज्ञान आराधना. चौदे पूर्वका ज्ञान या प्रबल ज्ञानका उद्यम करे. मध्यम आराधना. इग्यारे अंग या मध्यम ज्ञानका उद्यम करे. जघन्य आराधना अष्ट प्रवचन माताका ज्ञान. व जघन्य ज्ञानका उद्यम

दर्शन आराधनाके तीन भेद. उत्कृष्ट (क्षायक सम्यक्त्व) मध्यम (क्षयोपशम स०) जघन्य (क्षयोपशम या सास्वादनस०)

चारित्र आराधनाके तीन भेद उत्कृष्ट (यथाख्यात चारित्र) मध्यम (परिहार विशुद्धादि जघन्य (सामायिक०)

उत्कृष्ट ज्ञान आराधनामें दर्शन आराधना कितनी पावे ? दो पावे. उत्कृ० मध्य० । उत्कृष्ट दर्शन आराधनामें ज्ञान आराधना कितनी पावे ? तीनो पावे उत्कृष्ट मध्यम और जघन्य

उत्कृष्ट ज्ञान आराधनामें चारित्र आराधना कितनी पावे ? दो पावे उत्कृष्ट और मध्यम । उत्कृष्ट चारित्र आराधनामें ज्ञान आराधना कितनी पावे ? तीनो पावे उत्कृष्ट मध्यम और जघन्य

उत्कृष्ट दर्शन आराधनामें चारित्र आराधना कितनी पावे ?

तीनो पावे. उत्कृष्ट, मध्यम और जघन्य ॥ उत्कृष्ट चारित्र आराधनामें दर्शन आराधना कितनी पावे ? एक पावे. उत्कृष्ट ॥

उत्कृष्ट ज्ञानआराधना वाले जीव कितने भव करे ? जघन्य एक भव, उत्कृष्ट दोय भव.

मध्यम ज्ञान आराधनावाले जीव कितने भव करे ? जघन्य दो. उत्कृष्ट तीन भव करे.

जघन्य ज्ञान आराधनावाले जीव कितने भव करे ? जघन्य तीन और उत्कृष्ट पंदराह भव करे ॥ एवम् दर्शन और चारित्र आराधनामें भी समझ लेना.

एक जीवमें उत्कृष्ट ज्ञानआराधना होय, उत्कृष्ट दर्शन आराधना होय और उ० चारित्र आराधना होय. जिसके भांगा नीचे यंत्रमें लिखे हैं.

पहिला एक ज्ञान दुसरा दर्शन और तीसरा चारित्र तथा ३ के आंकको उत्कृष्ट २ के आंकको मध्यम और १ के आंकको जघन्य समझना.

३-३-३	२-३-२	२-१-२	१-३-१
३ ३-२	२-३-१	२ १-१	१-२-२
३-[illegible]-[illegible]	२ २-२	१-३-३	१-२-१
[illegible] ३ ३	२-२-१	१-३ [illegible]	१-१-२
			१-१-१

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्.

थोकडा नम्बर ३६

श्री उत्तराध्ययनजी सूत्र अध्ययन २६

(साधु समाचारी)

श्री जिनेन्द्र देवोंकि फरमाइ हुइ सामाचारी को आराधन कर अनन्ते जीव मोक्षमें गये है-जाते हैं और जावेंगे.

दश प्रकारकी समाचारीके नाम (१) आवस्सिय (२) निसिहिय (३) आपुच्छणा (४) पडिपुच्छणा (५) छंदणा (६) इच्छाकार (७) मिच्छाकार (८) तहकार (९) अभ्भुठणा (१०) उपसंपया.

(१) आवस्सिय—साधु को आवश्य कारण हो तब ठेरे हुये उपासरासे बाहर जाना पडे तो जाती वख्त पेस्तर आवस्सिय ऐसा शब्द उच्चारण करे ताके गुरुआदिको ज्ञात हो जावे की अमुक साधु इस टाइममें बाहर गया है

(२) निसिहि—कार्यसे निवृति पाके पीछा स्थान पर आता वख्त निसिहि शब्द उच्चारण करे ताके गुरुआदिको ज्ञात हो की अमुक साधु बाहरसे आया है यदि कम ज्यादा टाइम लगी हो तो इसका निर्णय गुरु महाराज कर सके है

(३) आपुच्छणा—स्वयं अपने लिये यदूकिंचित भी कार्य हो तो गुरुआदिको पुच्छे अगर गुरु आज्ञा दे तो वह कार्य करे. शास्त्र आदि.

[illegible] [ ] [illegible]

(४) पडिपुच्छना—अन्य साधुओंको हरेक कार्य हो तो गुरुसे पुच्छा कर वह कार्य गुरु आदेशसे ही करे।

(५) छंदना—जो गोचरी में लाया हुवा आहार पानी गुरुआदि की मरजी माफिक सर्व साधुओंको संविभाग करे अपने विभागमें आये हुवे आहार की भक्ताः सर्व महा पुरुषोंको आमन्त्रण करे. यावे सर्व कार्य गुरु आदि (आज्ञा) से करे।

(६) इच्छाकार—हरेक कार्यके अन्दर गुरुआदिसे प्रार्थना करेकि हे भगवान्! आपश्रीकी मरजी हो तो यह कार्य करे या मैं करूं (यावत्कोपादि)

(७) मिच्छाकार—प्रमादिकविन् भी अपराध हुवा हो तो गुरु समीप अपनी आत्मा की निन्दा कर मिच्छामि दुक्कडं देना. और यहासे मैं यह कार्य नहीं करूंगा।

(८) तहत्कार—गुरुआदिका वचन हरवक्त ग्रहन करके [illegible] करना।

(९) अभ्युठाना—गुरुआदि [illegible]

[illegible]

भ सममूमि पर खडा हो कर अपना दिचणकी छाया पदे या दो पग प्रमाण हो तो एक पेहर दीनका परिमाण समझना अथवा शङ्कामें विलस्त (वेंत) की छाया विलस्त परिमाण हो तो पेहर दीन समझना और श्रावण कृष्ण सप्तमीको एक आंगुल छाया बढे, श्रावण कृष्ण अमावास्याको २ आंगुल छाया बढे, श्रावण शुक्ल सप्तमीको ३ आंगुल छाया बढे, और श्रावण शुक्ल पूर्णमाको ४ आंगुल छाया बढे (एक माससें ४ आंगुल छाया बढे) श्रावण शुक्ल पूर्णमा २ पग और ४ आंगुल छाया आनेसे पेहर दीन आया समझना, भाद्रपद शुक्ल पूर्णमा को २ पग ८ आंगुल छाया, आश्वन पूर्णमा ३ पग छाया, कार्तिक पूर्णमा ३ पग ४ आंगुल, मागसर पूर्णिमा ३ पग ८ आंगुल. पोष पूर्णमा ४ पग छायासें पेहर दीन समझना, इसी माफक एक एक मासमें ४ आंगुल कम करते आषाढ पूर्णमाको २ पग छायाको पेहर दीन समझना. यह प्रमाण सम भूमिका है वर्तमान विषम भूमि होनेसे कुच्छ तफावत भी रहता है यह गीतार्थो से निर्णय करे ।

पोरसी और पदपडिपुन्ना पोरसीका पेर.

जेष्ठ पग २ ४	भाद्रपद पग ३ ८	मार्ग० पग ४-८	फाल्गुन पग ३-४
अंगुल ६ ७-१०	अंगुल ८-३-४	अं० १० ४ ६	अं० ८-४
आषाढ पग २	आश्विन पग ३	पोष पग ४	चैत्र पग ३
अंगुल ६ २ ६	अंगुल ८-३-८	अं० १० ४-१०	अंगुल ८ ३-८
श्रावण पग २ ४	कार्त्तिक ३ ४	माघ प ३ ८	वैशाख पग २-८
अंगुल ... १०	अंगुल ८-४	अं० १० ४ ६	अंगुल ८-२-४

बहुपडि पुन्नापोरसीका मान जेष्ठआसाढ श्रावण मासमें जो पैरकी छाया बताइ है जीसमें ६ आंगुल छाया जादा और भाद्रपद आश्विन कार्तिकमें ८ आंगुल मगसर पोष माघमें १० आंगुल फाल्गुन चैत वैशाखमें ८ आंगुल छाया घटानेसे पडिपुन्न पोरसीका काल आते है इस वक्त मुपत्ती वा पात्रादिको फिरसे पडिलेहन की जाती है.

पक्ष्व मास और संवत्सरका मान विशेष जोतीषीयोंको चोपडेमें लिखेंगे यहां संक्षेपसे लिखते है. जैन शास्त्रमें संवत्सर की आदि श्रावण कृष्ण प्रतिपदासे होती है. श्रावण मास ३० दीनोंका होता है. भाद्रपद मास २९ दीनोंका जीसमें कृष्णपक्ष १४ दीनोंका और शुक्ल पक्ष १५ दीनोंका होता है आश्विन मगसर माघ चैत जेट मास यह प्रत्येक ३० दीनोंका मास होता है और कार्तिक पोष फाल्गुन वैशाख आषाढ मास प्रत्येक २९ दीन का होता है जो एक तिथी घटती है वह कृष्णपक्षमें ही घटती है. इस सुधर्मा भगवान के मत को मान देनासे जैनोंमें पवित्र संवत्सरिका झघडा को स्वयं तिलांजली मिल जायेगी ।

दिनका प्रथम पेहरका चोथा भागमें (सूर्योदय होनासे दो घडी) पडिलेहन करे किंचन मात्र वस्त्रपात्रादि उपगरण विगर पडिलेहा न रखे. पडिलेहनकि विधि इसी भागके चतुर्थ समिति मे लिखि गइ है सो देखो।

पडिलेहन कर गुरु महाराजको विधिपूर्वक वन्दन नमस्कार कर प्रार्थना करेकि हे भगवान् अब मै कोइ साधुवोंकी व्यावश कर या स्वाध्याय करुं? गुरु आदेश करेकि अमुक साधुकि व्यावश

[illegible]

[illegible]

करो तो अग्लानपने व्यावच्च करे अगर गुरु आदेश करेकी स्वाध्याय करो तो प्रथम पेहरका रहा हुवा तीन भागमें मुलसूत्रोंकि स्वाध्याय करे अथवा अन्य साधुवोंको वाचना देवे स्वाध्याय ऐसी है की सर्व दुःखोंको अन्त करनेवाली हैं.

दिनका दुसरा पहेरमें ध्यान करे अर्थात् प्रथम पेहरमें मूल पाठकी स्वाध्याय करी थी उस्का अर्थोपयोग संयुक्त चिंतवन करे. शास्त्रोंका नया नया अपूर्वज्ञानके अन्दर अपना चित्त रमण करते रहना जीनसे अगर कि सर्व उपाधीयां नष्ट हो जाती है वही चेतनका मोक्ष है.

दिनके तीसरे पेहरमें जब पूर्ण क्षुधा सताने लग जावे अर्थात् छ कारण (थोकडा नं० ३२ में देखो) से कोइ कारण हो तो पूर्व पडिलेहा हुवा पात्रा ले के गुरु महाराजकी आज्ञा पूर्वक आतुरता चपलता रहित भिक्षाके लिये अटन करे भिक्षा लानेका ४२ तथा १०६ दोष (थोकडे नं० ३२ में देखो) वर्जित निर्दोषाहार लावे इरियावहि आलोचना कर गुरुको आहार दीखा के अन्य महात्मावोंको आमन्त्रण करे शेष रहा हुवा आहार मांडलाका पांच दोष वर्जके क्षणधार भावना भावे धन्य है जो मुनि तपश्चर्या करे बादमें अमुच्छित अगिद्धपणे संयम यात्रा निर्वाहने के लिये तथा शरीरको भाडा रुप आहार पाणी करे अगर कोसी क्षेत्रमें तीसरा पेहरमें भिक्षा न मिलती हो तो जीस वखतमें मीले उस वखतमें लावे यथा श्री दशवैकालिकसूत्र अ० ५ उ० २ गाथा ४ में है। इस वास्ते तीसरी पहर समय भी आति है

दिनके चोथे पहरका चार भागमें तीन भाग तक स्वाध्याय करे और बाकी भागमें विधिपूर्वक पडिलेहन [illegible] करे सायम स्थंडिल भू० [illegible] प्रतिक्रमण सायम दीनके विषय जो लागा हो अतिचार जिसकी आलोचना कर उपयोग संयुक्त प्रतिक्रमण करे.

क्रमशः षडावश्यक और सायमें इन्होंका + फल बताते हैं.

षडावश्यकका नाम *

यथाः—सावद्य जोगविरइ उक्तणगुण पडिवति ॥
खलियस्स निंदणा तिगिच्छगुण धारणाचेव ॥ १ ॥

यथा सामायिक चउवीसत्थो वन्दना प्रतिक्रमण काउस्सग पच्चखाण. (आवश्यकसूत्र)

(१) प्रथम सामायिकावश्यक इरियावहि पडिक्कमे देवसि प्रतिक्रमणठाउ आदि अतिचारका काउस्सग पारके एक नमस्कार कहे वहांतक प्रथम आवश्यक है इसके अन्दर जीतना अतिचार लगा हो वह उपयोग संयुक्त काउस्सगमें चिंतवन करना इसका फल सावद्य योगोंसे निवृत्ती होती है. कर्मोंका अभाव.

(२) दुसरा चउवीसत्थावश्यक । इन अवसर्पिणीमें हो गये चोवीस तीर्थंकरोंकी स्तुति रूप लोगस्स कहेना फल सम्यक्त्व निर्मल होता है.

(३) तीसरावश्यक वन्दना-गुरु महाराजको द्वादशावर्तसे वन्दना करना फल निच गौत्रका नाश होता है और उच गौत्रकी प्राप्ती होती है

* यहां प्रतिक्रमणावश्यक दिनके विषय लाया हुवा [illegible] प्रतिक्रमणमें [illegible] अति [illegible]

सबके छेद्रका निरुद्ध करणा, जीनसे अमथला चारित्र और अष्ट प्रवचन माताकी उपयोग संयुक्त आराधना (निर्मल) करे.

(५) पंचम काउसग्गावश्यक–प्रतिक्रमण करतां अना उपयोग रहा हुवा अतिचार रुपि प्रायश्चित जीनको शुद्ध करणे के लिये चार लोगस्सका काउस्सग करे एक लोगस्स प्रगट करे फल–भूत और वर्तमान कालका प्रायश्चितको शुद्ध करे जैसे कोइ मनुष्यको देना हो या वजन कीसी स्थानपर पहुंचाना हो उनको पहुंचा देवे या देना दे दीया फिर निर्भय होता है इसी माफीक व्रत में लगाहुवा प्रायश्चितको शुद्ध कर प्रशस्त ध्यानके अन्दर सुखे सुखे विचरे.

(६) छठा पचखाणावश्यक–गुरु महाराजकी आज्ञासे शक्ति माफीक भविष्यकालका पचखाण करे। फल आता हुवा आश्रवको रोके और इच्छाका निरुद्ध हानासे पूर्व उपार्जित कर्मोका क्षय करे.

षट् पडावश्यक रुप प्रतिक्रमण निर्विघ्नपणे समाप्त होने पर भाव मंगल रुप तीर्थंकरादि स्तुति चैत्यवन्दन जघन्य ३ श्लोक उत्कृष्ट ७ श्लोकसे स्तुति करना। फल ज्ञान दर्शन चारित्रकि आराधना होती है जीससे जीव उन्ही भवमें मोक्ष जावे अथवा विमानीक देवता में जावे वहांसे मनुष्य होके मोक्षमे जावे उत्कृष्ट करे तो भी १५ भवसे अधिक न करे.

रात्रिका कृत्य.

जब प्रतिक्रमण हो जावे तब स्वाध्यायका काल आनेसे काल पडिलेहन करे जैसे ठाणायंग सूत्रका दशमा ठाणामें १० प्रकारका आकाशकी असझाय बताइ है यथा तारा तुटे दीशा लाल अकाल गाज वीजली कडक यूपिकाय चान्द्रधन्द,

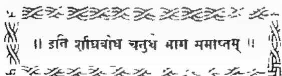
वन्दन कर पच्चखांन करना और गुरु आज्ञा माफिक पूर्ववत् दोनकृत्य करते रहेना.

इसी माफिक दिन और रात्रिमें वरताव रखना और भी. ज्ञान, ध्यान, मौन, विनय, व्यावञ्च पर्याराधन तपश्चर्या दोनरात्रिमें सात वेर चैत्यवन्दन चार चार सज्झाय समिति गुप्ति भाषा पूजन प्रतिलेखनके अन्दर पूर्ण तय उपयोग रखना पंच महाव्रत पंच समिति तीन गुप्ति यह १३ मूल गुण है ओस्मे हमेशा प्रयत्न करते रहेना एक भवमे यत्किंचित् परिश्रम उठाणा पडता है परन्तु भवोभवमें जीव सुखी हो जाता है.

यह श्री सुधर्मास्वामिकी समाचारी सर्व जैनोंको मान्य है वास्ते झघडे की समाचारीयांको तिलाञ्जलि देके सुधर्मे समाचारीमें यथाशक्ति पुरुषार्थ करे ताके शीघ्र कल्याण हो.

शान्तिः शान्तिः शान्तिः

सेवंभंते—सेवंभंते—तमेवसच्चम्.


॥ इति शीघ्रबोध चतुर्थ भाग समाप्तम् ॥

श्री रत्नप्रभसूरि सद्गुरुभ्यो नमः

अथ श्री

शीघ्रबोध भाग ५ वां.



थोकडा नम्बर ४०

(जड चैतन्य स्वभाव.)

जीवका स्वभाव चैतन्य और कर्मोंका स्वभाव जड एवं जीव और कर्मोंका भिन्न भिन्न स्वभाव होने पर भी जैसे धूलमें धातु तीलोंमें तैल दुधमें घृत है. इसी माफीक अनादि काल से जीव और कर्मों के संबन्ध है जैसे धमादि के निमित्त कारण से धूलमें धातु तीलोंमे तैल दुधसे घृत अलग हो जाते है इसी माफीक जीव को ज्ञान दर्शन, तप, जप, पूजा प्रभावनादि शुभ निमित्त मीलनेसे कर्म और जीव अलग अलग हो जीव सिद्ध पदको प्राप्त हो जाते है

जबतक जीवोंके साथ कर्म लगे हुवे हैं तबतक जीव अपनि शुद्ध दशा भूल मिथ्यात्वादि परगुण में परिभ्रमन करता है जैसे पानी स्वभाव से निर्मल अवश्य शीतल गुणवाला है किन्तु अग्निका संयोग पाके अपना असली स्वरूप छोड उष्णता को धारण करता है और जब वायुका निमित्त मीलने पर अग्निको त्यागकर अपने असली स्वरूप धारण कर लेता है इसी माफीक जीव भी निर्मल

अकलंक अमूर्ति है परन्तु मिथ्यात्वादि अज्ञानके निमित्त कारणसे अनेक प्रकारके रूप धारण कर संसारमें परिभ्रमन करता है परन्तु जब सद्ज्ञान दर्शनादिका निमित्त प्राप्त करता है तब मिथ्यात्वादिका संग त्याग अपना असली स्वरूप धारण कर सिद्ध अवस्थाको प्राप्त कर लेता है.

जीव अपना स्वरूप कौन कारणसे भूल जाता है ? जैसे कोइ अकलमंद समजदार मनुष्य मदिरापान करने से अपना भान भूल जाता है फोर उन मदिराका नशा उतरने पर पश्चात्ताप कर अच्छे कार्यमें प्रवृत्ति करता है इसी माफीक अनंत ज्ञान दर्शनका नायक चैतन्यको मोहादि कर्मदलक विपाकोदय होता है तब चैतन्यका भान-विकल-बना देता है फीर उन कर्मोको भोगवके निर्जरा करने पर अगर नया कर्म न बन्धे तो चैतन्य कर्म मुक्त हो अपने स्वरूपमें रमणता करता हुवा सिद्ध पदको प्राप्त कर लेता है.

कर्म क्या वस्तु है ? कर्म एक कीस्मके पुद्गल है जिन पुद्गलोंमें पांच वर्ण, दो गन्ध, पांच रस, च्यार स्पर्श है जीवोंके उन पुद्गलोंसे अनादि कालका सम्बन्ध लगा हुवा है उन कर्मोकि प्रेरणासे जीवोंके शुभाशुभ अध्यवसाय उत्पन्न होते है उन अध्यवसायोंकी आकर्षणासे जीव शुभाशुभ कर्म पुद्गलोंको ग्रहन करते है। वह पुद्गल आत्माके प्रदेशोंपर चीपक जाते है अर्थात् आत्म प्रदेशोंके साथ उन कर्म पुद्गलोंका क्षीरनिरकी माफीक बन्ध होते है जिनोंसे वह कर्म पुद्गल आत्माके गुणोंका झाखा बना देते है जैसे सूर्यका बादल झाखा बनाता है। जैसे जैसे अध्यवसायोंकी मन्दता तीव्रता होती है वैसे वैसे कर्मोके अन्दर रस तथा स्थिति पड जाति है वह कर्म बन्धने के बाद वह कर्म कीतने कालसे विपाक उदय होते है उसको अबाधा काल कहते है जैसे हुन्डीके अन्दर मुदत डाली जाति है। कर्म दो प्रकारसे भोगवीये

प्रकृति १५८ का संक्षिप्त विवरण कर आप.के सेवामें रखी जाति है आशा है कि आप इस कर्म प्रकृतियोंको कंठस्थ कर आगे के लिये अपना उत्साह बढाते रहेंगें इत्यलम्।



थोकडा नम्बर ४१



(मूल आठ कर्मोंकि उत्तर प्रकृति १५८.)

(१) ज्ञानावर्णियकर्म—चैतन्यके ज्ञान गुणको रोक रखा है।
(२) दर्शनावर्णियकर्म—चैतन्यके दर्शन गुणको रोक रखा है।
(३) वेदनियकर्म—चैतन्यके अव्याबाद गुणको रोक रखा है।
(४) मोहनियकर्म—चैतन्यके क्षायिक गुणको रोक रखा है।
(५) आयुष्यकर्म—चैतन्यके अटल अवगाहाना गुणको रोक रखा है.
(६) नामकर्म—चैतन्यके अमूर्त्त गुणको रोक रखा है।
(७) गौत्रकर्म—चैतन्यके अगुरु लघु गुणको रोक रखा है।
(८) अन्तरायकर्म चैतन्यके वीर्य गुणको रोक रखा है।

इन आठों कर्मोंकि उत्तर प्रकृति १५८ है उसीका विवरण—

(१) ज्ञानावर्णियकर्म जैसे घाणीका बहल-याने घाणीके बहलके नेत्रोंपर पाट्टा बान्ध देनेसे कीसी वस्तुका ज्ञान नही होता है इसी माफीक जीवोंके ज्ञानावर्णिय कर्मपडल आजानेसे वस्तुतत्त्वका ज्ञान नहीं होता है। जीस ज्ञानावरणीय कर्मकि उत्तर प्रकृति पांच है यथा- (१) मतिज्ञानावर्णिय ३४० प्रकारके मतिज्ञान है (देखो शीघ्रबोध भाग ६ ठा) उनपर आवरण करना अर्थात मतिमें कीसी प्रकारका ज्ञान नही होने देना अच्छी बुद्धि

उत्पन्न नही होना तथा वस्तुपर विचार नही करने देना. प्रज्ञा नही फेलना-बदलेमें अगाध मति-बुद्धि-प्रज्ञा-विचार पैदा होना यह सब मतिज्ञानावर्णियकर्मका ही प्रभाव है (२) श्रुतज्ञानावर्णिय-श्रुतज्ञानको रोके, पठन पाठन श्रवण करनेको रोके, सद्ज्ञान होने नही देवे योग्य मीलनेपर भी सूत्र सिद्धान्त वाचना सुननेमें अन्तराय होना-बदलेमें मिथ्याज्ञान पर श्रद्धा पठन पाठन श्रवण करनेकि रूची होना यह सब श्रुतिज्ञानावर्णियकर्मका प्रभाव है (३) अवधिज्ञानावर्णियकर्म अनेक प्रकारके अवधिज्ञानको रोके (४) मनःपर्यवज्ञानावर्णियकर्म आते हुये मनःपर्यवज्ञानको रोके (५) केवलज्ञानावर्णियकर्म-संपूर्ण जो केवलज्ञान है उनको आते हुयेको रोके इति ॥

(२) दर्शनावर्णियकर्म--राजाके पोलीया जैसे कीसी मनुष्यको राजासे मीलना है परन्तु वह पोलीया मीलने नही देते है इसी माफिक जीवोंको धर्म राजा से मीलना है परन्तु दर्शनावर्णियकर्म मीलने नही देते है जीसकि उत्तर प्रकृति नौ है. (१) चक्षु दर्शनावर्णियकर्म प्रकृति उदय से जीवोंको नेत्र (आँखो) हिन चना है अर्थात् एकेन्द्रिय बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय जातिमें उत्पन्न होते है कि जहां नेत्रोंका बिलकुल अभाव है और चौरिन्द्रिय पाचेन्द्रिय जातिमें नेत्र होने पर भी रतोंदा होना काणा होना तथा बिलकुल नही दीखना इसे चक्षु दर्शनावर्णियकर्म प्रकृति कहते है (२) अचक्षु दर्शनावर्णियकर्म प्रकृति उदयसे त्वचा जीभ नाक कान और मनसे जो वस्तुका ज्ञान होता है उनोंको रोके जिस्का नाम अचक्षु दर्शनावर्णिय कहते है (३) अवधि दर्शनावर्णियकर्म प्रकृति उदयसे अवधिदर्शन नही होने देवे अर्थात् अवधि दर्शनको रोके (४) केवल दर्शनावर्णिय कर्मोदय. केवल दर्शन होने नही देवे अर्थात केवल दर्शनपर आवरण कर रोक रखे ॥ तथा निद्रा निद्रा निद्रा दर्शनावर्णियकर्म प्रकृति उदय से

निद्रा आति है परन्तु सुखे सोता सुखे जाग्रत होता उसे निद्रा कहते है। और सुखे सोता दुःखपूर्वक जाग्रत होना उसे निद्रानिद्रा कहते है। खडे खडेको तथा बैठे बैठेको निद्रा आवे उसे प्रचला नामकि निद्रा कहते है। चलते फीरतेको निद्रा आवे उसे प्रचला प्रचला नामकि निद्रा कहते है। दिनको या रात्रीमें चिंतवन (विचाराहुवा) किया कार्य निद्राके अन्दर कर लेवे वो इसको स्त्यानर्द्धि निद्रा कहते है. एवं च्यार दर्शन और पांच निद्रा मीलाने से नौ प्रकृति दर्शनावर्णियकर्मकि है।

(३) वेदनियकर्म— मधुलीप्त छुरी जैसे मधुका स्वाद मधुर है परन्तु छुरीकी धार जीव्हा भी छेदती है इसी माफीक जीवोंको सातावेदनि सुख देती है मधुवत् और असातावेदनि दुःख देती है छुरीवत् जीसकि उत्तर प्रकृति दोय है सातावेदनिय, असातावेदनिय, जीवोंको शरीर–कुटुम्ब धन धान्य पुत्र कलत्रादि अनुकूल सामग्री तथा देवादि पौद्गलीक सुख प्राप्त होना इसे सातावेदनियकर्म प्रकृतिका उदय कहते है और शरीरमें रोग निर्धनता पुत्र कलत्रादि प्रतिकूल तथा नरकादि के दुःखोंका अनुभव करना इसे असातावेदनियकर्म प्रकृति कहते है।

(४) मोहनियकर्म— [illegible] पुरुष [illegible]

स्थंभ सादृश, माया वांसकी जड सादृश, लोभ करमजी रेस्मके रंग सादृश घात करे तो सम्यक्त्वगुणकि स्थिति यावत् जीवकि, गति करें तों नरककि ॥ अप्रत्याख्यानि क्रोध तलावकि तड, मान दान्तकास्थंभ, माया मेंढाका श्रृंग, लोभ नगरका कीच, घात करे तों श्रावकके व्रतोंकि स्थिति एक वर्षकि, गति तीर्यंच कि ॥ प्रत्याख्यानि क्रोध गाडाकी लीक, मान काष्टका स्थंभ, माया चालता बैलकामूत्र, लोभ नेत्रोंके अञ्जन घात करे तों सर्व व्रतकि, स्थिति करे तो च्यार मासकि, गति करें तों मनुष्यकी ॥ संज्वलनका क्रोध पाणीकी लीक, मान तृणका स्थंभ, मायावांसकी छाल लोभ हलदिका रंग, घात करे तों वीतरागपणाकी, स्थिति क्रोधकी दो मास, मानकी एक मास, मायाकी पन्दरा दिन, लोभकी अन्तर मुहुर्त, गति करे तो देवतायोंमें जावें, इस सोलह प्रकारकी कषायकों कषाय मोहनिय कहते है

नौ नोकषाय मोहनिय हास्य कुतूहल मश्करी करना। भय-डरना विस्मय होना। शोक-फीकर चिंता आर्तध्यान करना। जुगुप्सा-ग्लानी लाना नफरत करना। रति आरंभादिकार्योंमें खुशी लाना। अरति-संयमादि कार्योंमे अरति करना। स्त्रीवेद-जिस प्रकृतिके उदय पुरुषोंकि अभिलाषा करना। पुरुषवेद जिस प्रकृतिके उदय स्त्रियोंकि अभिलाषा करना। नपुंसक वेद जिस प्रकृतिके उदय स्त्रि पुरुष दानोंकि अभिलाष करना एवं २८ प्रकृति मोहनियकर्मकि है।

- आयुष्य कर्मकि च्यार प्रकृति है यथा नरकायुष्य तीर्यंचायुष्य मनुष्यायुष्य देवायुष्य। आयुष्यकर्म जेसे कारागृहका मुद्दत हो इतने दिन रहना पडता है इसी माफीक जीस गतिका आयुष्य हो उसे भोगवना पडता है।

(६) नामकर्म चित्रकार शुभ और अशुभ दोनों प्रकारके

जेसे औदारिक संघातन, वैक्रियसंघातन, आहारीक संघातन, तेजस संघातन कार्मण संघातन।

(छ) संहनन नामकर्मकि छे प्रकृति है. शरीरकि ताकत और हाडकि मजबुतिको संहनन कहते है यथा वज्र ऋषभनाराच संहनन। वज्रका अर्थ है खीला. ऋषभका अर्थ है पाट्टा. नाराचका अर्थ है दोनो तर्फ मर्कट याने कुटीयाके आकार दोनो तर्फ हाडो जुडी हुइ अर्थात् दोनो तर्फ हड्डीका मीलना उसके उपर एक हाडोका पट्टा और इन तीनोंमें एक खीली हो उसे वज्रऋषभ नाराच संहनन कहते हैं॥ नाराच संहनन–उपरवत् परन्तु बीचमें खीली न हो. नाराच संहनन-इसमें पट्टा नहीं है। अर्द्ध नाराच संहनन-एक तर्फ मर्कट बन्ध हो दुसरी तर्फ खीली हो। किलीका संहनन–दोनो तर्फ अंकुडाकि माफीक एक हडीमें दुसरी हडी फसी हुइ हो। छेवट्ठ संहनन–आपस में हड्डीयो जुडी हुइ है॥

(ज) संस्थाननामकर्मकि छे प्रकृतियो है–शरीरकी आकृतिको संस्थान कहते है समचतुरस्र संस्थान-पालटीमार के (पद्मासन) बेठनेसे चोतर्फ बराबर हो याने दोनो जानुके बिचमें अन्तर है इतना ही दोनो स्कन्धोके बिचमें। इतना ही एक तर्फसे जानु और स्कन्धके अन्तर हो उसे समचतुरस्र संस्थान कहते है। निग्रोध परिमंडल संस्थान नाभीके उपरका भाग अच्छा सुन्दर हो और नाभीके निचेका भाग हिन हो। सादि संस्थान-नाभीके निचेका विभाग सुन्दर हो नाभीके उपरका भाग खराब हो। कुब्ज संस्थान-हाथ पैर शिर गर्दन अवयव अच्छा हो परन्तु छाती पेट पीठ खराब हो। वामन संस्थान हाथ पैरादि छोटे छोटे अवयव खराब हो। हुंडक संस्थान सब शरीर अवयव खराब अप्रमाणीक हो।

(झ) वर्णनामकर्मकि पांच प्रकृति है–शरीरके जो पुद्गल लागा है उन पुद्गलोंका वर्ण जैसे कृष्णवर्ण निलवर्ण, रक्तवर्ण

सुभाग नाम—कोसीपर भी उपकार किया विगर ही लोगों के प्रीतीपात्र होना उसको सुभागनाम कर्म कहते हैं। अथवा सौभाग्यपणा सदैव बना रहना युगल मनुष्यवत्.

सुस्वर नाम—मधुरस्वर लोगोंको प्रीय हो पंचमस्वरवत्

आदेय नाम—जिनोंका वचन सर्वमान्य हो आदर सत्कारसे सर्व लोग मान्य करे।

यश:कीर्ति नाम—एक देशमें प्रशंसा हो उसे कीर्ति कहते है और बहुत देशोंमें तारीफ हो उसे यशः कहते है अथवा दान तप शील पूजा प्रभावनादिसे जो तारीफ होती है उसे कीर्ति कहते है और शत्रुओंपर विजय करनेसे यशः होता है। अब स्थावरकि दश प्रकृति कहते है।

स्थावर नाम—जिस प्रकृतिके उदयसे स्थिर रहे याने शरदी गरमीसे बच नही सके उसे स्थावर कहते है जेसे पृथ्व्यादि पांच स्थावरपणे में उत्पन्न होना।

सूक्ष्म नाम—जिस प्रकृति के उदयसे सूक्ष्म शरीर-जो कि छद्मस्थोंके दृष्टिगोचर होवे नहीं कोसीके रोकनेपर रूकावट होवे नही. दुसरेके रोका हुवा पदार्थ रूक नही सके। वेसे सूक्ष्म पृथ्व्यादि पांच स्थावरपणेमे उत्पन्न होना।

अपर्याप्ता नाम—जिस प्राणिमे जितनी पर्याय पावे उतोमे कम पर्यायवान्धके मर जावे अथवा पुद्गल ग्रहनमें असमर्थ हो।

साधारण नाम—अनंत जीव एक शरीरके स्वामि हो अर्थात एक ही शरीरमें अनंत जीव रहते हो कन्दमूलादि

अस्थिर नाम—दान्त हाड कान जीभ ग्रीवादि शरीरके अवयवो अस्थिर हो चपल हो उसे अस्थिर नाम कर्म कहते है।

अशुभनाम—नाभीके नीचका शरीर पैर विगरे आदि शुभ

हो, परन्तु दान देनेमें उत्साह न चढे वह दानांतराय कर्मका उदय है.

दातार उदार हो दानकी चीजों मौजुद हो आप याचना करनेमें कुशल हो परन्तु लाभ न हो तथा अनेक प्रकारके व्यापारादिमें प्रयत्न करनेपरभी लाभ न हो उसे लाभान्तराय कहते है।

भोगवने योग्य पदार्थ मौजुद है उन पदार्थोंमें वैराग्यभाव भी नहीं है न नफरत आति है परन्तु भोगान्तराय कर्मोदयसे कीसी कारणसे भोगव नहीं सके उसे भोगान्तराय कहते है जो वस्तु एक दफे भोगमें आति हो अन्नादि।

उपभोगान्तराय-जो स्त्रि वस्त्र भूषणादि वारवार भोगनेमें आवे एसी सामग्री मौजुद हो तथा त्यागवृत्ति भी नहो तथापि उपभोगमें नहीं ली जाये उसे उपभोगान्तराय कहते है।

वीर्यान्तराय-रोग रहीत शरीर बलवान सामर्थ्य होनेपरभी कुच्छभी कार्य न कर सके अर्थात् वीर्य अन्तराय कर्मोदयसे पुरुषार्थ करनेमें वीर्य फोरनेमें कायरोंकी माफीक उत्साह रहित होते है उठना बेठना हलना चलना बोलना लिखना पढना आदि कार्य करनेमें असमर्थ हो वह पुरुषार्थ कर नहीं सकते है उसे वीर्य अन्तरायकर्म कहते है इन आठों कर्मोकी १५८ प्रकृतियोंको कंठस्थ कर फीर आगेके थोकडेसे कर्मबन्धनेका कर्म तोडनेके हेतु लिखेंगे उसपर ध्यान दे कर्मबन्धन कारणोंको छोडनेका प्रयत्न कर पुराणे कर्मोको क्षय कर मोक्षपद प्राप्त करना चाहिये इति।

सेवंभंते सेवंभंते तमेवसच्चम्

—•◦•◎•◦•—

पुस्तकोंसे तकीयेका काम लेना। पुस्तकों की भंडारमें पड़े पड़े सडने देना किन्तु उनोंका सदुपयोग न होने देना उदरपोषणके लक्षसे रखकर पुस्तके बेचना इनोंके सिवाय भी ज्ञान द्रव्यकि आमदको तोड़ना ज्ञानद्रव्यका भक्षण करना इत्यादि कारणोंसे ज्ञानावर्णीय कर्मोका बन्ध होता है अगर उत्कृष्ट बन्ध हो तो तीस क्रोडाक्रोड सागरोपम के कर्म बन्ध होनेसे इतनेकाल तक कोमी कीस्मका ज्ञान हो नहीं सकते है वास्ते मोक्षार्थी जीवोंको ज्ञान आशातना टालके ज्ञानको भक्ति करना-पढनेवालोंकों साहिता देना पढनेवालोंको साधन वस्त्र भोजन स्थान पुस्तकादि देना।

(२) दर्शना वरणीय कर्मबन्धका हेतु—दर्शनी साधु भगवान् तथा जिनमन्दिर जैनमूर्ति जैन सिद्धान्त यह सब दर्शनके कारण है इनोंकी अभक्ति आशातना अवज्ञा करना तथा साधन इन्द्रियों-का अनिष्ट करना इत्यादि जेसे ज्ञानविर्णिय कर्म बन्धके हेतु कहा है इसी माफीक स्वल्पही दर्शनावर्णियकर्मका भी समझना। बन्ध और मोक्षमें मुख्य कारण आत्मा के परिणाम है वास्ते ज्ञान और ज्ञानसाधना तथा दर्शनी (साधु) और दर्शन साधनोंके सन्मुख अप्रीती अभक्ति आशातना हीलना यह कर्मबन्धके हेतु है वास्ते यह बन्धहेतु छोडके आत्माके अन्दर अनंत ज्ञानदर्शन भरा हुवा है उसको प्रगट करनेका हेतु है उनोंसे प्रेमस्नेह और अन्तमें रागद्वेषका क्षयकर अपनि निज वस्तुवोंके प्राप्त कर लेना यहही विद्वानोंका काम है

(३) वेदनियकर्म दो प्रकारसे बन्धता है (१) साताबे-दनिय (२) असातावेदनिय जिस्मे सातावेदनियकर्मबन्धके हेतु जैसे गुरुओंकी सेवा भक्ति करना अपनेसे जो श्रेष्ट है वह गुरु जैसे माता पिता धर्माचार्य विद्याचार्य कलाचार्य जेष्ट भ्रातादि उसका विनय करना यावत् अपनेसे बदला लेनेकी सामर्थ्य होनेपर भी

क्रियासे ही मोक्षमार्ग मानना मोक्षमार्गका अन्धा करना याने नास्ति है इस लोक परलोक पुन्य पाप आदिकी. नास्ति करना खाना पीना ऐस आराम भोग विलास करनेका उपदेश करना इत्यादि उपदेश दे भद्रीक जीवोंको सन्मार्गसे पतितकर उन्मार्ग के सन्मुख करवा देना. जिनेन्द्रभगवानकी या भगवानके मूर्तिकि तथा चतुर्विध संघकि निंदा करने समवसरण—चत्र छत्रादिका उपभोग करनेवालेमें वीतरागत्व हो ही न सके इत्यादि कहना—जिनप्रतिमाकी निंदा करना पूजा प्रभावना भक्तिके हानि पहुंचना सूत्र सिद्धान्त गुरु या पूर्वाचार्योंकी तथा महान् ज्ञानसमुद्र जैसे ग्रन्थोकी निंदा करना यह सर्व दर्शन मोहनियकर्म बन्धके हेतु है जिनोंसे अनंतकाल तक वीतरागका धर्म मीलनाभी असंभव हो जाता है।

चारित्र मोहनिय कर्म बन्धके हेतु—जैसे चारित्रपर अभाव लाना. चारित्रवन्त कि निंदा करना मुनि के मल-मलीन गात्र वस्त्र देख दुर्गच्छा करना सगाय अध्यावसाय रखना. व्रत करके खंडन करना विषय भोगों कि अभिलाषा करना यह सब चारित्र मोहनीयकर्म बन्धका हेतु है जिस चारित्र मोहनियका दो भेद है (१) कषाय चारित्र मोहनिय (२) नोकषाय चारित्र मोहनीय-जिस्मे कषाय चारित्र मोहनिय जैसे अनंतानुबन्धी क्रोध मान माया लोभ करनेसे अनन्तानुबन्धी आदिका बन्ध एवं अप्रत्याख्यानी—प्रत्याख्यानी और संज्वलन इनोंके करनेसे कषाय चारित्र मोहनीय कर्मबन्धता है तथा भांड जसी कुचेष्टा करना हांसी करना कतुहल करना दुसरोंकी हांसी विस्मय कराना इत्यादि इनोंसे हास्य मोहनिय कर्मबन्ध होता है। आरंभमे खुशी माननेवाला मेला खेला देखनेका हो चक्षुलालुपी देशदेशके नया नया नाटक देखना चित्रचित्रामादि खींचना प्रसमे दुसरोंसे

गांभीर्य सर्व जनसे प्रिति गुणानुरागी उदार परिणामि इत्यादि कारणोंसे जीव मनुष्यका आयुष्य बन्धता है। सराग संयम, संयमासंयम अकाम निर्ज्जरा बाल तपस्वी देवगुरु मातापितादिका विनय भक्ति करे देव पूजन सत्यका पक्ष गुणोंका रागी निष्कपटी संतोषी ब्रह्मचर्य व्रत पालक अनुकम्पा सहित श्रमणोपासक शास्त्ररागी भोग त्यागी इत्यादि कारणोंसे जीव देवायुष्य बान्धता है।

(६) नामकर्मकि दो प्रकृति है (१) शुभनामकर्म (२) अशुभ नामकर्म जिन्मे सरल स्वभावी-माया रहित मन वचन काया वैपार जिस्का एकसा हो वह जीव शुभनामको बन्धता है गौर्वरहित याने ऋद्धिगौर्व रसगौर्व, सातागौर्व इन तीनों गौर्वसे रहित होना पापसे डरनेवाला क्षमावान्त मर्दवादि गुणोंसे युक्त परमेश्वरकि भक्ति गुरु वन्दन तत्वज्ञ राग द्वेष पतले गुणग्राही हो एसे जीव शुभ नामकर्म उपार्जन कर सकते है। दुसरा अशुभ नामकर्म-जैसे मायावी जिनोंके मन वचन कायाकि आचारणा में और बतलाने में भेद है। दुसरों के ठगनेवाले जूटी गवाही देनेवाले। घृत में चरबी दुद्ध में पाणी या अच्छी वस्तु में बुरी वस्तु मीला के वेचने वाले। अपनि तारीफ और दुसरोंकी निंदा करनेवाले वैश्यावों के वस्त्रालंकार दे दुसरे को अव्रत में पतित बनानेवाले इत्यादि देवद्रव्य ज्ञानद्रव्य साधारणद्रव्य खानेवाले विश्वासघात करने वाले इत्यादि कारणों से जीव अशुभ नामकर्म उपार्जन कर संसार में परिभ्रमन करते है

(७) गोत्रकर्म कि दो प्रकृति है १ उच्चगोत्र २ निचगोत्र-जिन्मे जिस्को व्यक्ति में दोषों के रहते हुवे भी उनका विषय में उदासीन सिर्फ गुणों का ही देखनेवाले है। आठ प्रकार के मदों से रहित अर्थात जातिमद कुलमद बलमद, चोथो रूपमद, श्रुत-

थोकडा नम्बर ४३

(कर्म प्रकृति विषय.)

ज्ञानगुण दर्शनगुण चारित्रगुण और वीर्यगुण यह च्यार चैतन्य के मूल गुण है जिस्कों कोनसी कर्म प्रकृति चैतन्य के सर्व गुणों कि घातक है और कोनसी कर्म प्रकृति देश गुणों कि घातक है यह इस थोकडा द्वारा बतलाते है।

केवलज्ञानावर्णिय केवल दर्शनावर्णिय मिथ्यात्व मोहनिय, निद्रा, निद्रा निद्रा, प्रचलानिद्रा, प्रचलाप्रचलानिद्रा, स्त्यानर्द्धि निद्रा अनंतानुबन्धी क्रोध-मान-माया-लोभ, अप्रत्याक्यानि क्रोध-मान-माया-लोभ, प्रत्याक्यानि क्रोध-मान-माया-लोभ एवं २० प्रकृति सर्व घाती है।

मतिज्ञानावर्णिय श्रुतिज्ञानावर्णिय अवधिज्ञानावर्णिय मनःपर्यवज्ञानावर्णिय-चक्षुदर्शनावर्णिय अचक्षुदर्शनावर्णिय अवधि दर्शनावर्णिय संज्वलनका क्रोध-मान-माया लोभ-हास्य भय शोक जुगप्सा रति अरति स्त्रिवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद दानान्तराय लाभान्तराय भोगान्तराय उपभोगान्तराय वीर्यान्तराय एवं २५ प्रकृति देशघाती है तथा मिश्रमोहनिय सम्यक्त्वमोहनिय यह दो प्रकृति भी देशघाती है।

शेष प्रत्येक प्रकृति आठ शरीरपांच, अंगोपांगतीन, संहनन छ संस्थान छे गतिच्यार जातिपांच विहायोगति दो, अनुपूर्वी आयुष्यच्यार त्रसदशक स्थावरदशक वर्णादिच्यार गोत्रदो २ प्रकृति एवं ७५ प्रकृति अघाती है।

थोकडा नम्बर ४२ मे आठ कर्मो कि १५८ प्रकृति है जिसमें

शरीर नाम तीन शरीरके आंगोपांग नाम छे संहनन छे संस्थान उपघात नाम साधारण नाम प्रत्येक नाम उद्योत नाम आताप नाम पराघात नाम एवं ३६ प्रकृतियां पुद्गल विपाकी है एवं ४-७८-४-३६ कुल १२२ प्र० उदय।

परावर्तन प्रकृतियों-एक दुसरे के बदलेमें बन्ध सके-यथा शरीरतीन आंगोपांगतीन संहनन छे संस्थान छे जातिपांच गति च्यार विहागतिदो अनुपूर्वीच्यार वेदतीन दोयुगलके च्यार यशायशोदो उद्योत आताप उच्चगौत्र निचगौत्र वेदनिय-साता-असाता निद्रापांच त्रसकीदश स्थावरकीदश नरकायुष्य तीर्यंचायुष्य मनुष्यायुष्य देवायुष्य एवं ९१ प्रकृति परावर्तन है।

शेष ५७ प्रकृति अपरावर्तन याने जीसकी जगह वह ही प्रकृति बन्धती है उसे अपरावर्तन कहते है। शेष आगे बांधा कर्मप्रयाधिकारे लिखा जायेगा

सेवं भंते सेवं भंते—तमेव सच्चम्.

थोकडा नंबर ४४

(कर्म ग्रंथ दूसरा)

मूल कर्म आठ है जिनकी उत्तर प्रकृति १४८ जिनके नाम थोकडा नं० ४२ मे लिख आये है वहां देख लेना इन १४८ प्रकृतियोंमें से बंध, उदय, उदीरणा, और सत्ता किस २ गुणस्थान मे कितनी २ प्रकृतियांकी है सो लिखते है

(प्र० गुणस्थानक किसे कहते है ?

[illegible]
परन्तु [illegible] अधिक नहीं बन सकता।

(उत्तर) जिस तरह शिव (मोक्ष) मंदिर पर चढने के लिये पायडिया (सीडी) है उसी तरह कर्म शत्रु को विदारने के लिये जीव के शुद्ध. शुद्धतर, शुद्धतम अध्यवसाय विशेष. यद्यपि अध्यवसाय असंख्याते है. परन्तु स्थूल याने व्यवहार नयसे १४ स्थान कहे हैं यथा मिथ्यात्व १ सास्वादन २ मिश्र ३ अविरति सम्यग्दृष्टि ४ देशविरति ५ प्रमत्त संयत ६ अप्रमत्त संयत ७ निवृत्ति बादर ८ अनिवृत्ति बादर ९ सूक्ष्म संपराय १० उपशांत मोह वीतराग ११ क्षीणमोह वीतराग छद्मस्थ १२ सयोगी केवली १३ और अयोगी केवली १४ यह चवदे गुणस्थानक हैं

पहिले बताई हुई १४८ प्रकृतियों में से वर्णादिक १६ पांच शरीरका बंधन ५ संघातन ५. और मिश्र मोहनीय १ सम्यक्त्व मोहनीय १ एवम् २८ प्रकृति कम करनेसे शेष १२० प्रकृतिका समुचय बंध है ।

(१) मिथ्यात्व गुणस्थानक में १२० प्रकृतियोंमें से तीर्थंकर नामकर्म १ आहारक शरीर २ आहारक अंगोपांग ३ तीन प्रकृतियोंका बंध विच्छेद होनेसे बाकी ११७ प्रकृतियोंका बंध है.

(२) सास्वादन गुणस्थानक में नरक गति १ नरकायुष्य २ नरकानुपूर्वी ३ एकेन्द्रि ४ बेइन्द्री ५ तेइन्द्री ६ चौरिन्द्री ७ स्थावर ८ सूक्ष्म ९ साधारण १० अपर्याप्ता ११ हुंडक संस्थान १२ आतप १३ छेवट्ठं संहनन १४ नपुंसक वेद १५ मिथ्यात्व मोहनीय १६ ये सोला प्रकृति का बंध विच्छेद होनेसे १०१ प्रकृति का बंध है

(३) मिश्र गुणस्थानक में पूर्वोक्त १०१ प्रकृति में से तिर्यंचगति १ तिर्यंचायुष्य २ तिर्यंचानुपूर्वी ३ निद्रा निद्रा ४ प्रचला प्रचला ५ थीणद्धी ६ दुर्भाग ७ दुस्वर ८ अनादेय ९ अनंतानुबंधी क्रोध १० मान ११ माया १२ लोभ १३

ऋषभ नाराच संघयण १४ नाराचसंघयण १५ अर्द्ध नाराच सं० १६ कीलिका सं० १७ न्यग्रोध संस्थान १८ सादि संस्थान १९ वामन सं० २० कुब्ज सं० २१ नीचगोत्र २२ उद्योत नाम २३ अशुभविहायोगति २४ स्त्री वेद २५ मनुष्यायु २६ देवायुः २७ सत्ताईस प्रकृति छोडकर शेष ७४ का बंध होय.

(४) अविरति सम्यग्दृष्टि गुणस्थानक में मनुष्यायुष्य १ देवायुष्य २ तीर्थंकर नाम कर्म ३ यह तीन प्रकृतियोंका बंध विशेष करे इस वास्ते ७७ प्रकृति का बंध होय.

(५) देशविरति गुणस्थानक पूर्व ७७ प्रकृति कही उसमें से वज्रऋषभनाराचसंघयण १ मनुष्यायु २ मनुष्यजाति ३ मनुष्यानुपूर्वी ४ अप्रत्याख्यानी क्रोध ५ मान ६ माया ७ लोभ ८ औदारिक शरीर ९ औदारिक अंगोपांग १० इन दश प्रकृतियों का अबंधक होने से शेष ६७ प्रकृति बांधे.

(६) प्रमत्त संयत गुणस्थानक में प्रत्याख्यानी क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४ का विच्छेद होनेसे शेष ६३ प्रकृति बांधे.

(७) अप्रमत्त संयत गुणस्थानक में ५९ प्रकृतिका बंध है. पूर्व ६३ प्रकृति कही जिसमेंसे शोक १ अरति २ अस्थिर ३ अशुभ ४ अयश ५ असाता वेदनीय ६ इन छे प्रकृतियोंका बंध विच्छेद करे और आहारक शरीर १ आहारक अंगोपांग २ विशेष बांधे तब ५९ प्रकृतिका बंध करे. अगर देवायुष्य न बांधे तो ५८ प्रकृतिका बंध करे [illegible] गुणस्थानकमें [illegible] आयुष्यका बंध [illegible]

[illegible] है जिसके [illegible] अथवा [illegible] और

थोकडा नं. ४५



(उदय)

समुच्चय १४८ प्रकृति में से १२२ प्रकृति का ओघ उदय है. बंधकी १२० प्रकृति कही उसमें से समकित मोहनीय १ मिश्रमोहनीय २ ये दो प्रकृति उदयमें ज्यादा है क्योंकि इन दो प्रकृतियों का बंध नहीं होता परन्तु उदय है।

(१) मिथ्यात्व गुणस्थानक में ११७ का उदय होय क्योंकि सम्यक्त्व मोहनीय १ मिश्रमोहनीय २ जिन नाम ३ आहारक शरीर ४ आहारक अंगोपांग ५ ये पांच का उदय नहीं है.

(२) सास्वादनगुण० १११ प्र० का उदय है. मिथ्यात्व में ११७ का उदय था उसमें से सूक्ष्म १ साधारण २ अपर्याप्ता ३ आताप ४ मिथ्यात्व मोहनीय ५ और नरकानुपूर्वी ६ इन छ प्रकृतियोंका उदय विच्छेद हुवा.

(३) मिश्रगुण० में १०० प्रकृतिका उदय होय क्योंकि अनंतानुबन्धी चोक ४ एकेंद्री ५ विकलेंद्री ८ स्थावर ९ तिर्यंचानुपूर्वी १० मनुष्यानुपूर्वी ११ देवानुपूर्वी १२ इन बारे प्रकृतियोंका उदय विच्छेद होने से शेष ९९ प्रकृति रही. परन्तु मिश्रमोहनीय का उदय होय इस वास्ते १०० प्रकृतिका उदय कहा।

(४) अविरती सम्यग्दृष्टी गुण० में १०४ का उदय होय क्योंकि मनुष्यानुपूर्वी १ तिर्यंचानुपूर्वी २ देवानुपूर्वी ३ नरकानुपूर्वी ४ और सम्यक्त्व मोहनीय ५ इन पांच प्रकृतिका उदय मिलता होय और मिश्रमोहनीय का उदय विच्छेद होय. इस वास्ते १०४ प्रकृतिका उदय कहा

(५) देशविरति गुण० में ८७ प्रकृतिका उदय होय क्यो

और निद्रा निद्रा एवम् ४ प्रकृति का उदय विच्छेद होने से शेष ५९ का उदय होय.

(१३) सयोगी केवली गुण० में ज्ञानावरणीय ५ दर्शनावरणीय ४ अन्तराय ५ एवम् १४ प्रकृति का उदय विच्छेद होने से ४१ प्रकृति और तिर्थंकर नाम कर्म को मिलाकर ४२ प्रकृति का उदय होय.

(१४) अयोगी गुण० में १२ प्रकृति का उदय होय मनुष्य गति १ मनुष्यायु २ पंचेन्द्री ३ सौभाग्य नाम कर्म ४ त्रस ५ बादर ६ पर्याप्ता ७ उच्चैर्गोत्र ८ आदेय ९ यशःकीर्ति १० तिर्थंकर नाम ११ वेदनी १२ ये बारे प्रकृतियों का उदय चरम समय विच्छेद होय. ॥ इति उदयद्वार समाप्तम ॥

अथ 'उदीरणा अधिकार' कहते है. पहिले गुण स्थानक से छट्ठे गुण स्थानक तक जैसे उदय कहा वैसे ही उदीरणा भी कहनी. और सात में गुण स्थानक से तेरवें गुण स्थानक तक जो [illegible] उदय प्रकृति कही है उसमें से साता वेदनीय १ असाता वेदनीय २ और मनुष्यायु ३ ये तीन प्रकृति कम करदे शेष प्रकृति रहे सो उदीरणा समझ कहना. चौदवें गुण स्थानकमें उदीरणा नहीं

॥ इति उदीरणा समाप्तम् ॥

—

थोकडा नं ४६

[illegible]

[illegible]

[illegible]

नवमें गु० के पांचवें भाग में ११२ प्र० की सत्ता. स्त्रीवेद का विच्छेद हो.

नवमें गु० के छट्ठे भागमें १०६ प्र० की सत्ता. हास्य १ रति २ अरति ३ शोक ४ भय ५ जुगुप्सा ६ इन प्रकृतियों का सत्ता विच्छेद होय.

नवमें गु० के सातवें भाग में १०५ प्र० की सत्ता. पुरुषवेद निकला.

नवमें गु० के आठवें भागमें १०४ प्र० की सत्ता संज्वलन का क्रोध निकला.

नवमें गु० के नववें भाग में १०३ प्र० की सत्ता. संज्वलन का मान निकला

दशवें गु० १०२ की सत्ता हो. वहां संज्वलन कि माया का विच्छेद हुआ.

इग्यारवें गु० में १०१ की सत्ता हो वहां संज्वलन के लोभकी सत्ता विच्छेद हुई

बारवें गुण० में १०१ की सत्ता द्विचरम समयतक रहे है वहां निद्रा १ प्रचला २ इन दो प्रकृतियों का अन्त करे चरम समय ९९ की सत्ता रहे।

[illegible] की सत्ता [illegible] हुई

[illegible] की सत्ता रहे [illegible]

रुपिया देना पडता है, वैसेही कर्मका अबाधाकाल पूर्ण होनेपर कर्म उदयमें आते हैं. उस वरून भोगना पडता है. हुंडीकी मुदत पकने के पहिलेही रुपिया दे दिया जाय, तो लेनदार मांगनेको नहीं आता. इसी तरह कर्मोंके अबाधाकालमें पूर्व तप संयमादिसे कर्म क्षय कर दिये जाय तो, कर्मविपाको भोगने नहीं पडते. (अर्जुनमालीवत्)

अबाधाकाल चार प्रकारका है. यथा.

(१) जघन्य स्थिति और जघन्य अबाधाकाल. जैसे दशवें गुणस्थानकमें अंतरमुहूर्त स्थितिका कर्मबंध होता है, और उनका अबाधाकाल भी अंतरमुहूर्तका है.

(२) उत्कृष्ट स्थिति और उत्कृष्ट अबाधाकाल. जैसे मोहनीयकर्म उ० स्थिति ७० कोडाकोडी सागरोपमकी है. और अबाधाकाल भी ७००० वर्षका है.

(३) जघन्य स्थिति और उत्कृष्ट अबाधाकाल. जैसे मनुष्य तिर्यंच, क्रोड पूर्वका आयुष्यवाला क्रोड पूर्वके तीसरे भागमें मनुष्य या तिर्यंच गतिका अल्प आयुष्य बांधे. तो क्रोड पूर्व के तीजे भागका अबाधाकाल और अंतर महूर्तका आयुष्य.

(४) उत्कृष्ट स्थिति और जघन्य अबाधाकाल. जैसे अंत (मुहूर्त) अंतरमुहूर्तमें ३३ सागरोपमका उ० नरकका आयुष्य बांधे.

मूल कर्म आठ ज्ञानावरणीय १ दर्शनावरणीय २ वेदनीय ३ मोहनीय ४ आयुष्य ५ नाम ६ गोत्र ७ अंतराय ८ समुच्चय जीव और २४ दंडक के जीवोंके आठों कर्म है

मूल आठों कर्मोंकी उत्तर प्रकृति १४८ यथा ज्ञानावरणीय ५ दर्शनावरणीय ९ वेदनीय २ मोहनीय २८ आयुष्य ४ नामकर्म [illegible] और अंतराय कर्मकी ५ एवम् १४८ ओरमें

मोहनीय कर्मकी २८ प्रकृतिमेंसे सम्यक्त्व मोहनीय और मिश्र मोहनीयका बंध नहीं होता. बाकी १२६ प्रकृति बंधती है.

इनमें प्रकृति १२६ की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति और अबाधाकाल कितना है तथा बंधाधिकारी कौन २ है ?

मतिज्ञानावरणीय १ श्रुत ज्ञानावरणीय २ अवधिज्ञानावरणीय ३ मनःपर्यव ज्ञानावरणीय ४ केवल ज्ञा० ५ चक्षु द० ६ अचक्षु द० ७ अवधि द० ८ केवल द० ९ दानांतराय १० लाभां० ११ भोगां० १२ उपभोगां० १३ वीर्यां० १४ इन चौदा प्रकृतियोंको समुच्चय जीव बांधे तो जघन्य अंतरमुहूर्त तथा निद्रा १ निद्रानिद्रा २ प्रचला ३ प्रचला प्रचला ४ थीणद्धी ५ और असातावेदनीय ६ यह छः प्रकृति समुच्चय जीव बांधे तो जघन्य १ सागरोपमका सातिया तीन भाग पल्योपमके असंख्यातमे भाग ऊणा जघन्य और उत्कृष्ट स्थितिबंध इन बीसों प्रकृतियोंका ३० कोडाकोडी सागरोपम और अबाधाकाल ३००० वर्षका है. यही बीस प्रकृति एकेंद्री बांधे तो जघन्य १ सागरोपम पल्योपमके असंख्यातमें भाग ऊणी बेइन्द्री जघन्य २५ सा० पल्यो० के असं० भाग ऊणी तेइन्द्री ५० सा० पल्यो० के असं० भाग ऊणी चौरिंद्री १०० साग० पल्यो० के असं० भाग ऊणी. और असन्नी पंचेन्द्री हजार साग० पल्योपमके असंख्यातमें भाग ऊणी बांधे तथा उत्कृष्ट स्थिति एकेन्द्री १ सागरोपम बेइन्द्री २५ साग० तेइन्द्री ५० साग० चौरिन्द्री १०० साग० असंज्ञी पंचेन्द्री हजार साग. और संज्ञी पंचेन्द्री जघन्य १४ प्रकृति अंतर मुहूर्त और ६ प्रकृति अंतः कोडाकोडी सागरोपमकी बांधे उत्कृष्ट बीस प्रकृतिकी स्थिति और अबाधाकाल समुच्चय जीववत्।

३० कोडाकोडी सागरोपमकी स्थिति वाले सामान्यसे तीन हजार वर्ष अबाधाकाल है इसीही पंचेन्द्रियादिक सबमें समझ लेना.

अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ, अप्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ, प्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ; और संज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभ, इन सोलह प्रकृतियोंमेंसे प्रथमकी १२ प्रकृति समुच्चय जीव बांधे तो, जघन्य १. सागरोपमका सातिया ४ भाग पल्योपमके असंख्यातमें भाग ऊणी. और संज्वलनका क्रोध २ महीना. मान १ महीना, माया १५ दिन और लोभ अंतर मुहूर्तका बांधे. उत्कृष्ट १६ प्रकृतिका स्थितिबंध ४० कोडाकोडी सागरोपम. और अबाधाकाल ४ हजार वर्षका है ॥ यही सोलह प्रकृति एकेन्द्री जघन्य १ साग० बेइन्द्री २५ सा० तेइन्द्री ५० साग० चौरिन्द्री १०० साग० असंज्ञी पंचेन्द्री १ हजार साग० पल्योपमके असंख्यातमें भाग ऊणी सर्व स्थान और उत्कृष्ट सब ओघ पूरी २ बांधे, संज्ञी पचेन्द्री १२ प्रकृति जघन्य अंतः कोडाकोडी सागरोपम तथा ४ प्रकृति पहिले लिखी उस मुजब बांधे. और उत्कृष्ट सोलहो प्रकृतिका स्थितिबंध तथा अबाधाकाल समुच्चय जीववत् समझना।

भय १ शोक २ जुगुप्सा ३ अरति ४ नपुसक वेद ५ नरकगति ६ तिर्यंचगति ७ एकेन्द्री ८ पंचेन्द्री ९ औदारिक शरीर १० " बंधन ११ अंगोपांग १२ और संघातन १३ वैक्रियशरीर १४ बन्धन १५ अंगोपांग १६ तथा संघातन १७ तैजस शरीर १८ " बंधन १९ संघातन २० कारमण शरीर २१ कारमण शरीरका बंधन २२ तस्य संघातना २३ छेवट्ठसंहनन २४ हूंडक संस्थान २५ कृष्ण वर्ण २६ तिक्तरस २७ दुर्गन्धि २८ करकश स्पर्श २९ गुरु स्पर्श ३० शीत स्पर्श ३१ रुक्ष स्पर्श ३२ नरकानुपूर्वी ३३ तिर्यंचानुपूर्वी ३४ अशुभगति ३५ उश्वास ३६ उद्योत ३७ आतप ३८ पराघात ३९ उपघात ४० अगुरु लघु ४१ निर्माण ४२ त्रस ४३ बादर ४४ ४६ अस्थिर ४७ अशुभ ४८ दुर्भाग्य ४९ दु: स्वर ५० अनादेय ५१ स्थावर ५२ और नीच गोत्र

स्थबन्ध १२ मुहूर्त और शेष पांच प्रकृतियोंका जघन्य स्थितिबन्ध १ सागरोपमका सातिया १ ॥ भाग प० अ० ऊणी. उत्कृष्ट प्रकृतिका बन्ध १८ कोडाकोडी सागरोपम और अबाधाकाल १८ सौ वर्षका है. एकेन्द्री यावत् असंज्ञी पंचेन्द्री पूर्ववत् १-२५-५० १००-१००० सा० और संज्ञी पंचेन्द्री शातावेदनीय जघन्य १२ मुहूर्त शेष पांच प्रकृति जघन्य अंतः कोडाकोडी साग० की बांधे, उत्कृष्ट बंध समुच्चयवत् ?।

बेइन्द्रिय १ तेइन्द्रिय २ चौरिन्द्रिय ३ सूक्ष्म ४ साधारण ५ अपर्याप्ता ६ कीलिकासंहनन ७ और कुब्जसंस्थान ८ ये आठ प्रकृतिका समुच्चय जीव जघन्य १ सागरोपमका पैतीसीया ९ भाग पल्योपमके असंख्यातमे भाग ऊणी. और उत्कृष्ट १८ कोडाकोडी सागरोपमकी बांधे. अबाधाकाल १८०० वर्षका। एकेन्द्री यावत् असंज्ञी पंचेन्द्री पूर्ववत् १-२५-५० १०० १००० सागरोप. प० संज्ञी पचेन्द्री जघन्य अंत कोडाकोडी सागरोपम उत्कृष्ट समुच्चयवत्.
स्थबन्ध १२ मुहूर्त और शेष पांच प्रकृतियोंका जघन्य स्थितिबन्ध १ सागरोपमका सातिया १॥ भाग प० अ० ऊणी. उत्कृष्ट

आहारक शरीर १ तस्य बंधन २ अंगोपांग ३ संघातन ४ और जिननाम ५ ये पांच प्रकृति समुच्चय बांधे तो, जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्ट अंतः कोडाकोडी सागरोपम, एवम् संज्ञी पंचेन्द्री ॥

मिथ्यात्व मोहनी समुच्चयजीव बांधे तो. जघन्यबंध १ सागरोपम उत्कृष्ट ७० कोडाकोडी साग० अ० काल ७ हजार वर्ष. एकेन्द्री यावत् पचेन्द्री पूर्ववत् और संज्ञी पचेन्द्री जघन्य अंत कोडाकोडी सागरोपम उत्कृष्ट समुच्चयवत्

ऋषभनाराच संहनन १ न्यग्रोध संस्थान २ ये दो प्रकृति समुच्चय जीव बांधे तो जघन्य १ सागरोपमका पैतीसिया ६ भाग पल्योपमके असंख्यातमे भाग ऊणी उत्कृष्ट १२ कोडाकोडी सा ... अबाधाकाल १२०० वर्ष एकेन्द्री यावत् असंज्ञी

थोकडा नं. ४८.

श्री भगवतिसूत्र शतक ८ उ० १०

(कर्म विचार.)

लोकके आकाशप्रदेश कितने है ?

असंख्यात है.

एक जीवके आत्मप्रदेश कितने है ?

असंख्यात है. (जितने लोकाकाशके प्रदेश है, उतनेही एक जीवके आत्मप्रदेश है.)
कर्मोकी प्रकृति कितनी है ?

आठ—यथा ज्ञानावर्णीय, दर्शनावर्णीय, वेदनी, मोहनी, आयुष्य, नाम, गोत्र, और अंतराय, नरकादि चोवीस दंडकके जीवोंके आठ कर्म है. परंतु मनुष्योंमे आठ, सात, और च्यार भी पाये जाते है. (वीतराग केवली कि अपेक्षा)

ज्ञानावर्णीय कर्मके अविभाग पलोछेद (विभाग) कितने है ?

अनंत है एवम् यावत अन्तरायकर्मके नरकादि चोवीस दंडकमें कहना

एक जीवके एक आत्मप्रदेशपर ज्ञानावर्णीय कर्मकी कितनी अंघेडा पयेडी (कर्मका आंटा जैसे नाकलेपर सूतका आंटा) है ?

कितनेक जीवोंके है और कितनेक जीवोंके नहीं है (केवलीके नहीं) जिन जीवोंके है उनके नियमा अनंती २ है एवम् दर्शनावर्णीय, मोहनी, और अंतरायकर्मभी यावत् आत्माके
—————प्रदेशपर समझ लेना

समुच्चय एक जीव वेदनीय कर्म बांधता हुवा ७-८-६-१ कर्म बांधे. इसी माफिक मनुष्य भी ७-८-६-१ कर्म बांधे. शेष २३ दंडकके एक एक जीव ७-८ कर्म बांधे।

समुच्चय घणा जीव वेदनीय कर्म बांधता ७-८-६-१ बांधे, जिसमें ७-८-१ कर्म बांधनेवाले शाश्वता और ६ कर्म बांधनेवाले अशाश्वता जिसका भांगा ३।

(१) ७-८-१ कर्म बांधनेवाला घणा (शाश्वता)

(२) ७-८-१ का घणा और छ कर्म बांधनेवाला एक।

(३) ७-८-१ का घणा और छे कर्म बांधनेवाले घणा।

घणा नारकीका जीव वेदनीय कर्म बांधता ७-८ कर्म बांधे, जिसमें ७ कर्म बांधनेवाले शाश्वते और ८ कर्म बांधनेवाले अशाश्वते जिसका भांगा ३। (१) सात कर्म बांधनेवाले घणा। (२) सात कर्म बांधनेवाले घणा और ८ कर्म बांधनेवाला एक। (३) सात कर्म बांधनेवाले घणा ८ कर्म बांधनेवाले घणा। एवं १० भुवनपति ३ विकलेंद्री, तिर्यंच, पंचेंद्री, व्यंतर, ज्योतिषी, वैमानिक, नरकादि १८ दंडकमें तीन भांगा तीनसो१५४ भांगा हुवा।

पृथ्व्यादि पांच स्थावरमें सात कर्म बांधनेवाले घणा और ८ कर्म बांधनेवाले भी घणा वास्ते भांगा नहीं हुवे है।

घणा मनुष्य वेदनीय कर्म बांधता ७-८-६-१ कर्म बांधे जिसमें ७-१ कर्म बांधनेवाले घणा जिसका भांगा ९

१ का	७	६	७-१ का	८	१	६
१ घणा	३	३	३		३	१
३	३	३	३		३	३
३	३	३	३		३	१
३		१	३		३	३
		३	[illegible]			

समुच्चय जीवका भांगा ३ अठारे दंडकका ५४ मनुष्यका ९ सर्व ६६ भांगा हुवा इति ।

समुच्चय एक जीव मोहनीय कर्म बांधता ७-८ कर्म बांधे एवं २४ दंडक ।

समुच्चय घणा जीव मोहनीय कर्म बांधतां ७-८ कर्म बांधे जिसमें ७ कर्म बांधनेवाले घणा और आठ कर्म बांधनेवाले भी घणा इसी माफिक ५ स्थावर भी समझ लेना ।

घणा नारकीका जीव मोहनीय कर्म बांधतां ७-८ कर्म बांधे जिसमें ७ कर्म बांधनेवाले सास्वता ८ का असास्वता जिसका भांगा ३ ।

(१) सात कर्म बांधनेवाले घणा (सास्वता)

(२) „ „ „ आठ बांधनेवाला एक

(३) „ „ „ „ घणा

एवं पांच स्थावर वर्जके १९ दंडकमें समझ लेना ५७ भांगा हुवा ।

समुच्चय एक जीव आयुष्य कर्म बांधतां नियमा ८ कर्म बांधे एवं नरकादि २४ दंडक इसी माफिक घणा जीव आश्रयी समुच्चय जीव और २४ दंडकमें भी नियम ८ कर्म बांधे इति ।

भांगा ३३०-६६-५७ सर्व मीली ४५३ भांगा हुवा ।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्.

—✻—

थोकडा नम्बर ५०

(सूत्र श्री पन्नवणाजी पद २५)

(बांधतो वेदे)

मूल कर्म प्रकृति आठ यावत् पद २४ के माफिक समझना।

समुच्चय एक जीव ज्ञानावर्णीय कर्म बांधतो हुवो नियमा आठ कर्म वेदे कारण ज्ञानावर्णीय कर्म दशमा गुणस्थान तक बांधे है वहां आठ ही कर्म मौजूद है सो वेद रहा है एवं नरकादि २४ दंडक समझना।

समुच्चय घणा जीव ज्ञानावर्णीय कर्म बांधते हुवे नियमा आठ कर्म वेदे यावत् नरकादि २४ दंडकमें भी आठ कर्म वेदे।

एवं वेदनीय कर्म वर्जके शेष दर्शनावर्णीय, मोहनीय, आयुष्य नाम, गोत्र, अन्तराय कर्म भी ज्ञानावर्णीय माफिक समझना।

समुच्चय एक जीव वेदनीय कर्म बांधे तो ७-८-४ कर्म वेदे कारण वेदनीय कर्म तेरहवां गुणस्थान तक बांधते है। एवं मनुष्य भी समझना शेष २३ दंडक नियमा ८ कर्म वेदे।

समुच्चय घणा जीव वेदनी कर्म बांधते हुवे ७-८-४ कर्म वेदे एवं मनुष्य शेष २३ दंडक के जीव नियमा आठ कर्म वेदे।

समुच्चय जीव ७-८-४ कर्म वेदे नियमा [illegible] कर्म [illegible] [illegible] और ७ कर्म [illegible] [illegible] नियमा [illegible]

[illegible] कर्म [illegible] कर्म वेदनेवाले घणा।

[illegible] कर्म वेदनेवाले घणा [illegible] कर्म वेदनेवाला एक

[illegible] कर्म वेदनेवाला [illegible] और [illegible] कर्म वेदनेवाला

[illegible] मनुष्य [illegible] [illegible] इति

[illegible]

घणा मनुष्य में ज्ञानावर्णीय कर्म वेद तो ७-८-६-१ कर्म बांधे जिसमें ७ कर्म बांधने वाला सास्वता शेष ८-६-१ का असास्वता जिसका भांगा २७

	७ कर्म	८ कर्म	६ कर्म	१ कर्म	७ क.	८	६	१
(१)	३	०	०	०	(१५)३	३	०	३
(२)	३	१	०	०	(१६)३	०	१	१
(३)	३	३	०	०	(१७)३	०	१	३
(४)	३	०	१	०	(१८)३	०	३	१
(५)	३	०	३	०	(१९)३	०	३	३
(६)	३	०	०	१	(२०)३	१	१	१
(७)	३	०	०	३	(२१)३	१	१	३
(८)	३	१	१	०	(२२)३	१	३	१
(९)	३	१	३	०	(२३)३	१	३	३
(१०)	३	३	१	०	(२४)३	३	१	१
(११)	३	३	३	०	(२५)३	३	१	३
(१२)	३	१	०	१	(२६)३	३	३	१
(१३)	३	१		३	(२७)३	३	३	३
(१४)	३	३	०	१		एवं भांगा		२७

एवं दर्शनावर्णीय और अन्तराय कर्म भी समझना।

समु० एक जीव वेदनीय कर्म वेदता ७-८-६-१-० (अबांध) कर्म बान्धे एवं मनुष्य शेष २ दंडक ७-८ कर्म बांधे।

समु० घणा जीव वेदनीय कर्म वेदता ७-८-६-१ जिसमें ७ ८-१ का सास्वता और ६ कर्म तथा अबांधे का असास्वता जिसका भांगा ९।

७-८-१	६	अबाध	७-८-१	६	अबांध
३ (घणा)	०	०	३ ,,	१	१
३ ,,	१	०	३ ,,	१	१
३ ,,	३	०	३ ,,	३	१
३ ,,	०	१	३ ,,	३	३
३ ,,	०	३	एवं भांगा ९		

नारकी का जीव वेदनीय कर्म वेदता ७-८ कर्म बांधे जिसमें ७ का सास्वते और ८ कर्म बांधने वाले असास्वते जिसका भांगा ३।

(१) सात का घणा। २ सात का घणा आठको एक (३) सात का घणा और आठ कर्म बांधने वाले भी घणा।

एवं एकेन्द्री का ५ दंडक और मनुष्य वर्ज के १८ दंडक में समझना भांगा ५४। एकेन्द्रियमें भांगा नहीं है।

घणा मनुष्य वेदनीय कर्म वेदता ७-८-६-१-० (अबांध) जिसमें ७-१ कर्म बांधने वाले सास्वते और ८-६-० का असास्वते जिसका भांगा २७

७-१	८			६	०	१८	३		१	१	०
१	३	घणा			०	९	३	.	१	३	०
२	३		१		०	१०	३	.	३		०
३	३		३	०		११	३	.	३	३	०
४	३		०	१	०	१२	३		१	०	१
५	३		०	३	०	१३	३		१	०	१
६	३		०	०	१	१४	३	.	३	०	१
७	३			०	३	१५	३		३		१

(१६)	३	,,	०	१	१
(१७)	३	,,	०	१	३
(१८)	३	,,	■	३	१
(१९)	३	■	०	३	३
(२०)	३	,,	१	१	१
(२१)	३	,,	१	१	३
(२२)	३	,,	१	३	१
(२३)	३	;	१	३	१
(२४)	३	,,	३	१	१
(२५)	३	,,	३	१	१
(२६)	३	,,	३	३	१
(२७)	३	,,	३	३	१

एवं भांगा २७+

समु० एक जीव मोहनीय कर्म वेदतों ७-८-६ कर्म बांधे एवं मनुष्य शेष २३ दंडक ७-८ कर्म बांधे।

समु० घणा जीव मोहनीय कर्म वेदतां ७-८-६ कर्म बांधे जिस्मे ७-८ कर्म बांधने वाले सास्वते ६ कर्म बांधने वाले असास्वते जिसका भांगा ३।

(१) ७-८ कर्म बांधने वाले घणा।

(२) ,, ,, ,, छ कर्म बांधने वाले एक

(३) ,, ,, ,, घणा

घणा नारकी मोहनी कर्म वेदता ७-८ कर्म बांधे जिसमे ७ कर्म बांधने वाले सास्वते और ८ कर्म बांधने वाले असास्वते जिसका भांगा ३।

(१) सात का घणा (२) सात का घणा आठ का एक ३) सात का घणा आठ का भी घणा एवं मनुष्य वर्जी पंचेन्द्री वर्ज १८ दडकोंका भांगा ५४ समझना पचेंद्री में सात कर्म बांधने वाला घणा और आठ कर्म बांधने वाला भी घणा।

घणा मनुष्य में मोहनी कर्म वेदता ७-८-६ कर्म बांधे जिसमें

(१) आठ कर्म वेदने वाले घणा.

(२) „ „ सात का एक.

(३) „ „ , घणा.

मनुष्य वर्जके शेष २३ दंडकमें नियमा ८ कर्म वेदे और मनुष्य में समुच्चय जीवकी माफिक भांगा ३ समझना इसी माफिक दर्शनावर्णीय और अन्तराय कर्म भी समझना.

समु० एक जीव वेदनीय कर्म वेदतां ७-८-४ कर्म वेदे एवं मनुष्य शेष २३ दंडक का जीव नियमा ८ कर्म वेदे.

समु० घणा जीव वेदनीय कर्म वेदता ७-८-४ कर्म वेदे जिसमें ८ ४ कर्म वेदने वाले सास्वता और ७ कर्म वेदने वाले असास्वता भांगा ३

(१) ८-४ का घणा (२) ८-४ का घणा ७ की एक (३) ८-४ का घणा ७ का भी घणा एवं मनुष्य में भी ३ भांगा समझना. शेष २३ दंडक में वेदनीय कर्म वेदता नियमा ८ कर्म वेदे.

वेदनीय कर्म की माफिक आयुष्य, नाम गौत्र कर्म भी समझना

समु० एक जीव मोहनीय कर्म वेदतां नियमा ८ कर्म वेदे एवं २४ दंडक समझना इसी माफिक घणा जीव भी ८ कर्म वेदे.

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

तेरह बोलों में वेदनी कर्म बांधने की नियमा शेष सातों कर्म बांधने की भजना

(११) संयति १ सम्यग्दृष्टि २ भव्य ३ अभाषक ४ पर्याप्ता ५ परत ६ साकारोपयोग ७ अनाकारोपयोग ८ बादर ९ चरम १० और अचरम ११ इन इग्यारे बोलों में आठों कर्म बांधने की भजना

(६) नो संयतिनोअसंयतिनोसंयतासंयति १ नो भव्या-भव्य २ नोपर्याप्तानोअपर्याप्ता ३ नो परतापरत ४ अवेदी ५ और नो सूक्ष्म नो बादर ६ एवम् छे बोलोंमें किसी कर्मका बन्ध नहीं है (अबंधक)

(३) केवलज्ञान १ केवल दर्शन २ नो संज्ञी नो असंज्ञी ३ इन तीनों में वेदनीय कर्म बांधनेकी भजना. बाकी सातों कर्मों का अबंध.

(२) अवेदी १ अनाहारी २ इन दोनों में सात कर्म बांधने की भजना. आयुष्य कर्मका अबंधक और (१) मिश्रदृष्टि में सातों कर्म बांधे आयुष्य न बांधे इति ।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्

थोकडा नम्बर ५८

[illegible]

[illegible]

[illegible]

हे भगवन् ! कर्म कितने प्रकारसे बंधता है ?

दो प्रकारसे-यथा १ ईर्यावहि (केवल योगोंकि प्रेरणा से ११-१२-१३ गुणस्थानक में बंधता है) २ संपराय (कषाय और योगों से पहिले गुणस्थानक से दशवें गुणस्थानक तक बंधता है।

ईर्यावहि कर्म क्या नारकी के जीव बांधे तीर्यंच, तीर्यंचणी मनुष्य, मनुष्यणी देवता देवी बांधते है ?

नारकी, तीर्यंच, तीर्यंचणी देवता, देवी न बांधे शेष मनुष्य और मनुष्यणी, बांधे. भूतकाल में बहुत से मनुष्य और मनुष्य णीयों ने ईर्यावहि कर्म बांधा था और वर्तमान काल का भांगा ८ यथा १ मनुष्य एक २ मनुष्यणी एक ३ मनुष्य बहुत ४ मनुष्णी बहुत ५ मनुष्य एक और मनुष्यणी एक ६ मनुष्य एक और मनुष्यणी बहुत ७ मनुष्य बहुत और मनुष्यणी एक ८ मनुष्य बहुत और मनुष्यणीयां बहुत।

ईर्यावहि कर्म क्या एक स्त्री बांधे या एक पुरुष बांधे या एक नपुंसक बांधे ? एसेही क्या बहुत से स्त्री. पुरुष नपुंसक बांधे ?। उत्त ६ हीं बोलवाले जीव नहीं बांधे।

क्या ईर्यावहि कर्म नोस्त्री. नोपुरुष नोनपुंसक बान्धे ? यहि वेदका उदयथा तब स्त्री पुरुषादि कहलाते थे फीर वेदके क्षय होने से नोस्त्री नोपुरुषादि कहे जाते है ? उत्तरमें)

हां बांधे भूतकाल में बांधा वर्तमान में बांधे और भविष्यमें बांधेगा जिसमें वर्तमान बंध के भांगा २६ यथा असंयोगीभांगा ६ एक नोस्त्री बांधे बहुतसे नोस्त्रीयां बांधे २ एक नो पुरुष बांधे ३ बहुत से नोपुरुष बांधे ४ एक नो नपुंसक बांधे ५ बहुत से नो नपुंसक बांधे

द्विकसंयोगी भांगा १२

नोस्त्री	नोपुरुष	नोस्त्री	नो नपुंसक	नो पुरुष	नो नपुंसक
१		२		३	
१	१	१	१	१	१
१	३	१	३	१	३
३	१	३	१	३	१
३	३	३	३	३	३

जिसमें (१) एक वचन (३) बहुवचन समझना

त्रिक संयोगी भांगा ८।

नोस्त्री.	नो पुरुष	नोनपुंसक	नोस्त्री.	नोपुरुष	नोनपुंसक
१	१	१	३	१	१
१	३	३	३	१	३
१	१	१	३	३	१
१	३	३	३	३	३

इति २६ भांगा हुवा [illegible] ८ [illegible]
[illegible] है [illegible]

१	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५	[illegible]	[illegible]	[illegible]
६	[illegible]	[illegible]	[illegible]
७	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	[illegible]	[illegible]	[illegible]

है पर्व एक अनादिकी ७ भांगोंका जीव जिसे छठा भांगों शून्य है भवत मात्र बंधभावापेक्षा है।

इर्यावहि कर्म क्या इन च्यार भांगो से बांधे? १ आदि सांत २ आदि अनंत ३ अनादि सांत ४ अनादि अनंत?

आदि सांत भांगे से बांधे. क्यों कि इर्यावहि कर्म ११-१२-१३ वे गुणस्थानक के अंत समय तक बंधता है इसलिये आदि है और चौदवें गुणस्थानक के प्रथम समय बंध विच्छेद होने से अंत भी है बाकी तीन भांगे शून्य है.

इर्यावहि कर्म क्या देश (जीवकाप्रदेश) से देश (इर्यावहि कर्मदेश) बांधे १ या देश से सर्व २ या सर्व से देश ३ या सर्व से सर्व बांधे ४?

हां सर्व से सर्वका बंध हो सकता है बाकी-तीनों भांगे शून्य है इति इर्यावहि कर्मबन्ध॥

सम्पराय कर्म क्या नारकी, तिर्यंच, तिर्यंचणी मनुष्य मनुष्यणी, देवता, देवी, बांधे ४.

हां बांधे क्योंकि सम्पराय कर्म का बंध पहिले गुणस्थानक से दशवें गुणस्थानक तक है

सम्पराय कर्म क्या स्त्री पुरुष नपुंसक या बहुत से बांधे. पुरुष, नपुंसक बांधे

[illegible]

[illegible]

[illegible]

में भांगे २६ से इर्यावही कर्मवत् बांधे. क्योंकि अवेदी नवमें गुणस्थानक के २ समय बाकी रहने पर (वेदोंका क्षय होते हैं) होजाते हैं और सम्प्राय कर्मका बंध दशवें गुणस्थानक तक है

सम्प्राय कर्म क्या इन चार भांगों से बांधे १ सादि सांत, २ सादि अनंत, ३ अनादिसांत, ४ अनादि अनंत,

तीन भांगों से बांधे, और १ भांगा शुन्य. यथा. १ सादिसांत भांगों से बांधे सम्प्रायकर्मबांधनेको जीवों के आदि नहीं है. परन्तु यहां अपेक्षायुक्त वचन हैं जैसे कि जीव उपशम श्रेणी करके ग्यारह गुणस्थानक वर्तता हुवा इर्यावही कर्म बांधे परंतु इग्यारमें गुणस्थानक से नियमा गिरकर सम्प्राय कर्म बांधे इस अपेक्षा से सम्प्राय कर्मकी आदि है और क्षपक श्रेणीकर के बारमें गुणस्थानक अवश्य जावेगा. यहां सम्प्राय कर्म का बंध नहीं है इसलिये अंतभी है २ सादि अनंत भांगा शुन्य है क्योंकि ऐसा कोई जीव नहीं है कि जिसके सम्प्राय कर्मकी आदि हो. यदि उपशम श्रेणी की अपेक्षा से कहोगे तो वह नियमा मोक्षभी जायगा तो अन्त पणाकी बाधा आवेगी वास्ते यह भांगा शास्त्रकारोंने शुन्य कहा है.

३ अनादि सांत. भव्य जीवोंकी अपेक्षा से. क्योंकि जीवके सम्प्राय कर्मकी आदि नहीं है परन्तु मोक्ष जायगा इसवास्ते अंत है

४ अनादि अनंत अभव्य जीवकी अपेक्षासे जिसके सम्प्राय कर्मकी आदि नहीं है और न कभी अंत होगा

सम्प्राय कर्म क्या [illegible] से बांधे [illegible] देश [illegible] सर्वसे [illegible] सम्प्राय कर्म [illegible] सर्व से देश से सर्व [illegible]

[illegible]

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नं० ५५

(श्री भगवतीजी शतक २१ उ० १)

(४७ बोल की थोकी)

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सं	नाम दंडक	जी १	ले ६	प २	द ३	ज्ञा ६	[illegible] ४	यं ५	[illegible] ५	क ६	यो ५	[illegible] २	कु ४७
१	नारकी	१	४	२	३	४	[illegible]	४	२	५	४	२	३४
१२	{ भुवन पति १० / वाण व्यंतर १	१	५	२	३	४	४	४	३	५	४	२	३७
१३	ज्योतिषी १	१	२	२	३	४	४	४	३	५	४	२	[illegible]
	वैमानिक { देवलोक १-२	१	२	२	३	४	४	४	३	५	४	२	३४
१४	देवलोक ३ से १२	१	२	२	३	४	४	४	३	५	४	२	३३
	ग्रैवेक ९	१	२	२	३	४	४	४	३	५	४	२	३३
	अनुत्तर ५	१	१	१	१	४	०	४	३	५	४	२	२६
१५	पृ. पाणी वन० ३	१	५	२	१	०	३	४	३	५	३	२	२७
१६	तेऊ वायु २	१	४	२	१	०	३	४	३	३	३	२	२६
१९	विकलेन्द्री ३	१	४	२	२	३	३	४	३	३	३	२	३१
२०	तीर्यंच, पंचेन्द्री	१	७	२	३	३	४	४	४	५	४	२	४०
२४	मनुष्य	१	८	२	३	६	४	६	५	६	६	२	४७

सांझे तीजे और पांचमे. देवलोकमें पद्म पद्मलेश्या और छट्ठे. से बारमें देवलोक तक एक शुक्ल लेश्या है इस लिये उपदेश. देवलोकमें पद्म १ लेश्या है।

[illegible]

[illegible]

जीव वेदनीय, आयुष्य, नाम, गोत्र, ये चार अघाती कर्म है (चार पुण्य मिश्रित) इसलिये [illegible] के प्रथम [illegible] की इच्छा [illegible] की है उपरोक्त ७७ बोलोमेंसे कोन २ से बोलमें जीव इन चार [illegible] में से कोन २ से [illegible] के [illegible] की बंधि. इन में वादरीय कर्मोकी प्रबलता है इसलिये इनके बंध विच्छेद होने के तीन कर्मो के विचारण होने पर भी इनके बंध की विच्छेद नहीं थी. क्योंकि [illegible] गुणमें भी मोहनीय कर्म [illegible] के [illegible] और विना है कारण कि. वेदनीय [illegible] कर्मो का [illegible] है. इन के साथ होने से तीन कर्मो का विच्छेद भी और नहीं बनता, इसलिये [illegible] वाणी में से मनुष्य जीव की इच्छा करते है मनुष्यगतीमें १ [illegible] २ [illegible] ३ शुक्र [illegible] ४ [illegible] ५ [illegible] ६ [illegible] ७ [illegible] ८ [illegible] ९ [illegible] १० [illegible] ११ [illegible] १२ [illegible] १३ [illegible] १४ [illegible] १५ [illegible] १६ [illegible] १७ [illegible] १८ [illegible] १९ [illegible] २० इन बीस बोलों के बोलों में [illegible] [illegible] है यथा:

(१) [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible]

(२) [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

१ [illegible]

२ [illegible]

[illegible]

(१) बांधा, बांधे बांधसी, यह सामान्यता से कहा है बहुत भवपेक्षा.

(२) बांधा बांधे, न बांधसी यह विशेष व्याख्या है क्योंकि भव्य जीव है व तद्भव मोक्ष जायगा तब (न बांधसी. (२२) अकषायी में दो भांगा यथा-३-४ वा.

(३) बांधा, न बांधे, बांधसी, उपशम श्रेणी दशमें, इग्या रमें गुण० वर्तता हुआ भूत कालमें बांधा वर्तमान (न बांधे परन्तु नियमा पीछा गिरेगा. तब (बांधसी)

(४) बांधा, न बांधे, न बांधसी. क्षपक श्रेणी वाले अकषायी है (२५) अलेशी, केवली और अजोगी, में भांगा १ बांधा, न बांधे, न बांधसी. बन्ध अभाव।

(४७) लेश्या पांच, कृष्णपक्षी, अज्ञाना चार, वेद चार, संज्ञा चार, कषाय तीन, और मिथ्यात्वदृष्टि इन बाइस बोलों के जीवो में भांगा २ मिलते है यथा। १-२ जो।

(१) बांधा, बांधे, बांधसी, अभव्य की अपेक्षा से.

(२) बांधा, बांधे, न बांधसी भव्य की अपेक्षा से.

यह समुचय जीव की अपेक्षा से कहा. ऐसे ही मनुष्य के दंडक में समझ लेना. शेष तेवीस दंडक के जीव में दो भांगा मिलते है यथा. १-२ जो.

(१ बांधा बांधे न बांधसी. अभव्य की अपेक्षा विशेष व्याख्या न करके सामान्यता से

(२ बांधा बांधे. न बांधसी. यह विशेष व्याख्या है क्योंकि भव्य जीव है वह भविष्य में निश्चय मोक्ष जायगा तब (न बांधसी

यह समुच्चय पापकर्म की व्याख्या की है. अब आठो कर्म

की जिस २ व्याख्या करते है जिसमें मोहनीय कर्म समुच्चय साथ अधिकम् समझ लेना.

ज्ञानावरणीय कर्म की पूर्व कहे हुए बीस बोलोंमें से अन्तरायी और बांध बनावी सब ही बोलों को छोड़कर शेष अठारह [illegible] पूर्वोक्त बारह बोलोंके साथ (पूर्वमें जो कुछ कह आये है और आगे जो कुछ कहेंगे वह सब यानें गुणस्थानक से संबन्ध रखता है इसलिये पाठकों को हरेक बोल पर गुणस्थानक का ध्यान रखना अति आवश्यक है, बिना गुणस्थानक के इनोंकी बातें समझ में आना मुश्किल है.

[illegible], [illegible] और [illegible], के [illegible] १ [illegible], [illegible], [illegible] [illegible], [illegible]

[illegible] के [illegible] २ पहिला और दूसरा पूर्ववत्

[illegible] के [illegible] ३ तीसरा और चौथा पूर्ववत्

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] की व्याख्या के [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] ; [illegible] [illegible] २ पहिला और दूसरा पूर्ववत्

[illegible]

[illegible]

मिलता है पहिला, दूसरा और चौथा भांगा और बांधा, न बांधे बांधसी, इस तीसरे भांगे में पूर्वोक्त बारहा बोलों के जीव नहीं मिलते. क्योंकि यह भांगा वर्तमानकाल में वेदनीय कर्म न बांधे. और फीर बांधेगा यह नहीं होसक्ता. कारण वेदनीय कर्म का बंध तेरवा गुणस्थानक के अंत समय तक होता है.

अलेशी, अजोगी, में भांगा १ चौथो. बांधा, न बांधे, न बांधसी, शेष तेतीस बोलों में भांगा २ पहिला और दूसरा.

एवम् मनुष्य दंडक में भी भांगा ३ समुचयवत् समझ लेना शेष तेवीस दंडक में भांगा २ पहिला और दूसरा.

समुचय जीवोंकी अपेक्षा से आयुष्य कर्ममें. अलेशी, केवली और अयोगी, ये तीन बोलों के जीवोंमें केवल चौथा भांगा पावें.

कृष्णपक्ष में भांगा २ पहिला और तीसरा.

मिश्रदृष्टि. अवेदी और अकषायी में २ भांगा. तिसरा और चौथा. मन: पर्यव ज्ञानी. नोसंज्ञा में ३ भांगा. पहिले तीसरा और चौथा शेष अडतीस बोलों के जीवों मे चारों भांगा से आयुष्य कर्म बांधे. अब चौवीस दंडकों की अपेक्षा आयुष्य कर्म के बंध के भांगा कहते हैं नारकी के पूर्वोक्त ३५ बोलोंमेसे कृष्ण पक्षी और कृष्ण लेश्या में भांगा दो पावे पहिला और तीसरा. मिश्रदृष्टि में भांगा दो पावे तीसरा और चौथा शेष बत्तीस बोलों के जीवों चारों भांगों से आयुष्य कर्म बांधे

देवताओं में भवनपति से यावत् बारहावें देवलोक तक के देवताओंमें पूर्वोक्त कहे हुए बोलोंमें से कृष्णपक्षी और कृष्णलेश्या (जहां पावें वहांतक) में दो भांगा पहिला और दूसरा मिश्रदृष्टिमें दो भांगा तीसरा और चौथा शेष बोलों के जीवों में भांगा चारों पावें. नव ग्रैवेयक के देवताओंमें पूर्वोक्त ३२ बोलोंमें से कृष्णपक्षीमें

भांगा दो पावे. पहिला और तीसरा. शेष ३१ बोलों में चारों भांगा पावे. ॥ चार अनुत्तर विमानों के देवताओं में पूर्वोक्त २१ बोलोंमें भांगा चारों पावे ॥ सर्वार्थ सिद्ध विमानके देवताओं में पूर्वोक्त २६ बोलो में भांगा ३ पावे, दूसरा, तीसरा, और चौथा.

पृथ्वीकाय, अप्पकाय, और वनस्पतिकाय के जीवों में पूर्वोक्त २७ बोलो में से तेजोलेशी, में भांगा एक पावे. तीसरा शेष २६ बोलों के जीव चारों भांगों से आयुष्य कर्म बांधे ॥ तेउकाय और वायुकाय के जीवों के पूर्वोक्त २६ बोलो में भांगा २ पावे पहिला और तीसरा ॥ तीनो विकलेन्द्री जीवों के पूर्वोक्त ३१ बोलो में से सज्ञानी, मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी, और सम्यक्दृष्टि इन चार बोलो के जीवो में भांगा तीसरा पावे शेष २७ बोलो में भांगा २ पहिला और तीसरा.

तीर्यंच पंचेन्द्री जीवों के पूर्वोक्त ३९ बोलो में से कृष्णपक्षी में भांगा २ पहिला और तीसरा. मिश्रदृष्टि में दो भांगा तीसरा और चौथा. और सज्ञानी, मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी तथा अवधिज्ञानी और सम्यक्दृष्टि में भांगा ३ पावे पहिला, तीसरा, और चौथा. शेष २८ बोलों में भांगा चारों पावे.

मनुष्य के दंडक में पूर्वोक्त ४७ बोलो में से कृष्णपक्षी में भांगा दो पावे. पहिला और तीसरा मिश्रदृष्टि अवेदी और अकषाइ में भांगा दो पावे तीसरा और चौथा अलेशी, केवली, और अजोगी में एक भांगा चौथा, मनःपर्यव ज्ञान, सज्ञानी और सम्यक्दृष्टि में तीन भांगा पहिला तीसरा और चौथा शेष बत्तीस बोलो में भांगा चारों पावे

इस शुभाशुभ ... के ... बहुत विस्तार किया जाय इतना हो सकता है परन्तु इस संक्षेप से कंठस्थ करना व प्रमाद दूर करने के कारण से यहां संक्षेप में वर्णन किया है इस पर ... विस्तार सूत्रसे जाने इति ॥

थोकडा नं. ५६.

(श्री भगवती सूत्र शतक २६ उ० २)

अणंतर उववन्नगादि

अंतरा रहित जो प्रथम समय उत्पन्न हुआ है उसकी अपेक्षासे यह उद्देशा कहेंगे इसी शतक के पहिले उद्देशे में जो ४७ बोल प्रथम कह आये हैं उनमें से नीचे लिखे १० बोल प्रथम समय उत्पन्न हुआ है उसमें नहीं मिलते क्योंकि उत्पन्न होने के प्रथम समय में इन १० बोलों की प्राप्ति नहीं होसक्ती। यथा (१) अलेशी (२) मिश्रदृष्टि (३) मनःपर्यव ज्ञानी (४) केवलज्ञानी (५) नो संज्ञा (६) अवेदी (७) अकषायी (८) अयोगी (९) मनयोगी (१०) वचनयोगी शेष ३७ बोल समुच्चय जीवों में मिले.

नरकादि दंडकों में नारकी से लेकर बारह देवलोक तक पूर्वोक्त कहे हुए बोलो में से मिश्रदृष्टि, मनयोगी, और वचन योगी, यह तीन बोल कम करके शेष बोलो में प्रथम समय का उत्पन्न हुआ जीव मिले.

नव ग्रैवेकम तथा पांच अनुत्तर विमानों में पूर्वोक्त कहे हुए ३२ और २६ बोलो में से मनयोगी और वचनयोगी कम करके शेष बोलों में प्रथम समय का उत्पन्न हुआ जीव मिले।

तिर्यच पचेन्द्री मे पूर्वोक्त कहे हुये ४० बोलों में से मिश्रदृष्टि मनयोगी, और वचनयोगी यह तीन बोल कम करके शेष ३७ बोलों मे प्रथम समय का उत्पन्न हुवा जीव मिले। मनुष्य दंडक मे समुच्चयवत ३७ बोलो में प्रथम समय का उत्पन्न हुवा जीव मिले।

चौवीस दंडकों में प्रथम समय उत्पन्न हुए जीवों के जो जो बोल कह आए हैं उन बोलों के जीव समुच्चय पापकर्म और ज्ञानावरणीय आदि सात कर्मों (आयुष्य छोड कर) को पूर्वोक्त " बांधा, बांधे, बांधसी " इत्यादिक चार भांगा में से केवल दो भांगों से बांधे । बांधा बांधे बांधसी, बांधा, बांधे न बांधसी.)

आयुष्य कर्मको मनुष्य छोडकर शेष तेवीस दंडकों में पूर्वोक्त कहे हुवे बोलों में " बांधा न बांधे, बांधसी " । का १ भांगा पावे. क्योंकि प्रथम समय उत्पन्न हुवा जीव आयुष्य कर्म बांधे नहीं. भूत कालमें बांधा था और भविष्यमें बांधेगा.

मनुष्य दंडक में पूर्वोक्त ३७ बोलों में से कृष्ण पक्षी में भांगा १ तीसरा शेष छत्तीस बोलों में भांगा २ पावे. तीसरा और चौथा इति द्वितीयोद्देशकम्.

शतक २६ उद्देशो ३ जो परम्परोववन्नगा.

उत्पत्ति के दूसरे समय से यावत् आयुष्य के शेष काल की "परम्पर उववन्नगा," कहते हैं. इसी शतक के प्रथम उद्देसेमें ४७ बोलों में से जितने २ बोल प्रत्येक दंडक के कह आये हैं. उसी माफक परम्पर उववन्नगा जावों के समुच्चय जीवादि दंडकों में भी कहना. तथा बांधी का भांगा चारों सर्व अधिकार प्रथम उद्देसे के माफक कहना. बांधी के भांगों के साथ " परम्पर उववन्ना " का सूत्र सर्वत्रादि सर्व दंडक के साथ जोड लेना इति तृतीयो उद्देशकम् श्री भगवती सूत्र श [illegible] उ [illegible] अनंतर [illegible]

जीव जिस गति में उत्पन्न हुवा है उसगति के आकाश प्रदेश अवगाहा [illegible] हुवा है [illegible] और बांधी के भांगी का सर्वाधिकार [illegible] के माफक कहना [illegible] का सूत्र

पज्जत्तगा कहते हैं. इसका सर्वाधिकार प्रथम उद्देशो वत् समझना. परन्तु परंपर पज्जत्तगा का सूत्र विशेष कहना. इति नवमोद्देशकम्

श्री भगवती सूत्र श० २६ उ० १० चरमोद्देशो.

जिस जीव का जिस गति में चरम समय शेष रहा हो उसको चरमोद्देशो कहते हैं इसका सर्वाधिकार प्रथम उद्देशावत् परन्तु "चरमोद्देशो" का सूत्र विशेष कहना. इति दशमोद्देशकम्

श्री भगवती सूत्र श० २६ उ० ११ अचरमोद्देशो.

अचरमोद्देशो प्रथम उद्देशो के माफक है. परन्तु ४७ बोलो में अलेशी, केवली, अयोगी ये तीन बोल कम करना. भांगा ४ में चौथो भांगो और देवता में सर्वार्थसिद्ध को बोल कम करना. शेष प्रथम उद्देशे के माफक कहना. इति श्रीभगवती सूत्र श० २६ समाप्तम्.

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्



थोकडा नं. ५७.

॥ श्री भगवती सूत्र श० २७ ॥

शतक २६ उद्देशा १ में जो ४७ बोल कह आये हैं उसपर जो "बांधा बांधे बांधसी" इत्यादि ४ भांगों का विस्तार पूर्वक वर्णन किया है उसी माफक यहां भी कर्म किरिया करे करसी इत्यादिक नीचे लिखे ४ भांगों का अधिकार पूर्ववत् ११ उद्देशों तथा माफक ही समझ लेना

(१) कर्म किरिया करे करसी (२) किरिया करे न करसी (३) किरिया न करे करसी (४) किरिया न करे न करसी

(प्र) जब अधिकार सादश है तो अलग २ शतक कहने का क्या कारण है ?

(उ) कर्म, करिया, करे, करसी. यह क्रिया काल अपेक्षा सामान्य व्याख्या है और कर्म बांधा बांधे बांधसी. यह बंध काल अपेक्षा विशेष व्याख्या है. शेषाधिकार बन्धी शतक माफीक समझना. इति शतक २७ उद्देशा ११ समाप्त.

—✣—

थोकडा नं० ५८

श्री भगवती सूत्र श० २८

पूर्वोक्त ४७ बोलों के जीव पापादि कर्म कहां के बांधे हुए कहां भोगवे १ इसके भांगे ८ है यथा (१) तीर्यचमें बांधा तीर्यच में ही भोगवे (२) तीर्यचमें बांधा नरकमें भोगवे (३) तीर्यचमें बांधा मनुष्य में भोगवे (४) तीर्यच में बांधा देवता में भोगवे (५) तीर्यचमें बांधा नारकी और मनुष्य में भोगवे (६) तीर्यच में बांधा नारकी और देवता में भोगवे (७) तीर्यच में बांधा मनुष्य और देवता में भोगवे. (८) तीर्यच में बांधा नारकी मनुष्य देवता तीनों में भोगवे एवम् भांगा ८। पहिले जो शतक २६ उद्देशा १ में जो ४७ बोलों का प्रत्येक दंडक पर वर्णन कर आये हैं उन सब बोलों में समुच्चय पाप कर्म और ज्ञानावरणीयादी ८ कर्मों में भांगा आठ आठ पावे इति प्रथमोद्देश

पूर्वोक्त बांधी शतक के ११ उद्देशावत् इस शतक के भी ११ उद्देशा है और प्रत्येक उद्देश के बोलों पर उपर लिखे मुजब आठ २ भांगा लगा लेना इस शतकसे अव्यवहाररासी मानना भी सिद्ध होता है और प्रज्ञापना पद ३ बोल ९८ तथा जुम्माधिकारसे देखो इति शतक २८ उद्देशा ११ समाप्त.

—✣—

थोकडा नं. ५६

(श्री भगवती सूत्र श० २६)

४७ बोल प्रत्येक दंडक पर शतक २६ उद्देशे पहिले में विवरण करचूके हैं. उनबोलों के जीव (१) एक साथे कर्म भोगवणा मांडिया (सुरूकिया) और एक साथे पूरण किया (२) एक साथे भोगवणा मांडिया और विषमता से पूराकिया (३) विषम भोगवणा मांडिया और विषम पूराकिया (४) विषम भोगवणा मांडिया और साथे पूरा किया. यह चारों भांगे कहना क्योंकि जीव ४ प्रकार के है यथा—

(१) सम आयुष्य और साथे उत्पन्न हुआ. (२) सम आयुष्य और विषम उत्पन्न हुआ (३) विषम आयुष्य और साथे उत्पन्न हुआ. (४) विषम आयुष्य और विषम उत्पन्न हुआ. यह चार प्रकार के जीवोंमें कौन २ सा भांगा पावे सो दिखाते है.

(१) सम आयुष्य और साथे उत्पन्न हुआ जिसमें भांगा पहिला स० स० (२) सम आयुष्य और विषम उत्पन्न हुआ जिसमें भांगा दूसरा स० वि० (३) विषम आयुष्य और साथे उत्पन्न हुआ जिसमें भांगा तीसरा. वि० स० (४) विषम आयुष्य और विषम उत्पन्न हुआ जिसमें भांगा चौथा वि० वि० । यह आयुष्य कर्म की अपेक्षा से चार भांगा होता है इति प्रथमोद्देशा ।

दूसरा उद्देशा अणंतर उववन्नगा का है जिसमें भांगा २ पहिला और दूसरा यहां प्रथम समय की अपेक्षा है इसी माफक चौथा छट्ठा और आठमा उद्देशा भी समझ लेना. शेष १-३-५-७-९-१०-११ यह सात उद्देशों की व्याख्या सदृश है (चारों भांगा पावे इति श० २९ शतक ११ उद्देशा समाप्तम्

थोकडा नं. ६०

श्री भगवती सूत्र श० ३०

समौसरण–अधिकार.

समौसरण चार प्रकार के कहा है यथा १ क्रियावादी २ अक्रियावादी ३ अज्ञानवादी और ४ विनयवादी क्रियावादी के सुयडांग सूत्र में जो १८० भेद कहे हैं वह केवल मिथ्यादृष्टि हैं और दशाश्रुत स्कंध में जो क्रियावादी कहे है उन्होने पेस्तर मिथ्यादृष्टि में आयुष्य बांधा था उसके बाद में सम्यक्त्व प्राप्त किया है और यहां जो क्रियावादी कहे हैं वह सम्यक्दृष्टि हैं.

समुच्चयजीव में पूर्व जो ४७ बोल २६ वां शतक में कह आये हैं उसमें कृष्णपक्षी १ अज्ञानी ४ मिथ्यादृष्टि १ एवम् छे बोल में समौसरण ३ अक्रियावादी, अज्ञानवादी, और विनयवादी, इन तीनों समौसरण के जीव चारों गति का आयुष्य बांधे, और इनमें भव्य, अभव्य, दोनों होवे.

ज्ञान ४ और सम्यक्दृष्टि १ इन पांचो बोलों में समौसरण १ क्रियावादी आयुष्य जो नारकी, देवता, बांधे तो मनुष्य का और मनुष्य, तीर्यंच बांधे तो वैमानिक का और नियमा भव्य है.

मिश्रदृष्टिमें समौसरण २ अज्ञानवादी और विनयवादी. आयुष्य का अबंधक और नियम भव्य हो.

मनः पर्यव ज्ञान और नोसंज्ञा में समौसरण १ क्रियावादी. आयुष्य बांधे तो वैमानिक का और नियमा भव्य होय.

कृष्ण, नील कापोत लेशीमें समो० चार पावे. जिसमें क्रिया-

वादी आयुष्य मनुष्य का बांधे और नियमा भव्य होय. शेष तीन समो० आयुष्य चारोंगति का बांधे, और भव्याभव्य दोनों होय।

तेजो, पद्म, शुक्ल लेश्यो में समो० चार पावे जिसमें क्रियावादी आयुष्य मनुष्य वैमानिकको बांधे और नियमा भव्य होय. शेष तीन समो० नारकी वर्जे के तीनगति का आयुष्य बांधे और भव्याभव्य दोनों होय.

अलेशी, केवली, अयोगी, अवेदी, अकषायी, इन पांच बोलों में समोसरण १ क्रियावादी आयुष्य अबंधक और नियमा भव्य होय.

शेष २२ बोलों में समोसरण चारों जिसमें क्रियावादी आयुष्य–मनुष्य और विमानिक का बन्धे और तीन समो० वाले जीव आयुष्य चारों गति का बांधे. क्रियावादी नियमा भव्य होय बाकी तीनों समोसरण में भव्य अभव्य दोनों होय.

नारकी के पूर्वोक्त ३५ बोलों में कृष्णपक्षी १ अज्ञानी ४ और मिथ्यादृष्टि १ में समोसरण ३ पूर्ववत्. आयुष्य मनुष्य तीर्यंच का बांधे और भव्य अभव्य दोनों होय—ज्ञान ४ और सम्यक्दृष्टि में समोसरण १ क्रियावादी आयुष्य मनुष्य का बांधे और निश्चय भव्य होय, मिश्रदृष्टि समुच्चयवत् शेष तेवीस बोल मे समोसरण चार और आयुष्य मनुष्य तीर्यंच दोनोंका बांधे । क्रियावादी नियमा भव्य–बाकी तीनों समोसरण के भव्य अभव्य दोनों होय इसी माफक देवताओं में नवग्रैवेक तक पूर्वोक्त जो जो बोल कह आये है उन सब बोलो मे समोसरण नारकीवत् लगा लेना

पांच अनुत्तरविमान के बोल २६ में समोसरण १ क्रियावादी आयुष्य मनुष्य का बांधे और नियमा भव्य होय

पृथ्वीकाय, अप्पकाय, और वनास्पतिकाय, मे पूर्वोक्त २७ बोलों के जीव में दो समोसरण पावे अक्रियावादी, और अज्ञान·

छोडकर शेष तीन समोसरण आयुष्य चारों गति का बांधे और भव्य अभव्य दोनों होय. चार ज्ञान और सम्यक्दृष्टि में समोसरण. क्रियावादी आयुष्य वैमानिक देवता का बांधे और नियमा भव्य होय। मिश्रदृष्टि में समोसरण दो विनयवाद, और अज्ञानवादी. आयुष्यका अबंधक और नियमा भव्य होय.। मनःपर्यव ज्ञान और नो संज्ञा में समोसरण एक क्रियावादी आयुष्य वैमानिक देवता का बांधे और नियमा भव्य होय.। कृष्णादि ३ लेश्या में समोसरण ४ पावे जिसमें क्रियावादी आयुष्य का अबंधक और नियमा भव्य होय। शेष तीनों समोसरण चारों गति का आयुष्य बांधे और भव्याभव्य दोनों होय तेजो आदि ३ लेश्या में समोसरण चारो पावे जिसमें क्रियावादी आयुष्य वैमानिक का बांधे और नियमा भव्य होय। शेष तीनों समोसरण नरक गति छोडकर तीनो गतिका आयुष्य बांधे और भव्याभव्य दोनों होय. अलेशी, केवली, अयोगी, अवेदी, और अकषाई में समोसरण क्रियावादी का आयुष्य अबंधक और नियमा भव्य होय. शेष बाइस बोलो में समोसरण चारों पावे जिसमें क्रियावादी आयुष्य वैमानिकका बांधे और नियमा भव्य होय। शेष तीनों समोसरण आयुष्य चारो गति का बांधे और भव्याभव्य दोनों होय

इति तीसवा शतकका प्रथम उद्देसा समाप्त।

बाकी शतक २६ वा उद्देसा दूसरा अणंतर उववन्नगा का पूर्व कह आये है उसी माफक चौवीस दंडकों के ४७ बोल इस उद्देसा में भी लगा लेना और समोसरण का भांगा प्रथम उद्देसावत् कहना परन्तु सब बोलो में आयुष्य का अबंधक है क्योंकि यह उद्देसा उत्पन्न होने के प्रथम समय की अपेक्षा से कहा गया है और प्रथम समय जीव आयुष्य का अबंधक होता है एवम् चौथा

छट्ठा, आठवा, ये तीन उद्देसे इस दूसरे उद्देसे के सदृश हैं. शेष ३-५-७-९-१०-११ ये छओ उद्देसा प्रथमोद्देशावत् समझ लेना—

इति श्री भगवती सूत्र शतक ३० उद्देसा ११ समाप्त.

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

—⁂—

थोकडा नं० ६१

श्री उत्तराध्ययन सूत्र अ० ३४

(छ. लेश्या.)

लेश्या उसे कहते हैं जो जीव के अच्छे या खराब अध्यवसाय से कर्मदलद्वारा जीव लेपावे. यह इस थोकडेद्वारा ११ बोलो सहित विस्तारपूर्वक कहेंगे यथा—

१ नाम २ वर्ण ३ गंध ४ रस ५ स्पर्श ६ परिणाम ७ लक्षण ८ स्थान ९ स्थिति १० गति ११ च्यवन इति ।

(१) नामद्वार-कृष्णलेश्या, नीललेश्या कापोतलेश्या तेजोलेश्या पद्मलेश्या शुक्ललेश्या

(२) वर्णद्वार-कृष्णलेश्या [illegible] जैसे पानी से भरा हुआ बादल भैंसा [illegible] [illegible] काजल [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नीललेश्या का [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पाये. वैडूर्यरत्न [illegible] [illegible] [illegible] लिये हुए [illegible] जैसे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

भाग. नवमे भाग. सत्ताईसवेंभाग इक्यासीमें भाग, दोसौतेया
लीसवेंभाग में जघन्य उत्कृष्ट समझना.

(७) लक्षणद्वार—कृष्णलेश्या का लक्षण पांच आश्रव का
सेवन करनेवाला, तीन गुप्तीसे अगुप्ती. छेकायका आरंभक, आरं
भमें तीव्रपरिणामी सर्व जीवोंका अहित अकार्य करनमें साह
सिक इसलोक परलोक की संका रहित. निर्ध्वंस परिणामी जीव
हणतां सूग रहित, अजितेन्द्रिय. ऐसे पाप व्यापार युक्त हो सो
कृष्णलेश्या के परिणाम वाला समजना.

नीललेश्याका लक्षण-इर्षावत् कदाग्रही. तपरहित भले
विचाररहित पर जीव को छलने में होसियार, अनाचारी, निर्लज्ज
विषयलंपट. द्वेषभावसहित, धूर्त. आठों मदसहित, मनोज्ञ स्वाद
का लंपट. सातागवेषी आरंभ से न निवर्ते सर्व जीवों को अहित
कारी. विना सोचे कार्य करनेवाला ऐसे पाप व्यापार सहित
होय उसको नीललेश्या वाला समझना.

कापोतलेश्या--वांका बोले, वांका कार्य करे, निपुद माया
(कपटाइ) सरलपणारहित अपना दोष ढांके, मिथ्यादृष्टि. अनार्य
दूसरे को पीडाकारी वचन बोले, दुष्टवचन बोले, चोरी करे. दूस
रे जीवोंकी सुख सम्पत्ति देख सके नहीं. ऐसे पापव्यापार युक्त
वो कापोत लेश्या के परिणामवाला समझना.

तेजोलेश्या - मान चपलता कौतूहल और कपटाईरहित
विनयवान ... भक्ति करनेवाला. पांचेन्द्री दमनेवाला. श्रद्धा
वान सिद्धांत भणे तपस्या (योग वहन) करे. प्रियधर्मी. दृढ
धर्मी पापसे डरे मोक्षका वांछाकरे धर्मव्यापार युक्त ऐसे परि
णाम वाले को तेजोलेश्या समझना

पद्मलेश्या का लक्षण-क्रोध मान माया लोभ पतला क्रमते
है आत्मा को दमे राग द्वेष से शान्त हो मन वचन काया को

और जिन जीवों को छोडकर गया था वे सब जीव वहीं मिले एक भी कम ज्यादा नहीं उसको अशून्यकाल कहते हैं और कई जीव पहिलेके और कई जीव नये उत्पन्न हुवे मिलेंतो उसको मिश्रकाल कहते हैं। तीर्यचमें सचिट्ठनकाल दो प्रकारका है अशून्यकाल और मिश्रकाल. मनुष्य और देवताओं में तीनों प्रकारका नारकीवत् समझ लेना।

अल्पाबहुत्व नारकी में सबसे थोडा अशून्यकाल. उनसे मिश्रकाल अनंतगुणा और शून्यकाल उनसे अनंतगुण. एवम् मनुष्य देवता. तीर्यच में सबसे थोडा अशून्यकाल उनसे मिश्रकाल अनंतगुणा.

चार प्रकार के सचिट्ठणकाल में कौनसी गतिका भव ज्यादा कमती किया जिसका अल्पाबहुत्व सबसे थोडा मनुष्य सचिट्ठण-काल उनसे नारकी सचिट्ठणकाल असंख्यातगुणा उनसे देवता सचिट्ठणकाल असंख्यातगुण और उनसे तीर्यच सचिट्ठणकाल अनंतगुणा।

तात्पर्य भूतकाल में जीवों ने चतुर्गति भ्रमण किया उसका हिसाब जीवों के हित के लिये परम दयालु परमात्मा ने कैसा समझाया है कि जो हमेशां ध्यान में रखने लायक है देखो. अनंत भव तीर्यचके असंख्याते भव देवताओं के और असंख्याते भव नारकी के करने पर एक भव मनुष्यका मिला. ऐसे दुर्लभ और कठिनतासे मिले हुए मनुष्य भवको हे 'भव्यात्माओं' प्रमादवश वृथा मत खाओ जहां तक हो सके वहांतक जागृत होकर ऐसे कार्यमें तत्पर हो कि जिससे चतुर्गति भ्रमण टले. इत्यलम्

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्

---

२४ असंज्ञी पंचेन्द्री अप० उ० स्थि० वि०
२५ असंज्ञी पंचेन्द्री पर्या० उ० स्थि० वि०
२६ संयती का उत्कृष्ट स्थि० सं० गु०
२७ देशव्रतीका ज० स्थि० सं० गु०
२८ देशव्रतीकाका उ० स्थि० सं० गु०
२९ सम्यक्त्वी पर्या० का जघन्यस्थि० सं० गु०
३० सम्यक्त्वी अप० जघन्यस्थि० सं० गु०
३१ सम्यक्त्वी अप० का उत्कृष्टस्थि० सं० गु०
३२ सम्यक्त्वी पर्या० का उ० स्थि० सं गु०
३३ संज्ञी पंचेन्द्री पर्या० का ज० स्थि० सं० गु०
३४ संज्ञी पंचेन्द्री अप० का ज० स्थि० सं० गु०
३५ संज्ञी पंचेन्द्री अप० का उ० स्थि० सं० गु०
३६ संज्ञी पंचेन्द्री पर्या० का उ० स्थि० सं० गु०

सेवं भन्ते सेवं भन्ते तमेव सच्चम्.

इति शीघ्रबोध भाग ५ वां समाप्तम्.



(९)	श्रीयुत मेम्बर अगरचंदजी पारख	आइदानजी	लोहावट
(१०)	श्रीयुत मेम्बर पृथ्वीराजजी चोपड़ा	सुखचंदजी	,,
११)	श्रीयुत मेम्बर जीतमलजी भन्साली	तुलसीदासजी	,,
(१२)	श्रीयुत मेम्बर हस्तीमलजी पारख	रावलमलजी	,,
(१३	श्रीयुत मेम्बर मेरूलालजी चोपड़ा	रेखचंदजी	,,
१४)	श्रीयुत मेम्बर गुनराजजी पारख	रावलमलजी	,,
(१५)	श्रीयुत मेम्बर मनसुखदासजी पारख	हजारीमलजी	,,
(१६)	श्रीयुत मेम्बर फूलजमलजी पारख	हीरालालजी	,,
(१७)	श्रीयुत मेम्बर फूलजमलजी कोचर	हीरालालजी	,,
(१८	श्रीयुत मेम्बर अमूलमलजी पारख	श्रीचंदजी	,,
१९	श्रीयुत मेम्बर हीरालालजी चोपड़ा	मोतीलालजी	,,
(२०	श्रीयुत मेम्बर जमनालालजी पारख	रावलमलजी	,,
(२१)	श्रीयुत मेम्बर रेखचंदजी पारख	मोतीलालजी	,,
(२२)	श्रीयुत मेम्बर अमूलमलजी पारख	करणीदानजी	,,
(२३)	श्रीयुत मेम्बर सुगनलालजी चोपड़ा	हीरालालजी	,,
२४)	श्रीयुत मेम्बर फूलचंदजी पारख	केवलचन्दजी	,,
(२५	श्रीयुत मेम्बर गेवरचंदजी गढ़ीया	जुहारमलजी	मथाणीया
(२६	श्रीयुत मेम्बर ऊंटमलजी डाकलीया	प्रतापचंदजी	लोहावट
२७	श्रीयुत मेम्बर फूलजमलजी पारख	सहजरामजी	,,
(२८)	श्रीयुत मेम्बर जमनालालजी चोपड़ा	अलसीदासजी	,,

(२९)	श्रीयुत मेम्बर नेमिचन्दजी चोपड़ा	पुनमचंदजी	,,
(३०)	श्रीयुत मेम्बर कुनणमलजी चोपड़ा	मालचंदजी	,,
(३१)	श्रीयुत मेम्बर पुनराजजी चोपड़ा	तारचंदजी	,,
(३२)	श्रीयुत मेम्बर कुंवरलालजी पारख	सेरचंदजी	,,
(३३)	श्रीयुत मेम्बर चुनिलालजी पारख	भीवलालजी	,,
(३४)	श्रीयुत मेम्बर सुलतानजी पारख	मोतीलालजी	,,
(३५)	श्रीयुत मेम्बर भीमरथमलजी चोपड़ा	हीरालालजी	,,
(३६)	श्रीयुत मेम्बर अलमीदासजी कोचर	पुनमचंदजी	,,
(३७)	श्रीयुत मेम्बर इन्द्रचंदजी वैद	भीवलालजी	आबु
(३८)	श्रीयुत मेम्बर ठाकुरलालजी चोपड़ा	रेखचंदजी	लोहावट
(३९)	श्रीयुत मेम्बर गेवरचंदजी चोपड़ा	रायलमलजी	,,
(४०)	श्रीयुत मेम्बर कन्यालालजी पारख	जमनालालजी	,,
(४१)	श्रीयुत मेम्बर मंगलालजी पारख	इश्वरचंदजी	,,
(४२)	श्रीयुत मेम्बर नेमिचंदजी पारख	हीरालालजी	,,
(४३)	श्रीयुत मेम्बर हेमराजजी पारख	चांनणमलजी	,,
४४	श्रीयुत मेम्बर भभूतमलजी कोचर	हस्तिमलजी	,,
४५	श्रीयुत मेम्बर भीखमचंदजी कोचर	मेघराजजी	,,
४६	श्रीयुत मेम्बर गोकुलालजी सेठीया	छोगमलजी	,,
४७	श्रीयुत मेम्बर झंवरमलजी वैद	मदनमलजी	फलोधी
(४८)	श्रीयुत मेम्बर नेतमलजी पारख	हजारीमलजी	लोहावट

५०	श्रीयुक्त मेम्बर संपतलालजी पारख	हीरालालजी	,,
५१	श्रीयुक्त मेम्बर सहसमलजी पारख	छोगमलजी	,,
५२	श्रीयुक्त मेम्बर तनसुखदासजी कोचर	जेठमलजी	,,
५	श्रीयुक्त मेम्बर भीखमचंदजी पारख	मुलचंदजी	,,
५४	श्रीयुक्त मेम्बर सुगनमलजी पारख	चुनिलालजी	,,
५५	श्रीयुक्त मेम्बर सुगराजजी पारख	रतनलालजी	,,
५६	श्रीयुक्त मेम्बर जमनालालजी पारख	मुलचंदजी	,,
५७	श्रीयुक्त मेम्बर खेतमलजी कोचर	प्रभुदानजी	,,
५८	श्रीयुक्त मेम्बर माणकलालजी कोचर	दलीचंदजी	,,
९	श्रीयुक्त मेम्बर मीसरीलालजी कोचर	खेतमलजी	,,
६०	श्रीयुक्त मेम्बर गेवरचंदजी कोचर	मानमलजी	,,
६१	श्रीयुक्त मेम्बर नथमलजी पारख	हंसराजजी	,,
६	श्रीयुक्त मेम्बर नेमिचंदजी पारख	मनसुखदासजी	,,